

सुरेन्द्र मोहन पाठक



रुद्राण प्रेस



स्टाप प्रैस

1. [Cover](#)
2. [स्टाप प्रैस](#)
3. [Chapter 2](#)
4. [Chapter 3](#)
5. [Chapter 4](#)

स्टाप प्रैस

चार बजे के करीब सुनील ने 'ब्लास्ट' के आफिस में कदम रखा तो 'ब्लास्ट' का न्यूज एडिटर राय उसे रिसैप्शन पर ही मिल गया ।

“अच्छा हुआ तुम आ गये ।” - सुनील पर निगाह पड़ते ही वो चैन की सांस लेता हुआ बोला - “वर्ना मैं तो तुम्हारी तलाश में निकल रहा था ।”

“क्या कहने !” - सुनील व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - “जब से न्यूज एडिटर बने हो, कभी कुर्सी से उठे हो जो आज...”

“तुम्हें मलिक साहब याद कर रहे हैं ।”

सुनील सकपकाया । मलिक साहब 'ब्लास्ट' के मालिक और एडिटर-इन-चीफ थे । उनके बेटे राजेन्द्र मलिक की मौत के बाद से सुनील को याद नहीं पड़ता था कि कभी उन्होंने उसे ऐसी शिद्दत से याद किया हो ।

“क्या माजरा है, भगवन ?” - वो बोला ।

“ठीक से पता नहीं ।” - राय बोला - “अलबत्ता वो थापर वाली स्टोरी की बाबत मेरे से सवाल कर रहे थे ।”

“ओह !”

“जाओ मिल के आओ ।”

“हां, जरूर ।”

“कोई मेरे जानने लायक बात हो तो लौट के मेरे पास आना ।”

“ठीक है ।”

राय घूमा और उस गलियारे की तरफ बढ़ गया जिसमें उसका आफिस था ।

सुनील एक क्षण रिसैप्शन पर ठिठका खड़ा रहा, फिर वो रिसैप्शन पर मौजूद रेणु की तरफ घूमा ।

रेणु मुस्करायी ।

“तूने मुझे नमस्ते कर दी ?” - सुनील बोला ।

“नहीं तो ।” - वो कुटिल भाव से बोली ।

“भूल गयी होगी !”

“खामखाह !”

“लेकिन करेगी तो सही !”

“क्यों भला ?”

“भई, मैं मैं हूँ । 'ब्लास्ट' का बड़े वाला सम्वाददाता । यानी कि चीफ रिपोर्टर ।”

“चीफ लगा लेने से कद नौ फुट हो जाता है ?”

“हां । अब नमस्ते कर नहीं तो मैं...”

“नहीं तो क्या ?”

“नहीं तो मैं रो-रो के जान दे दूंगा ।”

रेणु की बेसाख्ता हंसी छूटी ।

सुनील भी हंसा ।

“बातें बनाना तो कोई तुमसे सीखे ।” - वो बोली ।

“और मुझे आता क्या है ?”

“अब जाओ पहुंचो अपने मुकाम पर वर्ना नौकरी छूट जायेगी ।”

“अरे, किसकी मां ने सवा सेर सोंठ खाई है जो सुनील भाई मुलतानी की नौकरी...”

“ठीक है । फिर तो इधर मेरे पास आ के बैठो ताकि दिल से दिल की बातें हो सकें । ताकि हम दास्ताने-दिले-हयात सुन-सुना सकें । ताकि ये गिला न रहे कि...”

“मैं... मैं जाता हूं ।”

“नहीं, नहीं । जल्दी क्या है ! चाय-वाय पी के जाना । बातों में डिनर का टाइम तो जरूर ही हो जायेगा, फिर खाना भी खाकर जाना ।”

“वो... वो क्या है कि...”

“क्या है ?”

“मैं अभी लौट के बताता हूं ।”

फिर रेणु के मुंह खोल पाने से पहले ही वो भीतर की तरफ लपक पड़ा ।

अगले ही मिनट वो मलिक साहब के विशाल कक्ष में उनके सामने खड़ा था ।

“गुड आफ्टरनून, सर ।” - वो अदब से बोला ।

मलिक साहब ने सामने फैले पड़े कागजात पर से सिर उठाया, अपने बाईफोकल्स में से सुनील की तरफ झांका और बोले - “गुड आफ्टरनून । हाउ आर यू ?”

“फाइन, सर । थैंक्यू फार आस्किंग, सर ।”

“बैठो ।”

“थैंक्यू, सर ।”

सुनील उनकी विशाल टेबल के सामने पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया ।

“थापर वाले केस में क्या प्रॉग्रेस है ?” - मलिक साहब ने पूछा ।

“अच्छी प्रॉग्रेस है, सर ।” - सुनील तत्पर स्वर में बोला - “अभी तक तो, आप जानते ही हैं कि, हमने जो कुछ छपा है, इशारों वाली जुबान में छपा है लेकिन जब सम्बन्धित व्यक्ति इशारा नहीं समझ रहा और अपनी तरफ से कोई सफाई नहीं पेश कर रहा तो अब तो सब कुछ तफसील से, बकायदा नाम लेकर छापना होगा ।”

“इशारा तो वो बखूबी समझ रहा है । तभी तो फोन पर धमकी देता है कि अगर उसकी बाबत हमारे अखबार में कुछ छपा तो वो अखबार के दफ्तर को फूंक के रख देगा, खबर के लिये जिम्मेदार रिपोर्टर को गोली से उड़ा देगा, वगैरह, वगैरह ।”

“ईजीयर सैड सड दैन डन ।”

“मैंने सुना है कि उस आदमी का दादागिरी पर जोर है और वो गुण्डे-बदमाशों से घिर के रहना पसन्द करता है।”

“आपने एकदम ठीक सुना है। मेरी अपनी तफ्तीश भी ये ही कहती है कि ये आदमी - दिलीप थापर - विलासी प्रवृत्ति का आदमी है। शराब, शबाब का रसिया है। हर तरह के जुए का शौक रखता है...”

“मालेमुफ्त दिलेबेरहम।”

“ऐग्जैक्टली, सर।

“सुना है उसके दिमागी तवाजन में भी कोई नुक्स है!”

“कोई बड़ी बात नहीं। ताकत के घमण्ड में डूबे आदमी का सनकी या नीमपागल या दोनों ही होना कोई बड़ी बात नहीं।”

“बल्कि पागल भी!”

“यस, सर। कोई पागल ही ‘मार दूंगा, फूंक दूंगा, बरबाद कर दूंगा’ वाली जुबान किसी नेशनल डेली से बोल सकता है।”

कुछ छण खामोशी रही।

उस दौरान सुनील ने कई बार बेचैनी से पहलू बदला।

“मैंने तुम्हें ये बताने के लिये बुलाया था” - फिर मलिक साहब ने चुप्पी तोड़ी - “कि ये, दिलीप थापर, अब अपनी कोई सफाई पेश करने का ख्वाहिशमंद हो उठा मालूम होता है।”

“अच्छा!”

“हां। आज सुबह उसका मेरे पास फोन आया था। तब भाषा तो उसने पटाखे की तरह धमकी वाली ही बोली थी लेकिन उस फोन काल का जो एण्ड रिजल्ट था, वो ये था कि वो इस स्टोरी की बाबत ‘ब्लास्ट’ के किसी जिम्मेदार आदमी से मिलने को तैयार था।”

“आई सी।”

“स्टोरी क्यों कि विस्फोटक साबित हो सकती है इसलिये मेरी खुद की ख्वाहिश भी यही थी कि सम्बन्धित व्यक्ति का, दिलीप थापर का, वर्शन सुनने के बाद ही इसे छापा जाता।”

“मैं खुद ऐसा ही चाहता था लेकिन वो तो बात सुन के राजी नहीं था। मैं कई बार फोन पर...”

“अब राजी है। मैंने उससे तुम्हारी अप्वायन्टमेंट फिक्स की है। वो” - मलिक साहब ने एक उड़ती निगाह वाल क्लॉक पर डाली - “पांच और छः बजे के बीच अपनी कोठी पर तुम्हारा इन्तजार करेगा। जानते हो न कि वो कहां रहता है?”

“जी हां। नार्थ शोर पर। यहां से तीस मील का फासला है।” - फिर सुनील ने भी घड़ी पर दृष्टिपात किया - “मैं टाइम पर पहुंच जाऊंगा।”

“वो तो तुम पहुंच ही जाओगे लेकिन तुमने ये नहीं पूछा कि मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है!”

“फरमाइये।”

“वो खून-खराबे की धमकियां देने वाला आदमी है। वो जानता है कि उसकी असलियत पर, उसके विरसे पर सवालिया निशान लगाने वाले आदमी तुम हो। ऐसे आदमी से अकेले मिलने जाना क्या मुनासिब होगा?”

“सर, धमकी देने में और उस पर खरा उतरकर दिखाने में बहुत फर्क होता है। अगर उसकी मंशा मेरे खिलाफ या ‘ब्लास्ट’ के खिलाफ कोई खतरनाक कदम उठाने की होती तो अब तक क्या वो इन्तजार कर रहा होता? तो क्या अब वो मुझे इन्टरव्यू देने के लिये तैयार हो जाता?”

“वो सिरफिरा है”

“जिस पर कि कभी-कभी समझदारी का भी दौरा पड़ता है, जैसे कि आज पड़ा है। ऐन वैसे ही जैसे कभी-कभी समझदारों पर पागलपन का दौरा पड़ता है। सर, उस आदमी ने बाकायदा आपको फोन कर के मेरे से अप्वायन्टमेंट फिक्स की है। ऐसे हालात में वो मेरे से कोई बद्सलूकी करना अफोर्ड नहीं कर सकता।”

“लेकिन...”

“सर, मैं अखबारनवीस हूँ। जहां खबर है, वहां पहुंचना मेरा कारोबार है, मेरा फर्ज है, मेरा धर्म है। मैं अपने साथ दस बाडीगार्ड लेकर खबर सूंघने जाना अफोर्ड नहीं कर सकता। यूँ सिर्फ मेरी कमजोरी उजागर होगी। ये जाहिर होगा कि मैं डरता हूँ। मैं अपना ऐसा इमेज बनाना अफोर्ड नहीं कर सकता जिससे ये स्थापित हो कि मैं इस धन्धे के काबिल नहीं। डर के कहीं अखबारनवीसी होती है! डर के कहीं किसी के पीछे पड़ा जाता है!”

“यू आर टैलिंग मी?”

“आई... आई एम सारी, सर।”

“बट यू विल बी केयरफुल?”

“यस, सर।”

“हूँ।”

फिर खामोशी छा गयी।

सुनील ने कई बार बेचैनी से पहलू बदला।

मलिक साहब ने अपनी आंखों से अपना चश्मा उतारा, उसे रूमाल से पोंछा और उसे वापिस अपनी नाक पर व्यवस्थित करते हुए बोले - “मेरा एक ही बेटा था जिसने अपनी करतूतों की वजह से ‘ब्लास्ट’ के उजले दामन पर लगे धब्बों को अपने खून से धोया, जिसने ‘ब्लास्ट’ की गरिमा और मर्यादा को बरकरार रखने के लिये अपनी जान दे दी, जिसने अपनी जान देकर ये साबित कर के दिखाया कि वो एक अखबारनवीस बाप का निर्भीक बेटा था। सुनील, मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। अब मैं कोई ऐसा दूसरा झटका बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा।”

“मुझे कुछ नहीं होगा, सर।” - सुनील भरपूर कण्ठ से बोला - “आपकी, आपके अखबार की छत्रछाया में मुझे कुछ हो ही नहीं सकता। मैंने आपसे सत्यमेव जयते का सबक सीखा है। जो सत्य के रास्ते पर हो, उसकी हार कैसे हो सकती है! सच्चे का बोलबाला और झूठे का मुंह काला होता कितनी बार ‘ब्लास्ट’ की आंखों से दुनिया देख चुकी है और कितनी बार अभी और देखेगी, ये क्या किसी से छुपा है! कलम का सिपाही क्या तोप-तलवार से खौफ खा सकता है!”

“वो ठीक है लेकिन...”

“खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो। जब तोप मुकाबिल हो, अखबार निकालो। ये बात क्या अब सच नहीं रही? जब नेपोलियन जैसा आदमी अखबार से डरता था तो किसी दिलीप थापर की अखबार के सामने क्या औकात है!”

मलिक साहब खामोश रहे।

“और फिर आप ये क्यों कहते हैं कि आपका एक बेटा था? मैं, यहां मेरे कुलीग पत्रकार, क्या हम सब आपके बेटे नहीं?”

मलिक साहब के गले की घण्टी उछली, उन्होंने एक बार जोर से थूक निगली और फिर एकाएक बदले स्वर में बोले - “यू आर एब्सोल्यूटली राइट, माई ब्वाय। नाओ गैट अलांग, यू आर गैटिंग लेट फार युअर अप्वायन्टमेंट।”

सुनील तत्काल उठ खड़ा हुआ।

“और सुनो।” - मलिक साहब बोले।

“यस, सर।”

“अच्छी खबर लेना उस... उस दिलीप थापर के घोड़े की।”

तत्काल सुनील के होठों पर मुस्कराहट आयी, उसने एक क्षण को मलिक साहब से निगाह मिलायी और फिर उनके सिर से ऊपर कहीं झांकता हुआ उत्साहपूर्ण स्वर में बोला - “यस, सर।”

अपनी दस हार्स पावर की इटैलियन मोटरसाइकल एम. वी. आगस्ता अमेरिका पर सुनील नार्थ शोर की ओर उड़ा जा रहा था।

उस घड़ी उसके जेहन में दिलीप थापर से सम्बन्धित स्टोरी और उससे सम्भावित मुलाकात के अलावा कुछ नहीं था।

राजनगर के उस कथित उच्च वर्ग में, जिसका उच्चता पर इकलौता दावा उनकी दौलत की वजह से था, दिलीप थापर का नाम एकाएक उभरा था और इसी बात ने सुनील को ये तपस्वी करने के लिये प्रेरित किया था कि आखिर उसकी सम्पन्नता का राज क्या था! मामूली तपस्वी के बाद सहज ही उसे मालूम हो गया था कि दिलीप थापर विरासत में मिली विपुल धनराशि की वजह से एकाएक रईस बना था। पहले वो तारकपुर में स्थापित एक स्टील मिल में महज एक फोरमैन था जबकि एक रोज एकाएक उसे मालूम हुआ था कि वो दिल्ली के धनकुबेर हरिमोहन थापर का पोता था और उसका इकलौता वारिस था।

दिलीप थापर को उस दिलचस्प और मुफीद हकीकत की खबर क्यों नहीं थी, वो कहानी ऐन मनमोहन देसाई की फिल्मों की तर्ज की थी। सुनील को पता लगा था कि हरिमोहन थापर का एक ही बेटा था जो कि अपनी नौजवानी में एक ऐसी मामूली हैसियत की लड़की को दिल दे बैठा था जिससे उसकी शादी तो क्या, मेलजोल के भी उसका पिता सख्त खिलाफ था। उस मुगलेआजमी स्थिति का नतीजा ये निकला कि लड़के प्रदीप थापर ने अपनी प्रेमिका से शादी रचायी और उसे साथ लेकर किसी नामालूम जगह के लिये निकल गया। पहले तो दबंग बाप ने अपने बागी बेटे की परवाह न की लेकिन जब कुछ सालों बाद उसे अपना अन्त करीब दिखाई देने लगा तो उसे बेटा याद आने लगा लेकिन बेटे की हर मुमकिन तलाश नाकाम रही।

आखिरकार एक रोज हरिमोहन थापर जन्नतनशीन हो गया।

उसकी मौत के बाद उसके वकीलों ने ये रहस्योद्घाटन किया कि अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनों में मरने वाले को ये खबर लगी थी कि उसका बेटा और उसकी बहू उससे पहले एक मोटर एक्सीडेंट का शिकार होकर दुनिया छोड़ गये थे लेकिन अपने पीछे एक बेटा - हरिमोहन थापर का पोता - छोड़कर गये थे।

अब समस्या ये थी कि जो शख्स अपनी जिन्दगी में अपने बेटे को नहीं तलाश कर पाया था, उसके पोते को - अपनी जिन्दगी में जिसका वो नाम तक नहीं जानता था, जिसकी वो उम्र तक नहीं पहचानता था - कोई कैसे तलाश कर पाता!

नतीजतन वो अपनी तमाम चल-अचल सम्पत्ति का एक ट्रस्ट नियुक्त कर के इस लिखित हिदायत के साथ मरा कि उसकी मौत के पांच साल बाद तक उसके पोते को तलाश किया जाये और उसे उसका वारिस करार दिया जाये। पांच साल तक पोते के बरामद न होने की सूरत में उस कोशिश से किनारा कर लिया जाये और उसकी तमाम चल और अचल सम्पत्ति धर्मार्थ कार्यों में लगी संस्थाओं को सौंप दी जाये।

ट्रस्टीगणों ने पूरी शिद्दत के साथ पोते की तलाश का कार्य आरम्भ किया, नतीजतन कोई डेढ़ साल पहले जब कि तलाश का दौर पांचवें साल में था, जैसे जादू के जोर से पोता - दिलीप थापर - बरामद हो गया और हरिमोहन थापर की करोड़ों की सम्पत्ति का मालिक बन बैठा। अब वो नार्थ शोर के नाम से जाने जाने वाले रईसों के इलाके में ऐन समुद्र तट पर स्थित एक भव्य, विशाल दोमंजिली कोठी में रहता था, जिसका कि अपना प्राइवेट बीच था, अपना प्राइवेट पायर था, और ऐश करता था।

पिछले सप्ताह बिना उसका नाम लिये ‘ब्लास्ट’ ने उसके एकाएक प्राप्त हुए वैभव की कहानी छापी थी और उसके विरसे पर ये कहते हुए सवालिया निशान लगाया था कि वस्तुतः वो हरिमोहन थापर का पोता नहीं था।

दिलीप थापर पर उसकी तुरन्त प्रतिक्रिया हुई थी और वो ‘ब्लास्ट’ से ‘मार डालूंगा, बर्बाद कर दूंगा, मार्का जो जुबान बोलने लगा था, उसने सुनील को और भी विश्वास दिला दिया था कि वो सही राह पर था।

अब उसी नकली वारिस से मुलाकात के लिये वो नार्थ शोर जा रहा था।

एकाएक उसके पहलू में एक सफेद मारुति कार प्रकट हुई और उससे आगे निकलने के स्थान पर उसके समानान्तर दौड़ने लगी।

कार का हार्न जैसे उसके ध्यानाकर्षण हेतु जोर-जोर से बजने लगा।

सुनील ने उधर देखा तो पाया कि कार के स्टियरिंग पर बैठी युवती न केवल बार-बार हार्न बजा रही थी बल्कि हाथ से भी उसे रुकने का इशारा कर रही थी।

सुनील ने किनारे कर के मोटरसाइकल रोकी ।

तत्काल मारुति तिरछी होकर मोटरसाइकल के सामने रुकी और गेंद की तरह फुदकती हुई जीन्स-स्कीवीधारी एक युवती उसमें से बाहर निकली ।

सुनील ने नोट किया कि उसके बाल कटे हुए थे, रंग गोरा था, कद दरम्याना था और नयन-नक्श बहुत तीखे थे ।

वो करीब पहुंची ।

“हल्लो !” - वो मुस्कराती हुई बोली ।

“हल्लो युअरसैल्फ !” - सुनील निर्विकार भाव से बोला ।

“आप मिस्टर सुनील हैं ? सुनील कुमार चक्रवर्ती ! ‘ब्लास्ट’ के चीफ रिपोर्टर !”

“कैसे पहचाना ?”

“आपको नहीं, आपकी मोटरसाइकल को पहचाना जो कि खास ही है ।”

“है तो सही ।”

“मैं ‘ब्लास्ट’ के आफिस में गयी थी तो मालूम हुआ था कि आप उसी घड़ी मोटरसाइकल पर” - उसने फिर एक कौतूहलपूर्ण निगाह सुनील की जंगी मोटरसाइकल पर डाली - “नार्थ शोर के लिये खाना हुआ था । मैं फौरन गाड़ी पर आपके पीछे दौड़ी ।”

“वजह ?”

“आप नार्थ शोर मिस्टर दिलीप थापर से मिलने जा रहे हैं न ?”

“हां ।”

“वो वहां नहीं हैं ।”

“वहां नहीं हैं ! लेकिन मेरी उनसे अप्वायन्मेंट तो...”

“आई नो । आई नो ।”

“यू नो !”

“यस । तभी तो आपके पीछे दौड़ी आयी हूँ ।”

“लेकिन क्यों ?”

“ताकि मैं आपको ये खबर कर सकूँ कि थापर साहब नार्थ शोर पर नहीं थे । आज शाम झेरी में उनकी मौजूदगी निहायत जरूरी थी, आपसे अप्वायन्टमेंट फिक्स करते वक्त जिस हकीकत को कि वो भूल गये थे । झेरी से आपके अखबार का फोन लग नहीं रहा था, इसलिये उन्होंने इस खबर के साथ मुझे यहां दौड़ाया ।”

“आपकी तारीफ ?”

“मेरा नाम मोहिनी है । मोहिनी मेहरा !”

“मोहिनी तो आप हैं । बल्कि विश्वमोहिनी हैं ।”

“तारीफ का शुक्रिया ।” - वो खनकती हंसी हंसती हुई बोली - “वो क्या है कि झेरी में लेक व्यू नाम का एक फाइव स्टार होटल है... आप वाकिफ हैं उससे ?”

“बखूबी । झेरी मैं अक्सर जाता रहता हूँ ।”

“उस होटल में एक कैसीनो खुला है जिसका कि आज उदघाटन है । थापर साहब, बतौर चीफ गैस्ट, वहां सपरिवार आमन्त्रित हैं । उनकी वहां बड़ी लम्बी हाजिरी जरूरी है इसलिये आप से मुलाकात के लिये नार्थ शोर पर अपनी कोठी में मौजूद रहना उनके लिये मुमकिन नहीं ।”

“यानी कि अप्वायन्टमेंट कैसल ।”

“नो । नैवर । अप्वायन्टमेंट बरकरार है, मिस्टर चक्रवर्ती । मुलाकात जरूर होगी लेकिन नार्थ शोर पर नहीं, झेरी में ।”

“वहां कहां ? होटल लेक व्यू में ?”

“साथ चलिये । मालूम पड़ जायेगा ।”

“फिर भी ?”

“वहां झील के किनारे आई.टी.डी.सी. के जो कॉटेज हैं, उनमें से एक में । वो कॉटेज मिस्टर थापर ने खास तौर से फैमिली की सुविधा के लिये किराये पर लिया है ।”

“फैमिली में कौन-कौन शुमार है ?”

“उनकी बीवी है, दो सालियां हैं, एक फ्रेंड और बिजनेस एसोसियेट है, मां है...”

“मां भी ?”

“जी हां ।”

“लेकिन मैंने तो सुना है कि उनकी मां अपने पति समेत एक मोटर एक्सीडेंट में मारी गयी थी !”

“मिस्टर सुनील, जो आपने सुना है, वो उससे ज्यादा दमदार है क्यों कर हो सकता है जो हमारे सामने है !”

“ये भी ठीक है । अब मेरे लिये क्या हुक्म है ?”

“आपसे दरखास्त है कि आप मेरी कार में बिराजें ताकि हम झेरी के लिये रवाना हो सकें ।”

“मेरी मोटर साइकल का क्या होगा ?”

“इसे आप यहीं छोड़ दीजिये ।”

“मैं वापिस कैसे लौटूंगा ?”

“मैं छोड़ के जाऊंगी । यहां आपकी मोटर साइकल तक या - वो एक क्षण ठिठकी, उसने अपलक सुनील की तरफ देखा और फिर बोली -

“जहां तक आप चाहें ।”

“फिर क्या प्रॉब्लम है ! चलिये ।”

“शुक्रिया ।”

झेरी राजनगर से पैंसठ मील दूर एक पर्यटन स्थल था जिसका विशिष्ट आकर्षण वहां की विशाल झील था ।

मोहिनी ने झील के किनारे एक काटेज के सामने ले जाकर कार रोकी ।

“आइये ।” - वो कार का अपनी ओर का दरवाजा खोलती हुई बोली ।

सुनील कार से बाहर निकला तो उसने पाया कि मोहिनी पहले ही काटेज के प्रवेशद्वार की ओर बढ़ी जा रही थी । वो उसके पीछे लपका ।

मोहिनी ने द्वार पर पटुंचकर कालबैल की तरफ हाथ बढ़ाया तो दरवाजा पहले ही खुल गया । खुले दरवाजे से एक सूट-बूटधारी आदमी ने बाहर कदम रखा और अपने पीछे दरवाजा भिड़का दिया ।

सुनील ने देखा कि वो एक लगभग चालीस साल का, लम्बा-ऊंचा, कसरती बदन वाला, क्लीन शेव्ड आदमी था । उसने एक सरसरी निगाह सुनील पर डाली, सुनील को अपलक अपनी तरफ देखते पाया तो वो तत्काल परे देखने लगा ।

“हल्लो, मोहिनी ।” - फिर वो युवती से सम्बोधित हुआ - “यही है वो ?”

“हां ।”

“गुड ।”

“ये विवेक वर्मा हैं ।” - मोहिनी ने परिचय दिया - “फैमिली फ्रेंड । थापर साहब के बिजनेस एसोसियेट ।”

“बन्दे को सुनील कहते हैं ।” - सुनील सहज भाव से बोला ।

“वैलकम । वैलकम ।”

“थापर साहब हैं भीतर ?” - मोहिनी बोली ।

“हां, हैं ।” - विवेक वर्मा बोला ।

“और ?”

“और कोई नहीं । कीर्ति, नमिता और चाईजी यहीं कहीं होंगी । शायद झील के रेस्टोरेंट में हों । तुम जरा उन्हें तलाश करो और फिर उन्हें लेकर होटल में पहुंचो । यहां से निपटकर हम भी वहीं पहुंचेंगे । ओके ?”

“तुम लोगों को यहां देर तो नहीं लगेगी ?”

“ये तो इन साहब पर निर्भर करता है । ये देर लगायेंगे तो देर लगेगी, लगायेंगे तो नहीं लगेगी । क्यों, मिस्टर सुनील ?”

सुनील खामोश रहा ।

“ठीक है ।” - मोहिनी बोली, फिर उसने एक जगमग मुस्कराहट सुनील की ओर फेंकी और बोली - “सी यू, मिस्टर सुनील ।”

“जा रही हो ?” - सुनील बोली ।

“फिलहाल ।”

“याद है न कि तुमने मुझे वापिस छोड़ के आना है ?”

“याद है । तभी तो बोला फिलहाल । नो ?”

“यस ।”

मोहिनी कार में सवार हुई और वहां से रुखसत हो गयी ।

“थापर साहब का मूड खराब है ।” - विवेक वर्मा बोला ।

“मुझे क्यों बता रहे हो ?” - सुनील शुष्क स्वर में बोला ।

“क्योंकि उसके खराब मूड की वजह तुम हो ।”

“मैं ?”

“तुम्हारा अखबार !”

“तो ?”

“समझदार को इशारा काफी होता है ।”

“मैं इतना समझदार नहीं । और इशारों वाली जुबान समझने का तो मुझे कतई कोई तजुर्बा नहीं ।”

वर्मा कुछ क्षण उसे घूमता रहा, फिर उसने एक गहरी सांस ली और दरवाजे को धकेलता हुआ बोला - “आओ ।”

सुनील उसके पीछे हो लीया ।

वो काटेज सुनील के जाने-पहचाने थे । उनमें से अधिकतर में एक बैडरूम और एक ड्राइंगरूम था और वो काटेज उसी प्रकार का था जिसके ड्राइंगरूम में एक सोफे पर श्री पीस सूट पहने जो आदमी पसरा पड़ा था, वो दिलीप थापर था । उसके सामने मेज पर विस्की को एक खुली बोतल रखी थी और हाथ में उसका आधा भरी गिलास था । उम्र में वो लगभग पैंतीस साल का था और उस घड़ी उसके चेहरे पर गहन अप्रसन्नता के भाव थे । उसके सामने अदब की मूर्ति बना एक पिट्टी-सा युवक खड़ा था और उससे पीछे उससे थोड़ा परे हटकर दो सूरत से ही मवाली लगने वाले आदमी हाथ बान्धे खड़े थे ।

“मिस्टर सुनील कुमार चक्रवर्ती ।” - वर्मा ने हौले से खांसकर घोषणा की ।

थापर ने सिर उठाकर एक सरसरी निगाह सुनील पर डाली और फिर अपने सामने खड़े युवक से बोला - “रामदेव, मैं तेरे से फिर बात करूंगा ।

सामने खड़े युवक का सिर सहमति में हिला ।

“कल दोपहर बाद मुझे फोन करना । अब मैं जरा बिजी हूँ इसलिये...”

युवक का सिर फिर सहमति में हिला, फिर उसने थापर का अभिवादन किया और सुनील की बगल से गुजरता हुआ वहां से बाहर निकल गया ।

“तुम भी जाओ ।” - थापर दादाओं से सम्बोधित हुआ - “बुलाने पर आना ।”

वो दोनों भी सहमति में सिर हिलाते हुए वहां से बाहर निकल गये । उनके पीछे काटेज का प्रवेशद्वार बंद हो गया ।

“बैठो ।” - थापर सुनील से बोला ।

सुनील उसके सामने एक सोफे पर बैठ गया ।

वर्मा टहलता हुआ दरवाजे के करीब चला गया और वहां दीवार के साथ पीठ लगाकर खड़ा हो गया ।

“तो” - थापर बोला - “तुम होते हो सुनील ?”

“हां ।” - सुनील निडर भाव से बोला ।

थापर ने सिर से पांव तक उसे निहारा और फिर बोला - “क्या चीज हो तुम ?”

“बहुत नायाब चीज हूँ । खांसी-जुकाम में मुफीद । घिसकर लगाने से सिरदर्द, कमरदर्द में भी आराम । ऐन मस्त-मस्त ।”

“सुना है बड़े जर्नलिस्ट हो ?”

“मैंने भी सुना है ।”

“दूसरे के फटे में टांग अड़ाने में खास दिलचस्पी रखते हो ?”

“है तो सही ऐसा ही कुछ-कुछ ।”

“अपने लिये ट्रिंक बना लो ।”

“नो, थैंक्स ।”

“क्यों ? पीते नहीं हो ?”

“पीता हूँ लेकिन दिन-दहाड़े नहीं पीता ।”

“अरे, अब कहां रखा है दिन-दहाड़ा ! खिड़की से बाहर झांककर देखो, सूरज डूब रहा है ।”

सुनील खामोश रहा ।

“ठीक है । मर्जी तुम्हारी । अब खुद ही बताओ हम क्या खिदमत करें तुम्हारी !”

“मिस्टर थापर ! मैं अपने मुकाम से पैंसठ मील दूर हूँ और कनवेंस के मामले में आप लोगों का मोहताज हूँ । मेरी बेहतरहीन खिदमत तो यही होगी कि मुलाहजों में वक्त जाया करने की जगह आप मतलब की बात पर आयें ताकि जितनी जल्दी हो सके, मैं यहां से फारिग हो पाऊँ ।”

“बड़े खुशक आदमी हो, यार ।”

सुनील ने एक नकली जमहाई ली, फिर उसने अपनी जेब से अपना लक्की स्ट्राइक का पैकेट निकाला, अपने विशिष्ट अन्दाज से उसे यूँ झटका कि एक सिगरेट आधा बाहर उछल आया ।

“अगर इजाजत हो तो...” - वो बोला ।

“हां, हां ।” - थापर बोला - “प्लीज, गो अहेड ।”

“आप लीजिये ।”

“भई, जब तुम्हें हमारी विस्की कबूल नहीं तो हम तुम्हारी सिगरेट कैसे कबूल कर सकते हैं ?”

“आप मजाक कर रहे हैं ?”

“हां ।”

“फिर कोई बात नहीं । फिर तो चलेगा ।”

सुनील ने सिगरेट सुलगा लिया और ढेर सारा धुआं उगलता हुआ बोला - “मैं सुन रहा हूँ ।”

“तुम सुन रहे हो !” - थापर भड़का - “तुम यहां कुछ सुनने आये हो या कुछ कहने आये हो ?”

“दोनों ही काम करने आया हूँ । पहले कुछ सुन लेता तो कुछ कहना ज्यादा आसान होता, ज्यादा मानीखेज होता ।”

“पहले कह ही लो । बल्कि यूँ कह लो कि कुछ कहना बाकी न रहे और फिर ये गिला न रहे कि कुछ कहा नहीं ।”

“ठीक है । मैं आप ही की राय पर अमल करता हूँ । सबसे पहले तो मैं यही कहना चाहता हूँ, बन्दानवाज, कि जिस काम का आगाज गुस्सा हो, उसका अंजाम शर्म होता है ।”

“ये तुम हमें सबक दे रहे हो ?” - वो फिर भड़का ।

“मैंने एक शाश्वत सत्य का वर्णन किया है, इससे कोई सबक लेता है या नहीं, ये उसकी अपनी मर्जी है ।”

“अखबारनवीसी के अलावा मंदिर में कथा भी करते हो ?”

“जी नहीं ।”

“तो फिर कथा छोड़ो और कोई ऐसी बात करो जिससे ये मुलाकात सार्थक होती लगे ।”

“ठीक है । तो फिर सबसे पहले मेरा सवाल आपकी माताजी की बाबत है जिन्हें सब लोग शायद चाई जी कहकर पुकारते हैं ।”

“कैसा सवाल ?”

“मेरी जानकारी ये कहती है कि हरिमोहन थापर का इकलौता बेटा प्रदीप थापर अपनी पत्नी समेत एक एक्सीडेंट में मारा गया था ?”

“तुम्हारी जानकारी गलत है । मेरी मां किसी एक्सीडेंट का शिकार नहीं हुई थी, वो भली-चंगी सही-सलामत मौजूद है और नार्थ शोर में मेरे साथ रहती है ।”

“जरूर रहती होगी लेकिन जिक्र आपकी मां का नहीं हरिमोहन थापर की बहू का, उसके इकलौते बेटे प्रदीप थापर की पत्नी का हो रहा था जो कि एक मोटर एक्सीडेंट में अपने पति के साथ मर गयी बतायी जाती है ।”

“अरे, मेरी मां और मेरे दादा हरिमोहन थापर की बहू कोई दो औरतें नहीं, एक ही औरत है । लाजवन्ती थापर । मेरी मां । मेरे पिता प्रदीप थापर की पत्नी । मेरे दादा हरिमोहन थापर की बहू ।”

“आप हरिमोहन थापर के पोते नहीं हैं । ऐसा कोई अकाट्य सबूत सामने नहीं आया है जो कि निर्विवाद रूप से ये साबित कर पाता कि आप ही हरिमोहन थापर की करोड़ों की सम्पत्ति के वो वारिस हैं जिसकी कि उन्हें अपनी जिन्दगी में और अपनी मौत के बाद भी तलाश थी । अब जब आप हरिमोहन थापर के पोते बन बैठे हैं तो आपकी मां का हरिमोहन थापर की बहू बन बैठना क्या बड़ी बात है ?”

“यानी कि वो ट्रस्टीगण बिल्कुल ही अक्ल के अन्धे थे जिन्होंने मुझे हरिमोहन थापर का वारिस कबूल किया था और उनकी करोड़ों की सम्पत्ति मुझे सौंप दी थी ?”

“ट्रस्टियों को बेवकूफ बनाया गया है । सुना है आपकी तलाश किसी ऐसे प्राइवेट डिटेक्टिव ने की थी जिसने पहले तो तलाश के सामने में हथियार डाल दिये थे और ट्रस्टियों को रिपोर्ट दे दी थी कि थापर साहब का वारिस तलाश करने में वो नाकाम रहा था लेकिन फिर जब तलाश की पांच साल की अवधि समाप्त होने में केवल दो महीने बाकी रह गये थे तो उसने एकाएक आपकी सूरत में थापर साहब का वारिस यूँ खड़ा कर दिया था जैसे कोई जादूगर हैट में से खरगोश निकालता है । यहां ये बात भी काबिले-गौर है कि जो काम वो प्राइवेट डिटेक्टिव तगड़ी फीस की एवज में नहीं कर सका था । वो बाद में उसने एक वालंटियर की तरह फोकट में किया था और...”

“मिस्टर रिपोर्टर, अहम बात ये नहीं है वो काम उसने कैसे किया था और क्यों किया था, अहम बात ये है कि उसने जो किया था माकूल किया था और वो ट्रस्टियों को कबूल हुआ था ।”

“मैं फिर कहता हूँ कि ट्रस्टियों को उल्लू बनाया गया था । ये सब उस प्राइवेट डिटेक्टिव की - जो कि अभी मैं नहीं जानता कि कौन था लेकिन जिसे मैं खोज के रहूँगा - और आपकी मिलीभगत थी । मिलीभगत थी एक विपुल धनराशि पर धोखे और बेईमानी के तरीकों से काबिज होने की और...”

“तुम शायद नहीं जानते कि ट्रस्टियों को बाकायदा ऐसे सबूत दिये गये थे जो ये साबित करते थे मैं हरिमोहन थापर का खोया हुआ पोता था और मेरी मां लाजवन्ती उनकी बहू थी और सही-सलामत इस दुनिया में मौजूद थी ।”

“मैं खूब जानता हूँ लेकिन साथ में ये भी जानता हूँ कि वो सबूत निहायत मामूली थे और कुछ ऐसी बातों की सूरत में थे जिन्हें कि ऐसा कोई भी शख्स जानता हो सकता था जो प्रदीप थापर और उसकी पत्नी की जिन्दगी में उसका करीबी रहा हो । आखिर वो दोनों कहीं किसी बियाबान जंगल में तो रहते नहीं रहे थे । और जिस समाज में भी वो रहते थे, उसमें किसी न किसी का उनके कदरन ज्यादा करीब आ जाना क्या बड़ी बात थी ! पास-पड़ोस में रहते लोगों में आपसी ताल्लुकात बन ही जाते हैं । औरतों में तो ऐसे ताल्लुकात दोस्ती से बढ़कर बहनापे की स्टेज तक पहुँच जाते हैं । जनाबेआली, मेरा दावा है कि आपकी मां - आई रिपीट आपकी मां, न कि हरिमोहन थापर की बहू - कभी प्रदीप थापर के पड़ोस में रहती थी, उसकी पत्नी से उसका तगड़ा मेलजोल था और वो मेलजोल ही उन बातों की जानकारी का साधन था जिन्हें कि बाद में अपने प्राइवेट डिटेक्टिव जोड़ीदार की मदद से आपने ट्रस्टियों के सामने कैश किया, अपने आपको हरिमोहन थापर का पोता और अपनी मां को उसके दिवंगत बेटे प्रदीप थापर की पत्नी स्थापित किया और यूँ उसकी करोड़ों ककी सम्पत्ति हथियायी ।”

“तुमने ये सब कहा और मैंने कबूल कर लिया ! ठीक ?”

“नहीं, आप तो यूँ कबूल करने वाले नहीं। आप तो अपनी जिन्दगी की आखिरी सांस तक ये जिद नहीं छोड़ेंगे कि हरिमोहन थापर के पोते आप ही हैं लेकिन आप भूल रहे हैं कि एक शख्स और भी है जो कि हकीकत से उतना ही वाकिफ है जितने कि आप, बल्कि आपसे ज्यादा।”

“कौन?”

“आपकी महतारी। चाई जी।”

“तुम मेरी मां से सवाल करोगे?”

“क्यों नहीं!”

“तुम्हें उनके पास भी नहीं फटकने जायेगा।”

“देखेंगे।”

“क्या देखेंगे?”

सुनील ने उत्तर दिया। उसने लापरवाही से सिगरेट का एक कश लगाया।

थापर ने विस्की की बोतल की तरह हाथ बढ़ाया और फिर वापिस खींच लिया। उसने बड़े अनमने भाव से हाथ में थमा खाली गिलास मेज पर रख दिया।

सुनील ने नोट किया कि थापर एकाएक बेचैनी से पहलू बदलने लगा था और बार-बार पनाह मांगती निगाहों से परे खड़े विवेक वर्मा की तरफ देखने लगा था।

“तुम क्यों चौधरी बन रहे हो?” - थापर फिर भड़का - “तुम्हारा इससे क्या लेना-देना है?”

“मैं एक खोजी पत्रकार हूँ।” - सुनील बोला - “और अपनी खोज को पब्लिक के सामने लाना मेरा फर्ज है।”

“आया बड़ा खोजी पत्रकार! ऐसा ही तीसमार खां है तो फिर असली वारिस को खोजकर क्यों नहीं दिखाता? उसे लाकर पब्लिक के सामने क्यों नहीं खड़ा करता ताकि सारी कहानी ही खत्म हो जाये।”

“अगर मैं ऐसा कर सका होता तो आप अपने तमाम हिमायतियों के साथ - जिनमें आपकी ‘चाईजी’ भी शामिल हैं क्योंकि उनकी भी फ्रोंड में बराबर की शिरकत है - जेल में बन्द होते।”

“मर गये साले हमें जेल पहुंचाने वाले! मैं फूंक के रख दूंगा तुम्हें और तुम्हारे अखबार को। सारी हेकड़ी निकाल दूंगा मैं तुम्हारी खोजी पत्रकारिता की! आया बड़ा खोजी पत्रकार! आया बड़ा...”

“थापर साहब!” - वर्मा चेतावनीभरे स्वर में बोला।

“क्या थापर साहब!”

“प्लीज काम डाउन। प्लीज। प्लीज!”

“लेकिन ये साला...”

“यहां मेहमान है। आपके खुद के बुलावे पर आया है।”

तब थापर ने बड़ी शिद्दत से अपने आप पर काबू पाया।

“शायद ये” - वर्मा धीरे से बोला - “अपनी खोज की किसी कीमत का तलबगार हो।”

तत्काल थापर के चेहरे पर ऐसे भाव आये जैसे वो बात उसे बहुत जंची हो।

“ये बात ?” - वो बोला ।

“हां ।” - वर्मा बोला ।

“फिर क्या प्रॉब्लम है ! बोल, भई” - वो फिर सुनील से सम्बोधित हुआ - “क्या चाहता है तू ! क्या कीमत है तेरी ? अपने मुंह से उस रकम का नाम ले जिसका तू तलबगार है । मैं तुझे उसका सवाया देकर यहां से रुखसत करूंगा ।”

“मेरी कलम बिकाऊ नहीं ।” - सुनील शुष्क स्वर में बोला - “ब्लास्ट’ की आवाज बिकाऊ नहीं ।”

“हर चीज की कीमत होती है । बोल क्या चाहता है ? नाम ले किसी रकम का ?”

“आपके पास कितनी रकम है ?”

“अच्छा ! इतनी औकात है तेरी !”

“मेरी औकात अभी क्या मालूम आपको ! अभी तो मैं आपकी औकात का जायजा लेने की कोशिश कर रहा हूं ।”

“तू मेरी औकात भी देखेगा और मेरी ताकत भी देखेगा । फिर कभी नहीं, अभी देखेगा । मुझे यही पता लगा था कि ढिठाई के मामले में तू खच्चर को भी मात कर सकता है इसलिये तेरी आवाज का - जो कि बिकाऊ नहीं - तिया-पांचा एक करने का, तेरी बोलती बन्द करने का मैंने पहले ही इन्तजाम कर लिया था ।”

“क्या मतलब ?”

“मैं अभी यहीं से तेरे सामने तेरे चीफ एडिटर मलिक को फोन करूंगा कि उसका सुनील नाम का जो रिपोर्टर मेरे से मिलने मेरी कोठी पर आने वाला था, वो अभी तक पहुंचा क्यों नहीं !”

“जी !”

“तू अपने दफ्तर से रवाना हुआ लेकिन नार्थ शोर न पहुंचा, ये क्या मेरी खता है ? बोल, बेटा ?”

“क्या मर्जी है तुम्हारी ?”

“मर्जी नहीं समझता ! वैसे उतना होशियार बन के दिखाता है ! जब तेरी लाश, बमय तेरी मोटर साइकल नार्थ शोर ने सुनसान रास्ते पर कुचली पड़ी पायी जायेगी तो कौन होगा ये कहने वाला कि अपनी मौत से पहले तू यहां भी आया था ? कौन जानता है तेरी यहां आमद की बाबत ?”

“वो- वो लड़की... मोहनी... मोहनी मेहरा... वो...”

“वो लड़की ‘कोई’ लड़की नहीं, मेरी साली है । मेरी बीवी की सगी बहन ! और ये वर्मा मेरा भाइयों जैसा दोस्त है । जो दो दादे अभी यहां से गये हैं, वो मेरे पालतू कुत्ते हैं । वो वही देखते हैं जो मैं उन्हें देखने को कहता हूं, वही सुनते हैं जो मैं उन्हें सुनने को बोलता हूं । क्या समझा ?”

“तुम मेरा कत्ल करने का इरादा रखते हो ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है ?”

“कत्ल से तुम मेरी आवाज बन्द कर सकते हो, ‘ब्लास्ट’ की आवाज नहीं बन्द कर सकते ।”

“वो भी देखेंगे । पहले उस कुत्ते से तो निपट लें जो सबसे ऊंचा भौंक रहा है ।”

“वो आदमी, जो अभी यहां से गया है, जिसे आप रामदेव के नाम से पुकार रहे थे, वो...”

“वो तुझे नहीं जानता ।”

“अब नहीं जानता लेकिन तब यकीनन जान जायेगा जब कि मेरे कत्ल की खबर आम होगी ।”

“क्या मतलब ?”

“तब उसे ये याद आ जाना मामूली बात होगा कि जिस शख्स की नार्थ शोर वाली सड़क पर दुर्घटना से मौत हुई बताई जा रही थी और जो बकौल आपके आपसे मुलाकात के लिये आप तक पहुंच ही नहीं पाया था, उसे उसने यहां झेरी में आपके दरबार में देखा था।”

थापर के नेत्र सिकुड़े।

“कोई बात नहीं” - फिर वो बोला - “अब सिर्फ इतना फर्क पड़ेगा कि तेरे यूं मुंह फाड़ने का सिला रामदेव को भुगतना पड़ेगा। क्या समझा ?”

“आप यूं दो-दो कत्ल करा के बच नहीं सकते ?”

“अरे, कैसे कत्ल ? कहां के कत्ल ? क्या आज जक ट्रक के नीचे आकर कोई नहीं मरा ? क्या आज तक झेरी की झील में डूबकर कोई नहीं मरा ? रामदेव बेचारे को तो तैरना भी नहीं आता।”

सुनील खामोश रहा। उसने बेचैनी से पहलू बदला। सबसे ज्यादा हैरानी उसे इसी बात की हो रही थी कि वो मोहिनी नाम की नन्हीं-सी लड़की इतने बड़े षड्यन्त्र में शामिल थी।

“अब क्या कहता है ?” - थापर की कर्कश आवाज उसके कानों में पड़ी।

“मैं मरने से नहीं डरता।” - सुनील निडर भाव से बोला।

“जीने का इच्छुक भी नहीं मालूम होता। खुदकुशी का ख्वाहिशमन्द मालूम होता है। मैं करता हूं तेरी ख्वाहिश पूरी करने का इन्तजाम।”

“ऐसी धमकियां मुझे बहुत लोगों ने बहुत बार दी हैं। ऐसे तमाम के तमाम लोग या तो जन्नतनशीन हो चुके हैं या जेल में चक्की पीस रहे हैं।”

थापर ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। वो जोर से चिल्लाया - “चित्रे ! हुक्मी !”

काटेज का प्रवेश द्वार खुला और दादों ने भीतर कदम रखा। एक ने अपने पीछे दरवाजा बन्द कर दिया।

“साहब ने” - थापर विषभरे स्वर में बोला - “हमारी विस्की तो कबूल की नहीं। इनकी कोई और सेवा करो।”

दोनों के सिर सहमति में हिले। वो दृढ़ कदमों से सुनील की ओर बढ़े।

सुनील ने अपना सिगरेट मेज पर फेंक और उछलकर खड़ा हो गया।

दोनों दादों ने बेमिसाल फुर्ती का परिचय दिया। वे बाज की तरह सुनील पर झपटे। एक ने उसकी बांहें जकड़ लीं और उन्हें पीछे मरोड़कर उसकी पीठ लगा दिया, दूसरा ताबड़तोड़ उसके चेहरे पर और उसके जिस्म के विभिन्न भागों पर घूंसे जमाने लगा।

सुनील की चेतना लुप्त हो गयी।

उसे होश आया तो उसने स्वयं को एक पलंग पर पड़े पाया। उसने उठने की कोशिश की तो पाया कि ऐसा हो पाना असम्भव था। उसके हाथ-पांव मजबूती से पलंग के चारों कोनों में बन्धे हुए थे और वो यूं पलंग पर चित पड़ा था कि उसके शरीर ने एक ‘एक्स’ की सूरत अख्तियार कर ली थी। उसके जिस्म पर उसके अन्डवियर के अलावा कोई कपड़ा नहीं था।

तभी बीच का दरवाजा खुला और थापर ने भीतर कदम रखा।

“जाग गये ?” - वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

सुनील खामोश रहा।

“मैं होटल लेक व्यू में जा रहा हूँ जहाँ कि कैसीनो में मेरी हाजिरी जरूरी है। मैंने तुम्हारा लिहाज किया है जो कि मैं तुम्हारा काम तमाम कर के ही यहाँ से रुखसत नहीं हो रहा। मैं दो-ढाई घन्टे में लौटूंगा, तब तक सोच रखना कि तुम जिन्दा रहना चाहते हो या कुत्ते की मौत मरना चाहते हो।”

“जिल्लत की जिन्दगी से मौत कहीं बेहतर होती है।” - सुनील बोला - “और फिर मौत तो जिन्दगी का आखिरी अंजाम है, मौत से डरना अहमकों का काम है।”

“मेरे भाई, जिन्दगी तुमने देखी है, मौत नहीं देखी, इसलिये ऐसी कोई तुलना करना अमली नहीं किताबी बात होगी। तुम्हारे पास वक्त है सोच-विचार करने का। उसका माकूल इस्तेमाल करना। ओके।”

“तुम चाहते क्या हो?”

“ये अभी बताना पड़ेगा? मैं चाहता हूँ कि मेरे ताल्लुक रखती स्टोरी को तुम ‘किल’ कर दो। हमेशा के लिये।”

“यानी कि तुम कबूत करते हो तुम हरिमोहन थापर के पोते नहीं हो? तुम नकली वारिस हो?”

“मेरे कबूल करने या न करने से तुम्हारे ख्यालात में कोई तब्दीली नहीं आने वाली। इसलिये इस बात को बहस का मुद्दा बनाये रखना बेवकूफी है। मेरी बाबत स्टोरी किल करने का रिवाज दौलत की सूरत में तुम्हें कबूल नहीं हुआ। मैं तुम्हें दौलत से कहीं बड़े रिवाज की पेशकश कर रहा हूँ। मैं तुम्हें जिन्दगी का रिवाज दे रहा हूँ। जान है तो जहान है, मेरे भाई। सोचना इस बाबत। वक्त है तुम्हारे पास।”

“अगर मैं कहूँ कि भविष्य में ‘ब्लास्ट’ में तुम्हारे बारे में कुछ नहीं छपेगा तो तुम मुझे छोड़ दोगे?”

“यकीनन!”

“तुम्हें ऐसा कोई अन्देशा नहीं कि मैं मुकर जाऊंगा?”

“तुम्हारी जगह कोई और होता तो ये अन्देशा मुझे जरूर होता। अन्देशा क्या, मैं ये मान के ही चलता कि अपनी जान बचाने की खातिर ऐसी हालत में फंसा शख्स मुकर सकता है। लेकिन कुछ बातों में तुम्हारे बारे में मैंने बहुत अच्छा-अच्छा सुना है। सुना है कि तुम जुबान से फिरने वाले आदमी नहीं हो।”

“जुबान आदमी की नीयत और उसकी औकात जानकर दी जाती है। मैं फिर भी जुबान से फिर गया तो?”

“तो क्या होगा? तो फिर पकड़ मंगाएँगे। भौंक तो रहे ही हो। तब जरा ज्यादा भौंक लोगे।”

“हूँ।”

“तुम मेरा पीछा छोड़ने का वादा करो, मैं अभी तुम्हें आजाद कर देता हूँ।”

सुनील खामोश रहा।

“यानी कि अभी सोचोगे! अभी क्या आखिरी घड़ी तक सोचोगे। कोई बात नहीं, सोच लो। वक्त है तुम्हारे पास। और” - वो एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “मेरे पास भी। क्या?”

सुनील ने उत्तर न दिया।

“तुमने एक बात नोट की होगी” - थापर बोला - “कि जैसे तुम्हारे हाथ-पांव बन्धे हुए हैं, वैसे तुम्हारा मुंह नहीं बन्धा हुआ। वजह जानते हो या मैं बताऊँ?”

“तुम्हीं बताओ।”

“तुमने नोट किया होगा कि ये काटेज काटेजों की कतार में एकदम कोने पर है। तुम गला फाड़-फाड़कर भी चिल्लाओगे तो अव्वल तो तुम्हारी आवाज बाहर तक पहुंचेगा ही नहीं, पहुंचेगा तो बाहर उसे सुनने वाला कोई नहीं होगा। सूरज ढलते ही झील का ये पहलू उजाड़ हो जाता है, अब तो बाकायदा रात पड़ चुकी है। कहने का मतलब ये है कि मेरी गैरहाजिरी में बेशक गला फाड़-फाड़ के मदद के लिये गुहार करना, मेरी तरफ से तुम्हें खुली छूट है। रिहर्सल करना चाहो तो अभी मेरे सामने कर लो। मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं।”

सुनील ने वैसी कोई कोशिश न की ।

“अब मैं इस दुआ के साथ यहां से रुखसत होता हूं कि भगवान तुम्हें सुबुद्धि दे । दसक बजे तक फिर मुलाकात होगी । बशर्ते कि तब तक तुम दहशत से ही न मर गये ।”

वो बड़े विद्रूपपूर्ण ढंग से अभिवादन में हाथ हिलाता वहां से रुखसत हो गया ।

पीछे सुनील खामोशी से अपने बन्धनों से जोर आजमायश करता रहा ।

बाहर से एकाएक दरवाजा खुलने और बन्द होने की आवाज आयी तो सुनील अपनी ऊँघ से उबरा ।

बन्धनमुक्त होने की कोशिश से हारकर पता नहीं कब वो नींद के हवाले हो गया था ! पता नहीं कब से वो वहां बंधा पड़ा था !

बाहर फर्श पर से हाई हील की सैंडलों की ठक-ठक की आवाज आयी ।

कौन था बाहर ड्राइंगरूम में ?

क्या मोहिनी ! थापर की साली !

एक कुर्सी घसीटे जाने की हल्की-सी आवाज !

सुनील के कान खड़े हो गये ।

किसी औरत के हौले-हौले सुबकने की आवाज !

कौन थी वो जो बाहर ड्राइंगरूम में बैठी रो रही थी ?

मोहिनी तो नहीं हो सकती थी ! वो तो यूं रोने-धोने वाली लड़की नहीं मालूम होती थी !

बहरहार बाहर जो कोई भी था, उसे ये नहीं मालूम था कि काटेज में कोई और भी मौजूद था । उसे नहीं मालूम था कि बैडरूम में - जहां कि किसी भी क्षण उसके कदम पड़ सकते थे - कर्टसी दिलीप थापर, कोई बंधा पड़ा था ।

सुबकने की आवाजें मुतवातर आती रहीं ।

क्या माजरा था ?

एक बार फिर प्रवेशद्वार खुलने और बन्द होने की आवाज हुई । तत्काल उसे रुआंसा स्त्री स्वर सुनाई दिया ।

“विकी !”

विकी ! कौन था विकी ?

“कीर्ति !” - एक आन्दोलित पुरुष स्वर सुनाई दिया - “रो क्यों रही है ? क्या हो गया ? अब क्या किया उसने ? फिर हाथ तो नहीं उठाया तुम्हारे पर ?”

“तुम यहां क्यों चले आये ?” - स्त्री स्वर फिर सुनायी दिया - “तुम्हें हरगिज भी यहां नहीं आना चाहिये था । किसी ने देख लिया तो ?”

“कोई नहीं देखता ।”

“किसी ने पहले ही देख लिया हुआ तो ?”

“किसी ने नहीं देखा । मैं बोट से आया हूं । झील के रास्ते ।”

“लेकिन आये क्यों ?”

“क्योंकि मैंने झील वाले रेस्टोरेंट से तुझे अकेले उधर आते देखा था । मैं रोक न सका अपने आपको ।”

तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये था ।”

“बोला न मैं नहीं रोक सका था अपने आपको । मेरी जान, जब मुझे पता था कि तू यहां अकेली थी तो फिर क्यों कर रोक पाता अपने आपको ?”

“लेकिन...”

“लेकिन-वेकिन कुछ नहीं । अब मेरे कलेजे से लग जा ।”

कुर्सी सरकाई जाने की आवाज फिर हुई । फिर ऊंह-आंह की आवाजें आने लगीं, पुच-पुच की आवाजें आने लगीं जिससे लगता था कि बाहर चुम्बनों का आदान-प्रदान हो रहा था ।

“अब छोड़ दो ।” - कीर्ति की भर्राई आवाज आयी - “वरना मैं पागल हो जाऊंगी ।”

“मैं तुम्हारे साथ पागल हो जाऊंगा ।”

“तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये था ।”

“फिर वही बात !”

“कोई आ गया तो ?”

“कोई नहीं आता । कौन आयेगा ? सब तो इस वक्त कैसीनो में हाजिरी भर रहे होंगे ।”

“फिर भी...”

“अब तुम कब तलाक लोगी थापर से ?”

तलाक ! थापर से ! - सुनील ने सोचा - यानी कि बाहर मौजूद औरत - कीर्ति - दिलीप थापर की बीवी थी ।

“पता नहीं ।” - कीर्ति बोली ।

“क्यों पता नहीं ? क्या इस बाबत तब कदम उठाओगे जब कि वो नीमपागल आदमी, वो राक्षस, वो शैतान तुम्हें भी अपने जैसा बना देगा !”

“मैं क्या करूं ?”

“तुम न करो तो और कौन करे ? तुम जानती हो तुम्हें उस शख्स से कतई कोई लगाव नहीं है, कतई कोई मुहब्बत नहीं है ।”

“वो तो है लेकिन...”

“तुम मुझसे मुहब्बत करती हो ? करती हो न ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है ?”

“पूछने की बात है । तुम मुझसे मुहब्बत करती हो न ? हां या न में साफ जवाब दो ।”

“हां । हां । हां ।”

“तो किनारा करो उस शैतान से । फौरन छोड़ दो उसे । और मेरे से शादी कर लो ।”

“काम इतना आसान नहीं । तलाक होते-होते होता है । तलाक होगा तो शादी होगी न ?”

“मैं शादी के लिये इन्तजार कर सकता हूं लेकिन तुम उससे पीछा तो छोड़ाओ ।”

“पीछा छुड़ाकर क्या करूँ ?”

“मेरे पास आकर रहो । मेरे से अब और इन्तजार नहीं होता । तुम्हें पाने के लिये मुझे अब और इन्तजार करना पड़ा तो मैं पागल हो जाऊंगा ।”

“धीरज, थोड़ा धीरज...”

“कई बार जी चाहता है कि यहां से कहीं दूर चला जाऊं और फिर तुम्हें भूल जाने की कोशिश करूँ ।”

“विकी !”

“तुम जानती हो कि असल में मैं ऐसा नहीं कर सकता ।” - जोरदार चुम्बन । ठहाका - “मैं तो मजाक कर रहा था ।”

“खबरदार जो दोबारा कभी ऐसा डरावना मजाक किया ।”

“कबूल, मेरी जान । तुम्हारा हुक्म सिर-माथे लेकिन इतना तो तुम समझती हो न कि...”

विकी नाम के वो व्यक्ति एकाएक बोलता-बोलता रुक गया ।

काटेज दरवाजे बाहर से भारी कदमों की आवाज आ रही थी ।

फिर दरवाजे पर दस्तक पड़ी ।

कीर्ति के मुंह से एक भयभरी सिसकारी निकली ।

कुछ क्षण ड्राइंगरूम में बड़ी व्यग्र खुसर-पुसर हुई, फिर वही हुआ जो कि उन हालात में होना सम्भव था ।

बीच का दरवाजा हौले से खुला और एक व्यक्ति ने भीतर कदम रखा । उसने अपने पीछे धीरे से दरवाजा बन्द किया और कान लगाकर सुनने लगा । पलंग की तरफ अभी तरफ अभी उसकी तवज्जो नहीं गयी थी ।

सुनील ने देखा कि वो उसी की उम्र का एक निहायत खूबसूरत नौजवान था जो कि एक शानदार नीला सूट पहने था और सफेद कमीज पर उससे मैच करती टाई लगाये था ।

बाहर से प्रवेशद्वार खुलने और बन्द होने की आवाज आयी भीरी कदमों की आवाज अब काटेज के भीतर ड्राइंगरूम से आ रही थी ।

युवक सांस रोके दरवाजे से सटा खड़ा था ।

“नमस्ते !” - सुनील बोला ।

युवक यूँ चिहुंका जैसे उसे बिच्छू ने काट खाया हो । उसने घूमकर सामने देखा तो आश्चर्य और आतंक से उसके नेत्र फट पड़े ।

“क... क... कौन ?” - बड़ी कठिनाई से उसके मुंह से निकला ।

“तुम विकी हो !” - सुनील बोला - “थापर की बीवी के यार !”

“श-श” - युवक घबराकर बोला और लपकता हुआ उसके करीब आया - “धीरे । धीरे ।”

“बाहर थापर की बीवी है ?” - सुनील फुसफुसाया ।

“हां ।”

“तुम उसके यार हो ?”

“जरा सम्य भाषा बोलो, यार ।”

“तुम्हारा थापर की बीवी से अफेयर है ?”

उसने उत्तर न दिया ।

“जवाब नहीं दोगे तो यही सवाल मैं चिल्लाकर पूछूंगा ।”

“न-न ।” - वो आतंकित भाव से बोला - “ऐसा न करना ।”

“तो जवाब दो ।”

“हां ।”

“क्या हां ?”

“मैं कीर्ति को दिलोजान से चाहता हूं । मैं उससे सच्चा प्यार करता हूं ।”

“थापर को खबर लग गयी तो ?”

“तो वो मेरी कल्ल करवा देगा । बल्कि अपने हाथों से सुझे शूट कर देगा ।”

“अगर बाहर थापर आया हुआ हुआ तो तुम्हारी तो खैर नहीं, प्यारेलाल...”

“मेरा नाम प्यारेलाल नहीं, विकी है ।”

“...तो तुम्हारा पुलन्दा तो बन्धे की बन्धे ।”

“श-श ।”

“विवेक !” - बाहर से कीर्ति की आवाज आयी - “कैसे आये ?”

“मैंने तुम्हें झील वाले रेस्टोरेंट में नहीं पाया” - बाहर से विवेक वर्मा की आवाज आयी - “तो मुझे यही अन्देशा हुआ कि तुम कहीं यहां न आ गयी हो !”

“यहां न आ गयी होऊं ? क्या मतलब ? यहां आने पर पाबन्दी है ?”

“नहीं तो ।” - वर्मा तनिक हंसा - “तुम जानती हो कि थापर साहब ने आज ये केबिन किराये पर लिया ही तुम लेडीज की सुविधा और आराम के लिये था । लेकिन वो क्या है कि इस वक्त केबिन खाली नहीं है । मैं दौड़ा चला यहां ।”

“खाली नहीं है । कौन है यहां ?”

“थापर साहब का एक खास मेहमान ।”

“कहां है ?”

“भीतर बैडरूम में ।”

“हे भगवान ? अगर वो बाहर आ जाता तो ?”

“नहीं, वो बाहर नहीं आता । भला आदमी है ।”

“मैं भीतर चली जाती तो ?”

“तो अच्छा न होता । इसी बात का मुझे अन्देशा था । तभी तो दौड़ा आया ।”

“क्या माजरा है ?”

“तुम गर्यीं तो नहीं भीतर बैडरूम ?”

“नहीं, अभी तक तो नहीं गयी ।”

“शुक्र है ।”

“क्यों शुक्र है ?”

“तुम नहीं समझोगी । मैं... मैं जरा देखता हूँ उसे ।”

तत्काल बीच के दरवाजे की ओर बढ़ते भारी कदमों की आवाज आने लगी ।

आतंकित युवक दरवाजे के पहलू में दीवार के साथ चिपक गया ।

दरवाजा थोड़ा-सा खुला ।

सुनील ने आखें बन्द कर लीं और हौले-हौले खरटि भरने लगा ।

एक हल्की-सी आवाज के साथ दरवाजा फिर बन्द हो गया ।

सुनील ने आंखें खोलीं । उसने युवक को चैन की एक मील लम्बी सांस लेते देखा ।

“इधर आओ ।” - सुनील हौले-से बोला ।

“क्या ?”

“सुना नहीं ?”

वो पलंग के करीब पुहंचा ।

“अरे !” - उसके मुंह से सिसकारी निकली - “तुम तो बहुत घायल हो ! तुम्हारी नाक से खून बह रहा है ! कनपटी भी फूटी हुई है !”

“मेरे बन्धन खोलो ।”

“लेकिन तुम हो कौन और यहां क्यों बन्धे पड़े हो ?”

“गले-गुलजार, अगर विवेक वर्मा को तुम्हारी यहां मौजूदगी की खबर लग गयी तो वो क्या करेगा ?”

“वो जो करेगा, बुरा करेगा । मेरे लिये तो वर्मा को मेरी खबर लगना या थापर को मेरी खबर लगना एक ही बात है ।”

“यानी कि तुम्हारा पुलन्दा तो बन्धे ही बन्धे !”

“अगर पुलन्दे का वही मतलब है जो मैं समझ रह हूँ तो हां ।”

“वही मतलब है । तो मैं पुकारूँ वर्मा को नाम ले के ? आवाज दूँ उसे ?”

“नहीं, नहीं । हरगिज नहीं ।”

“तो मेरे बन्धन खोलो ।”

युवक पलंग पर बैठ गया और सुनील की एक कलाई से बंधी रस्सी टटोलने लगा ।

“दैट्स लाइक एक गुड ब्वाय ।” - सुनील प्रोत्साहन-भरे स्वर में बोला ।

“आओ चलो अब ।” - बाहर से वर्मा की आवाज आयी ।

“कहां ?” - कीर्ति सकपकाई-सी बोली ।

“कैसीनो में । और कहा ? जाना नहीं है क्या ?”

“जाना है ।”

“तो चलो, मैं ले के चलता हूँ । यहां क्या करोगी ?”

“कुछ नहीं ।”

“तो चलो ।”

“ठीक है ।”

दोनों के वहां से रुखसत होने की आवाजें बैडरूम तक पहुंचीं ।

युवक की जान में जान आयी ।

“ये न समझना” - सुनील चेतावनी-भरे स्वर में बोला - “कि अब तुम अपना मौजूदा काम बीच में ही छोड़कर भाग खड़े होवोगे । कैसीनो से निपटकर थापर ने यहां आना है । मैं तब भी तुम्हारी पोल खोल सकता हूँ ।”

“मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं ।” - युवक दबे स्वर में बोला ।

“गुड । अब जरा जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ ।”

“जरूर । तुमने... तुमने सब सुना था ?”

“क्या सब ?”

“वही जो बाहर मेरे और कीर्ति के बीच में गुजरा ?”

“कैसे न सुनता ? कानों में उंगलियां डाल लेता ! वो भी करता तो कैसे करता ? हाथ तो मेरे बन्धे हुए हैं ।”

“ओह !”

“वैसे एक बात है ।”

“क्या ?”

“चुम्बन बड़े चटकारे के साथ लेते हो । साउन्ड इफैक्ट्स के साथ । चटाक ! पटाक ! खटाक ! दि वर्क्स !”

वो बड़े धूर्त भाव से मुस्कराया ।

“सुनो ।” - तत्काल वो फिर संजीदा हुआ - “तुम किसी को कहोगे तो नहीं ?”

“तुम्हारे कीर्ति से लव अफेयर की बाबत ?”

“हां ।”

“अभी सीक्रेट है ये ?”

“हां । अभी कोई नहीं जानता इस बाबत ।”

“कीर्ति की बहनें भी नहीं ?”

“नहीं ।”

“बहनों में ऐसे राज अक्सर सांझे होते हैं ।”

“वो नहीं जानतीं ।”

“तम्हें क्या मालूम ?”

“चलो यूँ कह लो कि वो मेरे बताये नहीं जानतीं ।”

“ऐसा क्यों कर हुआ कि दो नौजवान कुंवारी बहनों के होते तुमने दिल लगाया तो शादीशुदा बहन से ?”

“दिल की बात है ।”

“कहीं ये तो नहीं सोच रहे हो कि मूलधन पर काबिज हो जाओगे तो सूद अपने आप ही वसूल हो जायेगा ?”

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं । मैं कीर्ति को और सिर्फ कीर्ति को चाहता हूँ । सच्चे दिल से । उसकी बहनों का तो मैंने कभी ख्याल तक नहीं किया ।”

“जानकर खुशी हुई ।”

“तुम अपनी जुबान बन्द रखोगे न ?”

“हां ।”

“वादा ?”

“पक्का ।”

“शुक्रिया । शुक्रिया !” - वो एकाएक पलंग पर से उठ खड़ा हुआ - “मैंने तुम्हारा दायां हाथ खोल दिया है । अब बाकी के बन्धन तुम खुद खोल लेना ।”

“क्या मतलब ?” - सुनील आंखें निकालता हुआ बोला ।

“मुझे यहां एक पल भी फालतू ठहरने से दहशत हो रही है । मुझे जाने दो । तुम्हारा अहम काम मैंने कर दिया है । बाकी खुद कर लेना । प्लीज ।”

“अच्छी बात है ।”

“शुक्रिया । अपना वादा याद रखना । किसी को कुछ न बताना । खास तौर से थापर को । मैं ताजिन्दगी तुम्हारा अहसानमन्द रहूंगा । ओके ?”

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

वो फौरन वहां से रुखसत हो गया ।

तब सुनील ने अपने-आपको आजाद करने के अहम काम की ओर तवज्जो देना शुरू किया । फौरन उसे अहसास हुआ कि उसका दायां हाथ आजाद हो जाने के बाद भी हरकत में लाने के काबिल नहीं था । कितनी ही देर बन्धा कहने की वजह से उसमें खून का दौरा सामान्य तरीके से नहीं हो रहा था ।

कितनी ही देर वो उस हाथ की मुट्ठी को खोलता-भींचता रहा तो उंगलियां कुछ थाम पाने के, कोई जोर सहने के काबिल हुईं । तब सबसे पहले उसने अपने बायें हाथ पर बन्धी रस्सी को खोलने की कोशिश की ।

काम उसकी उम्मीद से कहीं ज्यादा जटिल निकला ।

दूसरा हाथ खोलने में उसे कम-से-कम पन्द्रह मिनट लगे ।

दोनों हाथ आजाद हो जाने के बाद पैरों के बन्धन खोलना कोई मुश्किल काम न निकला ।

उसने उठकर अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश की तो वापिस पंलग पर ढेर हो गया । उसने अपने दोनों पांव पलंग पर समेट लिये और अपने हाथों से बारी-बारी उन्हें मसलने लगा ।

अगली बार पोर-पोर दुखते अपने जिस्म को सहलाता वो उठकर खड़ा हुआ तो उसने पाया कि अब उसके पांव उसके जिस्म का बोझ सम्भाल सकते थे ।

अब उसे अपने कपड़ों की तलाश थी ।

जो कि उसे बैडरूम में कहीं न मिले ।

न वहां की इकलौती वार्डरोब में, न सम्बद्ध बाथरूम में, न कहीं और ।

तभी एकाएक काटेज का बाहरला दरवाजा खुलने और बन्द होने की आहट फिर हुई ।

सुनील सकपकाया ।

अब कौन आ गया !

बाहर फर्श पर जनाना सैंडिलों की खट-खट की आवाज हुई ।

कोई औरत ! फिर !

फिर बीच के दरवाजे की ओर बढ़ते कदम ।

सुनील ने पलंग पर से एक चादर खींच ली और तहमद की तरह उसे अपनी कमर के गिर्द लपेट लिया ।

फिर वो दरवाजे की ओट लेने को लपका ।

लेकिन दरवाजा पहले ही खुल गया । चौखट पर एक युवती प्रकट हुई, उसकी निगाह सुनील पर पड़ी तो उसके नेत्र फैले । पहले सुनील को यूँ लगा कि जैसे वो चिल्लाने लगी हो लेकिन फिर वो सम्भल गयी और कदरन सुसंयत स्वर में बोली - “हल्लो ! हू आर यू ?”

सुनील ने देखा कि उसके बाल लड़कों की तरह कटे हुए थे, वो एक काली स्कीवी और डेनिम की नीली जीन्स-जैकेट पहने थी, कद-काठ उसका मोहिनी जैसा था, किसी हद तक नयन-नक्श भी मिलते थे, अलबत्ता वो मोहिनी जितनी हसीन और जवान नहीं थी । मोहिनी के मुकाबले में वो उम्र में छः-सात साल बड़ी थी और वो मोहिनी जितनी उच्छृंखल नहीं लग रही थी ।

“कौन हो, भई, तुम ?” - इस बार वो सख्ती से बोली - “और यहां क्या कर रहे हो ?”

“मैं” - सुनील बोला - “थापर साहब का मेहमान हूँ ।”

“मेहमान हो ?”

“हां ।”

“तो यहां क्या कर रहे हो ? थापर साहब के साथ क्यों नहीं हो ? आज तो इलाके का हर नामलेवा शख्स, कैसीनो के उदघाटन समारोह में शामिल है ।”

“तुम भी तो वहां नहीं हो, तूफाने-हमदम !”

“कौन-सी हमदम ?”

“हमदम ।”

“वो क्या होता है ?”

“विलायत से आयी हो ? इम्पोर्टिड हो ?”

“थापर साहब के मेहमान हो, इसीलिये हो, इसीलिये तुम्हारी ऐसी अभद्र भाषा बोलने की मजाल हो रही है ।”

“सॉरी !”

“तुम्हारा सिर-माथा क्यों फूटा हुआ है ?”

“बाथरूम से निकल रहा था कि ठोकर खा गया । मुंह के बल गिरा ।”

“कपड़े कहां हैं ? बाथरूम में ?”

“नहीं ।”

“तो ?”

“चोरी हो गये ।”

“बड़ी रहस्यमयी बातें कर रहे हो !” - वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - “हो कौन तुम ?”

“बन्दे को सुनील कहते हैं ।”

“सुनील !”

“कुमार चक्रवर्ती । नाम से वाकिफ मालूम होती हो ?”

“खामखाह !”

“चलो खामखाह ही सही । तुम कौन हो ? ...या ठहरो, मुझे बताने दो । तुम थापर की साली हो । नमिता । ठीक ?”

“कैसे जाना ?”

“अन्दाजा लगाया ।”

“अन्दाजा लगाया या तुक्का लगाया ?”

“तुक्का भी अन्दाजा ही होता है ।”

“घायल वाकेई ठोकर खा के गिरने से हुए हो ?”

“ब्राइट आइज, मैं इस बात का सच्चा जवाब दूंगा तो तुम्हारे जीजाजी की छवि धूमिल होगी ।”

“उंह !” - वो मुंह बिचकाकर बोली - “वैसे कौन-सी बड़ी उज्ज्वल छवि है उसकी ! ब्लडी वाइफ बीटर । सिस्टर-इन-लॉ मोलेस्टर ।”

“ऐसा है तुम्हारा जीजा !”

“इससे भी खराब । किसी दिन कोई उसका खून ही कर देगा तो हेकड़ी निकलेगी सारी । सीधे-सीधे तो सीधा होने वाला है नहीं दिलीप थापर ।”

“बहुत दुश्मन हैं उसके ?”

“अब तो बहुत से एक ज्यादा ।”

“एक ज्यादा ?”

“तुम ! मेरी गारन्टी है कि तुम्हारी मौजूदा हालत की भी वो ही वजह है ।”

“जानेबहार, तुम तो अन्तर्यामी हो ।”

“इतना मामूली नतीजा निकालने के लिये अन्तर्यामी होना जरूरी नहीं होता । पलंग पर फैली रस्सियां बता रही हैं कि तुम यहां बन्धे हुए थे । आजाद कैसे हुए ?”

“एक खुदाई फरिश्ता, एक सखी हातिम अपना रोजाना का सद्कार्य करने के लिये घर से निकला तो मेरी खुशकिस्मती से इधर से गुजरा । उसके खाते में एक सद्कार्य दर्ज हो गया । मेरे बन्धन खुल गये । उसका भी काम हो गया । मेरा भी काम हो गया ।”

“थापर साहब ने ऐसा क्यों किया ?”

“मेरी ही खातिर किया ।”

“क्या मतलब ?”

“बहुत सोच-विचार के बाद वो इस नतीजे पर पहुंचे थे कि मेरे चेहरे से मेरी नाक का तालमेल ठीक नहीं बैठता था इसलिये उन्होंने मेरी नाक की मरम्मत करा दी ।”

“मजाक मत करो । क्या अदावत है तुम्हारी थापर साहब से ?”

“मेरी तो उनसे कोई अदावत नहीं ।”

“अरे, तो उनकी तुम्हारे से होगी ।”

“वो तो है ।”

“क्या ?”

“स्वीटहार्ट, इस बाबत तुम्हें कुछ बताना क्या दुश्मन के कैम्प के आदमी को अपना राजदां बनाना न होगा ?”

“मैं दुश्मन के कैम्प का आदमी नहीं हूं । मैं ‘आदमी’ नहीं हूं ।”

“वो तो मुझे दिखाई दे रहा है लेकिन तुम थापर साहब की करीबी रिश्तेदार हो । साली हो उनकी ?”

“तो इसमें मेरा क्या कसूर है ? जीजे-सालियां क्या चायस से मिलते हैं । मेरी बहन जिससे भी शादी करती, वो मेरा जीजा होता ।”

“यानी कि दिलीप थापर तुम्हारा फेवरेट जीजा नहीं ।”

“जीजा तो है लेकिन फेवरेट नहीं है । इसलिये नहीं है क्योंकि वो किसी का भी फेवरेट नहीं है । भगवान ने उसमें वो कल-पुर्जे नहीं फिट किये जिनकी वजह से कोई किसी का फेवरेट बनता है ।”

“फिर तो हमे दोनों दोस्त हुए ।”

“वो कैसे ?”

“भई, एक ही शख्स से खफा दो आदमी दोस्त होते हैं ।”

“यूं तो हुए ।”

“फिर तो तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए ।”

“कैसी मदद ? बोलो क्या मदद चाहते हो ?”

“सबसे पहले तो तन ढंकने के लिये मुझे कोई कपड़े मुहैया कराओ ।”

“तुम्हारे कपड़े कहां गये ?”

“क्या पता कहां गये ? मालूम होता तो बरामद न कर लेता !”

“यहां नहीं हैं ?”

“कम-से-कम बैडरूम में तो नहीं हैं ।”

वो बाहर गयी और थोड़ी देर में वापिस लौटी ।

“बाहर भी नहीं हैं ।” - वो बोली ।

“दैट्स टू बैड ।” - सुनील बोला ।

“अब तुम्हारे लिये कपड़ों का इन्तजाम कहां से हो ? ...ठीक है, मैं करती हूं कुछ ।”

और वो दरवाजे की ओर बढ़ी ।

“जा रही हो ?” - सुनील बोला ।

“जाऊंगी, तभी तो कुछ होगा !”

“टाइम क्या हुआ है ?”

“घड़ी नहीं पहनते हो ?”

“सब कुछ पहनता हूं लेकिन कपड़ों के साथ घड़ी भी गयी, बटुवा भी गया, सब कुछ गया ।”

“पौने दस हुए हैं ।”

“तुम्हारा जीजा दसेक बजे वापिस लौटने को कह के गया था । मेरे यहां होते वो आ गया तो मेरा आजाद होना किस काम आयेगा !”

“तुम क्या चाहते हो ?”

“मुझे भी अपने साथ ले चलो ।”

“ऐसे ही ?” - नमिता ने एक उड़ती निगाह उस पर सिर से पांव तक दौड़ाई ।

“मजबूरी है ।”

“ठीक है । तुम भी क्या याद करोगे ! चलो ।”

“थैंक्यू ।”

नंगे पांव, जिस्म पर चादर लपेटे सुनील उसके साथ हो लिया ।

बाहर एक फियेट खड़ी थी जिसकी ड्राइविंग सीट पर नमिता सवार हुई ।

“तुम पीछे बैठो !” - वो बोली ।

सुनील सहमति में सिर हिलाता पीछे सवार हो, गया ।

“जरा यूं बैठो कि बाहर से देखे न जा सको ।”

“सीटों के बीच में लेट जाऊं ?”

“मैं तुम्हारी भलाई के लिये कह रही हूं । ऐसी कोई सावधानी नहीं बरतोगे तो खुद तो मरोगे ही, मुझे भी मरवाओगे ।”

“ओह ! सारी ।”

सुनील पिछली सीट पर अधलेटा-सा हो गया ।

“तुम” - सुनील बोला - “कैसीनो गयी ही नहीं थीं या वहां से चली आयी थीं ?”

“चली आयी थी । बोर हो गयी थी । ऊपर से नींद आ रही थी । काटेज में सोने की नीयत से आयी थी । अब मुझे क्या पता था कि काटेज खाली नहीं था !”

“मुझे अफसोस है कि मेरी वजह से तुम्हारे आराम में खलल पड़ा ।”

“ओह, ले ऑफ । मुझे इतनी चिकनी-चुपड़ी बातों की आदत नहीं है ।”

“बाकी लोग कहां हैं ?”

“सब कैसीनो में हैं । मेरे सामने तो किसी की वहां से हिलने की नीयत नहीं लग रही थी । तुम्हीं कह रहे हो कि दिलीप ने दसेक बजे काटेज वापिस लौटने को कहा था।”

“कहा तो था । ...जुए के सब शौकीन हैं ?”

“सब नहीं । सिर्फ दिलीप और उसकी अम्मा । चाई जी । वो ज्यादा ।”

“वो ज्यादा क्यों ?”

“क्योंकि वो हर उस काम की शौकीन है जो पैसे से होता हो । पैसा खर्चना उसकी हॉबी है । न खर्चे तो बीमार पड़ जाती है ।”

“क्या कहने ! और क्या करती है चाई ची ?”

“विलायती सिगरेट पीती है । स्कॉच विस्की पीती है ।”

“बहुत रंगीली रानी है ?”

“हां । इन्कार भी नहीं करती इस बात से । साफ कहती है कि नौजवानी तो अभाव में गुजरी, अब बुढ़ापे में तो ऐश कर ले वो ।”

“आई सी ।”

“अब चलें ?”

“मैंने कब रोका ?”

“यानी कि चलें ?”

“यहां से तो हर हाल में चलें वर्ना गबबर आ जायेगा ।”

वो हौले-से हंसी । उसने कार को स्टार्ट किया और गियर में डालकर आगे बढ़ाया ।

“एक बात पूछूं ?” - एकाएक सुनील बोला ।

“पूछो ।” - वो बोली ।

“जैसे उदगार दिलीप थापर की बाबत तुम्हारे हैं, वैसे ही तुम्हारी बहनों के भी हैं ?”

“और क्या नहीं होंगे ? मैंने ऐसे ही उसे वाइफ बीटर और सिस्टर-इन-लॉ मोलेस्टर कहा !”

“वो बीवी को पीटता है ?”

“ऐसा तो नहीं पीटता जैसा उसने तुम्हें पीटा है या पिटवाया है अलबत्ता एकाध थप्पड़ तो अक्सर रसीद कर देता है।”

“बीवी सह लेती है ?”

“और क्या करे बेचारी ! बीवी जो ठहरी।”

“कभी ऐसी बदसलूकी उसने तुम्हारे सामने भी की ?”

“बिल्कुल की। तभी तो मालूम है। हमारी बहन तो इतनी भली है कि अपनी दुरगत की कहानी अपनी जुबान पर वो हरगिज न लाती।”

“उसने तुम्हारे सामने कभी उसे थप्पड़ मारा तो तुमने एतराज नहीं किया ?”

“किया। पहली बार ऐसी नौबत आयी थी तो तड़पकर किया था।”

“तो क्या हुआ था ?”

“वो मुझे भी मारने दौड़ा था।”

“ओह ! तुम्हारी बहन की तो मजबूरी है क्योंकि वो थापर की बीवी है, तुम क्यों रहती हो उसके साथ ? तुम्हारी छोटी बहन क्यों रहती है ?”

“हमारी भी मजबूरी है। हमारे मां-बाप नहीं हैं। बड़ी बहन के अलावा हमारा कोई नजदीकी रिश्तेदार जिन्दा नहीं है। यहां न रहें तो कहां रहें।”

“आई सी।”

“फिर कम-से-कम मैं तो कीर्ति को दिलीप के रहमोकरम पर अकेला छोड़कर नहीं जा सकती।”

“और मोहिनी ?”

“वो तो बिल्कुल ही नहीं जा सकती।”

“वजह ?”

“ऐश्वर्य भरे रहन-सहन की आदत जो हो गयी है उसे।”

“तुम्हें नहीं ?”

“सच पूछो तो मुझे भी।”

“फिर बड़ी बहन के वैलफेयर के लिये पीछे रुके रहने की बात तो महज दिली तसल्ली के लिये हुई ?”

उसने उत्तर न दिया।

“थापर की बदसलूकी से आजिज आकर अगर तुम्हारी बहन ही सब छोड़-छाड़ के चल दे तो ?”

“वो ऐसा नहीं करेगी।”

“क्यों ? क्योंकि बाकी बहनों की तरह उसे भी ऐश्वर्यशाली रहन-सहन की आदत हो गयी है ?”

“वो ऐसा नहीं करेगी। कीर्ति में ऐसा इंकलाबी कदम उठाने का हौसला नहीं है।”

“हौसला आ जाता है। अपने आप नहीं तो किसी के लाये आ जाता है।”

“किसके ?”

सुनील सोचने लगा।

क्या वो उसे विकी की बाबत बताये !

फिलहाल उसने उस बाबत खामोश ही रहना मुनासिब समझा ।

“थापर से तलाक लेने पर” - प्रत्यक्षतः वो बोला - “सैटलमेंट में तुम्हारी बहन को बड़ा मोटा माल हासिल हो सकता है ।”

“तलाक !”

“जो कि एक नीमपागल शख्स के बर्बर, पाशविक व्यवहार की बिना पर हासिल कर पाना कोई मुश्किल काम साबित नहीं होगा ।”

“मुझे तो नहीं लगता कि कीर्ति ने तलाक का कभी ख्याल भी किया होगा ।”

“क्यों ? क्यों नहीं किया होगा ? पति-परमेश्वर वाले ख्यालात वाली औरत है वो ?”

वो खामोश रही ।

“चलो छोड़ो । बहरहाल थापर का वाइफ बीटर वाला रोल तो मेरी समझ में आ गया । अब सिस्टर-इन-लॉ मोलेस्टर वाली बात पर भी रोशनी डालो तो मेहरबानी होगी तुम्हारी ।”

“उस बात को समझना क्या मुश्किल है । वो तो रोशनी डाले बिना भी रोशन है ।”

“अच्छा !”

“हां, साली आधी घरवाली वाली मिसाल खामखाह ही तो मशहूर नहीं ।”

“ज्यादा पीछे किसके पड़ता है ? तुम्हारे या मोहिनी के ?”

“तुम मोहिनी को भी जानते हो ?” - वो हैरानी से बोली ।

“उतना ही जानता हूं जितना तुम्हें जानता हूं । वो क्या है कि तुम्हारे आदरणीय जीजा ने अपनी छोटी साली को मछली पकड़ने के लिये चारे की तरह इस्तेमाल किया था ।”

“मछली कौन ?”

“मैं । और चारा तुम्हारी छोटी बहन मोहिनी, जो मुझे बाकायदा स्मगल कर के यहां लायी ।”

“कमाल है !”

सुनील खामोश रहा ।

“वो छोटी है ।” - कुछ क्षण बाद नमिता बोली - “नादान है । दिलीप की बातों में आ गयी होगी ।”

“बातों में आ जाने जितनी छोटी है तो दूसरी किस्म की बातों में क्यों नहीं आ जाती ?”

“दूसरी किस्म की ?”

“साली आधी घरवाली किस्म की !”

उसने उत्तर न दिया ।

“तुम्हारी जानकारी के लिये दिलीप थापर मेरे कत्ल का इरादा रखता था । अगर वो सच में मेरा कत्ल करवा देता तो तुम्हारी छोटी, नादान, नासमझ बहन कत्ल के षड्यन्त्र में शरीक मानी जाती ।”

“खामखाह !” - वो सकपकाये स्वर में बोली - “उसे क्या मालूम था कि असल में दिलीप के मन में क्या था और वो तुम्हारे साथ कैसे पेश आने वाला था !”

“कानून इग्नोरेंस को एक्सक्यूज नहीं मानता ।”

“तुम बात को बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हो । मुझे यकीन नहीं कि दिलीप का तुम्हारे कत्ल का इरादा था ।”

“उसने साफ ऐसा कहा था ।”

“तुम्हें धमकाने के लिये, डराने के लिये ऐसा कहा होगा ।”

“नूरेनजर, इललीगल कनफाइनमेंट भी कम गम्भीर अपराध नहीं । किसी को मुश्कें कस के गिरफ्तार कर के रखना और उसे कत्ल की धमकी देना भी जघन्य अपराध है । और इस अपराध में तुम्हारी छोटी बहन की शिरकत है ।”

“अव्वल तो ऐसा है नहीं । है तो तुम उसकी खता माफ कर दो । इसलिये माफ कर दो कि अब एक दूसरी बहन तुम्हारे काम आ रही है, तुम्हारी मदद कर रही है ।”

“हूँ ।”

“ओके ?”

“आल राइट, ओके ।”

“नो हार्ड फीलिंग्स ?”

“नो हार्ड फीलिंग्स टुवर्ड्स युअर इग्नोरेंट सिस्टर ।”

“थैंक्यू । वैसे मैं उससे पूछूंगी कि उसने ऐसा क्यों किया ? क्यों कर वो दिलीप की बातों में आ गयी ?”

“जरूर पूछना और जो जवाब हासिल हो, वो मुझे भी बताना ।”

“जरूर ।”

“तुमने मेरे एक सवाल का जवाब नहीं दिया । मैंने पूछा था तुम्हारा जीजा ज्यादा किसके पीछे पड़ता है ? तुम्हारे या मोहिनी के ?”

“क्यों चाहते हो इस सवाल का जवाब ?”

“कोई खास वजह नहीं । तुम जवाब न देना चाहो तो न सही ।”

“मोहिनी के पीछे वो अमूमन तब पड़ता है जब वो नशे में होता है । या नशे में होने का बहाना कर रहा होता है ।”

“ऐसा क्यों ?”

“यूं बात बिगड़ जाने पर सारी बोलकर बात संवारने की सुविधा जो होती है ।”

“सारी बोलता है ?”

“हां । कभी-कभार बोलता है ।”

“हमेशा नहीं ?”

“हमेशा वो क्या करता है, इसकी क्या मुझे खबर लगती है ? मैं हर क्षण मोहिनी के साथ बन्धी तो नहीं रह सकती ?”

“ये भी ठीक है ।”

“अभी पिछले हफ्ते हम सब ट्राउट फिशिंग के लिये और पिकनिक के लिये सुन्दरवन गये थे । वहां जंगल में वो मोहिनी पर ऐसा झपटा था कि लगता था कि मनमानी कर के ही मानेगा । कीर्ति ने बीच-बचाव करने की कोशिश की तो उसे झापड़ जड़ दिया और परे धकेल दिया । विवेक वर्मा ने हालात को न सम्भाला होता तो उस दिन तो फौजदारी हो के ही रहती ।”

“वो भी पिकनिक पर साथ था ?”

“हां। घर का-सा आदमी है वो।”

“आई सी।”

“उसी ने दिलीप को समझा-बुझाकर इस हद तक ठण्डा किया था कि बाद में दिलीप ने मोहिनी से बाकायदा माफी मांगी थी।”

“सिर्फ मोहिनी से ? अपनी बीवी से नहीं जिसे उसने धकियाया ? थप्पड़ लगाया ?”

“बीवी से माफी मांगने का तो उसे ख्याल तक नहीं आया होगा।”

“और तुमसे ?”

“मेरे पर पेश नहीं चलती उसकी। मैं भुगत लेती हूं उससे। विवेक वर्मा या किसी और की मदद के बिना भी भुगत लेती हूं।”

“कभी न भुगत पायीं ?”

“तो मैं खून कर दूंगी कमीने का।”

“बिना इस बात की परवाह किये कि तम्हारी बहन विधवा हो जायेगी !”

उसने उत्तर न दिया। सुनील ने उसके दोनों हाथ स्टियरिंग पर यूं कसते देखे कि उनकी नसें उभर आयीं।

“मैं दास्ताने-दिलीप थापर पर फिर लौटता हूं जो कि साली को आधी घरवाली बनाने का ख्वाहिशमन्द है। नूरेनजर, ऐसी ख्वाहिश का, ऐसी कोशिश का - बल्कि ऐसी मुतवातर कोशिशों का - क्या फायदा जिसका कुछ हासिल न हो ?”

“इसका बेहतर जवाब तो दिलीप ही दे सकता है। वैसे उम्मीद पर दुनिया कायम है, वाली बात तो है ही।”

“यूं तो किसी न किसी दिन वो मुंह काला कर के ही मानेगा।”

“देखी जायेगी।” - उसके स्वर में लापरवाही का पुट था।

“ये विवेक वर्मा बहुत खास ही है तुम्हारे जीजा का।”

“है तो सही।”

“क्यों है ऐसा ?”

“वो एक लम्बी कहानी है। फिलहाल इतना समझ लो कि विवेक के दिलीप पर बहुत अहसान हैं।”

“लम्बी कहानी का एकाध चैप्टर ही सुना दो।”

तभी कार एक विशाल फाटक में दाखिल हुई।

सुनील ने सिर उठाकर बाहर झांका।

“अरे !” - वो तत्काल बोला - “तुम तो होटल लेक व्यू पहुंच गयी हो !”

“तो क्या हुआ ?” - वो कार को दक्षता से पार्किंग में एक स्थान की ओर मोड़ती हुई बोली।

“थापर यहां है। अगर उसने या उसके गुण्डों ने मुझे यहां देख लिया तो...”

“डरते हो ?”

“आदतन नहीं डरता। लेकिन खामखाह आ बैल मुझे मार वाली हालत भी तो नहीं करना चाहता मैं अपनी।”

वो तनिक हंसी और फिर तत्काल संजीदा हुई ।

“तुमने कार में ही बैठना है ।” - वो बोली - “अपने मौजूदा लिबास में तुम भीतर नहीं जा सकते ।”

“ओह !”

“मैं बस गयी और आयी ।”

“लेकिन तुम यहां...”

उसने सुनील की बात की ओर ध्यान नहीं दिया । वो कार से निकली और होटल की लॉबी की ओर दौड़ चली ।

सुनील सीट पर पसर गया और प्रतीक्षा करने लगा ।

असाधारण देर लगाकर वो वापिस लौटी ।

“बड़ी देर की मेहरबां आते आते ।” - सुनील बोला ।

“यहां मैं इस उम्मीद के साथ आयी थी कि होटल की शापिंग आर्केड अभी खुली होगी और मैं वहां की ड्रेस शॉप से तुम्हारे लिये कोई कपड़े खरीद पाऊंगी । लेकिन दुकान बन्द मिली मुझे ।”

“यानी कि कपड़े नहीं मिले ।”

“मिले । आखिरकार मिले । इसीलिए तो देर हुई ।”

“ओह !”

“ये लो ।”

सुनील ने कपड़े ले लिये और कार की डोम लाइट जलाकर उन का मुआयना किया ।

“ये” - वो सकपकाया - “ये तो वेटर की यूनीफार्म है ।”

“तन तो ढंकेगी ।” - वो बोली ।

“लेकिन... वेटर की यूनीफार्म...”

“आई कुड नाट डू एनी बैटर, मिस्टर । इसके लिये भी उस कमीने वेटर को मुझे पांच सौ रुपये देने पड़े ।”

“तुम उसकी फिक्र न करो । वो मैं चुकता कर दूंगा ।”

“अभी कहां से कर दोगे ?”

“ये भी ठीक है ।”

“तुम फिलहाल तो इसे पहनो, मैं कोई दूसरा इन्तजाम भी सोचती हूं ।”

“अच्छी बात है ।”

बड़े अनिच्छापूर्ण ढंग से सुनील ने वेटर की सफेद यूनीफार्म पहनी । ये देखकर तो उसे बहुत ही खुन्दक आयी कि यूनीफार्म के बन्द गले के कोट की जेब पर होटल लेक व्यू भी लिखा था ।

“जंच रहे हो ।” - वो बोली ।

“घिस रही हो !” - सुनील भुनभुनाया ।

“हरगिज नहीं । मैं सोच रही थी कि जब वेटर की यूनीफार्म में इतने जंच रहे हो तो तरीके के कपड़ों में तो बहुत ही हैण्डसम लगते होंगे ।”

“इनायत है ऊपर वाले की ।”

“अब क्या प्रोग्राम है ?”

“प्रोग्राम तो किसी सूरत घर पहुंचने का है ।”

“राजनगर ?”

“हां ।”

“वहां कहां कहते हो ?”

“बैंक स्ट्रीट में ।”

“इस वक्त तो टैक्सी से ही जा पाओगे ।”

“आधी रात को टैक्सी वाला छः-सात सौ रुपये भाड़ा मांगेगा । मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है ।”

“मेरे पास भी सौ-पचास रुपये ही हैं । बाकी पैसे तो तुम्हारी यूनीफार्म पर खर्च हो गये ।”

“टैक्सी का किराया मैं राजनगर पहुंचकर अदा कर सकता हूं ।”

“तो टैक्सी तलाश की जाये तुम्हारे लिये ।”

“हां । प्लीज ।”

तलाश नाकाम रही ।

कैसीनो के उदघाटन समारोह की वजह से तमाम की तमाम टैक्सियां बुक थीं ।

“अब क्या किया जाये ?” - सुनील बोला - “इस वेटर की यूनीफार्म की वजह से तो मैं किसी होटल में भी नहीं जा सकता ।”

“मैं तुम्हें नार्थ शोर तक ले जा सकती हूं ।” - वो बोली ।

“क्या मतलब ?”

“मेरा कैसीनो में वापिस जाने का कोई इरादा नहीं है । काटेज मैं इसलिये नहीं जाना चाहती क्योंकि तब मेरे पर इलजाम आ सकता है कि तुम्हें मैंने रिहा किया । अब घर तो मैंने जाना ही है । नार्थ शोर से राजनगर की लोकल टैक्सी तुम्हें आसानी से मिल जायेगी । न मिली तो मेरी कार ले जाना । ड्राइविंग जानते हो न ?”

“हां । अभी कल ही सीखी है ।”

“मजाक कर रहे हो । यानी कि जानते हो । तो फिर चला जाये नार्थ शोर ?”

“जरूर ।”

नमिता कार को पार्किंग से निकालकर सड़क पर लायी और उसे नार्थ शोर के रास्ते पर डाल दिया ।

“अब तो मैं तुम्हारे साथ आगे बैठ सकता हूं ।” - एकाएक सुनील बोला - “या वेटर के साथ बैठे देखे जाने में तुम्हारी तौहीन होगी ?”

वो हंसी । उसने कार को किनारे कर के रोका । सुनील आगे उसके साथ जा बैठा तो कार फिर आगे बढ़ी ।

“ये” - सुनील बोला - “विवेक वर्मा का चर्चा मैं एक बार फिर छेड़ना चाहता था ।”

“किस सिलसिले में ?” - वो बिना सड़क पर से निगाह हटाये बोली ।

“रहता कहां है वो ?”

“नार्थ शोर । हमारे साथ ही ।”

“मूलरूप से वो कहां का रहे वाला है ?”

“विशालगढ़ का ।”

“अब तो वो दिलीप थापर का बिजनेस एसोसियेट बताया जाता है, पहले क्या करता था ?”

“प्राइवेट डिटेक्टिव एजेन्सी चलाता था ।”

“क्या ?” - सुनील चौंककर बोला ।

“भई, प्राइवेट डिटेक्टिव था वो ।”

“कहां । राजनगर में ?”

“नहीं । विशालगढ़ में । जहां का कि वो रहने वाला है ।”

“अब नहीं है वो प्राइवेट डिटेक्टिव ?”

“नहीं । मैंने सुना है कि अपनी प्राइवेट डिटेक्टिव एजेन्सी तो उसने दिलीप से मुलाकात होने के बाद ही बन्द कर दी थी ।”

“दिलीप से कब मुलाकात हुई उसकी !”

“कोई दो साल पहले ।”

“कैसे हुई ?”

“ये तो मालूम नहीं ।”

“लेकिन ये मालूम है कि वो दिलीप थापर का खासुलखास है, घर का-सा आदमी है और, बकौल तुम्हारे, थापर पर उसके बहुत अहसान हैं !”

“हां ।”

“जानेबहार, गुलेगुलजार, नूरेनजर, तूफाने-हमदम, आई लव यू ।”

“क्या !” - वो अचकचाकर बोली ।

“स्वीट हार्ट, ब्राइट आइज, रोजी लिप्स, आई लव यू फ्रॉम दि कोर आफ माई हार्ट ।”

“क्या हुआ ? एकाएक कोई दौरा पड़ा तुम्हें ?”

“हां, दौरा ही पड़ा समझ लो जिससे कि ज्ञान-चक्षु खुल गये । वो लम्बी कहानी अब मेरी समझ में आ गयी है जिसका कि एक चैप्टर भी तुम मुझे नहीं सुना रही थीं ।”

“क्या मतलब ?”

“विवेक वर्मा ही वो प्राइवेट डिटेक्टिव है जिसने हैट में से खरगोश निकालने के जादूगरी अंदाज से हरिमोहन थापर का पोता, उसकी करोड़ों की सम्पत्ति का वारिस, खोज निकाला था । से यस ऑर नो ।”

“यस ।”

“और इसीलिये तभी से वो लसूड़े की तरह थापर से चिपका हुआ है । राहतेजिगर, दिलीप थापर और विवेक वर्मा बिजनेस एसोसियेट नहीं, चोर-चोर मौसेरे भाई हैं ।”

वो खामोश रही ।

“वाह ! जिस प्राइवेट डिटेक्टिव को मैं इतनी शिद्दत से तलाश कर रहा था उसका नाम तुमने मुझे सहज ही सुझा दिया । वाह ! वाह !”

“अजीब आदमी हो ! ऐसे खुश हो के दिखा रहे हो जैसे कोई बहुत बड़ी दौलत हासिल हो गयी हो !”

“मैं अभी और भी खुश हो के दिखाता अगर इस घड़ी एक सिगरेट हासिल हो जाता ।”

“एक मामूली सिगरेट तुम्हारी अहम ख्वाहिश है ?”

“मौजूदा ।”

“तुम वाकेई अजीब आदमी हो ।”

“बिल्कुल दुरुस्त । अजीब भी हूँ, आदमी भी हूँ ।”

“अपने सामने का खाना खोलो ।”

सुनील ने डैशबोर्ड में बना खाना खोला तो पाया कि भीतर एक गोल्डफ्लैक का पैकेट और लाइटर मौजूद था । उसने दोनों चीजें काबू में कर लीं ।

“एक मेरे लिए भी सुलगाना ।” - वो बोली ।

सुनील ने होंठों में एक साथ दो सिगरेट लगाकर उन्हें सुलगाया और फिर एक नमिता को थमा दिया ।

“वाह !” - बड़े तृप्तिपूर्ण भाव से सिगरेट का एक लम्बा कश लगाने के बाद वो बोला - “कौन कहता है कि आज का दिन खराब था ।”

“ऐसा तब कह रहे हो जब कि मरते-मरते बचे हो !”

“बचा हूँ । मरा नहीं ।”

“बड़े प्रबल आशावादी हो ।”

“ये विवेक वर्मा, भूतपूर्व प्राइवेट डिटेक्टिव, वैसे है कैसा आदमी ?”

“अच्छा ।”

“इस एक लफ्ज में उसकी तमाम खसूसियात शमार हो गयीं !”

“मेरा मतलब है भलामानस है, मिलनसार है, खुशमिजाज है, समझदार है ।”

“और तम्हें पसन्द है ।”

“सबको पसन्द है ।”

“तुम्हें खास तौर से पसन्द है ?”

“खास वाली कोई बात नहीं ।”

“तुम्हारे पर दिल नहीं आया उसका ? या तुम्हारी बहन पर ?”

“मोहिनी पर ?”

“हां ।”

“भई, विवेक का तो मुझे पता नहीं, अलबता ये हो सकता है कि मोहिनी के दिल में हो कुछ विवेक के लिये क्योंकि कभी-कभार वो ऐसा व्यवहार...”

वो एकाएक खामोश हो गयी ।

“क्या हुआ ? चुप क्यों हो गयीं ?”

“बहुत पहुंचे हुए आदमी हो । दूसरे की जुबान खुलवाना खूब जानते हो ! थोड़ा और अरसा साथ गुजरा तो मुझे यकीन है कि मेरा या मेरी बहनों का कोई राज राज नहीं रहेगा तुम्हारे सामने ।”

सुनील हंसा ।

उसके बाद वो दोबारा नमिता को मुंह फाड़ने के लिये प्रोत्साहित करने में कामयाब न हो सका ।

आधा घन्टा सफर खामोशी से कटा ।

वे नार्थ शोर के इलाके के करीब पहुंचे तो नमिता ने कार को एक छोटे-से बंगले के फाटक के सामने रोका ।

सुनील ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा ।

“ये... ये है तुम्हारे जीजाजी का दौलतखाना ?”

“नहीं ।” - वो बोली - “वो अभी थोड़ा आगे है । समुद्र तट पर । यहां एक डॉक्टर रहते हैं । डॉक्टर निगम । हमारे वाकिफ हैं । मेरी राय में इस वक्त तुम्हें उनकी जरूरत है ।”

“क्या जरूरत है ?”

“तुम अपनी उम्मीद से ज्यादा जखमी हो सकते हो ।”

“ऐसा कुछ महसूस तो नहीं हो रहा मुझे !”

“बाद में हो सकता है ।”

“बाद में मैं अपने डॉक्टर को दिखा लूंगा ।”

“ओपफोह ! अरे, मैं कहती हूं तुम्हें फर्स्ट एड की अभी जरूरत है ।”

“टाइम मालूम है, बड़ी अम्मा !”

“मालूम है । डॉक्टर निगम से हमारे फैमिली रिलेशंस हैं । वो हमें नाउम्मीद नहीं करेंगे ।”

“मुझे वेटर की वर्दी में देखकर वो क्या सोचेंगे ?”

“कुछ भी नहीं । तुम्हारी पोशाक की तरफ उनकी तवज्जो तक नहीं जायेगी । देख लेना ।”

“वो समझेंगे कि अगर उनकी पड़ोसन को कोई वेटर पसन्द आ गया है तो उन्हें क्या ! ठीक ?”

“चलो ऐसे ही सही ।”

“ठीक है फिर ।”

डॉक्टर निगम साठ से ऊपर उम्र का, झक सफेद बालों वाला, कृशकाय व्यक्ति निकला। उसने सुनील की सूरत पर एक निगाह डाली और फिर विनोदपूर्ण स्वर में बोला - “पिटे हो ?”

“जी हां।” - सुनील बड़ी सादगी से बोला।

“सिर्फ पिटे या पीटा भी ?”

“पीटा भी। मैं डॉक्टर की शरण में हूँ, उसकी कब्र खोदी जा रही होगी।”

“मजाक कर रहे हो ?”

“जी हां।”

“गुड। मुझे मजाकपसन्द आदमी पसन्द हैं।”

“मुझे मजाकपसन्द आदमी को पसन्द करने वाले आदमी पसन्द हैं।”

डॉक्टर हंसा।

सुनील ने बड़ी शिष्टता से हंसी में उसका साथ दिया।

“पेशेन्ट आपके हवाले है, अंकल।” - नमिता बोली - “मैं जरा जा के आती हूँ।”

फिर इससे पहले कि कोई कुछ कह पाता वो लम्बे डग भरती हुई वहां से रुखसत हो गयी।

थोड़ी देर बाद बाहर से कार स्टार्ट होने की आवाज आयी।

“प्लीज अनड्रैस।”

“जी !” - सुनील सकपकाया-सा बोला।

“मैंने कहा कपड़े उतारो। कमर तक।”

सुनील ने आदेश का पालन किया।

डॉक्टर ने उसका मुआयना आरम्भ किया।

“नाक पर चोट ज्यादा है।” - वो बोला - “लेकिन शुक्र मनाओ कि हड्डी नहीं टूटी। आंख के नीचे का कट मामूली है। टटोलने से तो कोई पसली टूटी नहीं मालूम होती...”

यूं ही रनिंग कमैन्ट्री जारी करता डॉक्टर अपना काम करता रहा।

दस मिनट में वो फारिग हुआ।

“ये दो गोलियां हैं।” - वो बोला - “एक रात को सोने से पहले और दूसरी सुबह उठने के बाद खा लेना। और कल चैस्ट का एक्सरे जरूर करा लेना ताकि तसदीक हो जाये कि कोई पसली नहीं टूटी है। ओके ?”

“यस, सर।”

तभी नमिता वापिस लौटी।

“फारिग हो गये ?” - वो बोली।

“हां।” - सुनील बोला।

“तो चलो ।”

“डॉक्टर साहब की फीस...”

“मुझे मिल जायेगी ।” - डॉक्टर तत्काल बोला - “अब जाके आराम करो और मुझे करने दो ।”

“शुक्रिया, जनाब ।”

“गुड नाइट ।”

सुनील ने भी गुड नाइट कहा, उसका अभिवादन किया और नमिता के साथ वहां से बाहर निकल आया ।

दोनों कार में सवार हुए ।

“कहां गयी थीं ?” - सुनील उत्सुक भाव से बोला ।

“घर ।” - वो बोली - “तुम्हारे लिये चार पैसे लाने । ये पकड़ो । हजार रुपये हैं ।”

सुनील ने नोट थाम लिये ।

“मैं अपने घर पहुंच जाऊँ” - वो कार को आगे बढ़ाती हुई बोली - “फिर कार तुम ले जाना । ओके ?”

“ओके । मैं कल ही तुम्हारे रुपये और कार लौटा जाऊंगा ।”

“रूपयों की कोई बात नहीं । कार जरूर लौटा देना वरना मेरे से सवाल होंगे । या फोन पर खबर कर देना कि कार कहां खड़ी है, मैं खुद लेने आ जाऊंगी या मंगवा लूंगी ।”

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

कार थोड़ी देर समुद्र की दिशा में खामोशी से चली । फिर जब एक विशाल दोमंजिली कोठी अंधेरे में सिर उठाए खड़ी दिखाई देने लगी तो उसकी रफ्तार घटी ।

“मुझे एक बात सूझी है ।” - एकाएक वो बोली ।

“कौन-सी बात ?” - सुनील बोला ।

“हैरानी है कि इस बात का ख्याल मुझे पहले नहीं आया ।”

“जानेजहां, किस बात का ख्याल पहले नहीं आया ?”

“इस बात का कि तुम्हारा और दिलीप का कद-काठ मोटे तौर पर एक ही जैसा है । दिलीप के कपड़े तुम्हें बखूबी फिट आ सकते हैं । तुम मेरे साथ कोठी में चलो, मैं तुम्हें दिलीप का एक सूट निकाल के देती हूँ । उसके पास इतने सूट हैं कि उसको ख्याल तक नहीं आयेगा कि एक सूट कम था ।”

“डार्लिंगैस्ट, मैंने ठीक सुना ? मैं तुम्हारे साथ कोठी में चलूँ ?”

“हां । कोठी खाली पड़ी है । चाई जी के अलावा वहां कोई भी नहीं है और वो बूढ़ी अम्मा ऊपरली मंजिल के बैडरूम में नशे में धुत्त, दीन-दुनिया से बेखबर सोई पड़ी है । किसी को कोठी में तुम्हारी आमद की खबर नहीं होगी ।”

“आमद की तो नहीं होगी लेकिन अगर ऊपर से तुम्हारा जीजा आ गया तो ?”

तब तक नमिता कार को कोठी के ड्राइव-वे में ले जाकर रोक चुकी थी ।

“हां, ये अन्देशा तो है ।” - वो इन्जन बन्द करती हुई बोली - “तुम्हारा कोठी के भीतर जाना तो वाकई ठीक नहीं होगा । ड्राइव-वे में देखा जाना भी । तुम ऐसा करो, तुम कोठी के बाजू से होकर पिछवाड़े में चले जाओ । वहां पायर पर बोट हाउस का शैड है । तुम बोट हाउस में

पहुँचो, मैं वहां तुम्हारे लिये कपड़े लेकर आती हूँ।”

“जल्दी आना।” - सुनील कार से बाहर निकलता हुआ बोला।

“बस गयी और आयी।”

वो कार से निकलकर सामने कोठी की ओर दौड़ चली और सुनील उसके बताये बोट हाउस के रास्ते पर चल पड़ा। पेड़ों से घिरे रास्ते से गुजरता वो पिछवाड़े में पहुँचा जहाँ कि बोट हाउस था।

सामने क्षितिज तक फैला समुद्र शान्त था। हर तरफ सन्नाटा था। नीमअन्धेरे में बोट हाउस के शैड का केवल धुंधला-सा आकार दिखाई दे रहा था।

वो बोट हाउस के दरवाजे पर पहुँचा। उसने दरवाजे को आजमाया तो पाया कि वो खुला था। उसने दरवाजे को धक्का देकर पूरा खोला और एक कदम भीतर डाला।

तत्काल उसके नथुनों से डीजल की तीखी गन्ध टकराई।

भीतर उतना अन्धेरा नहीं था जितने की सुनील ने अपेक्षा की थी। वजह ये ही थी कि बोट हाउस का समुद्र की ओर वाला विशाल फाटक खुला था और समुद्र की सतह से प्रतिबिम्बित होती चान्द की रोशनी भीतर पहुँच रही थी जिसमें सुनील को भीतर मौजूद, पानी में हौले-हौले डोलती मोटरबोट दिखाई दी।

सुनील ने मोटरबोट के डैक पर कदम रखास उसके पिछले काकपिट में दाखिल हुआ और वहाँ मौजूद एक कुशन लगी सीट पर ढेर हो गया। उसने महसूस किया डीजल की गंध वहाँ और भी तेज थी। उसने एक गहरी सांस ली और फिर उसकी निगाह पैन होती हुई बोट के नीमअन्धेरे डैक पर बायें से दायें घूमी।

डैक पर कुछ था।

या वो महज हिलते पानी की वजह से बनती परछाइयों का खेल था!

उसने आंखें फाड़-फाड़कर सामने देखा।

नहीं, वो परछाइयों का खेल नहीं था। डैक पर जरूर कुछ था। क्या था?

हाथ!

सामने काकपिट से ऊपर को उठा एक हाथ दिखाई दे रहा था।

इन्सानी कलाई से जुड़ा स्थिर हाथ!

“हल्लो!” - वो फंसे कण्ठ से बोला, स्तब्ध वातावरण में उसको आवाज इतने जोर से गूँजी कि वो खुद हड़बड़ा गया - “कौन है उधर?”

कोई उत्तर न मिला।

पानी पर चांद की रोशनी की किरणें थिरकती रहीं।

हाथ में कोई हरकत न पैदा हुई।

सुनील का दिल जोर से धड़कने लगा। सांस रोके वो अपने स्थान से उठा और डैक पर चलता हुआ सामने काकपिट के करीब पहुँचा।

तब उसे एक धराशायी मानवाकार के दर्शन हुए।

“कौन हो, भई।” - सुनील फंसे कण्ठ से बोला - “खैरियत तो है?”

कोई जवाब न मिला।

उसने हाथ बढ़ाकर हाथ को कलाई के पास से थामा ।

नब्ज गायब !

तौबा ! तौबा !

वो डैक पर से कूदकर बोट हाउस के फर्श पर पहुंचा और दरवाजे के करीब की दीवार को टटोलता स्विचबोर्ड तलाश करने लगा । उसका हाथ एक स्विच पर पड़ा तो तत्काल उसने उसे आन किया । शैड में एकाएक ट्यूब लाइट की रोशनी यूँ चमकी कि उसकी आंखें चौंधिया गयीं । रोशनी में उसने फिर सामने काकपिट में पड़े मानव शरीर पर निगाह डाली ।

थापर !

वो दिलीप थापर था जो कि वहां मरा पड़ा था । उसकी सफेद कमीज के सामने भाग में एक लाल गोल दायरा दिखाई दे रहा था जो कि खून से ही बना हो सकता था ।

तभी बाहर ऊंची एड़ी की ठक-ठक की आवाज हुई ।

सुनील सीधा हुआ और वापिस घूमा ।

दरवाजे पर एक झोला लिये नमिता प्रकट हुई ।

वो फिर शैड के फर्श पर पहुंचा ।

“अरे, बत्ती क्यों जलाई ?” - वो आशंकित भाव से बोली - “बन्द करो फौरन ।”

सुनील आगे बढ़ा । वो उसके पहलू से निकलकर आगे बढ़ने लगी तो सुनील ने उसकी बांह थामकर उसे वापिस खींच लिया ।

“क्या है !” - वो अप्रसन्न भाव से बोली - “ये क्या करते हो ?”

“उधर न जाओ ।” - सुनील बोला ।

“किधर न जाऊं ?”

“बोट की तरफ ।”

“क्यों ?”

“वहां थापर है ।”

“था... थापर !” - वो चिहुंकी - “दिलीप यहां है ?”

“मरा पड़ा है ।”

“हे भगवान !” - उसके मुंह से एक तीखी सिसकारी निकली - “क... क... कैसे ? क्या हुआ ? ...तुमने ...तुमने ...तुमने उसे...”

“पागल हुई हो !”

“क... कैसे मरा ?”

“गोली खा के । शूट कर दिया किसी ने उसे । छाती में गोली का सुराख साफ दिखाई दे रहा है ।”

“किसने शूट किया ?”

“मुझे क्या पता किसने शूट किया !”

“हे भगवान ! अब क्या होगा ?”

“जो होगा सामने आ जायेगा ।”

“अब मैं क्या करूँ ?”

“तुम तो पहले कोठी में वापिस जाओ और वहां से पुलिस को फोन करो ।”

“मैं... मैं पुलिस को फोन करूँ ! किसलिये ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है ! उन्हें दिलीप थापर के कत्ल की खबर करने के लिये ।”

“क... क्या पता वो मरा न हो ?”

“मैंने नब्ज देखी थी । गायब थी ।”

“क्या पता वो मरा न हो । ...एक तरफ हटो ।”

उसने झोला एक बैंच पर फेंका और बोट की तरफ लपकी । डैक पर पहुंचकर वो ठिठकी । फिर उसने नीचे झुककर फर्श पर से कुछ उठाया ।

“क्या है ?” - सुनील उत्सुक भाव से बोला ।

उसने उत्तर न दिया । सुनील को लगा कि उसके हाथ में जनाना सैंडिल की ऊंची एड़ी थी लेकिन उसके और गौर से उसे देख पाने से पहले नमिता ने उसे अपने पर्स में डाल लिया । वो थोड़ा आगे बढ़ी, ठिठकी, नीचे झुकी और उसने फिर कोई चीज नीचे से उठाई ।

उस दूसरी चीज को सुनील ने साफ पहचाना । वो महिलाओं द्वारा बालों में लगाया जाने वाला क्लिप था ।

“तूफानेहमदम” - सुनील धीरे से बोला - “जहां कत्ल की वारदात हो के हटी हो, वहां से कोई चीज हटानी नहीं चाहिये ।”

उसने उत्तर न दिया । लम्बे डग भरती वो बोट हाउस के परले पहलू में पहुंची ।

“मौकायेवारदात पर मौजूद कोई भी चीज कातिल की शिनाख्त में मददगार साबित हो सकती है । जो चीजें तुमने अभी उठाई हैं, वो...”

“ओह, ले ऑफ ।” - वो चिढ़कर बोली ।

“तुम जेल जाने को तड़प रही मालूम होती हो ।”

“आई सैड, ले ऑफ ।”

सुनील चुप हो गया ।

नमिता पायर पर उकड़ूँ बैठ गयी और आंखें फाड़-फाड़कर नीचे पानी में झांकने लगी । फिर एकाएक वो उठकर सीधी हुई ।

“जरा मुंह फेर के खड़े होवो ।” - वो बोली ।

“क्या !” - सुनील सकपकाया ।

“जरा दीवार की तरफ मुंह फेरकर खड़े होवो ।”

“क्यों ?”

“सुना नहीं ।”

“लेकिन कोई वजह तो...”

“ठीक है । भाड़ में जाओ ।”

वो फुर्ती से अपने जिस्म पर से कपड़े उतार-उतारकर फर्श पर फेंकने लगी ।

पहले जैकेट, फिर स्कीवी...

“अगर तुम्हारी मर्जी पुलिस को फोन करने की नहीं है” - सुनील खामखाह बोला - “तो मैं करता हूँ ।”

“ठीक है । मुझे कोई एतराज नहीं ।”

फिर सैंडिलें...

“स्वीटहार्ट, मेरी राय मानो और जो चीज जहां से उठाई है, वहां वापिस रख दो ।”

“जहन्नुम में गयी तुम्हारी राय ।”

....फिर जीन्स ।

फिर उसके पैंटी और ब्रेसियर से ढंके लगभग नग्न जिस्म ने पानी में छलांग लगा दी । उसका सांचे में ढला जिस्म एक क्षण को सुनील की आंखों के सामने लहराया और फिर ओझल हो गया ।

किस फिराक में थी वो लड़की ?

पानी में वो कहां थी, सुनील को पता नहीं लग रहा था । उसने बोट पर जाकर पानी में झांका तो भी उसे वो न दिखाई दी । अलबत्ता उसकी वजह से पानी में हलचल मुतवातर मच रही थी ।

तब सुनील ने देखा कि बोट का इन्जन के ऊपर का कार के बोनेट जैसा ढक्कन उठा हुआ था ।

डीजल की गन्ध सबसे तीखी टंकी के नीचे से आ रही थी । जरूर टंकी लीक कर रही थी । फिर उसे टंकी के नीचे से कोई चीज बाहर झांकती दिखाई दी ।

क्या था ? क्या था ?

बिजली का तार !

नहीं । तार जैसी कोई चीज ।

उसने झुककर उसका दिखाई देता हुआ सिरा थामा और खींचा ।

सिरा खिंचता चला गया ।

उसने और खींचा तो वो तार सी टंकी के नीचे से और... और निकलती चली आयी । वो उसे कोई पंद्रह-सोलह गज खींच चुका तो उसका दूसरा सिरा उजागर हुआ जिस पर निगाह पड़ते ही उसके छक्के छूट गये ।

दूसरे सिरे पर एक बारूद की छड़ बन्धी हुई थी ।

और वो तार-सी उस बारूद का असाधारण लम्बा पलीता था ।

क्या पलीता चालू हो सकता था ?

हो सकता था । क्यों नहीं हो सकता था ?

तो क्या करे वो ?

क्या बारूद की छड़ को समुद्र में फेंक दे ?

लेकिन बारूद फिर भी फट सकता था। छड़ वाटरप्रूफ हो सकती थी। अगर पलीता चालू था तो बारूद तो उसके हाथों में फट सकता था। उसे पानी में फेंकने पर वो पानी में मौजूद नमिता को अपनी लपेट में ले सकता था।

“नमिता !” - उसने जोर से आवाज लगायी।

कोई उत्तर न मिला।

फिर उसने मन-ही-मन फैसला किया।

देखा जायेगा जो होगा।

उसने बारूद की छड़ को बायें हाथ में मजबूती से थामा और दायें हाथ में पलीते को थामकर उसे जोर से झटका दिया।

पलीता छड़ से अलग हो गया।

उसने डरते-डरते पलीते का ढक्कन उतारा।

विस्फोट न हुआ।

उसकी जान में जान आयी। उसने बारूद की छड़ को, पलीते को, उसके ढक्कन को वापिस टंकी के नीचे वहां रख दिया जहां से कि उसने उन चीजों को बरामद किया था। फिर एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद उसने इंजन के ऊपर का कार के बोनेट जैसा ढक्कन नीचे गिरा दिया। वो नहीं चाहता था कि नमिता की उन चीजों पर निगाह पड़ती और फिर वो उन्हें भी उठाकर अपने पर्स के हवाले कर लेती।

फिर उसकी तवज्जो फिर पलीते की असाधारण लम्बाई की तरफ गयी। पन्द्रह-सोलह गज लम्बा पलीता ! किसलिये ! इतना लम्बा पलीता तो कम-से-कम आधा घन्टा लगाता सुलगकर बारूद तक पहुंचने में।

जरूर कोई बोट में विस्फोट होने से पहले वहां से दूर, बहुत दूर निकल जाना चाहता था। यानी कि किसी की लाश समेत बोट को उड़ा देने की योजना थी।

तभी पानी की सतह पर हलचल हुई और नमिता ने पानी से बाहर सिर निकाला। उसने अपना दायां हाथ ऊपर उठाया और बोली - “जरा हाथ पकड़ो और मुझे बाहर खींचो।”

सुनील पायर के सिरे पर पहुंचा, उसने नमिता का हाथ थामकर उसे बाहर खींच लिया। जलपरी-सी नमिता उसके करीब आ खड़ी हुई।

“क्या मिला ?” - सुनील उसके लगभग नग्न शरीर से निगाह चुराता हुआ बोला।

“ये।” - नमिता ने अपना दूसरा हाथ आगे किया तो सुनील को उसमें एक छोटी-सी रिवॉल्वर दिखाई दी।

“कल्ल इसी रिवॉल्वर से हुआ हो सकता है।” - सुनील बोला।

“हो सकता है।” - नमिता बोली।

“ये मर्डर वैपन है।”

“हो सकता है।”

“तुम्हें मालूम है कि ये मर्डर वैपन है तभी तो तुमने इसके लिये समुद्र में डुबकी लगायी।”

“समझदार आदमी हो।”

“तुम इस रिवॉल्वर को पहचानती मालूम होती हो।”

“हां। बखूबी।

“किसकी है ?”

“कीर्ति की ।”

“इसे वापिस पानी में फेंक दो । अच्छा यही होगा कि इसे आकर पुलिस ही बरामद करे ।”

नमिता ने जोर से इन्कार में सिर हिलाया ।

“क्यों ?” - सुनील बोला ।

“कीर्ति किसी पर गोली नहीं चला सकती ।”

“आत्मरक्षा के लिये भी नहीं ?”

“नहीं ।”

“तुम्हें क्या मालूम ?”

“जो औरत पति से थप्पड़ खाकर सिर्फ रोने बैठ जाती हो, वो उस पर गोली नहीं चला सकती ।”

“हर चीज की कोई हद होती है । हर किसी का कोई ब्रेकिंग प्वायन्ट होता है ।”

“लेकिन आज तो दिलीप ने उसके साथ कोई बद्सलूकी नहीं की थी ।”

“तुम्हें क्या मालूम ? तुम क्या हर वक्त उनके साथ थीं ?”

वो खामोश रही ।

“जब तुम वेंटर की वर्दी हासिल करने होटल लेकर चली गयी थीं तब क्या थापर वहां मौजूद था, तुम्हारी बहन वहां मौजूद थी ?”

“मालूम नहीं । तब मैं कैसीनो में झांकने नहीं गयी थी ।”

“क्या पता आदत से मजबूर थापर इस बार पब्लिक में ही अपनी बीवी को जलील करने पर आमादा हो गया हो और कीर्ति यहां चली आयी हो, थापर पीछे आया हो और फिर उस पर जुल्म ढाने लगा हो और तब कीर्ति उस पर गोली चला बैठी हो ।”

उसने उत्तर न दिया ।

“अगर ऐसा हुआ है तो ये साफ-साफ आत्मरक्षा का केस है जिसमें तुम्हारी बहन का बाल भी बांका नहीं होगा लेकिन तुम्हारी मौजूदा हरकतें उसके लिये नई-नई तरह की जहमतें खड़ी कर सकती हैं इसलिये...”

“नो । मिस्टर, मैं अपनी बहन को बहुत अच्छी तरह से जानती हूं । अगर उसने दिलीप पर गोली चलायी होती तो उसने खुद ही इस बात की पुलिस को खबर कर दी होती । मुझे पूरा यकीन है कि कत्ल किसी और ने किया है और कीर्ति की मिलिक्यत ये चीजें उसे फंसाने के लिये यहां प्लांट की हैं । मैं ऐसा नहीं होने दूंगी । मैं कीर्ति को नहीं फंसने दूंगी ।”

“तुम क्या करोगी ?”

“सबसे पहले तो कपड़े पहनूंगी । तुम खुदा के वास्ते अब तो पीठ फेरो क्योंकि जो मेरे तन पर है, पहले मैंने इसे उतारना है ।”

“क्यों ?”

“अरे, ये गीले कपड़े हैं ।”

“तो उतार लो । मैं तो जन्म से अन्धा हूं ।”

“ओह, माई गॉड ! मैं सैंडल मारकर ट्यूब फोड़ दूंगी ।”

“अरे, नहीं ।” - सुनील तत्काल पीठ फेरता हुआ बोला ।

“अब ठीक है ।” - दो मिनट बाद उसे नमिता की आवाज सुनायी दी ।

वो घूमा तो उसने पाया कि उसने अपनी पोशाक और सैंडलें पहन ली थीं और अपने गीले अन्डरवियर और अंगिया को निचोड़ रही थी ।

“अब क्या करोगी ?” - वो बोला ।

“अब सबसे पहले तो कीर्ति को तलाश करूंगी ।”

“ये रिवॉल्वर वगैरह तुम वापिस नहीं रखोगी तो तुम खुद तो मरोगी ही, कीर्ति को भी मरवाओगी ।”

“मुझे बरगलाओ मत ।”

“मैं तुम्हें बरगला नहीं रहा, सही रास्ता दिखा रहा हूँ । कानून से छेड़छाड़ अच्छी बात नहीं होती । सब कुछ यथास्थान वापिस रख दो वर्ना...”

“वर्ना क्या ?”

“वर्ना मैं पुलिस को बताऊंगा तुम्हारी हर करतूत की बाबत ।”

“यू कैन नाट बी सीरियस ।”

“बट आई एम ।”

“बड़े नाशुके इन्सान हो । नाशुके भी और अहसानफरामोश भी ।”

“मैं ऐसा नहीं हूँ । मैं ऐसा होता तो जो मैंने करना होता, वो मैं तुम्हें कहकर करता ! नूरेनजर, तुम्हें ऐसी बातों का तजुर्बा नहीं है लेकिन मुझे है । तुमने पहले कभी अपनी आखों के आगे कल्ल हुआ देखा है ?”

“नहीं !”

“मैंने दर्जनों बार देखा है और मेरा जाती तजुर्बा है कि मौकायेवारदात पर उपलब्ध सबूतों के साथ छेड़छाड़ केस को उलझाती है, उसके हल में रुकावट डालती है । अगर तुम समझती हो कि कीर्ति को फंसाने के लिये उसके खिलाफ सबूत यहां प्लांट किये गये हैं तो ये नतीजा क्या पुलिस नहीं निकाल सकती जिसका कि ये रोजमर्रा का काम है !”

“मुझे कुछ नहीं मालूम ।” - वो झुंझलाकर बोली - “मैं...”

“मुझे पता है तुम्हें कुछ नहीं मालूम । तभी तो कोशिश कर रहा हूँ तुम्हारी मालूमात बढ़ाने की ।”

वो एकाएक दृढ़ कदमों से बाहर की ओर बढ़ी ।

“अरे, रुको-रुको । कहां जा रही हो ?”

वो न रुकी ।

सुनील उसके पीछे लपका ।

आनन-फानन नमिता कोठी के सामने पहुंची और भीतर दाखिल हुई । वहां हाल में एक तरफ फोन पड़ा था । वो उसकी तरफ बढ़ी । उसने फोन उठाया और आनन-फानन एक नम्बर डायल किया ।

“पुलिस को फोन कर रही हो ?”

उसने उत्तर न दिया । लाइन लगी तो वो बोली - “हल्लो, मीनाक्षी ! ...मैं नमिता बोल रही हूँ, नमिता मेहरा । ...तुम्हारे यहां कीर्ति तो नहीं आयी ? ...नहीं आयी ? ...कोई फोन वगैरह ही आया हो या किसी और तरीके से तुम्हें खबर हो कि वो कहां है ? ...नहीं ? ...नहीं, नहीं, कोई खास बात नहीं ...क्या ? ...अरे नहीं । कुछ नहीं हुआ है । गुड नाइट ।”

वैसे ही आनन-फानन उसने पांच-छः और जगह फोन किया ।

हर जगह से निराशाजनक उत्तर मिला ।

“यूं फोन पर बहन को तलाश करती रहोगी तो सवेरा हो जायेगा ।” - सुनील बोला - “इसलिये पहले पुलिस को फोन कर लो ।”

“पुलिस को फोन तुम कर लो । मैं कीर्ति की तलाश में जा रही हूं ।”

“तुम्हें पुलिस के आने तक यहां रुकना चाहिये ।”

“पुलिस को मालूम होना जरूरी है कि मैं यहां थी ?”

“क्या मतलब ?”

“तुम मुंह न फाड़ो तो उन्हें कैसे मालूम होगा कि...”

सुनील पहले ही इन्कार में सिर हिलाने लगा ।

“क्यों ? क्या हुआ ?”

“तुम पुलिस की काबलियत को बहुत कम करके आंक रही हो । ऐसी बातें कहीं छुपती हैं ?”

“फिर तो जो होगा देखा जायेगा ।”

“देखो, तुम...”

“तुम देखो ।” - वो तलखी से बोली - “जो चीजें मैंने यहां से उठाई है, वो सब की सब कीर्ति की हैं - एड़ी उसकी सैंडिल की है, क्लिप उसके बालों का है और रिवॉल्वर उसकी मिल्कियत है । अब तुम जरा सोचो कि अगर कत्ल कीर्ति ने किया होता तो क्या वो अपने पीछे ऐसी चीजें छोड़कर जाती जो कि सहज ही उसे फंसा सकती थीं ? वो खुद अपने खिलाफ घातक सबूत छोड़कर जाती यहां से ?”

“तुम्हारी बहन औरत है और औरत कब क्या करती है ये कौन जानता है !”

“मैं कहती हूं ये चीजें कीर्ति को फंसाने के लिये यहां प्लांट की गयी हैं ।”

“तुम ये पहले भी कह चुकी हो और मैं भी पहले कह चुका हूं कि जो बात तुम्हारी समझ में आ सकती है, वो क्या पुलिस की समझ में नहीं आयेगी ?”

“मुझे पुलिस की समझ का कोई तजुर्बा नहीं । और मैं तुम्हारी बातों में नहीं आने वाली । मेरा कीर्ति को तलाश करना जरूरी है । समझे ?”

“नहीं ।”

“क्यों नहीं समझे ? मैं फारसी बोल रही हूं ?”

“कीर्ति की तलाश से तुम्हें क्या हासिल होगा ?”

“मुझे ये मालूम होगा कि उसने कत्ल किया है या नहीं !”

“किया होगा तो वो मान जायेगी ?”

“मेरे सामने मान जायेगी । वो मेरे से झूठ नहीं बोलेगी ।”

“आई सी ।” - सुनील का स्वर सर्वदा आश्वासनरहित था ।

“अगर उसने कहा कि वो बेगुनाह है तो मैं ये तमाम चीजें गायब कर दूंगी । लेकिन अगर उसने गोली चलाई होना कबूल किया तो मैं उसे अपने-आपको पुलिस के हवाले कर देने के लिये राजी कर लूंगी ।”

“और यहां से उठाई चीजें पुलिस को सौंप दोगी ?”

“हां ।”

“अच्छा है । तब तुम दोनों बहनें जेल की एक ही कोठरी में बन्द होवोगी ।”

“तुम एक बहुत ही वाहि्यात आदमी हो जिसने अभी तक मुझे डराने, दहलाने के अलावा कुछ नहीं किया ।”

“मैं सिर्फ तुम्हारी मदद करने की कोशिश कर रहा हूं ।”

“मेरी मदद करना चाहते हो तो सिर्फ इतना करो कि मेरी बाबत पुलिस के सामने मुंह न फाड़ना । मैं हमेशा-हमेशा तुम्हारी शुक्रगुजार रहूंगी । नाओ बी ए गुड ब्वाय एण्ड से यस ।”

“लेकिन...”

“भाड़ में जाओ । जो जी में आये करना । मैं चली ।”

और वो वहां से दौड़ चली ।

उसके पीछे हाल का दरवाजा बन्द हो गया ।

तब सुनील ने वॉल क्लाक पर निगाह डाली ।

बारह बज चुके थे ।

यानी कि ‘ब्लास्ट’ का अगले रोज का अंक छपना शुरू हो चुका था ।

तब पुलिस को फोन करने से पहले उसने मलिक साहब का वो खास नम्बर डायल किया जिस पर आयी काल केवल मलिक साहब ही रिसीव करते थे ।

कोई जवाब न मिला ।

उसने लाइन काटकर न्यूज एडीटर राय का नम्बर लगाया ।

जवाब मिला ।

“सुनील बोल रहा हूं ।” - वो व्यग्र भाव से बोला ।

“कहां हो ?” - राय ने पूछा ।

“नार्थ शोर पर । दिलीप थापर की कोठी में ।”

“फोन कैसे किया ? क्या काम है ?”

“दादा, स्टॉप प्रैस ।”

“क्यों ?”

“बड़ी फड़काऊ खबर है ।”

“क्या ?”

“दिलीप थापर का खून । ब्लास्ट के चीफ रिपोर्टर पर जानलेवा हमला ! खूनी फरार ।”

“होल्ड करो । मैं दूसरे फोन पर स्टॉप प्रैस का आर्डर जारी करता हूं ।”

“गुड ।”

सुनील रिसीवर कान से लगाये खड़ा रहा ।

दो मिनट बाद उसके कान में राय की आवाज पड़ी - “प्रेस रुकवा दी है । अब जल्दी बोलो क्या माजरा है ?”

सुनील ने संक्षेप में माजरा बयान किया ।

“गुड ।” - राय बोला - “नाओ, गैट आफ दि लाइन ।”

“अभी नहीं । पहले एक बात और सुनो ।”

“बोलो । जल्दी बोलो ।”

“फौरन यहां किसी को कैमरे के साथ भेजो ताकि...”

“आई अन्डरस्टैण्ड । नाओ...”

सुनील ने पलंजर दबाकर सम्बन्धविच्छेद किया और फिर पुलिस का नम्बर डायल करने लगा ।

Chapter 2

पुलिस के पहुंचने से पहले से कोठी का एक चक्कर लगा लेने से सुनील अपने-आपको न रोक सका। वो आगे बढ़ा तो उसने पाया कि हाल से आगे विशाल डायनिंग हाल था, जहां कि कीमती फर्नीचर लगा हुआ था और जो वैसी ही कीमती पेंटिंग्स से सुसज्जित था।

डायनिंग हाल के पहलू में होटलों जैसी विशाल जगमग-जगमग करती किचन थी जहां पड़े चार दरवाजों वाले रेफ्रिजरेटर ने उसका ध्यान विशेषरूप से आकर्षित किया। उसने रेफ्रिजरेटर खोलकर भीतर से एक सेब निकाला जिसे कि वो चुटकियों में हज्म कर गया। फिर उसने एक और सेब निकालकर रेफ्रिजरेटर को बन्द कर दिया। उस सेब को कुतरता हुआ वो वहां से बाहर निकला और बदस्तूर कोठी की गश्त पर आगे बढ़ा।

डायनिंग हाल के पहलू में वैसा ही विशाल, बड़े करीने से सजा हुआ ड्राइंगरूम था। पीछे एक स्टडी थी जिसकी एक दीवार के साथ बार बना हुआ था। बार काउन्टर के सागने फर्श पर एक ब्रांडी की बोतल टूटी पड़ी थी। उसकी निगाह पैन होती हुई कुछ क्षण चारों तरफ घूमी फिर वह वहां से निकलकर वापिस फ्रंट हाल में आ गया जहां कि टेलीफोन था।

वहां से ऊपर की मंजिल को संगमरमर की सीढ़ियां जाती थीं।

सीढ़ियां तय करके वो ऊपर पहुंचा तो सबसे पहले उसे कहीं से किसी के जोर-जोर से खरटे लेने की आवाज आयी। आवाज का पीछा करता वो एक बैडरूम के खुले दरवाजे पर पहुंचा। चौखट की ओट से एक सावधान निगाह उसने भीतर दौड़ाई तो पाया कि कीमती साड़ी-ब्लाउज और रत्नजड़ित जेवरों से लकदक एक सफेद बालों वाली वृद्धा दीन-दुनिया से बेखबर एक विशाल डबल बैड पर लुढ़की पड़ी थी।

लाजवन्ती थापर ! चार्ड जी !

और कौन हो सकती थी वो औरत ? नमिता ने भी तो उसके ऊपरली मंजिल के एक बैडरूम में सोई पड़ी होने की तसदीक की थी !

रही-सही चुगली एक साइड टेबल पर पड़ी नेपोलियन ब्रांडी की आधी भरी बोतल कर रही थी।

वृद्धा की लकदक में कोई कमी थी तो ये थी कि उसके पांव नंगे थे।

उसने इर्द-गिर्द निगाह दौड़ाई तो उसे कहीं भी कोई जनाना चप्पलें या सैंडिलें न दिखाई दीं।

फिर फर्श पर उकड़ूं होकर उसने पलंग के नीचे झांका।

पलंग के नीचे सैंडिलों का एक जोड़ा लुढ़का पड़ा था जिसके एक पांव की ऊंची एड़ी गायब थी।

वो सीधा हुआ, उसने आगे बढ़कर एक ओर बनी वार्डरोब का दरवाजा खोला।

वार्डरोब जनाना कपड़ों और सैंडिलों से लबरेज थी।

उसने कुछ कपड़ों का मुआयना किया तो उसे महसूस हुआ कि वो कपड़े न तो पलंग पर पड़ी वृद्धा के नाप के थे और न उसकी उम्र को सजते फैशन के थे।

फिर उसे एक शैल्फ पर तह करके ऊपर-नीचे रखे कई जनाना रूमाल दिखाई दिये।

उसने एक रूमाल उठाकर खोला तो पाया कि उसके एक कोने में धागे से 'के टी.' कढ़ा हुआ था।

के टी ? कीर्ति थापर ?

क्या वो थापर की बीवी का कमरा था ?

तो उसकी मां वहां क्या कर रही थी ?

उसने वार्डरोब को यथापूर्व बन्द किया और जाकर अटैन्ड बाथ के भीतर झांका ।

बाथरूम में अस्तव्यस्तता का बोलबाला था । फर्श पर पानी बिखरा हुआ था जिसमें एक सफेद तौलिया पड़ा था जिस पर कि खून के धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे । उसने गौर से देखा तो उसे कहीं-कहीं पानी की रंगत भी गुलाबी लगी । एक ओर एक टुपट्टा पड़ा था जिस पर एक जोड़ी जनाना चप्पलें पड़ी थीं । वाश बेसन के करीब पट्टियों का एक रोल और सर्जिकल टेप की चरखी पड़ी थी ।

सेब कुतरता वो वहां से हटा और वापिस गलियारे में पहुंचा । उसने पाया कि वहां चार बैडरूम और थे लेकिन सब-के-सब खाली थे । कहीं कोई नहीं था ।

इतनी बड़ी कोठी में लाजवन्ती थापर की सूरत में जो एक प्राणी वहां मौजूद था, उसका वहां होना या न होना उस घड़ी एक बराकर था ।

वो वापिस नीचे पहुंचा ।

तब तक वो दूसरा सेब भी हज्म कर चुका था ।

किचन में जाकर उसने रेफ्रिजरेटर में से एक सेब और निकाल लिया । तब उसे ख्याल आया कि वो तब भी वेटर की यूनीफार्म पहने था ।

और नमिता के लाये कपड़ों का बंडल बोट हाउस में पड़ा था ।

पूर्ववत सेब कुतरता वो आगे बढ़ा ।

तभी काल बैल बजी, दरवाजे पर एक अधिकारपूर्ण दस्तक पड़ी और फिर दरवाजे को बाहर से धकेला गया ।

पुलिस आ गयी - वो होंठों में बुदबुदाया - कोई शालीन, संभ्रांत आगन्तुक तो ऐसा कर नहीं सकता ।

खुले दरवाजे से एक वर्दीधारी युवा सब-इंस्पेक्टर ने भीतर कदम रखा । सुनील को देखकर वो सकपकाया ।

“कौन हो तुम ?” - वो डपटकर बोला ।

“मैं वो शख्स हूं” - सुनील बोला - “जिसने दिलीप थापर के कत्ल की बाबत पुलिस को फोन किया था ।”

“तुम्हारे हाथ में क्या है ?”

“सेब ?”

“सेब ! उल्लू बनाते हो ! मुझे तो हथगोला दिखाई देता है ।”

“मैं बलिहार जनाब की तीखी नजर पर ।”

“मजाक मत करो ।”

“मजाक मैं सिर्फ लड़कियों से करता हूं ।”

“इधर दिखाओ क्या है तुम्हारे हाथ में ?”

सुनील ने सेब उसकी तरफ उछाल दिया जिसे कि उसने हवा में लपका ।

“ये तो सच में सेब है ।” - फिर उसके मुंह से निकला ।

“अच्छी तरह से परख लो, कभी-कभी जो दिखाई देता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखाई नहीं देता ।”

उसने बुरा-सा मुंह बनाया और सेब वापिस सुनील की तरफ उछाल दिया ।

सुनील ने सेब लपकने की कोशिश न की, वो निःशब्द फर्श पर गिरा और फिर दीवार तक लुढ़कता चला गया ।

“तो तुम” - सब-इंस्पेक्टर बोला - “सुनील हो ! ‘ब्लास्ट’ के चीफ रिपोर्टर !”

“हां ।” - सुनील बोला ।

“नाम सुना है मैंने तुम्हारा ! काफी नाम है तुम्हारा अपने धन्धे में ।”

“कृपा है ऊपर वाले की ।”

“वेटर क्यों बने बैठे हो ?”

“ये एक लम्बी कहानी है जिसे सुनने से पहले शायद तुम लाश का मुआयना करना चाहो ।”

“कोठी में और कौन-कौन है ?”

“कोई नहीं । सिवाय ऊपर घोड़े बेचकर सोई पड़ी एक औरत के जिसके बारे में मेरा अन्दाजा है कि वो हत्प्राण की मां है ।”

“उसे कत्ल की खबर नहीं ?”

“नहीं । जैसी हालत में वो इस घड़ी है उसमें तो यहां भूचाल भी आ जाये तो उसे खबर नहीं लगने वाली ।”

“वजह ?”

“बाटली मारती है ।”

“टुन्न है ?”

“हां ।”

“पता नहीं कहां-कहां से यहां आ जाते हैं ऐसे लोग ! जा के अपने बाटलिस्तान में रहें जहां के कि वो हैं । चले आते हैं मुंह उठाये ।”

“जनाब की तारीफ ?”

“मैं नार्थ शोर पुलिस चौकी का इंचार्ज हूं । अनिल कपूर नाम है मेरा ।”

“अनिल कपूर ?”

“हां ।” - वो अनिल कपूर के ही अन्दाज से बड़ी शान से मुस्कराया - “सीधा वन टू का ट्वैल्व करता हूं ।”

“फोर नहीं ?”

“ट्वैल्व । वन टू । आजू-बाजू । ट्वैल्व । वन डजन ।”

“बढिया । तफ्तीश आप ही करेंगे ?”

“अभी तो मैं ही करूंगा । बाद में हैडक्वार्टर से कोई उच्चाधिकारी यहां पहुंचेगा । ऐसा ही दस्तूर है कत्ल के केस की तफ्तीश का ।”

“आई सी ।”

“लाश कहां है ?”

“बोट हाउस में ।”

“बोट हाउस कहां है ? रास्ता दिखाओ ।”

“जरूर ।”

लम्बे डग भरता सुनील उसके करीब पहुंचा तो उसने पाया कि बाहर दो सिपाही भी खड़े थे। वो सब-इंस्पेक्टर के साथ बोट हाउस की ओर बढ़ा।

“कब मरा वो?” - रास्ते में सब-इंस्पेक्टर ने सवालियों की झड़ती लगा दी - “कैसे मरा! किसने मारा? कैसे मालूम है कि वो मर गया है। कैसे मालूम है कि मरने वाला दिलीप थापर ही है? इतनी रात गये तुम्हारा यहां क्या काम? तुम्हें कैसे पता था कि बोट हाउस में कोई था?”

“जनाब, ये ही तो सवाल हैं जिनके जवाब आपने अपनी तफ्तीश से और मौकायेवारदात के मुआयने से देने हैं।”

“क्यों नहीं देने? बिल्कुल देने हैं। वैसे ही तो मेरा नाम अनिल कपूर नहीं है।”

“क्यों नहीं! क्यों नहीं! ऊपर से तुम तो वन टू का ट्वैल्व करते हो! फोर से सीधा तीन गुणा!”

“बिल्कुल!” - वो रोब से बोला - “अब बोलो मरने वाले की तुम्हारे से क्या डिस्ट्रीब्यूट थी?”

“डिस्ट्रीब्यूट?” - सुनील सकपकाया।

“अदावत! तकरार! झगड़ा-फसाद।”

“ओह! डिसप्यूट।”

“वही।”

“बोट हाउस आ गया।”

सब-इंस्पेक्टर ने सशंक भाव से खुले दरवाजे से ही भीतर निगाह डाली।

“यहां तो” - वो बोला - “खून ही खून दिखाई दे रहा है। है तो ये थापर ही।”

वो लाश के करीब पहुंचा और झुककर उसका मुआयना करने लगा।

तभी कैमरों से लदा-फंदा अर्जुन वहां पहुंचा।

सुनील ने उसे इशारा किया।

अर्जुन ने तत्काल एक कैमरा सीधा किया और बड़ी दक्षता से तस्वीर खींची। फ्लैश लाइट का झमाका फूटा तो सब-इंस्पेक्टर ने तत्काल लाश पर से सिर उठाया।

“ये क्या नॉनसैन्सिबिलिटी है?” - वो गर्जकर बोला - “कौन हो तुम? किसने इजाजत दी तुम्हें फोटो निकालने की?”

“ये मेरा सहयोगी है।” - सुनील जल्दी से बोला।

“कोई भी हो ये, इसने...”

“तुम्हारी तस्वीर इसलिये फटाफट खींची है क्यों कि अगर अभी हैडक्वार्टर से तफ्तीश करने के लिये तुम्हारा कोई उच्चाधिकारी आ जायेगा तो फिर मेरे अखबार में बतौर इनवैस्टिगेटिंग आफिसर तुम्हारी नहीं, उसकी तस्वीर छपेगी।”

उसने तत्काल उत्तर न दिया, वो कुछ क्षण सोचता रहा और फिर सख्ती से बोला - “तस्वीर अच्छी आनी चाहिये।”

“वन टू नहीं, पूरी ट्वैल्व अच्छी आयेंगी। हर पोज में। हर पोजीशन में।”

“मुखपृष्ठ पर छपे।”

“वहीं छपेगी। बढ़िया, रोबदार हैडिंग के साथ। सब-इंस्पेक्टर अनिल कपूर मेक्स वन टू का ट्वैल्व... आई मीन प्रिलिमिनेरी इनवैस्टीगेशन इन ए मर्डर केस।”

“वही तस्वीर छपे जिसमें मैं स्लम लगूँ।”

“क्या ?”

“मेरे कुछ पोज ऐसे आते हैं कि मैं उनमें मोटा लगता हूँ। वो तस्वीर छापना जिसमें मैं मोटा न लगूँ, स्लम लगूँ।”

“ओह ! स्लिम लगूँ !”

“वही। अब फटाफट निपटो।”

तत्काल अर्जुन ने आनन-फानन कई तस्वीरें खींचीं।

तभी दूरी कहीं फ्लार्डिंग स्क्वायड के सायरन की आवाज गूंजी।

“नाओ स्ट्रैम्बल।” - सब-इन्स्पेक्टर बोला।

“स्क्रेम।” - सुनील ने संशोधन किया - “अर्जुन, एस. आई. साहब फूट जाने को कह रहे हैं।”

“अभी लो, सरकार।” - अर्जुन बोला। वो आगे बढ़ा और फिर ड्राइव-वे के इर्द-गिर्द उगे पेड़ों के पीछे अन्धेरे में कहीं विलीन हो गया।

“तुम” - सब-इन्स्पेक्टर एक सिपाही से बोला - “सड़क पर पहुंचो और साहब को यहां का रास्ता दिखाओ।”

सिपाही तत्काल फाटक की ओर भागा।

पांच मिनट में अपने दलबल के साथ इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल वहां पहुंचा। दलबल में मुख्यतः एक फोटोग्राफर, एक फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट और एक डॉक्टर शामिल थे।

प्रभूदयाल ने एक उड़ती निगाह सुनील पर डाली और निगाह परे फिरा ली लेकिन तत्काल उसकी गर्दन एक झटके के साथ वापिस घूमी और अपने फिर सुनील पर निगाह डाली। उसके चेहरे पर सख्त आश्चर्य के भाव आये।

सुनील ने उसका अभिवादन किया।

“‘ब्लास्ट’ से नौकरी छूट गयी ?” - प्रभूदयाल भवें उठता हुआ बोला - “वैटर भरती हो गये हो ?”

“अभी इतने बुरे दिन नहीं आये मेरे।” - सुनील बोला।

“लेकिन वैसी नौबत आने पर तुम जिस नये कारोबार को तरजीह दोगे, वो वेटिंग होगा जिसका कि तुम रिहर्सल कर रहे हो ? बाकायदा वर्दी पहनकर ?”

“मालिक हो, माई-बाप। कुछ भी कह सकते हो।”

“कल की खबर ही पुलिस के पास तुम्हारे जरिये पहुंची थी, या लाश भी तुमने ही बरामद की थी ?”

“लाश भी मैंने बरामद की थी।”

“हमेशा की तरह ?”

“हमेशा की तरह नहीं। तमाम की तमाम लाशों की बरामदी का जरिया मैं नहीं होता। दो जुदा जगहों पर एक साथ दो कल्ल हो जायें तो दोनों जगह मैं मौजूद नहीं हो सकता।”

“जिसका कि तुम्हें अफसोस है।”

“हां। अपने जर्नलिस्ट के प्रोफेशन के लिहाज से तो अफसोस ही है।”

प्रभूदयाल ने एक गहरी सांस ली, असहाय भाव से गर्दन हिलायी और फिर सख्ती से बोला - “आउट।”

“मुझे कह रहे हो, माई-बाप ?” - सुनील सकपकाकर बोला ।

“हां ।”

“लेकिन...”

“सुना नहीं ?” - प्रभूदयाल दान्त पीसता हुआ बोला ।

“यस, सर । राइट अवे, सर ।”

“बाहर मेरा इन्तजार करना है । कहीं खिसक नहीं जाना है । समझ गये ?”

“बिल्कुल समझ गया, जनाब ।”

सुनील बोट हाउस से बाहर निकल गया ।

पीछे प्रभूदयाल सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर से मशवरा करने लगा ।

पांच मिनट बाद वो दोनों बाहर निकले तो प्रभूदयाल सब-इन्स्पेक्टर से कह रहा था - “डॉक्टर साहब यहां से निपट जायें तो उन्हें साथ लेकर कोठी में पहुंच जाना और उस औरत को नीन्द से जगाने की कोशिश करना ।”

“यस, सर ।” - सब-इन्स्पेक्टर तत्पर स्वर में बोला ।

फिर प्रभूदयाल सुनील से सम्बोधित हुआ ।

“फिलहाल यहां मेरा कोई काम नहीं । तुम्हारा तो कतई कोई काम नहीं । न अब न बाद में । इसलिये आओ कोठी के भीतर चलते हैं ।”

“वहां किसलिये ?”

“ताकि मैं सुन सकूं कि कथावाचक सुनील भाई मुलतानी, कैसे पेश करता है नये कत्ल की कहानी ।”

“ओह ! ठीक है ।”

प्रभूदयाल के साथ वो कोठी में पहुंचा । दोनों हाल में जाकर दो कुर्सियों पर आमने-सामने बैठ गये ।

“शुरू हो जाओ ।” - प्रभूदयाल सख्ती से बोला ।

“जरूर ।” - सुनील बोला - “पहले एक सवाल ! बल्कि एक गुजारिश ।”

“क्या ?”

“कोई सिगरेट-विग्रेट तो होगी नहीं आपके पास या...”

प्रभूदयाल ने घूरकर उसे देखा ।

“ठीक है, ऐसे ही सही । वो क्या है कि जब मैं यहां पहुंचा था तो...”

“शुरू से । शुरू से शुरू करो । कहां से यहां पहुंचे थे ? क्यों पहुंचे थे ? इस बार टांग कैसे फंसी तुम्हारी दूसरे के फटे में ?”

सुनील ने पूरी शराफत से सारी दास्तान सुनाना शुरू किया । केवल एक बात उसने छुपायी । उसने झील किनारे के काटेज में विकी और हत्प्राण की बीवी कीर्ति की गोपनीय और अति रोमांटिक मुलाकात का जिक्र न किया । आखिर उसने विकी से वादा किया था कि वो उस बाबत अपनी जुबान बन्द रखेगा । अलबत्ता लाश की बरामदी के जिक्र के दौरान वो एक बार फिर झिझका ।

क्या वो प्रभूदयाल को नमिता की बाबत सब कुछ सच सच बताये ? अगर वो सच बोलता था तो नमिता की शामत आ सकती थी ?

लेकिन तभी प्रभूदयाल बड़े उतावले भाव से बोल पड़ा - “तुम्हें मालूम है कि बोट में एक बारूद की छड़ मौजूद थी ? इनकार से काम नहीं चलेगा, रिपोर्टर साहब । जवाब ये सोच के देना कि मैं तुम्हारी नस-नस से वाकिफ हूँ ।”

“मालूम है ।” - सुनील धीरे से बोला ।

“उसे छुआ था ?”

“हां ।”

“क्यों ?”

“क्यों कि एक बार उसकी खबर लग जाने के बाद मैं कुछ न करता तो वो फट सकता था और नतीजा होता कि बोट में पड़ी लाश...”

“क्या किया था तुमने ?”

“मैंने उसका पलीता निकाल दिया था और उसे यथास्थान वापिस रख दिया था ।”

“पहले कभी यूं बारूद को हैंडल किया था ?”

“नहीं ।”

“फिर कैसे मालूम था कि पलीता निकाल देने से बारूद नहीं फटता था ?”

“यूं ही अन्दाजा लगाया था ।”

“जानते हो कि उस कोशिश में बारूद तुम्हारे हाथ में ही फट सकता था ?”

“जानता हूँ लेकिन... अब मैं क्या कहूँ, माई-बाप ! अब तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि अन्त भला सो भला ।”

“पलीते को बारूद की छड़ के साथ जहां जोड़ा जाता है, वहां एक मेटल की टोपी-सी चढ़ी होती है ।”

“ढक्कन ।”

“एक ही बात है । तुमने उस ढक्कन को भी छेड़ा था ?”

“ढक्कन उतारा तो था मैंने । तभी तो तसदीक हुई थी कि बारूद फटने वाला नहीं था ।”

“वो ढक्कन बारूद की छड़ पर चढ़ाने के लिये एक औजार होता है लेकिन लगता है कि जिस किसी की भी वो करतूत थी, उसके पास वो औजार नहीं था । उसने वो ढक्कन दान्तों से दबाकर छड़ पर फिट किया था - दान्तों के निशान टोपी पर साफ दिखाई दे रहे थे ।”

“इसका मतलब तो ये हुआ कि जिस किसी ने भी बोट में बारूद लगाया था, उसे ऐसे कामों को हैंडल करने का काफी तजुर्बा था !”

“या कतई कोई तजुर्बा नहीं था । इसीलिये उस काम को अंजाम देने के लिये जब कोई औजार उपलब्ध न हुआ तो दान्तों से काम चला लिया ।”

“माई-बाप, ये तो चित भी मेरी पट भी मेरी मार्का जवाब हुआ ! एक ही काम में तजुर्बे की भी झलक और उस पर नातजुर्बे का भी इलजाम !”

वो ठिठका, उसने प्रभूदयाल की ओर देखा । उसे ऐसा न लगा कि प्रभूदयाल उसकी बात को किसी खातिर में लाया हो ।

“यहां तुम्हारे साथ कौन था ?” - फिर प्रभूदयाल ने नया सवाल किया ।

“मैंने कब कहा मेरे साथ कोई था ?”

“नहीं कहा तो अब कह लो ।”

“क्या मतलब ?”

“मैं अन्धा नहीं हूँ, रिपोर्टर साहब । और न ही ये कत्ल का पहला केस है जिसकी कि मैं तफ्तीश कर रहा हूँ । न ही अब मैं एकाएक तुम्हारे सुनीलियन पैतरो से नावाकिफ हो गया हूँ । समझे !”

सुनील खामोश रहा ।

“बोट हाउस के फर्श पर नंगे, गीले, जनाना कदमों के निशान बने साफ दिखाई दे रहे थे । इस बार कौन थी डैसमेल इन डिस्ट्रेस ? इस बार किस मुसीबतजदा हसीन को मुसीबत से निजात दिलाने की फिराक में हो ? नाम बोलो उसका । फौरन । कौन थी तुम्हारे साथ यहाँ ?”

अब नमिता की बाबत खामोश रहना बेवकूफी थी ।

“नमिता ।” - वो बोला - “नमिता मेहरा ।”

“वो कौन है ?”

“मकतूल की साली है ।”

“नंगे पांव क्यों थी ? पांव गीले क्यों थे ?”

“वो पानी में कूदी थी ।”

“क्यों ?”

“रिवॉल्वर बरामद करने के लिये जो कि पानी के नीचे डूबी पड़ी थी ।”

“ऊपर पायर पर से रिवॉल्वर दिखाई दे रही थी ?”

“दिखाई दे ही रही होगी । तभी तो उसने मेरी परवाह किये बिना अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद गयी ।”

“यानी कि किसी ने थापर को शूट करके रिवॉल्वर को बोट के पहलू से नीचे पानी में फेंक दिया था ?”

“ऐसा ही था कुछ ।”

“अब है कहां वो लड़की ? वो नमिता मेहरा ? मकतूल की साली ?”

“मालूम नहीं ।”

“जरा होश में रहकर” - प्रभूदयाल का स्वर कर्कश हो उठा - “सोच-समझ के जवाब दो । समझे ?”

“तुम तो मुझे धमका रहे हो ?”

“बिल्कुल ठीक पहचाना है तुमने । अभी सिर्फ धमका रहा हूँ, मुनासिब जवाब न मिलने पर मैं इससे कहीं ज्यादा सख्ती से पेश आ सकता हूँ तुम्हारे साथ ।”

“ये तो सरासर धांधली है । मैंने क्या किया है ?”

“मेरे से क्या पूछते हो ? तुम बताओ तुमने क्या किया है ?”

“मैंने कुछ नहीं किया ?”

“तो फिर तुम्हें सीधे-सादे सवालों का सीधा-सच्चा जवाब देने से क्या एतराज है ?”

“कृपानिधान” - सुनील जिच होता हुआ बोला - “मुझे नहीं पता वो कहां गयी है ? अपनी मंजिल की बाबत उसने मुझे कोई इशारा नहीं किया था - सिवाय इसके कि वो कीर्ति की तलाश में जा रही थी ।”

“कीर्ति ?”

“उसकी बड़ी बहन । मकतूल की बेवा । मिसेज दिलीप थापर ।”

“हूँ । रिवाल्वर वो लड़की - नमिता - साथ ले गयी ?”

“हां ।”

“कैसी थी वो रिवाल्वर ?”

“मैंने सिर्फ एक झलक ही देखी थी । वो हाथी दान्त के हथ्थे वाली छोटी सी रिवाल्वर थी ।”

“थी किसकी ?”

“कीर्ति की ।”

“तुम्हें कैसे मालूम ?”

“नमिता ने बताया था ।”

“वो लड़की रिवाल्वर अपने साथ क्यों ले गयी ?”

“पता नहीं ।”

“क्यों पता नहीं ? तुम्हें बताना चाहिये था उसे कि मौकायेवारदात से यूँ किसी चीज को उठा ले जाना - खास तौर सम्भावित मर्डर वैपन को - जुर्म था ?”

“मैंने कहा था लेकिन उसने मेरी एक नहीं सुनी थी ।”

“और क्या उठाया उसने यहां से ?”

सुनील हिचकिचाया ।

“रिपोर्टर साहब, वो लड़की कहीं गायब नहीं हो सकती । उसका पकड़ा जाना, या खुद लौट आना, महज वक्त की बात है । लौटकर जब वो अपनी जुबान से बतायेगी कि मर्डर वैपन के अलावा उसने यहां से और क्या उठाया था तो... क्या बन्ध जायेगा तुम्हारी जुबान में उसका ?”

“पुलन्दा ।”

“समझदार आदमी हो । अब बोलो और क्या उठाया था उसने ?”

“एक बालों में लगाने वाला जनाना क्लिप और एक सैंडल से उखड़ी ऊंची एड़ी ।”

“कहां पड़ी थीं ये चीजें ?”

“बोट हाउस के फर्श पर ।”

“फर्श पर कहां ?”

“बोट से कोई आठ-दस फुट परे । दरवाजे की तरफ ।”

“हूँ । और कुछ ?”

सुनील ने इनकार में सिर हिलाया ।

फिर प्रभूदयाल ने आवाज देकर अपने साथ आये हवलदार को भीतर बुलाया ।

“नमिता मेहरा का हुलिया बयान करो ।” - उसने सुनील को आदेश दिया ।

सुनील ने किया ।

“यहां से रुखसत कैसे हुई थी ? पांव-पांव या कोई सवारी थी उसके पास ?”

“सवारी थी । काले रंग की फियेट ।”

“नम्बर ?”

“मालूम नहीं ।”

“क्यों मालूम नहीं ?”

“नम्बर की तरफ मेरी तवज्जो नहीं गयी थी । मुझे नहीं मालूम था कि बाद में उस बाबत मेरे से सवाल पूछा जाना था । मालूम होता तो नम्बर जरूर देखता । बल्कि देखकर डायरी में नोट कर के रखता ।”

“हूँ ।” - प्रभूदयाल बोला, फिर वो हवलदार से सम्बोधित हुआ - “सुना तुमने ?”

“जी, जनाब ।” - हवलदार तत्पर स्वर में बोला ।

“सब कुछ ? गौर से ?”

“जी, जनाब ।”

“जीप में पहुंचो और वायरलैस से इस बाबत हैडक्वार्टर खबर करो । वो लड़की जहां भी मिले उसे हिरासत में ले लिया जाये और क्वेश्चनिंग के लिये हैडक्वार्टर लाया जाये ।”

“जी, साहब ।”

हवलदार फौरन बाहर का लपका ।

“तो” - प्रभूदयाल फिर सुनील की तरफ आकर्षित हुआ - “मकतूल तुम्हारा कत्ल करवाने पर आमादा था ?”

“करवा ही दिया था । मैं तो तकदीर से बच गया ।”

“क्या पता वो सिर्फ तुम्हें धमका रहा हो ! कत्ल करवाना कोई हंसी-खेल तो नहीं ।”

“कातिलाना हमला करवाना भी तो कोई हंसी-खेल नहीं, बन्दानवाज ।”

“वो तो है । वैसे असाल्ट विद इन्टेन्ट टु किल, इललीगल कनफाइनमेंट भी जघन्य अपराध हैं ।” - वो एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “बशर्ते कि जो हुआ उसकी बाबत तुमने सब कुछ सच-सच बयान किया है ।”

“मुझे झूठ बोलने का फायदा ! ऊपर से मेरा हुलिया क्या अपनी कहानी खुद नहीं कह रहा ! मेरे कपड़े, मेरा निजी सामान सब उन लोगों ने कब्जा लिया ! किसलिये ? मेरे साथ मखसरी करने के लिये ?”

“जब नमिता तुम्हारे लिये कपड़े लाने कोठी में गयी थी तो तुम बोट हाउस में थे । ऐसे में अगर थापर बोट हाउस में पहुंच गया होता तो क्या होता ?”

“तुम्हीं बताओ क्या होता ?”

“तो अपने बन्दी को आजाद हो गया पाकर वो आगबबूला हो उठा होता । तब उसने तुम पर रिवॉल्वर तानी होगी, तुम उस पर झपटे होगे, और फिर या तो धींगामुश्ती में रिवॉल्वर चल गयी होगी या तुमने उससे रिवॉल्वर छीनकर उसे शूट कर दिया होगा ।”

सुनील ने एक जोर की जमहाई ली ।

“यानी कि तुम्हें मेरी थ्योरी से इत्तफाक नहीं ?”

“अब मैं क्या कहूँ ?”

“और कौन कहे ? एक आदमी तुम्हारी जान लेने से आमामादा था, आत्मरक्षा में तुमने उसकी जान ले ली तो ये कौन-सी बड़ी बात है ?”

“माई-बाप, ऐसे काम मैं सिर्फ मंगल-शुक्र को करता हूँ । इत्तफाक से आज न मंगल है और न शुक्र है ।”

“मेरे से मसखरी का नतीजा जानते हो ?”

सुनील ने फिर जमहाई ली ।

“मैं करूँ तुम्हारी नीन्द का इन्तजाम ? हवालात में अच्छी नींद आयेगी ।”

सुनील खामोश रहा ।

“नमिता को कब से जानते हो ?”

“कब से क्या, जानता ही नहीं हूँ । आज ही पहली बार मुलाकात हुई थी मेरी उससे ।”

“फिर भी वो तुम्हारी इतनी मदद कर रही थी ! पहले तुम्हें अपनी कार पर होटल लेक व्यू लेकर गयी जहां से उसने तुम्हारे लिये वेटर की यूनीफार्म मुहैया की, यहां लाकर हजार रुपये दिये, अपनी कार देने का वादा किया । इतना सब कुछ खामखाह किया उसने ? एक अजनबी के लिये ?”

“हां । और हालात की रू में जो उसने किया, वो ‘इतना सब कुछ’ नहीं था, मामूली था । कार सुबह वापिस आ जाती, रुपये उधार थे जो मैं लौटा देता, वेटर की यूनीफार्म मैंने सिर मारनी थी ? और नार्थ शोर तो वो लौट ही रही थी, मुझे भी साथ लाकर कौन सी हातिमताई की कब्र पर लात मार दी उसने ?”

“फिर भी जो कुछ उसने किया” - प्रभूदयाल जिद-भरे स्वर में बोला - “क्यों किया ? एक अजनबी की खातिर अपने सगे जीजा से मुखालफत करना उसे क्यों कर कबूल हुआ ?”

“मुझे क्या पता ?”

“क्यों नहीं पता तुम्हें ? वैसे तो इतने तीसमार खां बनते हो ।”

“उसको मेरे से कुछ भा गया होगा । पहले भी कई बार कई लड़कियां मुझ पर पहली ही नजर में फिदा हुई हैं ।”

“बकवास !”

“तुमने उसे हिरासत में लिये जाने का हुक्म जारी करवाया है तो उसका पकड़ा जाना तो महज वक्त की बात है । तब तुम उसी से पूछ लेना कि उसने क्यों मेरी मदद की ? सीधे घोड़ी के मुंह से ।”

“क्या ?”

“डायरेक्ट फ्रॉम हार्सिज माउथ ।”

“मेरा सवाल तुम से है ।”

“मेरा जवाब यही है कि मैं नहीं जानता कि क्यों उसने मेरी मदद की ! मैं मुसीबत में था, उसने आकर उस मुसीबत से मुझे उबारा । अब मेरा उससे ये सवाल करना मूर्खता होती कि ऐसा उसने क्यों किया ? दान की बछिया के दान्त नहीं गिन जाते, गरीबपरवर ।”

“तुमने लड़की को क्यों खिसक जाने दिया यहां से ?”

“मैं कैसे रोकता उसे ? मेरे पास क्या तोप थी ?”

“ये सब लिफाफेबाजी है । मुझे तो लगता है कि तुमने जान-बूझकर उसे यहां से खिसक जाने दिया ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि हो सकता है कि उसी ने कत्ल किया हो...”

“कृपानिधान, अभी तो आप कत्ल मेरे हाथों हुआ होने की घोषणा करके हटे हैं और अभी आप...”

“...अब क्योंकि” - प्रभूदयाल ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं - “उसने तुम्हारी मदद की थी इसलिये उसकी मदद करना तुनमे अपना फर्ज समझा ।”

“नानसैस । वो लड़की हर घड़ी मेरे साथ थी । और बोट हाउस में से लाश मैंने बरामद की थी, वो तो बाद में वहां पहुंची थी ।”

“तुम्हीं तो कह रहे हो कि वो हर घड़ी तुम्हारे साथ थी । उसकी मदद करने के अभियान के तहत तुम इस बाबत भी तो झूठ बोल सकते हो ।”

तभी बाहर से वहां एक कार पहुंचने की आवाज आयी ।

दोनों की निगाह बाहरले दरवाजे की ओर उठी ।

कुछ क्षण बाद सब-इन्स्पेक्टर ‘वन टू का ट्वेल्व’ के साथ विवेक वर्मा और मोहिनी ने भीतर कदम रखा ।

उनके पीछे-पीछे पुलिस का डॉक्टर था ।

“ये साहब अपने-आपको हत्राण के बिजनेस एसोसियेट बताते हैं” - सब-इन्स्पेक्टर बोला - “और मैडम हत्राण की छोटी साली हैं ।”

प्रभूदयाल ने सहमति में सिर हिलाया ।

सब-इन्स्पेक्टर क्षण-भर को वहां ठिठका खड़ा रहा, फिर वो डाक्टर के साथ पहली मंजिल की सीढ़ियों की ओर बढ़ चला ।

सुनील ने नोट किया कि मोहिनी के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और वर्मा के होंठ भिंचे हुए थे और पेशानी पर बल पड़े हुए थे ।

“क्या बात है ?” - मोहिनी बोली - “यहां पुलिस क्यों जमा है ? क्या हो गया है यहां ? बाकी लोग कहाँ हैं ?”

यानी कि - सुनील ने सोचा - अभी उन्हें वारदात की खबर नहीं लगी थी, वो महज पुलिस की वहां मौजूद से आन्दोलित थे ।

“धीरज रखिये ।” - प्रभूदयाल शान्ति से बोला - “अभी सब मालूम होता है ।”

“लेकिन...” - वर्मा ने कहना चाहा लेकिन तभी उसकी निगाह दोबारा सुनील पर पड़ी, तत्काल उसके चेहरे पर सख्त हैरानी के भाव आये, वो एक कदम सुनील की तरफ बढ़ा और हैरानी से बोला - “तुम ! यहां !”

सुनील ने बड़े अनमने भाव से सहमति में सिर हिलाया ।

“क्या हो गया है यहां ?”

“थापर साहब दूसरी दुनिया में पहुंच गये हैं ।”

प्रभूदयाल ने आग्नेय नेत्रों से सुनील की तरफ देखा ।

“अच्छा हुआ !”

सुनील ने अचकचाकर मोहिनी की तरफ सिर उठाया जिसके मुंह से कि वो उद्गार निकले थे ।

प्रभूदयाल भी हकबकाया-सा उसकी तरफ देख रहा था ।

“क्या फरमाया आपने ?” - फिर वो सख्ती से बोला ।

“वो... वो क्या है कि” - मोहिनी हकलाई - “म - मेरा... वो... वो मतलब नहीं था ।”

“तो क्या मतलब था आपका ?”

मोहिनी ने जोर से थूक निगली और फरियाद करती निगाहों से वर्मा की ओर देखा ।

“क्या हुआ थापर साहब को ?” - वर्मा वार्तालाप का सूत्र अपने हाथ में लेता हुआ बोला - “दिल का दौरा पड़ गया या कोई एक्सीडेंट कर बैठे ?”

“कल्ल हुआ है उनका ।” - सुनील बोला ।

“शट अप ।” - प्रभूदयाल गला फाड़कर चिल्लाया ।

“यू टाकिंग टु मी, सर ?” - सुनील जान-बूझकर अनभिज्ञ बनता हुआ बोला ।

“यस । शट अप ऑर विल शट यू अप ।”

“आप खामखाह खफा हो रहे हैं । किया क्या है मैंने ? मेरे से एक सवाल पूछा गया है जिसका जवाब ही तो दिया है मैंने ।”

“किसने कहा तुम्हें जवाब देने के लिये ?”

“सवाल करने वाले ने कहा...”

“बकवास बन्द !”

“ठीक है, बन्द तो बन्द । आप कल्ल की खबर का ठीकरा एकाएक फोड़ना चाहते हैं तो ऐसे ही सही ।”

“अब क्या फायदा !”

“मैं चुप हूँ ।”

“आप लोग” - प्रभूदयाल उन दोनों से बोला - “इधर जरा मेरे साथ आइये ।”

दोनों उसके साथ ड्राइंगरूम की तरफ बढे ।

“और तुम” - प्रभूदयाल ने सुनील को ताकीद की - “हिलना नहीं यहां से ।”

“मजाल नहीं होगी, कृपानिधान !” - सुनील बोला, वो एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “मिस्टर वर्मा !”

वर्मा ने थमककर उसकी तरफ देखा ।

“सिगरेट होगा आपके पास ?”

वर्मा ने खामोशी से अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और उसकी तरफ उछाल दिया ।

सुनील ने बड़ी दक्षता से पैकेट की हवा में लपक लिया और बोला - “शुक्रिया । अब माचिस भी...”

वैसे ही उछलता हुआ सिगरेट लाइटर सुनील के हाथ में पहुंचा ।

फिर वो तीनों ड्राइंगरूम में पहुंचकर उसकी निगाहों से लुप्त हो गये ।

पीछे सुनील ने एक सिगरेट सुलगा लिया और बड़े तृप्तिपूर्ण भाव से उसके कश लगाने लगा ।

ड्राइंगरूम से कभी-कभी ऊंचा बोलने की आवाज आती थी लेकिन वो इतनी स्पष्ट नहीं होती थी कि सुनील समझ पाता कि क्या कहा जा रहा था ।

फिर पता नहीं कब वो कुर्सी पर बैठा-बैठा ही ऊंच गया ।

कई लोगों के कदमों की और बोलने की सामूहिक आवाजों ने उसकी तन्द्रा तोड़ी । उसने आंखें खोलकर सामने देखा तो उसने इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल, सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर, पुलिस के डॉक्टर, विवेक वर्मा और मोहिनी की सीढियों के करीब खड़े पाया ।

अनिल कपूर के हाथ में उखड़ी हुई एड़ी वाली सैंडल का पांव था । किसी की उसकी तरफ तवज्जो नहीं थी ।

सुनील उठकर उनके करीब पहुंचा ।

तब भी किसी ने उसकी तरफ ध्यान न दिया ।

प्रभूदयाल अपने जोड़ीदारों के साथ बाहर की ओर बढ़ा तो सुनील उनके पीछे-पीछे हो लिया ।

प्रभूदयाल के व्यवहार से साफ जाहिर हो रहा था कि उसने कल्ल का कोई कैन्डीडेट छांट लिया था और अब उसकी सुनील में कोई खास दिलचस्पी बाकी नहीं रही थी ।

वो मोहिनी और विवेक वर्मा को पीछे छोड़े जा रहा था, इसका मतलब था कि कल्ल का कैन्डीडेट उन दोनों में से कोई नहीं था ।

सुनील को अपने पीछे आता पाकर प्रभूदयाल ठिठका, घूमा, उसने प्रश्नसूचक नेत्रों से सुनील की तरफ देखा ।

“मेरे लिये क्या हुक्म है, माई-बाप ?” - सुनील बोला ।

“तुम्हारे लिए हुक्म है !” - प्रभूदयाल बोला - “ओह हां । तुम सुबह दस बजे अपना बयान दर्ज कराने के लिये पुलिस हैडक्वार्टर पहुंच जाना ।”

“ओके ।”

प्रभूदयाल आगे बढ़ा तो सुनील फिर उसके पीछे हो लिया ।

वो पोर्टिको में खड़ी खुली जीप के करीब पहुंचकर वापिस घूमा और कर्कश स्वर में बोला - “अब क्या है ?”

“शहर तक मुझे भी अपने साथ लेकर चलो ।” - सुनील बोला ।

“ये” - प्रभूदयाल जीप की ओर संकेत करता हुआ है - “बस है या टैक्सी है ?”

“माई-बाप, इतनी रात गये मैं घर कैसे पहुंचूंगा ?”

“पांव-पांव ।”

“तीस मील ! तीस मील का फासला पांव-पांव !”

“दैट्स युअर प्रॉब्लम !”

“अरे, सच में ही लिफ्ट देने से मना कर रहे हो या घिस रहे हो मुझे ?”

“जीप में जगह नहीं है ।”

“मैं बाहर लटका रहूंगा ।”

“फिर ठीक है ।”

सब जीप में सवार हो गये ।

सुनील को जीप से बाहर न लटकना पड़ा। प्रभूदयाल ने उसे आगे अपने साथ बिठाया।

जीप वहां से रवाना हुई। पीछे खड़े सब-इन्स्पेक्टर और उसके सिपाहियों ने जमकर जीप को सैल्यूट मारा।

जीप राजनगर की ओर दौड़ पड़ी।

“मुझे बीच में ऊँघ आ गयी थी” - सुनील धीरे से बोला - “पीछे क्या बीती ? मेरा मतलब, मेरी ऊँघ के दौरान।”

प्रभूदयाल ने उत्तर न दिया।

“माइबाप, एक गरीब पत्रकार की नौकरी का सवाल है।”

“खामखाह पत्रकार बने।” - प्रभूदयाल हंसता हुआ बोला - “थियेटर करते तो ज्यादा कामयाब होते।”

सुनील भी हंसा।

“क्या जानना चाहते हो ?” - फिर प्रभूदयाल अपेक्षाकृत नम्र स्वर में बोला।

“नमिता का कुछ पता चला ?”

“हां। उसे हिरासत में ले लिया गया है और उसके पास से रिवॉल्वर, सैंडल की एड़ी और बालों का क्लिप बरामद कर लिया गया है।”

“कहां थी वो ?”

“झेरी में। वहां के एक काटेज में।”

“आई.टी.डी.सी. के काटेजों में ऐन कोने वाले काटेज में ?”

“तुम्हें कैसे मालूम ?”

“वो काटेज थापर ने फैमिली की सुविधा के लिये ही किराये पर लिया था और, नमिता को मालूम था कि, खाली पड़ा था। उसको वहां जाने की सूझना स्वभाविक था।”

“हूं।”

“अब कहां है वो ?”

“वहीं जहां उसे होना चाहिये। हवालात में।”

“किस इलजाम में ?”

“इलजाम भी सोच लेंगे।” - प्रभूदयाल लापरवाही से बोला - “जल्दी क्या है ? अभी जरा मेरी रूबरू गुफ्तगू तो हो ले उससे।”

“लाजवन्ती थापर क्या बोली ?”

“कुछ नहीं बोली। उठके ही नहीं दी, कमबख्त। मैंने जिन्दगी में पहले कभी इतनी उम्र की औरत को इस हद तक दारू की दीवानी नहीं देखा।”

“वो टूटी एड़ी तो उसकी सैंडल की थी न ?”

“नहीं। वो ऊंची एड़ी की सैंडल नहीं पहनती। वो फ्लैट हील पहनती है। हमेशा। वो सैंडलें कीर्ति की हैं।”

“कैसे मालूम ?”

“उसकी बहन मोहिनी ने बताया।”

“कीर्ति की कोई खबर लगी ?”

“अभी नहीं लेकिन लग जायेगी । जायेगी कहां ?”

“यानी कि आपकी निगाह में कातिल वो ही है ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है ?”

“लाजवंती थापर जिस कमरे में पड़ी थी, वो कमरा उसका था ?”

प्रभूदयाल ने उसे घूरकर देखा ।

“क्या हुआ ?” - सुनील सकपकाया ।

“तुम्हें क्या पता वो किस कमरे में पड़ी थी ?”

“अच्छा, वो !”

“हां, वही लम्बी वाली वो ।”

“वो क्या है कि मैंने पहले कभी कोई थापर की कोठी जैसी राजमहलों को मात करती कोठी नहीं देखी थी । पीछे मौका था, वक्त था, इसलिये मैंने जरा सी सैर कर ली थी वहां की । ए.एस.एम. जो ठहरा । आदत से मजबूर । रिमेम्बर ।”

“कहीं कोई छेड़ाखानी तो नहीं की थी ?”

“बिल्कुल नहीं । कसम उठवा लो ।”

“हूं ।” - प्रभूदयाल एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “वो कमरा, वो बैडरूम जिसमें लाजवन्ती थापर धुत पड़ी थी, असल में कीर्ति का था ।”

“वो वहां क्यों थी ? अपने बैडरूम में क्यों नहीं थी ?”

“मेरा ख्याल है मलहम-पट्टी के उस सामान की वजह से वो वहां थी जो कि बाथरूम में पड़ा पाया गया था । नीचे ड्राइंगरूम में बार के पास जो ब्रांडी की बोतल टूटी पड़ी थी वो लगता है कि अम्मा से ही टूटी थी और उसी टूटी बोतल से उसने अपना घुटना घायल कर लिया था । डिटैल, पट्टियों का रोल और सर्जिकल टेप की चरखी वगैरह क्योंकि कीर्ति के बाथरूम में उपलब्ध थी इसलिये घुटने वाले जख्म की ड्रेसिंग के लिये वो वहां आ गयी थी ।”

“यानी कि बाथरूम में यहां-वहां जो खून के धब्बे दिखाई दे रहे थे, वे लाजवंती थापर के खून के थे ?”

“हां । और बाथरूम में पड़ी चप्पलें भी उसी की थीं ।”

“आई सी ।”

“ड्रेसिंग के बाद वो आ के कीर्ति के पलंग पर पड़ गयी थी और फिर नशे के अधिव्य से वहीं घोड़े बेचकर सो गयी थी ।”

“उसका घुटना घायल था, ये आपको कैसे पता लगा था ?”

“मैंने देखा था । बाथरूम में फैले खून और ड्रेसिंग के सामान को देखने के बाद देखा था ।”

“अच्छा हुआ माताजी का घुटना जख्मी हुआ था, कांच और ऊपर कहीं चुभा होता तो आप और ऊपर तक देखते । नो ?”

“शटअप ।”

“यस सर ।”

कुछ क्षण खामोशी रही ।

“तुम एक बात बताओ ।” - फिर एकाएक प्रभूदयाल बोला ।

“पूछो ।” - सुनील बोला ।

“तुम्हारी स्टोरी ये है कि दिलीप थापर हरिमोहन थापर का पोता नहीं था । तुम ये बात निर्विवाद रूप से सिद्ध कर सकते हो ?”

“निर्विवाद रूप से ही तो सिद्ध नहीं कर सकता । ऐसा कर सकता होता तो फिर बात ही क्या थी ! फिर तो न मेरा थापर से इन्टरव्यू करने जाना जरूरी होता और न मेरी वो दुर्गत होती जो कि हुई ।”

“हूँ ।”

“लेकिन अब मुझे पूरा यकीन है कि वो शख्स हरिमोहन थापर का पोता नहीं । इस बाबत जो रही-सही शंका मेरे मन में थी, वो झेरी में थापर से रूबरू मुलाकात होने के बाद दूर हो गयी थी ।”

“कैसे ?”

“इस स्टोरी को किल करने के लिये उसने मुझे बाकायदा रिश्तत की आफर दी थी । उसने मुझे मेरी मुंहमांगी रकम का सवाया देकर रुखसत करने की पेशकश की थी ।”

“अच्छा !”

“हां । प्रभू, अगर उस आदमी के मन में चोर न होता, उसके ढोल में पोल न होती तो क्या वो ऐसा करता ?”

“हूँ । मरने वाला तो मर गया । अब इस बाबत आगे तुम्हारा रवैया क्या होगा ?”

“देखेंगे ।”

वार्तालाप आगे न चला ।

निरन्तर बजती काल बैल की आवाज से सुनील की नींद खुली । आंखें मिचमिचाते हुए उसने घड़ी पर निगाह डाली तो पाया कि पौने दस बजे थे । घन्टी फिर बजी ।

“आता हूँ, भई ।” - वो उच्च स्वर में बोला और पलंग से उठकर कर बाहर को बढ़ा ।

पिछली रात अपने फ्लैट में सोना उसे महज इसलिये नसीब हो पाया था क्योंकि वो फ्लैट की चाबियों का एक सैट ‘ब्लास्ट’ के ऑफिस में अपनी मेज के दराज में भी रखता था ।

उसमें फ्लैट का प्रवेश द्वार खोला ।

सामने विवेक वर्मा खड़ा था । उसके हाथ में खाकी कागज में लिपटा और नायलोन की डोरी से बन्धा एक बंडल था ।

“हल्लो ।” - वो मुस्कराता हुआ बोला ।

“हल्लो ।” - सुनील भावहीन स्वर में बोला - “पता कैसे जाना ?”

“वो क्या प्रब्लम थी ! मशहूर आदमी हो तुम ।”

“कैसे जाना ?”

“टेलीफोन डायरेक्ट्री से जाना ।”

“कैसे आये ?”

“सब कुछ दरवाजे पर खड़े-खड़े ही बताना पड़ेगा ।”

“तुम दुश्मन के कैम्प के आदमी हो ।”

“अब कहां रखा है दुश्मन ? और दुश्मन का कैम्प ?”

सुनील खामोश रहा ।

“तुम यूँ समझो कि मैं सफेद झण्डी हिलता हुआ आया हूँ । अमन की ! सबूत के तौर पर तुम्हारा सामान वापिस लाया हूँ ।”

“मेरा सामान !”

“तुम्हारे कपड़े वगैरह ।”

“ओह ! आओ ।”

“शुक्रिया ।”

सुनील ने उसे ड्राइंगरूम में लाकर बिठाया जहां कि उसने डोरी तोड़कर बंडल खोला ।

“तुम्हारे कपड़े” - वो खुले बंडल में से एक-एक चीज अलग कर के एक साइड टेबल पर रखता हुआ बोला - “जूते । चाबियां । सिगरेट का पैकेट । लाइटर । बटुवा ।”

सुनील ने सबसे पहले लक्की स्ट्राइक का पैकेट और लाइटर काबू में किया, उसने एक सिगरेट वर्मा को दिया और एक खुद लेकर बारी-बारी दोनों सिगरेट सुलगाये ।

फिर उसने बटुवा उठाया ।

बटुवे का तमाम समान चौकस था । चौकस से ज्यादा था ।

उसकी भवें उठीं ।

“वो...” - वर्मा बोला - “चित्रे । हुक्मी । थापर के चमचे । कमीनों ने पक्का ही समझ लिया था कि तुम्हारा कल्याण होने वाला था । बटुवे में से सारे नोट निकाल लिये हरामियों ने । मुझे मालूम तो था नहीं कि बटुवे में कितनी रकम थी इसलिये मैंने अन्दाजन कुछ नोट इसमें डाल दिये हैं ।”

सुनील ने नोट किया कि वो एकदम नयी गड्डी में से निकाले गये पांच-पांच सौ के दस नोट थे ।

“अगर ये कम हैं तो...”

“नहीं, कम नहीं हैं ।” - सुनील बोला - “ठीक ही हैं, लेकिन तुम्हें यूँ मेरी भरपाई करने की क्या जरूरत थी ?”

“भई” - वो तनिक हंसा - “मैं बोला न मैं यहां अमन के लिये आया हूँ ।”

“थापर की जिन्दगी में तो तुम्हारे ऐसे ख्यालात नहीं थे ?”

“नहीं थे । क्यों नहीं थे ? इसका जवाब तुमने खुद ही दे लिया है । क्योंकि थापर जिन्दा था ।”

“ओह ! यानी कि थापर की जिन्दगी में उसके लिये तुम्हारी हैसियत भी चित्रे और हुक्मी जैसी ही थी ।”

“ऐसी बात तो नहीं है लेकिन... अब मैं क्या कहूँ ?”

“चलो, ये न कहो, वो कहो जो कहना आसान है ।”

“क्या मतलब ?”

“तुम वो प्राइवेट डिटेक्टिव हो जिसने हैट में से खरगोश निकालने की तरह हरिमोहन थापर का खोया हुआ पोता खोज निकाल था । मकतूल की सूरत में ।”

वो चौंका । उसने हैरानी से सुनील की तरफ देखा ।

“से यस ऑर नो !” - सुनील चैलेंजभरे स्वर में बोला ।

“कल शाम तक तो इस बाबत तुम्हें कुछ मालूम नहीं था । एकाएक कैसे जान गये ?”

“एक उड़ती चिड़िया ने बताया ।”

“हूँ ।”

“अब कबूल करो कि तुम दोनों की मिलीभगत से, धोखे से मकतूल हरिमोहन थापर का वारिस बना था ।”

“मैं कबूल करूँ ?”

“और कौन करे ? थापर तो मर गया ।”

“तुम कभी साबित नहीं कर सकोगे कि...” - वो बोलता-बोलता रुक गया और फिर बोला - “देखो, हरिमोहन थापर का कोई वारिस नहीं है । अब वो भी नहीं है जिसे कि तुम नकली वारिस कहते हो । ऐसे हालात में इस बात को तुम अभी भी उछालते रहोगे तो भला तो किसी का नहीं होगा अलबत्ता बुरा कई जनों का होगा ।”

“मसलन किसका ? तुम्हारा ?”

“मेरा नहीं । थापर की बूढ़ी मां का । उसकी विधवा का । विधवा की दो छोटी बहनों का जो कि पूरी तरह से विधवा पर आश्रित हैं ।”

“थापर अपना वारिस किसे करार देकर मरा है ?”

“किसी को भी नहीं । उसने अपने पीछे अपनी कोई वसीयत नहीं छोड़ी है । इसलिये मेरे ख्याल से उसकी सम्पत्ति उसकी मां और बीवी में बटेगी । कीर्ति और चाई जी ही उसके वारिस होंगे ।”

“पुलिस का ख्याल है कि कत्ल कीर्ति ने किया है । अगर ऐसा है तो वो मकतूल की वारिस नहीं बन सकती । किसी को अपने ही गुनाह से फायदा उठाने की इजाजत कानून नहीं देता ।”

“कीर्ति कातिल नहीं है ।”

“बड़े विश्वास के साथ कह रहे हो !”

“हां । कीर्ति कातिल हो ही नहीं सकती ।”

“क्यों नहीं हो सकती ?”

“कत्ल करना हर किसी के बस की बात नहीं होती । मैं कीर्ति को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ । वो कत्ल नहीं कर सकती । वो कत्ल का ख्याल तक नहीं कर सकती । फितरतन ऐसी है वो कि...”

“उसके खिलाफ सबूत हैं ।”

“फर्जी । गढ़े हुए ।”

“ऐसा किसने किया होगा ?”

“क्या पता ?”

“वो खुद क्या कहती है ?”

“अभी कुछ नहीं कहती । अभी उसका पता नहीं चला है कि कि वो कहां है !”

“पुलिस से यूँ छुपे रहना आसान तो न होगा । मिसाल नमिता की ही ले लो ।”

“हां । कीर्ति फिर भी अभी तक गायब है, इसी वजह से तो मुझे ये अन्देशा बुरी तरह से सता रहा है कि कहीं उसका भी कत्ल न हो गया हो ।”

“ऐसा हो सकता है ?”

“क्यों नहीं हो सकता ? तुम इस बात को मानकर चलो कि मौकायेवारदात से जो सूत्र बरामद हुए थे वो कीर्ति को फंसाने के लिये वहां प्लांट किये गये थे तो क्यों नहीं हो सकता ? पहले किसी ने थापर का कत्ल करके कातिल कीर्ति को करार देने का सामान किया, फिर कीर्ति का भी कत्ल करके लाश गायब कर दी ताकि पुलिस ये ही सोचती रहे कि वो कत्ल करके फरार होने में कामयाब हो गयी थी ।”

“कोई सिरफिरा ही होगा जो अपना अपराध छुपाने के लिये एक बेगुनाह औरत का कत्ल करेगा ।”

“कत्ल होता ही सिरफिरों का काम है । और जो एक कत्ल कर चुका हो, उसे दूसरा कत्ल करने से क्या गुरेज होगा ?”

“फिर भी ये बात हज्म होने वाली नहीं ।”

“लेकिन नामुमकिन भी नहीं है ।”

सुनील ने बड़े विचारपूर्ण ढंग से खामोशी से सिगरेट का कश लगाया ।

“अब ये तो बताओ” - वर्मा उत्सुक भाव से बोला - “कल काटेज में से छूटे कैसे ?”

सुनील ने तत्काल उत्तर न दिया । एक बार विकी नाम के युवक की बाबत खामोशी अख्तियार कर चुकने के बाद अब वो वर्मा के सामने भी उसका नाम नहीं ले सकता था क्योंकि फिर वर्मा के माध्यम से भी कहानी पुलिस तक पहुंच सकती थी और फिर उसकी शामत आ सकती थी ।

लेकिन क्या वो युवक कातिल हो सकता था ?

कातिल हो सकता था लेकिन कत्ल में उस औरत को फंसाने का सामान नहीं कर सकता था जिसे कि वो दिलोजान से चाहता था ।

फिर सबसे बड़ी बात ये थी कि विकी का नाम लेने से कीर्ति के खिलाफ केस और मजबूत हो सकता था । तब पुलिस ये दावा कर सकती थी कि उसने अपने प्यार की खातिर अपने रास्ते का कांटा उखाड़ फेंका था ।

“तुमने जवाब नहीं दिया ।” - वर्मा आग्रहपूर्ण स्वर में बोला - “कैसे छूटे काटेज से ?”

“पहले तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो ।” - सुनील बोला ।

“पूछो ।”

“थापर सच में मेरा कत्ल करा देता ? मेरा और उस शख्स रामदेव का जो इत्तफाकन मेरी वहां मौजूदगी का गवाह बन गया था ? वो यूँ दो कत्ल करा देता ?”

वर्मा ने तुरन्त जवाब न दिया, वो कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला - “सच पूछो तो बात यूँ है, मेरे भाई, कि थापर के मिजाज को मैं कभी भी ठीक से नहीं समझ पाया था । मैं आज तक यही फैसला नहीं कर पाया था कि वो कोई नार्मल आदमी भी था या नहीं । कितनी ही बार तो वो मुझे कोई जेहनी तौर से बीमार शख्स लगता था । रही-सही कसर अंधी दौलत ने पूरी कर दी थी जो कि अनायास उसके हाथ आ गयी थी और जिसकी वजह से वो समझता था कि वो बहुत ताकतवर बन गया था, कभी भी अपनी मनमानी कर सकता था, किसी पर भी हावी हो सकता था । अपने इसी हिटलरी मिजाज की वजह से वो अपनी सालियों पर नीयत मैली करता था और इस कोशिश में औरों को बेइज्जत करता था और खुद बेइज्जत होता था । इसी वजह से उसे ये खुशफहमी थी कि वो एक बार कड़ककर बोलेगा कि ‘ब्लास्ट’ के उस सुनील नाम के चीफ रिपोर्टर की पतलून गीली हो जायेगी जो कि उसके पीछे पड़ा हुआ था । तुम्हारे रूबरू

होने पर ऐसा न हुआ तो वो आगबबूला हो उठा। तुमने उसका चान्दी का जूता खाने से भी इनकार किया तो वो बिल्कुल हत्थे से उखड़ गया। ऐसे में नौबत कल तक भी पहुंच सकती थी। नहीं पहुंचनी चाहिये थी लेकिन पहुंच सकती थी।”

“थापर ऐसा करता या करवाता तो तुम आंखें मूंदे रहते?”

“मैं भगवान से ये ही दुआ करता कि ऐसी नौबत न आती।”

“आती तो तुम जो होता, उसे होने देते?”

“मेरे भाई, इस घड़ी मैं ये ही कह सकता हूं कि शुक्र है भगवान का कि ऐसा नहीं हुआ। अब तुम बोलो, तुम काटेज से छूटे कैसे?”

“बस, छूट गया।” - सुनील लापरवाही से बोला - “मेरे बन्धन कोई ज्यादा मजबूती से नहीं बन्धे हुए थे। मुतवातर कोशिश से खोल लिये मैंने।”

“यानी कि मदद नहीं की थी किसी ने?”

“न। मदद कौन करता! सब तो मेरे दुश्मन थे वहां।”

“नमिता ने?”

“नहीं, भई।”

“वो तुम्हारे साथ थी?”

“हां। लेकिन मुझे आजाद कराने में उसका कोई हाथ नहीं था। वो मुझे बाद में मिली थी।”

“बाद में भी उसे तुम क्यों कर शीशे में उतार पाये?”

“उसमें मेरा कोई कमाल नहीं था। कुछ लड़कियां आदतन दयावान और जल्दी पिघल जाने वाली होती हैं।”

“इतना तो नहीं पिघल गयी थी कि तुम्हें लबरेज कर डाला हो?”

“जल रहे हो?”

“नहीं, नहीं।” - वो हड़बड़ाया - “नहीं तो।”

“वो अभी भी पुलिस की हिरासत में है?”

“हां। उस पर अपराधी की मदद करने का इलजाम है। अगर कीर्ति पकड़ी गयी और उसका गुनाह साबित हो गया तो नमिता यूं समझो कि गेहूं के साथ घुन का तरह पिसेगी।”

“ओह!”

“जो कुछ उसने किया, उसे नहीं करना चाहिये था। भारी मूर्खता का काम किया उसने कल रात।”

“बहन के प्यार ने कराया।”

“अब भुगतोगी।” - वो एक क्षण ठिठका, और फिर बोला - “ये पक्की बात है कि कल रात नार्थ शोर पर वो हर घड़ी तुम्हारे साथ थी? हर घड़ी तुम्हारी निगाहों में थी?”

सुनील हिचकिचाया।

“यानी कि नहीं थी।” - वो अपलक सुनील को देखता हुआ बोला।

“थापर की कोठी पर पहुंचने से पहले वो मुझे फर्स्ट एड के लिये अपने पड़ोसी डॉक्टर निगम के पास ले के गयी थी जहां मुझे छोड़कर वो ‘जा के आती हूं’ कहकर वहां से चली गयी थी।”

“लौटी कितनी देर में थी?”

“यही कोई दस-बारह मिनट में।”

“गयी कहां थी?”

“कोठी पर। मेरे लिये चार पैसे लाने। लौटने पर हजार रुपये दिये थे उसने मुझे।”

“तब कोठी में और कोई नहीं था?”

“चाई जी थी लेकिन तब उसका वहां होना, न होना एक बराबर था। हमेशा ऐसे ही पीती हैं माताजी?”

“नहीं, हमेशा नहीं। कल कुछ ज्यादा ही आपे से बार हो गयी थी भली औरत।”

“भली औरत!” - सुनील व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - “बाटली मारने वाली भली औरत!”

“ये नमिता की अपने साथ से दस-बारह मिनट है की गैरहाजिरी की बात तुमने पुलिस को बतायी थी?”

“नहीं।”

“क्यों? पूछा नहीं गया था?”

“ऐन कील ठोककर नहीं पूछा गया था। अलबत्ता इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल ने ये जरूर कहा था कि मैं नमिता की खातिर इस बाबत झूठ बोल सकता था।”

“यानी कि तुमने झूठ बोला?”

“नहीं, झूठ नहीं बोला। असलियत ये है कि पिछली रात मेरी इस बात की तरफ तवज्जो नहीं गयी थी कि वो मुझे डॉक्टर निगम के हवाले कर के खुद कोठी में गयी थी। मैं दरअसल उसके हर क्षण अपने साथ होने का हवाला कोठी में पहुंचने के बाद के वक्त को देता रहा था।”

“बाद में भी वो हर क्षण तुम्हारे साथ?”

“नहीं थी लेकिन तब मैं वहां था, कत्ल करने के लिये उसे जहां होना पड़ता। नमिता को कोठी की तरफ बढ़ता छोड़कर जब मैं बोट हाउस में पहुंचा था, तो कत्ल तो वहां हो भी चुका था।”

“उस वक्त लाश की कैसी हालत थी? क्या लगता था उससे? वो वहां काफी पहले से मरा पड़ा था या हाल ही में उसका काम हुआ था?”

“उसकी नब्ज टटोलने के लिये मैंने उसकी कलाई थामी थी। कलाई गर्म पायी थी मैंने।”

“इसका मतलब ये हुआ कि तुम्हारे बोट हाउस में पहुंचने से थोड़ी ही देर पहले उसका कत्ल हुआ था। या... तभी हुआ था।”

“क्या मतलब?” - सुनील सकपकाया।

“मैं समझाता हूं। मिसाल के लिये फर्ज करो कि तुम्हारे वहां पहुंचने से पहले किसी घड़ी थापर और कीर्ति बोट हाउस में थे जहां कि उनमें तकरार हुई, हाथापायी हुई जिसके नतीजे के तौर पर कीर्ति की सैंडल की एड़ी टूट गयी, उसके बालों का क्लिप उतरकर गिर गया, फिर अपनी हिफाजत की नीयत से कीर्ति ने अपनी रिवॉल्वर निकालकर थापर पर तानी तो थापर ने वो रिवॉल्वर उससे छीन ली। तब कीर्ति वहां से भाग खड़ी हुई और किसी ऐसी जगह जा छुपी जहां कि थापर उस तक न पहुंच सकता। पीछे हालात का जायजा लेने की कोशिश करता थापर अन्धरे में बोट में बैठा था जब कि तुम वहां पहुंचे। उसने तुम्हें कोई चोर समझा और उसने हाथ में थमी रिवॉल्वर तुम पर तान दी। तुम उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर झपटे, छीना-झपटी में दुर्घटनावश रिवॉल्वर चल गयी और गोली थापर को लग गयी। तुमने बत्ती जलाकर उसका मुआयना किया तो पाया कि वो मर चुका था। तभी तुम्हें नमिता के उधर बढ़ते कदमों की आहट मिली। तब तुमने रिवॉल्वर पानी में फेंक दी और नमिता को ये ही कहा कि वो तुम्हारे वहां पहुंचने से पहले वहां मरा पड़ा था।”

“प्यारेलाल, पहले जासूसी करने के साथ-साथ क्या जासूसी कहानियां भी लिखा करते थे ?”

“क्या नुक्स है मेरा कहानी में ?”

“सबसे बड़ा नुक्स तो ये ही है कि ये कहानी है । और कहानी कहानी होती है, हकीकत नहीं होती ।”

“अफसाने ही हकीकत बन जाते हैं, मेरे भाई ।”

“ये फिल्मी डॉयलाग है । और फिर जो हकीकत है, उसका मैं खुद जामिन हूं । जब मैं कहता हूं कि मैंने उसे वहां मरा पड़ा पाया था तो...”

“तुम्हारे ऐसा कहने की दर्जनों वजह हो सकती हैं ।”

“ओह ! तो तुम पहले ही सोचे बैठे हो कि मैं झूठ बोल रहा हूं ।”

“तुम्हें धर्मराज युधिष्ठिर होने की कोई सनद हासिल है तो दिखाओ ।”

“क्यों भई, मेरे ही घर में बैठकर मेरा पुलन्दा बान्धने की कोशिश कर रहे हो ? गोद में बैठकर दाढ़ी मूंड रहे हो ?”

वो हंसा ।

“अगर गोली मेरी मौजूदगी में चली थी तो उसके चलने की आवाज नमिता ने क्यों नहीं सुनी ?”

“वो बहुत छोटी-सी रिवॉल्वर थी । कोई खास आवाज नहीं हुई होगी उसमें से गोली चलने की ।”

“रात के सन्नाटे में छोटी-मोटी आवाज भी बहुत जोर से गूंजती है ।”

“हो सकता है ऐन उसी घड़ी कोठी में कोई दरवाजा चौखट से टकराया हो और गोली की आवाज उसमें गुम हो गयी हो । हो सकता है नमिता ने वो आवाज सुनी तो हो लेकिन उसकी समझ में न आया हो कि वो कैसी आवाज थी ?”

“बकवास । गुलेगुलजार, जितना मर्जी जोर लगा लो, तुम मुझे हत्यारा साबित नहीं कर सकते ।”

“मेरी ऐसी कोई मंशा भी नहीं । मैं तो महज एक थ्योरी बयान कर रहा था । तुम्हें आश्वस्त करने के लिये मैं अपनी थ्योरी में तुम्हारी जगह नमिता को फिर कर के दिखाता हूं ।”

“यानी कि अपनी थ्योरी में फिट करने के लिये कई कैन्डीडेट हैं तुम्हारी निगाह में ?”

“हां ।” - वो अपनी बात से खुद आनन्दित होता हुआ बोला - “यहां तक की चाई जी भी ।”

“क्या कह रहे हो ! मां से बेटे का खून करा रहे हो !”

“लाइक मदर इन्डिया ।”

“तुम... तुम पागल हो ।”

“चलो, चाई जी न सही लेकिन नमिता तो सरासर फिट होती है मेरी थ्योरी में ।”

“कैसे ?”

“वैसे ही जैसे कीर्ति या तुम फिट होते हो । नमिता जब तुम्हारे लिये रुपये लेने कोठी में आती है तो उसे बोट हाउस में रोशनी दिखाई देती है । उत्सुकतावश वो वहां पहुंचती है तो वहां थापर को पाती है । आधी रात को उसे वहां अकेली पाकर आदत से मजबूर थापर उस पर झपट पड़ता है । वो काबू में नहीं आती तो दीवानगी में थापर उस पर रिवॉल्वर तान देता है । छीना-झपटी में रिवॉल्वर चल जाती है और गोली थापर को लग जाती है ।”

“खुद अपने बारे में क्या ख्याल है तुम्हारा ? तुम खुद नहीं फिट हो सकते अपनी थ्योरी में कीर्ति या मेरी या नमिता या चाई जी की जगह ?”

“हो सकता हूँ। मैं भी हो सकता हूँ। क्यों नहीं हो सकता ? मैं यही तो कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि मौजूदा हालात की रू में कीर्ति के खिलाफ जो केस है या होगा उसे कोई मजबूत, कोई एयरटाइट केस नहीं कहा जा सकता। कत्ल के इतने सम्भावित कैन्डीडेटों की मौजूदगी में ऐसा नहीं है कि शक की सुई कीर्ति की तरफ घूमी हो और वहीं अटककर रह गयी हो।”

“एक बात तो माननी पड़ेगी, प्यारेलाल। वफादार पूरे-पूरे हो थापर फैमिली के।”

वो हंसा।

“भई, मैं डिटेक्टिव रह चुका हूँ।” - वो बोला - “प्राइवेट डिटेक्टिव। मेरी आदत में शुमार है क्लायन्ट के हक में पहले कोई सजती-सी कहानी गढ़ना और फिर उस कहानी में उपलब्ध तथ्यों को यूँ फिट करना कि सुनने पर ऐसा लगे जैसे तथ्यों में से कहानी निकली थी।”

“यानी कि घोड़े की बगधी के आगे नहीं, बगधी को घोड़े के आगे जोतते हो !”

वो फिर हंसा।

“बोट में जो बारूद लगा हुआ था, उसके बारे में क्या कहते हो ?”

“मेरी राय में बारूद की जगह उसके साथ जुड़े असाधारण तौर पर लम्बे पलीते पर गौर किया जाये तो कहानी ज्यादा साफ होकर सामने आती है। ये तो साफ है कि बोट में बारूद बोट को उड़ाने की मंशा से लगाया गया था लेकिन लम्बा पलीता ये जाहिर करता है कि बारूद लगाने वाले की मंशा ये थी कि बोट समुद्र में काफी दूर निकल जाती तो बारूद फटता। यूँ समुद्र के गहरे पानी वाले हिस्से में पहुँचकर जब बोट के परखच्चे उड़ते तो बाद में न तो कोई बोट के भग्नावशेष मिलते और न उसमें पड़ी थापर की लाश के।”

“बोट की डीजल की टंकी लीक करती थी।”

“मुझे मालूम है।”

“तुम्हें मालूम है ?” - सुनील हैरानी से बोला।

“हां। थापर को भी मालूम था। उसी ने मेरे से उसका जिक्र किया था। फिक्रमन्द भी था वो उस बाबत। टंकी तब्दील करवाने की बात कर रहा था।”

“आई सी।”

“बहरहाल वो लीक करती टंकी भी हत्यारे के हक में अच्छी बात थी।”

“वो कैसे ?”

“भई, विस्फोट तो होता बारूद की वजह से लेकिन समझा ये जाता कि लीक करती टंकी किसी तरीके से आग पकड़ गयी थी और फट गयी थी।”

“यानी कि तब थापर दुर्घटनावश मरा समझा जाता ?”

“हां।”

“हत्यारे की यही मंशा थी कि बोट में हुए विस्फोट को एक दुर्घटना माना जाता जिसमें कि बोट के मालिक की जान चली गयी थी ?”

“हां।”

“अगर हत्यारे की ये मंशा थी तो फिर बोट हाउस में कीर्ति को फंसवाने वाले सूत्र प्लांट करने की क्या जरूरत थी ? कीर्ति के बालों का क्लिप, उसकी सैंडल से टूटी एड़ी वहां छोड़ने की क्या जरूरत थी ?”

“समझदार आदमी हो।”

“क्या जरूरत थी ?”

“सोचो ।” - वो एकाएक उठता हुआ बोला - “समझदार आदमी हो । शायद तुम्हें कोई जवाब सूझ जाये ।”

“वापिस कहां जाओगे ?” - सुनील भी उठता हुआ बोला ।

“नार्थ शोर ।”

“फिर तो तुम मुझे लिफ्ट दे सकते हो ।”

“कहां जाना चाहते हो ?”

“तुम्हारे रास्ते में ही । कल शाम से मेरी मोटरसाइकल नार्थ शोर के रास्ते में खड़ी है । मैं उसे पिक करना चाहता हूं - बशर्ते कि चोरी न चली गयी हो या पुलिस न उठा के ले गयी हो ।”

“ठीक है । मैं रुक जाता हूं ।”

“मैं तैयार होने में सिर्फ दस मिनट लगाऊंगा ।”

“जितना मर्जी वक्त लगाना । मुझे कोई जल्दी नहीं है ।”

“मुझे जल्दी है । दस बजे मैंने पुलिस हैडक्वार्टर में हाजिरी भरनी थी और दस मुझे यहीं बज गये हैं ।”

“ओह !”

“तैयार हो के आता हूं । तुम बैठो ।”

“बैठता हूं लेकिन उससे पहले एक आखिरी सवाल और ।”

“वो भी बोला ।”

“थापर के कत्ल की रू में तुम्हारी मूल कथा की बाबत अब तुम्हारा क्या रवैया होगा ? क्या तुम्हारा अखबार अब भी थापर के नकली वारिस होने की स्टोरी छापेगा और इस बाबत अपनी हाल दुहाई कायम रखेगा ?”

“फौरन नहीं । थोड़ा अरसा तो वो स्टोरी अब मुलतवी ही होगी । खास तौर से तब जब तक कि थापर के कत्ल के रहस्य पर से पर्दा नहीं उठ जाता । फिर बार की बाद में देखेंगे ।”

“ओह !”

सुनील को लगा जैसे उतने से ही वर्मा ने बड़ी राहत महसूस की हो ।

“और वो बात पुलिस को बताओगे” - फिर वो बोला - “कि रात दस-बारह मिनट का एक वक्फा ऐसा था जब कि नमिता तुम्हारे साथ नहीं थी ?”

“पहले नहीं बताया तो अब भी क्या बताऊंगा !” - सुनील बोला - “अलबत्ता खास इसी बाबत, ऐन कील ठोककर सवाल हुआ तो बताना ही पड़ेगा ।”

“आई सी ।”

पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचते-पहुंचते सुनील को सवा ग्यारह बज गये ।

वो इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल के ऑफिस वाले गलियारे में पहुंचा तो उसे उसके कमरे से बाहर निकलता सब-इन्स्पेक्टर ‘वन टू का ट्वेल्फ’ अनिल कपूर दिखाई दिया । सुनील की तरफ निगाह उठाये बिना वो गलियारे में विपरीत दिशा में चल दिया ।

सुनील प्रभूदयाल के कमरे में दाखिल हुआ ।

“ये तुम्हारे दस बजे हैं ?” - प्रभूदयाल उसे देखते ही भड़का ।

“सॉरी ।” - सुनील बड़ी सादगी से बोला ।

“अच्छा होता, मैं रात को तुम्हें साथ ही यहां ले आता ।”

“किसके लिये ?”

“मेरे लिये और किसके लिये ?”

“सच पूछिये तो मेरे लिये भी अच्छा होता । तब मैं अपने फ्लैट में अभी भी सो रहा होता ।”

“बैठो ।”

“शुक्रिया ।”

“कोई चाय-वाय पियोगे ?”

“दिखाई देगी तो पी लूंगा ।”

“किसी बात का सीधा जवाब नहीं दे सकते ?”

“पीऊंगा । शुक्रिया ।”

प्रभूदयाल ने काफी मंगवाई ।

फिर उसने एक स्टेनोग्राफर को बुलाया जिसने सुनील का बयान दर्ज किया । वो बयान टाइप करने चला गया तो प्रभूदयाल बोला - “अभी रुकना पड़ेगा । बयान पर साइन करने होंगे ।”

“नो प्रॉब्लम ।” - सुनील बोला ।

“थापर के कत्ल की खबर सिर्फ तुम्हारे अखबार में छपी है । ऐसा क्यों कर हुआ ?”

“आपको मालूम तो है, माई बाप । ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि इत्तफाक से मैं मौकायेवारदात पर मौजूद था ।”

“लेकिन खबर बहुत संक्षेप में छपी है ।”

“उसकी वजह है । उस खबर को छपता अखबार रोककर उसमें शामिल किया गया था । ‘स्टॉप प्रैस’ के कालम में सीमित स्थान ही होता है ।”

“आई सी ।”

“और क्या खबर है ?”

“किस बाबत ?”

“केस की बाबत ही और किस बाबत ? मसलन लाजवन्ती थापर क्या कहती है ! उससे कोई बात हुई या वो अभी भी कुम्भकरण को कम्पीट कर रही है ?”

“बात हुई है उससे लेकिन हासिल कुछ नहीं हुआ । वो कहती है कि कैसीनो में वो बोर हो गयी थी इसलिये घर चली आयी थी । नीचे ड्राइंगरूम में उसके हाथ से गिरकर एक ब्रान्डी की बोतल फूट गयी थी जिसके टुकड़े बीनने की कोशिश में वो अपना घुटना घायल कर बैठी थी । मलहम-पट्टी की नीयत से वो कीर्ति के बेडरूम में गयी थी और फिर वहीं पलंग पर ढेर हो गयी थी । इससे ज्यादा वो कुछ नहीं जानती ।”

“कोठी तक पहुंची कैसे थी ? खुद कार चला पाने वाली हालत तो रही नहीं होगी उसकी !”

“वो थापर के साथ आयी थी । उसकी कार को नार्थ शोर तक ड्राइव कर के थापर लाया था ।”

“तब बाकी लोग कहां थे ?”

“कहती है विवेक वर्मा और मोहिनी कैसीनों में ही थे, कीर्ति उनसे पहले वहां से चली आयी थी और नमिता तो कीर्ति से भी पहले ये कहकर वहां से उठ गयी थी कि वो बोर हो गयी थी ।”

“और ?”

“और कहती है कि थापर उसे कोठी पर छोड़कर फौरन कहीं जाने की बात कर रहा था । पता नहीं कहां जाना चाहता था वो ?”

“मुझे पता है ।”

“अच्छा !”

“वो वापिस झेरी जाना चाहता था जहां कि अपने किराये के काटेज में तो मुझे बन्धा छोड़कर आया हुआ था । विवेक वर्मा भी अभी पीछे झेरी में ही जरूर इसी लिये था क्यों कि उसने मेरा पुलन्दा बान्धने में थापर की मदद करनी थी ।”

“मोहिनी ? मोहिनी क्यों थी पीछे ?”

“उसका भी कोई रोल होगा मेरे खिलाफ गढ़ी गयी साजिश में । जैसे पहले रोल था जब कि वो मुझे नार्थ शोर के रास्ते से भटकाकर अपने साथ झेरी लाई थी ।”

“हूँ ।”

“कत्ल के बारे में क्या कहती है चाई जी ?”

“कुछ नहीं कहती । वो किसी पर अपना शक तक जाहिर करने को तैयार नहीं ।”

“और नमिता क्या कहती है ?”

“वो भी कुछ नहीं कहती । कहती है तो वो नहीं कहती जो कि मैं उसकी जुबानी सुनना चाहता हूँ ।”

“आप क्या सुनना चाहते हैं उसकी जुबानी ?”

“सबसे पहले तो यही कि कीर्ति कहां है !”

“ये जरूरी है कि उसे कीर्ति का कोई अता-पता मालूम हो ?”

“नहीं जरूरी लेकिन वो इस बात को किसी खातिर में तो लाये कि हमें कीर्ति का पता मालूम होना चाहिये और ऐसा उसके सहयोग से होना मुमकिन हो सकता है । कीर्ति का जिक्र आते ही वो तो ऐसे होंठ भींचती है जैसे मरती मर जायेगी लेकिन जुबान नहीं खोलेगी ।”

“उसे बहन के हित की चिन्ता है ।”

“वो तो उसकी पिछली रात की करतूत से ही जाहिर है । पुलिस के मौकायेवारदात पर पहुंचने से पहले वहां से सबूत चुरा लिये, आलायेकत्ल कब्जा लिया और खिसक गयी वहां से ।”

“वो सब उसने वक्ती जुनून के तहत किया, नादानी में किया लेकिन गरीबपरवर, आखिरकार तो वो सब सामान पुलिस के कब्जे में आ ही गया ।”

“वो जुदा बात है । उससे उसके कृत्य की गम्भीरता कम नहीं हो जाती । टैम्परिंग विद दि एवीडेंस इन ए मर्डर केस, एडिंग एण्ड अबैटिंग ए क्रिमिनल और सीरियस ऑफेंसिज । लेकिन मैं फिर भी उसके साथ नर्मी से पेश आने के लिये, रियायत बरतते के लिये तैयार हूँ ।”

“अच्छा, जी ?”

“हां।”

“वजह?”

“किस बात की?”

“इस नर्मी की? इस दयानतदारी की?”

“भई, मेरे सामने मेन मुद्दा मकतूल की बेवा की - कीर्ति की - गिरफ्तारी है जिस पर कि मुझे कातिल होने का शक है। शक क्या यकीन है।”

“ओह! तो ये वो माल है जो आपने अलग बांध के रखा हुआ है। ये वो पुछल्ला है जो आपकी नर्मी और दयानतदारी की पेशकश के साथ बंधा हुआ है? नमिता के साथ नर्मी से पेश आने की आपकी शर्त ये है कि वो अपनी बहन की गिरफ्तारी में कोई सक्रिय योगदान दे।”

“क्या बुरा सौदा है ये? कीर्ति की गिरफ्तारी महज वक्त की बात है। वो हमेशा-हमेशा तो छुपी रह नहीं सकती। वो बाद में हमारी और सिर्फ हमारी कोशिशों से गिरफ्तार होगी तो नमिता को अपराधी की मददगार करार दिया जायेगा और उसके लिये सख्त सजा तजवीज की जायेगी। वो कीर्ति की फौरन गिरफ्तारी में हमारी मदद करती है तो कम से कम इस वक्त वो इस बात को अपने हक में कैश कर सकती है। उसकी कल रात की करतूतों को नजरअन्दाज कर के हम उसे रिहा तक कर सकते हैं।”

“इसका सफा-सफा हिन्दोस्तानी में जो मतलब हुआ वो ये हुआ कि कीर्ति की गिरफ्तारी नमिता की रिहाई की शर्त है?”

“हमेशा के लिये नहीं। गुड थिंग्स डू नॉट लास्ट फार एवर, माई डियर फ्रेंड।”

“क्या पता वाकई उसे कीर्ति की कोई खोज-खबर न हो!”

“हो सकता है लेकिन साथ ही उसे ऐसे किसी एक या एक से ज्यादा ठिकानों की खबर हो सकती है जहां कि संकट की घड़ी में उसकी बहन पनाह पा सकती है। वो इस बाबत भी हम से बिना लगाव-छुपाव से खुलकर बात करे तो हमारा मतलब हल हो सकता है।”

“ये तो मुखबिरी हुई।”

“मुझे नहीं पता ये क्या हुआ लेकिन वो लड़की तभी हवालात से बाहर हो सकती है जबकि हवालात में उसकी जगह लेने के लिये उसकी बहन कीर्ति उपलब्ध हो।”

“ये सब आप मुझे क्यों बता रहे हैं?”

“सोचो।”

“कहीं आप ये तो नहीं चाहते कि कीर्ति की बाबत नमिता की जुबान खुलवाने की मैं कोई कोशिश करूं?”

“ऐन यही चाहता हूं मैं। कल रात तुम्हीं ने ये रोशन ख्याल जाहिर किया था कि नमिता को तुम्हारे में कुछ भा गया था और यूं पहले भी कई बार कई लड़कियां तुम पर पहली नजर में फिदा हो चुकी थीं। जो कुछ कल रात उसे भा गया था वो आज तुम्हारी शख्सियत से गायब तो हो नहीं गया होगा! अब जा के अपने इस स्पेशल स्टेटस को कैश करो और पूछो उससे कि उसकी बहन कहां छुपी हुई है?”

“मैं उसे मुखबिरी के लिये प्रेरित करूं?”

“अगर उसके हितचिन्तक हो तो जरूर करो। क्योंकि इसी में उसकी भलाई है। और” - प्रभूदयाल एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “तुम्हारी भी।”

“मेरी भी?” - सुनील की भवें उठीं।

“और अखबारों के रिपोर्टर लड़की से इन्टरव्यू के लिये तड़प रहे हैं और मैं किसी को उसके करीब भी नहीं फटकने दे रहा जब कि तुम्हें मैं न सिर्फ करीब फटकने दे रहा हूं, उसके साथ घुट-घुट के बातें करने का मौका दे रहा हूं।”

“कहां ? बगल वाले उसी कमरे में जहां कि गुप्त रूप से एक माइक्रोफोन फिट है जिसके जरिये आप यहीं बैठे-बैठे वहां होता हर वार्तालाप सुन सकते हैं ?”

“वो तो जरूरी है । उस मामले में कोई रियायत नहीं बरती जा सकती ।”

“लेकिन...”

“रिपोर्टर साहब” - प्रभूदयाल सख्ती से बोला - “इस बाबत ये मेरा आखिरी फैसला है । और पहला भी । अब जल्दी बोलो क्या कहते हो ?”

“मैं उससे बात करने को तैयार हूं ।”

“गुड ।”

“तो मैं पहुंचूं बगल के कमरे में ?”

“अभी बैठो । अभी पहले अपने बयान पर दस्तखत करके जाओ । तब तक मैं लड़की को बुलाकर बगल के कमरे में पहुंचवाता हूं । ओके ?”

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

दस मिनट बाद सुनील अपने उस जाने-पहचाने कमरे में पहुंचा जहां कि नमिता पहले से ही मौजूद थी ।

सुनील को देखकर उसके चेहरे पर हैरानी के भाव आये ।

सुनील ने देखा कि वो तब भी अपनी पिछली रात वाली पोशाक - काली स्कीवी और डेनिम की जीन्स-जैकेट पहने थी अलबत्ता उसके लड़कों जैसे कटे हुए बाल उसे माथे पर बिखरे हुए थे और चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी ।

सुनील ने साथ आये हवलदार के वहीं से विदा हो जाने की और उसके पीछे दरवाजा बन्द हो जाने की प्रतीक्षा की और फिर मुस्कराता हुआ बोला - “हल्लो !”

नमिता भी जबरन मुस्कराई और बोली - “हल्लो युअरसैल्फ ।”

“मैंने इसी बात की चेतावनी दी थी तुम्हें ।”

“ओह, ले ऑफ !”

“कैसा लग रहा है यहां ?”

“भयभीत नहीं हूं मैं ।”

“मैं तुम्हारे साहस की दाद देता हूं ।”

“शुक्रिया ।”

“लेकिन कभी-कभी अधिक साहस विडम्बना भी बन जाता है ।”

“क्या मतलब ?” - वो तीखे स्वर में बोली ।

सुनील ने उत्तर न दिया, वो उसके करीब पड़ी एक कुर्सी पर ढेर हो गया, उसने अपनी जेब अपना लक्की स्ट्राइक का पैकेट निकाला और उसे अपने विशिष्ट अन्दाज से यूं झटका दिया कि एक सिगरेट पैकेट में से आधा बाहर उछल आया ।

“सिगरेट !” - सुनील पैकेट उसकी तरफ बढ़ाता हुआ बोला ।

नमिता ने हिचकिचाते हुए सिगरेट पैकेट से बाहर खींच लिया ।

तब सुनील ने भी एक सिगरेट लिया और फिर लाइटर से दोनों सिगरेट सुलगाये ।

“कल” - नमिता संजीदगी से बोली - “मेरा राज राज न रख सके ! पुलिस को सब कुछ कह सुनाया !”

“न कहता तो और क्या करता ?” - सुनील बोला - “वो पेश ही ऐसे आये थे मेरे से । उन्होंने तो मुझे पंखे से उलटा टांग दिया था और मेरे नाखूनों में कील ठोकने लगे थे ।”

“देखें नाखून तुम्हारे ?”

“नाखूनों से कुछ नहीं मालूम होगा । उनके कील दरअसल निहायत घटिया क्वालिटी के थे, टूट-टूट जाते थे । पट्टों ने हारकर खुद ही कोशिश छोड़ दी थी । कुछ हुआ तो बस ये हुआ कि उन लोगों के डेढ़-दो किलो कील बरबाद हो गये ।”

“और उनके नुकसान से तुम्हें ऐसी हमदर्दी हुई कि भरपाई के तौर पर तुमने उनके सामने मेरे बारे में सब कुछ बक दिया ?”

“ऐसा ही था कुछ-कुछ ।”

“यानी कि मैंने तुम्हें गलत समझा ।”

“तुम्हारा सवाल ये जाहिर करता है कि तुम अब भी यही समझ रही हो कि कल रात तुमने जो कुछ किया, ठीक किया । अपने जिस अन्जाम तक पहुंची हुई हो, उसके बावजूद ऐसा समझ रही हो ?”

“जो हो गया, सो हो गया । मुझे किसी बात का कोई मलाल नहीं ।”

“अभी क्या हुआ है ? अभी तो कुछ भी नहीं हुआ है । अभी तो तुमने सिर्फ चन्द घन्टे हवालात में गुजारे हैं । अभी जेल कहां देखी है तुमने ? अभी जेल का मजा कहां चखा है तुमने ? अभी...”

“तुम यहां मुझे डराने आये हो ?”

“नहीं । मैं तो तुम्हारी हौसलाअफजाई के लिये आया हूं और किसी ऐसी सूरत पर गौर करने आया हूं जिससे तुम्हें यहां से निजात मिल सके । नमिता, मैं तुम्हारे किसी काम आना चाहता हूं ।”

“जैसे कल मेरे काम आये थे ? मेरी पोल खोलकर ?”

“वो किस्सा छोड़ो अब । यकीन जानो वो जरूरी था ।”

“तो कौन-सा किस्सा शुरू करूं ?”

“कल रात तुम कीर्ति की तलाश में निकली थीं । मिली थी वो ?”

“नहीं ।”

“वैसे होगी कहां वो ?”

“मुझे क्या पता ? पता होता तो कल वहां पहुंच न गयी होती !”

“आई सी !”

“तुम कैसे आये ?”

“पुलिस के बुलावे पर ही आया था । अपना बयान दर्ज कराने और उस पर साइन करने । आने पर मालूम हुआ कि तुम यहीं थीं । मैंने मुलाकात की दरखास्त की जो कबूल हो गयी ।”

“ओह !”

“तुम्हारे लिये एक खास खबर है।”

“क्या?”

“पुलिस तुम्हारे साथ एक ऐसा सौदा करने के लिये तैयार है जो कि तुम्हें आजाद करा सकता है।”

“वो कोई खास खबर नहीं।” - वो मुंह बिचकाती हुई बोली - “मैं कीर्ति को गिरफ्तार करवा दूँ तो वो मुझे आजाद कर देंगे। यही है न सौदा?”

“हां। क्या ख्याल है इस बारे में?”

“अपना ख्याल मैं इस इन्स्पेक्टर पर दर्जनों बार जाहिर कर चुकी हूँ। जाके पूछ लो उससे।”

“यानी कि तुम्हें वो सौदा मंजूर नहीं?”

“हरगिज नहीं। और अगर तुम्हारी यहां मौजूदगी पुलिस का अधूरा काम पूरा करने के लिये है तो...”

उसने सिगरेट फर्श पर फेंका और एकाएक उठ खड़ी हुई।

“वो बात नहीं है।” - सुनील जल्दी से बोला - “वो बात बिल्कुल भी नहीं है। तुम मुझे गलत समझ रही हो।”

“अच्छा!”

“हां। बैठ जाओ। प्लीज।”

वो हिचकिचाती हुई वापिस बैठ गयी।

“देखो।” - सुनील उसे समझाता हुआ बोला - “कानून की जुबान में कहते हैं कि फ्लाइट इज एन इवीडेंस ऑफ गिल्ट। किसी का फरार होना अपने-आपमें सबूत होता है उसके खिलाफ।”

“मेरी बहन फरार नहीं है।”

“वो गायब है। वो ऐसे हालत में गायब है जिनमें उसे गायब नहीं होना चाहिये। अब जबकि खबर अखबार में भी छप चुकी है तो वो ये भी नहीं कर सकती कि उसे अपने पति के हौलनाक अंजाम की खबर नहीं। जिस औरत को धाड़ें मारते अपने पति की लाश के सिरहाने पहुंचना चाहिये, वो गायब है। ऊपर से कत्ल उसकी रिवॉल्वर से हुआ। और ऊपर से सैंडल की टूटी एड़ी और बालों के क्लिप की सूत में मौकायेवारदात पर ऐसे सूत्र पाये गये जो सीधे उसकी तरफ इशारा करते हैं। अभी और ऊपर से तुमने रिवॉल्वर को और बाकी सूत्रों को पहचानकर उन्हें वहां से गायब करने की कोशिश की। अब तुम खुद ही फैसला करो कि इन तमाम बातों से जो सामूहिक नतीजा निकलता है वो तुम्हारी बहन की तरफ एक मजबूत इशारा है या नहीं?”

“इशारे से क्या होता है?”

“क्यों नहीं होता? बहुत कुछ होता है। इशारा वो रास्ता दिखाता है जिस पर होकर मंजिल तक पहुंचा जा सकता है।”

“तो?”

“तो ये कि तुम्हारी बहन के लिये इस वक्त सबसे ज्यादा समझदारी का काम यही है कि वो आत्मसमर्पण कर दे।”

“खामखाह!”

“इसी में उसकी भलाई है। अगर तुम समझती हो कि वो पुलिस के चंगुल से बची रह सकती है तो ये तुम्हारी खामख्याली है। उसका पकड़ा जाना महज वक्त की बात है। पुलिस ने अपनी मेहनत से, अपने साधनों को इस्तेमाल करते हुए उसे पकड़ा तो फिर उसके साथ कोई रियायत नहीं होगी। लेकिन उसका खुद अपने-आपको पुलिस के हवाले कर देना उसके हक में एक बड़ा प्लस प्वायन्ट हो सकता है। इतना तो मानती हो या नहीं? ठिठाई से नहीं, सोच के जवाब देना।”

“मानती हूँ।” - वो कठिन स्वर में बोली।

“तो फिर पुलिस की आफर कबूल करने में क्या हर्ज है ?”

“हर्ज कोई नहीं है ।” - वो झुंझलाकर बोली - “लेकिन प्रॉब्लम ये है कि मुझे नहीं पता कि वो कहाँ है !”

“लेकिन तुम ऐसा कुछ जानती हो सकती हो जो कि उसकी तलाश का साधन बन सकता है ।”

“क्या मतलब ?”

“मेरे चन्द सवालों का जवाब देना कबूल करो तो मतलब समझ में आ जायेगा ।”

“जवाब मालूम होगा तो दूंगी न ।”

“तुम्हें क्या पता तुम्हें जवाब नहीं मालूम ! अभी तुमने सवाल कहाँ सुने हैं !”

उसके चेहरे पर असमंजस के भाव आये ।

“और फिर हो सकता है” - सुनील अर्थपूर्ण स्वर में बोला - “कि कुछ सवालों के जवाब तुम्हें मैं भी सुझा सकूँ ।”

“यानी कि सवाल भी तुम्हारे और जवाब भी तुम्हारे ?”

“हो सकता है ।”

“और यूँ तुम ये जान जाओगे कि कीर्ति कहाँ है ?”

“हो सकता है ।”

“यानी कि अन्धेरे में तीर चलाना चाहते हो ?”

“हो सकता है ।”

“सब कुछ हो ही सकता है या कुछ है भी ।”

“शायद कुछ हो । शायद कुछ न हो ।”

“तुम्हारी बात तो मेरे एक नहीं पल्ले पड़ रही लेकिन... मैं एक शर्त पर तुम्हारे सवालों का जवाब देने की हामी भर सकती हूँ ।”

“कैसी शर्त ?”

“हालांकि मुझे उम्मीद तो कतई नहीं लेकिन किसी जादूगरी से मेरे जवाबों की बिना पर अगर तुम कीर्ति तक पहुँचने में कामयाब हो गये तो तुम्हें इस बात की गारन्टी करनी होगी कि वो आत्मसमर्पण ही करेगी, गिरफ्तार की गयी नहीं दिखाई जायेगी ।”

“ऐसी गारन्टी मैं कैसे कर सकता हूँ ।”

“यानी कि फिजूल में इस घड़ी पुलिस के भौंपू बने हुए हो ?”

“वो क्या है कि...”

“मिस्टर, या ये गारन्टी करो, या फिर छुट्टी करो ।”

“ठीक है । गारन्टी की मैंने ।”

“पुलिस से बात किये बिना ?”

“समझ लो बात कर ली मैंने पुलिस से ।”

“एक बार धोखा दे चुके हो, उम्मीद है कि दोबारा धोखा नहीं दोगे ।”

“नहीं दूंगा । वैसे हकीकत यही है कि मैंने एक बार भी धोखा नहीं दिया था । कल रात हालात ऐसे थे कि...”

“ओह, ले आफ । पहले कहा कि छत से उलटे टांग दिये गये थे शायद इस बार कहोगे कि शोलों पर लिटाये गये थे ।”

“मैंने कल तुमसे कोई वादा नहीं किया था । फिर मेरे पर वादाखिलाफी का इलजाम किसलिये ?”

“अच्छा किया याद दिला दिया । अब आज वादा करो कि अगर तुम किसी करिश्माई तरीके से आनन-फानन कीर्ति तक पहुंच गये और उसे तुम्हारी आत्मसमर्पण वाली राय से इत्तफाक न हुआ तो तुम उसकी गिरफ्तारी का सामान नहीं करोगे । वादा करो ।”

“किया । वादा किया कि तुम्हारी बहन की राजी में ही मेरी रजा होगी ।”

“वादे से फिरे तो डूब मरना ।”

“जरूर ।”

“अब पूछो क्या पूछना चाहते हो ?”

“अभी लो । जरा एक सिगरेट सुलगा लूं ।”

जेब से सिगरेट का पैकेट निकालने की जगह सुनील ने पॉकेट डायरी और बाल प्वायन्ट पैन निकाला और फिर डायरी के पन्ने पर तेजी से घसीटा:

यहां माइक्रोफोन छुपा है । इन्स्पेक्टर सब कुछ सुन रहा है । जो सवाल में लिखकर करूं, उसका जवाब या लिखकर देना या इशारे से देना । जुबानी कुछ और, कुछ भी, बेमानी-सा बोलती रहना ।

सवाल । विकी नाम के किसी शख्स को जानती हो ?

उसने डायरी का पन्ना नमिता के सामने कर दिया और प्रत्यक्षतः बोला - “तुम कीर्ति की अचला ठाकुर नाम की किसी सहेली को जानती हो ?”

“अचला ठक्कर !” - वो बोली - “अचला ठक्कर !”

कागज पर उसने लिखा :

विकी कौन ?

“ठक्कर नहीं, ठाकुर । टी एच ए के यू आर । ठाकुर ।”

पूरा नाम नहीं मालूम । उम्र जितनी । कद लम्बा । रंग गोरा । अभिनेताओं जैसा खूबसूरत नौजवान ।

“अच्छा, ठाकुर । जो विशालगढ में रहती थी ?”

कुछ और बताओ ।

“हां, शायद पहले कभी विशालगढ में रहती थी, अचला ठाकुर ।”

कानों को ढंकने वाले लम्बे बाल । क्लीन शेड । कीर्ति के साथ उसके गहरे ताल्लुकात ।

कैसे गहरे ताल्लुकात ?

लव अफेयर ।

“एक अचला नाम की लड़की क्लास फैलो तो होती थी कीर्ति की लेकिन जहां तक मुझे याद पड़ता है, वो विशालगढ तो कभी नहीं रही थी ।” - एकाएक नमिता के चेहरे के भाव तब्दील हुए, उसकी आंखों में ऐसे भाव आये जैसे कोई भूली बात याद आ गयी हो, उसने तेजी से कागज पर लिखा :

विक्रम सूरी । विक्रम सूरी हो सकता है विकी ।

जानती हो उसे ?

हां । पिछले साल दो-चार मुलाकातें हुई थीं ।

“वो अचला ठाकुर थी ?”

“ये तो मुझे याद नहीं । आई मीन सरनेम पक्का नहीं, ये पक्का नहीं कि वो ठाकुर थी या नहीं, लेकिन नाम अचला था, ये मुझे बखूबी याद है ।”

“फिर क्या बात बनी ! जरा सोचो । और जोर दो दिमाग पर ।”

कौन है विक्रम सूरी ? कहां रहता है ? क्या करता है ?

“अच्छा, सोचती हूं । जरा चुप करके बैठो ।”

अब का पता नहीं । पहले ब्लू डायमंड क्लब के बैड में ड्रम बजाता था ।

ब्लू डायमंड क्लब कहां ?

होटल लेक व्यू में । उसी को अब कैसानो में तब्दील कर दिया गया है । भूतपूर्व ब्लू डायमंड क्लब अब कैसीनो ब्लू डायमंड बन गया है ।

रहता कहां है ?

पता नहीं ।

“भई, मुझे कुछ याद नहीं आ रहा ।” - प्रत्यक्षतः वो अपने स्वर में झुंझलाहट का पुट लाती हुई बोली ।

“फिर क्या बात बनी ?” - सुनील बोला, उसने डायरी में से लिखे हुए कागज फाड़े और उन्हें सुलगाकर ऐश ट्रे में डाल दिया । डायरी और पैन उसने वापिस जेब में रख लिये ।

“सारी ।” - नमिता बोली ।

“फिलहाल छोड़ो ये किस्सा लेकिन सोचना कुछ इस बाबत । शायद बाद में कुछ याद आ जाये ।”

“ठीक है ।”

“कई बार कोई बात एकाएक स्ट्राइक करती है ।”

“आई अन्डरस्टैण्ड ।”

“मैं फिर आऊंगा तुमसे मिलने ।”

“आई डॉट माईड ।”

“सी यू लेटर ।”

“उस इन्स्पेक्टर को अपना वादा याद दिला देना कि अगर कीर्ति ने आत्मसमर्पण कर दिया तो मुझे फौरन छोड़ दिया जायेगा और मुझ पर कोई चार्ज भी नहीं लगाया जायेगा । ओके ?”

“ओके ।”

सुनील ने उठकर उसका कन्धा थपथपाया और फिर लम्बे डग भरता हुआ बाहर निकल बाहर निकल गया ।

वो प्रभूदयाल के कमरे में पहुंचा ।

“क्या बात बनी ?” - प्रभूदयाल उसे देखते ही अप्रसन्न स्वर में बोला ।

“क्या बात बनी ?” - सुनील बोला ।

“अरे, मैं तुमसे पूछ रहा हूं ।”

“कोई बात नहीं बनी । मैंने पहले ही कहा था कि ये कतई जरूरी नहीं कि नमिता को कीर्ति का कोई अता-पता मालूम हो ।”

“अचला नाम कैसे सूझा ?”

“सुना था । जब मैं थापर के काटेज के बैडरूम में बंधा पड़ा था तो मैंने बाहर ड्राइंगरूम से कुछ ऐसी जनाना आवाजें आती सुनी थीं जिनमें अचला नाम की कीर्ति की किसी सहेली का जिक्र था । मैंने सोचा शायद कीर्ति वहां हो लेकिन नमिता तो किसी अचला को जानती निकली नहीं । अब ये ही उम्मीद है कि शायद इस अचला को कीर्ति का कोई और वाकिफकार जानता हो । कहने का मतलब है कि कीर्ति के जानकारी के दायरे में इस अचला की बाबत पूछताछ करनी होगी ।”

“अचला-अचला कुछ ज्यादा ही भज रहे हो, रिपोर्टर साहब ।”

“ऐसी तो कोई बात नहीं ।”

“तुम कोई पुड़िया तो नहीं दे रहे मुझे ? कहीं दे ही तो नहीं चुके हो ?”

“कमाल करते हो, माई-बाप ! मेरा कोई एक्शन यहां तुमसे छुपा रहा सका है ?”

“शायद छुपा रह सका हो । मुझे लग रहा है कि...”

“अब वहम का तो कोई इलाज है नहीं ।”

“लगता है नमिता से तुम्हारी बात कराकर मैंने गलती की ।”

“वो इसलिये लगता है क्योंकि उस बातचीत का कोई कारआमद नतीजा नहीं निकला । कोई नतीजा निकला होता तो इस घड़ी आप उछल-उछल के बधाइयां ले रहे होते कि कैसा खींच के ताना था आपने, कैसा उठा के पटका था, कैसा खोद के निकाला था, कैसा...”

“शटअप ।”

“जो आज्ञा, बन्दापरवर । तो अब इजाजत है मुझे ?”

प्रभूदयाल ने बड़े अनमने भाव से सहमति में सिर हिलाया ।

सुनील हैडक्वार्टर से बाहर निकला और अपनी मोटर साइकल पर सवार होकर ‘ब्लास्ट’ से आफिस की ओर रवाना हुआ । वो अभी आधे रास्ते में ही था कि धूप गायब होने लगी और आकाश पर सुरमई बादल छाने लगे । और थोड़ी देर बाद बूदाबांदी होने लगी जो कि उसके आफिस पहुंचने तक बाकायदा बारिश में बदल गयी ।

वो अपने कक्ष में पहुंचा तो उसने पाया कि अर्जुन द्वारा पिछली रात को मौकायेवारदात पर खींची गयी तस्वीरों के प्रिंट उसकी टेबल पर मौजूद थे । उसने उनमें से दो तस्वीरें - एक बोट में पड़ी लाश की और दूसरी सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर की ‘स्लम’ लगने वाली - छांटकर अलग कर लीं । फिर उसने वारदात की एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की और तस्वीरों को उसके साथ नत्थी कर दिया ।

वो न्यूज एडिटर राय के आफिस में पहुंचा ।

“ये” - वो रिपोर्ट राय के सामने मेज पर डालता हुआ बोला - “कल के हत्याकाण्ड की रिपोर्ट चौकस करो ।”

राय ने सहमति में सिर हिलाया ।

“इसी केस के सिलसिले में मैंने अभी झेरी जाना है। मौसम खराब है इसलिये कार चाहिये।”

“कार तो कोई प्रॉब्लम नहीं” - राय बोला - “लेकिन ड्राइवर नहीं है।”

“मैं हूँ न ड्राइवर।”

“फिर क्या बात है ! नई वाली सफेद एम्बैसेडर ले जाओ।”

“शुक्रिया।”

वापिस अपने कक्ष में आकर सुनील ने अर्जुन को बुलाया।

“पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचो।” - वह बोला।

“क्या करने ?”

“थापर ने कत्ल के केस से सम्बन्धित पुलिस की गतिविधियां भांपने। मसलन पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से केस पर रोशनी डालने वाली कोई नयी बात मालूम हुई हो या उन्हें कोई सुराग मिला हो जिसे वे दबाकर बैठे हों ! यू नो दि ड्रिल। नो ?”

“यस।”

“शाम तक मैं भी वहां पहुंचूंगा। मेरे लौटने तक वहीं रुकना।”

“ठीक है।”

अर्जुन विदा हो गया।

सुनील ‘ब्लास्ट’ की इमारत से बाहर निकला, नीचे पार्किंग में खड़ी सफेद एम्बैसेडर पर सवार हुआ और झेरी की ओर रवाना हो गया। कार के घनी आबादी से बाहर निकलने के बाद उसने महसूस किया कि एक बन्द जिप्सी उसके पीछे लगी हुई थी।

एक मील आगे पहुंचकर उसने कार रोकी।

जिप्सी भी रुक गयी।

दो मील आगे पहुंचकर उसने कार फिर रोकी।

जिप्सी भी फिर रुक गयी।

सुनील ने कार को यू टर्न दिया और उसे जिप्सी की ओर दौड़ाया। वो जिप्सी के करीब पहुंचा तो उसे ड्राइविंग सीट पर सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर बैठा दिखाई दिया।

वो अपनी कार से निकला और लम्बे डग भरता उसके करीब पहुंचा।

“अगर तुम्हें” - वो बोला - “इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल ने मेरे पीछे लगाया है तो मुझे कुछ नहीं कहना। लेकिन अगर अपनी मनमानी कर रहे हो तो गलती कर रहे हो।”

“मैं क्या कर रहा हूँ ?” - वो बोला - “मैं तो बस बैठा हूँ अपनी गाड़ी में।”

“बैठे ही रहो तो अच्छा है।”

“न बैठा रहूँ तो क्या करोगे ?”

“तो मैं अभी इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल को फोन करूंगा और उसे बताऊंगा कि तुम मेरे पीछे लगे हुए हो।”

“वो क्या करेगा ?”

“उसने खुद तुम्हें मेरे पीछे लगाया होगा तो कुछ नहीं करेगा ।”

अनिल कपूर विचलित दिखाई देने लगा ।

“मैं तुम्हारे पीछे नहीं लगा हुआ ।” - फिर वो बोला ।

“अच्छा !”

“मैं सिर्फ ये जानने के लिये तुम्हारी टेलरिंग कर रहा था...”

“टेलरिंग ?”

“तुम्हारे पीछे आ रहा था ।”

“ओह ! टेलरिंग ।”

“कि आज तुम्हारे पेपर में मेरी तस्वीर क्यों नहीं छपी ? तुमने वादा किया यह कि...”

“वादा पूरा होगा । कल के अखबार के मुखपृष्ठ पर तुम्हारी ‘स्लम’ तस्वीर दिखाई देगी ?”

“आज क्यों नहीं छपी ?”

“आज तो खबर ही ठीक से नहीं छपी, उसके साथ तस्वीर कहां से छपती ? स्टाप प्रैस के कालम में ज्यादा जगह नहीं होती, उसमें तो इन्तहाई जरूरी बातें भी मुश्किल से ही समा पाती हैं ।”

“अगर कल भी तस्वीर न छपी तो ?”

“तो बेशक तुम मेरा ईलू-ईलू कर देना ।”

“मैं कर भी दूंगा । मेरा भी नाम अनिल कपूर वैसे ही नहीं है ।”

“जरूर कर देना । अब राजी ?”

उसने सहमति में सिर हिलाया ।

“तो अब मैं टाटा बाई-बाई कहूँ ?”

जवाब में उसने जिप्सी को बैक किया और उसे घूमाकर वापिस राजनगर जाती सड़क पर दौड़ा दिया ।

होटल लेक व्यू दो किलोमीटर से ज्यादा की लम्बाई में फैली झील के पश्चिमी सिरे पर था ।

पार्किंग में कार खड़ी करके वो होटल की लॉबी में पहुंचा ।

दायीं ओर कैसीनो ब्लू डायमंड का नियोन साइन जगमज-जगमग कर रहा था ।

वो कैसीनो में पहुंचा । उसकी निगाह पैन होती हुई चारों तरफ फिरी । उसने पाया कि उस घड़ी वहां कोई खास भीड़भाड़ नहीं थी । कैसीनो में ही एक तरफ एक बार था जो लगभग खाली पड़ा था । प्रवेशद्वार के पहलू में एक बन्द दरवाजा था जिस पर ‘मैनेजर’ लिखा था ।

सुनील वो दरवाजा ठेलकर भीतर दाखिल हुआ ।

भीतर एक मेज के पीछे एक स्कर्टधारी, बहुत लिपी-पुती युवती बैठी थी । सुनील के आगमन की आहट पाकर उसने सिर उठाया ।

“मुझे मैनेजर से मिलना है ।” - सुनील उसका अभिवादन करता हुआ बोला ।

“मिस्टर मिश्रा तो इस वक्त यहां नहीं हैं।” - युवती मधुर स्वर में बोली।

“कब मिलेंगे?”

“कह नहीं सकती। काम क्या है आपको?”

“आपकी तारीफ?”

“आई एम मरियम डिसूजा। मैं असिस्टेंट मैनेजर हूं।”

“फिर तो आप भी मेरी मदद कर सकती हैं।”

“क्या मदद चाहते हो?”

“मुझे एक ऐसे शख्स की जानकारी चाहिये जो कोई एक साल पहले यहां के बैंड में ड्रम बजाता था।”

“नाम?”

“विक्रम सूरी।”

“विकी?”

“वही।”

“वो तो छोड़ गया यहां से। पिछले साल ही छोड़ गया था।”

“छोड़ के कहां गया?”

“क्या पता कहां गया?”

“आप जानती थीं उसे?”

“कोई नौजवान लड़की उसके साथ एक ही छत के नीचे काम करती हो और उसे जानती न हो, ऐसे कहीं हो सकता है?”

“यानी कि औरतों का रसिया था?”

“मिस्टर, फरहाद को मजनों को या रोमियो को औरतों का रसिया कहा जा सकता था?”

“बहुवचन में तो नहीं कहा जा सकता था।”

“नहीं कहा जा सकता था अपने विकी को भी अपना यूं जिक्र पसन्द न आता। वो तो रोमियो था जिसको जूलियट की तलाश थी। अब जूलियट तो ढूंढे से ही मिलती है न! किसी के माथे पर तो लिखा नहीं होता था कि वो जूलियट थी, उसकी जूलियट थी, ताल्लुक में आने से ही तो पता चलता था कि वो उसकी जूलियट थी या नहीं!”

“यानी कि उसकी जूलियट की तलाश ही उसे कई लड़कियों से ताल्लुकात बनाने के लिये मजबूर थी?”

“और नहीं तो क्या? अपना विकी बेचारा इतना महान, इतना संजीदा काम कर रहा था और तुमने उसे औरतों का रसिया कह दिया। सोने को पीतल करार दे दिया।”

सुनील हंसा और फिर बोला - “खता खाई मालूम होती हैं आप उससे!”

उसने हंसी में उसका साथ दिया।

“तुम कौन हो?” - फिर उसने पूछा - “पुलिस वाले हो? या कोई और हो?”

“कोई और हूं।”

“कोई नाम-वाम नहीं रखा मां-बाप ने?”

“रखा। सुनील। सुनील कहते हैं मुझे।”

“बाहर मौसम कैसा है?”

“बहुत सुहाना। बहुत रूमानी।”

“तुम कैसे हो?”

“बहुत सुहाना। बहुत रूमानी।”

“ड्रिंक करते हो?”

“कौन नहीं करता? ऐवरी ब्लास्टिड सोल आफ दिस ब्लास्टिड जनरेशन ड्रिक्स।”

“यानी कि करते हो?”

“हां।”

“इनवाइट मी।”

“यस। श्योर। मैडम, विल यू जायन मी इन ए ड्रिंक?”

“डू यू थिंक देयर विल बी एनफ स्पेस इन ए ड्रिंक फॉर टू आफ अस?”

“आई मीन, मे वुई हैव ए ड्रिंक?”

“हम दोनों के लिये एक ड्रिंक?”

“आप बड़ी हाजिरजवाब हैं।”

“तुम भी कम हाजिरसवाल नहीं हो।”

“जी!”

“सवाल अच्छा हो, तभी जवाब अच्छा होता है, हाजिर होता है।”

“तो अब जो जवाब अच्छा है और हाजिर है, वो क्या है?”

“आओ।”

सुनील उसके साथ आफिस से बाहर निकला। वो उसे कैसीनो के बार में ले आयी। दोनों कोने की एक तनहा टेबल पर बैठ गये। तत्काल एक वेटर उनके करीब पहुंचा।

सुनील ने प्रश्नसूचक नेत्रों से मरियम की तरफ देखा।

“आई विल हैव ए ब्लडी मेरी।” - वो बोली।

“मैडम के लिये खूनी खातून” - सुनील वेटर से बोला - “और मेरे लिये जौ का सत।”

“जी!” - वेटर हकबकाया-सा बोला।

“ब्लडी मेरी और बीयर।”

“यस, सर ।”

वेटर चला गया ।

“खूनी खातून ?” - मरियम विनोदपूर्ण स्वर में बोली ।

“या साली सरला ।” - सुनील बोला ।

वो जोर से हंसी ।

सुनील ने हंसी में उसका साथ दिया । फिर उसने अपना लक्की स्ट्राइक का पैकेट निकालकर उसे सिगरेट आफर किया । उसके इंकार करने पर उसने अपने लिये एक सिगरेट सुलगा लिया ।

ड्रिंक सर्व हो जाने तक उनके बीच खामोशी रही ।

फिर दोनों ने चियर्स बोला ।

“लगता है” - फिर सुनील सहज भाव से बोला - “विकी तुम्हारे में भी कभी अपनी जूलियट तलाश करता रहा था !”

“हां ।” - वो बोली - “लेकिन तलाश की मेरे साथ इनिंग कदरन छोटी साबित हुई थी । जल्दी ही उसे मेरे से ज्यादा सम्भावित कैन्डीडेट दिखाई दे गयी थी ।”

“मैं तुम्हारी साफगोई की दाद देता हूं ।”

वो हंसी ।

“आजकल कौन-से बैंड में है वो ?”

“किसी में भी नहीं ।”

“यानी कि कोई काम-धाम नहीं करता ।”

“नहीं करता । करता होता तो मुझे खबर होती ।”

“यानी कि आजकल रोजी-रोटी कमाने का तलबगार नहीं वो ?”

“न ।”

“यानी कि उसकी माल-पानी की समस्यायें जूलियट ही पूरी कर देती हैं !”

“ये भी कोई पूछने की बात है ?”

“पहले क्यों काम करता था ?”

“तनखाह कमाने के लिये पहले भी नहीं करता था । पहले भी वो बैंड में म्यूजीशियन सिर्फ इसलिये था क्योंकि उसके लिये वो पत्नैशी धन्धा खूबसूरत लड़कियों के ताल्लुकात में आने का जरिया था । डिस्को दीवानियां बहुत मरती थीं उस पर ।”

“क्लबों की मैनेजरानियां भी ?”

“तुम्हारा इशारा मेरी तरफ है ?”

“है तो सही ।”

“हां, यार । मरी तो मैं भी थी कमीने पर ढेर सारी । लेकिन मैं उसकी आदर्श जूलियट न निकली ।”

“आदर्श जूलियट कौन हुई भला ?”

“कोई भी ऐसी लड़की जिस का पर्स हमेशा नोटों से भरा रहता हो, जिसके पास विलायती कार हो, जो जवानी को ऐसी दौलत समझती हो जिसे लुटाने से जिसमें इजाफा होता है और जो तन-मन-धन से - खास तौर से धन से - अपने रोमियो की सेवा कर सकती हो ।”

“विकी को जगह जिक्र किसी औरत का होता तो इन बातों की बिना पर वो कालगर्ल कहलाती ।”

“मिस्टर, अब अपने रोमियो को, आई मीन अपने विकी को, जिगोलो कहने की मजाल न कर बैठना ।”

“फी-मेल कह लूं ?”

“फीमेल ।”

“फीमेल नहीं फी-मेल । फीस से हासिल होने वाला मर्द ।”

“फी-मेल ।” - वो मुदित मन से बोली - “दैरी वैल सैड । इट डिस्क्राइब्स विकी परफैक्टली ।”

सुनील हंसा और फिर बोला - “तुम्हारा गिलास खाली है ।”

“हां । एक और मंगाओ ।”

सुनील ने वेटर को इशारा किया । एक ब्लडी मेरी और आ गयी ।

“तुम क्यों उसे तलाश कर रहे हो ?” - एकाएक वो बोली ।

“है कोई वजह ।” - सुनील लापरवाही से बोला ।

“और तुम हो कौन ? अपने नाम के अलावा तो कुछ भी नहीं बताया तुमने मुझे ।”

“बताया । क्यों नहीं बताया ? नाम के अलावा मैंने ये बताया कि मैं पेलिस वाला नहीं कोई और हूं ।”

“कोई और कौन ? वाट इज युअर लाइन आफ बिजनेस ? वाट इज... ओह ! ओह !”

“क्या हुआ ?”

“तुम प्रेस रिपोर्टर हो । तुम वो शख्स हो जिसकी बाईलाइन के साथ आज के ‘ब्लास्ट’ में दिलीप थापर के कत्ल की खबर छपी है । स्टाप प्रेस के कालम में । तुम ‘ब्लास्ट’ के चीफ रिपोर्टर सुनील कुमार चक्रवती हो । राइट ?”

“राइट ।”

“तुम ये पूछताछ अपने अखबार की खातिर कर रहे हो ?”

“राइट अगेन ।”

“विकी का थापर के कत्ल से कोई रिश्ता है ?”

“पता नहीं ।”

“हो सकता है ?”

“होने को क्या नहीं हो सकता ?”

“तुम उसे तलाश कर रहे हो तो कोई तो बात होगी ।”

“कोई तो बात होगी ।”

“तुम कुछ बता नहीं रहे हो !”

“तुम क्या सुनना चाहती हो ?”

“सच बोलू ?”

“हां, हां ।”

“मैं चाहती हूं कि मुझे ये सुनने को मिले कि विकी का थापर के कल्ल में लपेटा जाना मुमकिन है ।”

“बहुत खुन्दक खायी मालूम होती हो उससे ?”

उसने उत्तर न दिया लेकिन उसकी आंखों में विकी के लिये नफरत का भाव साफ दिखाई दे रहा था ।

“मैं तुम्हारी ये मुराद पूरी कर सकता हूं, स्वीटहार्ट ।” - सुनील अपनी एक आंख तनिक दबाकर बोला - “लेकिन उसके लिये भी तो मुझे विकी का कोई अता-पता मालूम होना चाहिये ।”

“अता-पता मालूम तो है मुझे ।” - वो धीरे से बोली ।

“दैट्स गुड न्यूज ।”

“लेकिन मैं फैसला नहीं कर पा रही हूं कि पता मुझे तुम्हें बताना चाहिये या नहीं ।”

“फिर क्या बात बनी ?”

“वो बड़ा सीक्रेट पता है । बड़ा खुफिया ठिकाना है वो विकी का जो कि उसकी किसी जूलियट - वर्तमान या भूतपूर्व - को ही मालूम हो सकता है ।”

“गुड । तुम तो हो ऐसी जूलियट ।”

“अगर उसे पता लग गया कि वो पता मैंने तुम्हें बताया था...”

“नहीं लगेगा ।”

“...तो वो मुझे जान से मार डालेगा ।”

“बोला न, नहीं लगेगा ।”

“पक्की बात ?”

“हां ।”

“तो सुनो । वो यहीं है ।”

“यहां कहां ? होटल में ही ?”

“होटल में नहीं । यहीं झेरी में । होटल से कोई आधा मील दूर झील पर ही । एक पुराना काटेज है झील किनारे । उसकी पहचान ये है कि उसके चारों तरफ गुलमोहर के पेड़ हैं । विकी की डिकी कहता है वो उसे ।”

“डिकी !”

“सामान रखने की जगह । मौसमी जूलियटें सामान ही तो होती हैं उसके लिये ।”

“आई सी । इस वक्त होगा वो वहां ?”

“अब ये क्या पता मुझे ! जाके देख लो । कोई दूर थोड़े ही है विकी की डिकी ।”

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

“वो वहां होगा” - एकाएक वो बड़े अरमान-भरे स्वर में बोली - “तो अकेला नहीं होगा । कोई जूलियट जरूर होगी उसके साथ । न सिर्फ साथ होगी बल्कि सातवें आसमान पर उड़ रही होगी ।”

“वो वहीं रहता है !”

“अब तो वहीं रहता होगा । पहले होटल की नौकरी में था तो होटल में ही रहता था ।”

“तुम कहां रहती हो ?”

“यहीं । होटल के पिछवाड़े में स्टाफ के लिये क्वार्टर हैं । वहां पांच नम्बर में ।”

“हूं ।” - वो एक क्षण खामोश रहा और फिर बोला - “कल तो यहां खूब रौनक रही होगी ?”

“हां ।” - वो बोली - “जो मर गया वो बेचारा चीफ गैस्ट था कल यहां । पूरी फैमिली के साथ आया था । कैसीनो का बड़ा फिट उद्घाटन कर गया था वो कल ।”

“कल मतलब ?”

“चालीस हजार रुपये जीतकर गया था कल । रॉलेट की टेबल पर उसकी तकदीर ने बहुत ज्यादा साथ दिया था उसका ।”

“लेकिन जिन्दगी की टेबल पर साथ नहीं दिया था । जिन्दगी का दांव तो हार गया वो । जान से हाथ धो बैठा ।”

“वो तो है ।”

“वो यहां से रुखसत कब हुआ था ?”

“पता नहीं । कल यहां बहुत भीड़भाड़ थी । मेरे पास बहुत काम था इसलिये उसके यहां से जाने की खबर मुझे नहीं लगी थी ।”

“आई सी । ...एक ब्लडी मेरी और हो जाये ?”

“नो । नेवर । टू इज माई लिमिट । वैसे भी मुझे अब कहीं जाना है ।”

“तो मैं बिल मंगा लूं ?”

“हां ।”

सुनील के इशारे पर वेंटर बिल लाया तो उसने अपने बटुवे में से के पांच सौ का नोट निकालकर बिल के साथ रख दिया ।

“नया-नकोर पांच सौ का नोट ।” - वो उसे उठाकर अपनी उंगलियों में भड़काती हुई बोली - “कम ही देखने को मिलता है । ऐसे तमाम के तमाम नोट दो नम्बर के अमीरों की तिजोरियों में जो दफन हो जाते हैं । तुमने भी तिजोरी में से निकाला होगा ।”

“ब्राइटआइज, मैं एक निहायत मामूली श्रमजीवी पत्रकार हूं । मैं न अमीर हूं, न दो नम्बर का हूं और न मेरे पास कोई तिजोरी है ।”

“दैट्स टू बैड ।”

उसने नोट वापस मेज पर डाल दिया ।

मरियम डिसूजा ने सुनील को गुलमोहर के पेड़ों की निशानी न बतायी होती तो सुनील झील का चप्पा-चप्पा टटोलकर ही ‘विकी की डिकी’ तलाश कर पाता । वो पूरे का पूरा लकड़ी के लट्टों से बना काटेज निकला जिस पर पेंट भी पेड़ों की हरियाली जितना ही हरा पुता

हुआ था ।

ऊंची झाड़ियों के बीच से गुजरती एक पगडण्डी पर चलता हुआ वो काटेज के मुख्य द्वार पर पहुंचा । वो कुछ क्षण बन्द दरवाजे के सामने ठिठका खड़ा कोई आहट लेने की कोशिश करता रहा, फिर उसने दरवाजे पर दस्तक दी ।

कोई जवाब न मिला कुछ क्षण बाद उसने फिर दस्तक दी, तो भी कोई जवाब न मिला ।

दरवाजे के पहलू में एक खिड़की थी, उसके पल्ले शीशे के थे लेकिन आगे भारी पर्दे खिंचे हुए थे जिसकी वजह से झांक पाना सम्भव नहीं था ।

काटेज का घेरा काटकर वो पिछवाड़े में पहुंचा ।

पिछवाड़े में काटेज एकदम झील के दहाने पर पहुंचा मालूम होता था । उधर के दरवाजे के सामने झील में उतरती लकड़ी की सीढ़ियां थीं और उनके सिर पर पानी में डोलती एक छोटी-सी मोटर बोट खड़ी दिखाई दे रही थी ।

उसने पिछवाड़े के दरवाजे पर दस्तक दी । जवाब फिर नदारद ।

“अरे, कोई है ?” - वो उच्च स्वर में बोला ।

जवाब में कोई आवाज न आयी ।

उसने पाया कि उधर की दो खिड़कियों पर भी मोटे पर्दे पड़े हुए थे लेकिन उधर एक तीसरी, छोटी-सी, खिड़की और थी जिसके पल्ले तो शीशे के ही थे लेकिन जिसके शीशों पर कागज चिपके हुए थे । जरूर वो किसी बाथरूम की खिड़की थी ।

उसके नोट किया कि खिड़की के ऊपर एक रोशनदान था जो कि खुला था ।

खिड़की की बगल से एक मजबूत बेल गुजर रही थी जिसे पकड़कर वो खिड़की की सिल पर चढ़ गया । वहां से वो पंजों पर उचका तो उसने पाया कि यूं खुले रोशनदान से भीतर झांका जा सकता था ।

सावधानी से, बिना कोई आवाज किये, उसने भीतर झांका ।

उसे भीतर एक युवती खड़ी दिखाई दी । वो शलवार-कमीज पहने थी और उसका सिर यूं झुका हुआ था जैसे वो बड़ी शिद्दत से कोई आहट लेने की कोशिश कर रही हो ।

“नमस्ते ।” - सुनील धीरे से बोला ।

वो यूं चिहुंकी जैसे बिच्छू ने काट खाया हो । एक झटके से उसने रोशनदान की तरफ सिर उठाया । उसकी सुनील से निगाह मिली तो उसका चेहरा कागज की तरफ सफेद हो गया ।

“अगर आप कीर्ति हैं तो डरने की कोई बात नहीं ।” - सुनील आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला ।

“क - कौन हो तुम ?” - वो बड़ी कठिनाई से बोल पायी ।

“दोस्त !”

“क्या चाहते हो ?”

“आपसे बात करना चाहता हूं ।”

“क्या बात करना चाहते हो ?”

“रोशनदान पर टंग-टंगे तो बताना मुश्किल है । मुझे भीतर आने दीजिये, फिर बताता हूं ।”

“लेकिन तुम हो कौन ?”

“मेरा नाम सुनील है और यकीन मानिये मैं आपकी और सिर्फ आपकी भलाई के लिये यहां मौजूद हूं।”

“मेरी भलाई?”

“और आपकी बहन नमिता की भलाई जो कि इस वक्त पुलिस की हिरासत में है।”

“क - क्या!”

“आपकी वजह से।”

“मेरी वजह से!”

“रोशनदान मेरे हाथ से छूट रहा है।”

“सामने दरवाजे पर पहुंचो। मैं जाकर खोलती हूं उसे।”

“शुक्रिया।”

सुनील ने खिड़की से नीचे छलांग लगायी और काटेज का घेरा काटकर सामने की तरफ बढ़ा। वो अभी आधे रास्ते में ही था कि एकाएक वो ठिठका, फिर आगे बढ़ने के स्थान पर वो घूमा और दबे-पांव वापिस लौटा। पिछवाड़े में पहुंचकर वो सीढ़ियां उतर गया और उन पर यूं उकड़ूँ होकर बैठ गया कि तनिक-सा सिर उठाकर भी वो पिछवाड़े के दरवाजे को देख सकता था।

पिछवाड़े का दरवाजा निःशब्द खुला, उस युवती ने दबे-पांव बाहर कदम रखा, व्याकुल भाव से दायें-बायें झांका और फिर अपने सामने सीढ़ियों की तरफ लपकी।

वो सीढ़ियों के दहाने पर पहुंची तो सुनील उठकर खड़ा हो गया।

“नौका विहार की तैयारी है?” - वो बोला।

युवती के मुंह से एक घुटी हुई चीख निकली, वो हक्की-बक्की-सी सुनील को देखने लगी।

सुनील सीढ़ियां चढ़कर उसके करीब पहुंचा।

“क्या बात है?” - वो बोला - “पलायन में ही आपको अपनी हर दुश्मारी का हल दिखाई देता है? कल नार्थ शोर से भाग खड़ी हुई, आज यहां से भाग रही हैं।”

उसके मुंह से बोल न फूटा।

“हैं तो आप कीर्ति थापर ही न?”

बड़ी कठिनाई से वो सहमति में सिर हिला पायी।

“बारिश फिर शुरू होने जा रही है। आइये, भीतर चलें।”

यन्त्रचालित-सी वो उसके साथ हो ली।

पिछले दरवाजे से काटेज में दाखिल होकर सुनील उसे सामने ड्राइंगरूम में लेकर आया। उसके इशारे पर वो एक सोफे पर ढेर हो गयी।

“अब जरा” - वो सख्ती से बोला - “अपने आपको काबू में कीजिये और मेरी तरफ तवज्जो दीजिये।”

उसने एक बार सिर उठाकर सुनील की तरफ देखा और फिर सिर झुका लिया।

“वो कहां है?” - सुनील बोला।

“क - कौन?”

“विकी । जिसकी डिकी में आपने पनाह पायी हुई है ?”

उसको जवाब देने की जरूरत न पड़ी । तभी सामने दरवाजे के ताले में चाबी घूमने की आवाज हुई, दरवाजा खुला और विकी ने - विक्रम सूरी ने - भीतर कदम रखा ।

सुनील पर निगाह पड़ते ही उसका मुंह खुले का खुला रह गया ।

“वैलकम ।” - सुनील शुष्क स्वर में बोला - “बहुत सही मौके पर आये हो ।”

“तुम... तुम” - वो हकलाया - “तुम यहां ?”

“हां । मैं यहां ।”

“क - कैसे पहुंच गये ?”

“दरवाजा बन्द कर दो और इधर आकर बैठ जाओ । अभी सब मालूम हुआ जाता है ।”

भारी कदमों से चलता हुआ वो आगे बढ़ा और फिर कीर्ति के पहलू में सोफे पर ढेर हो गया ।

“आप लोगों से ये सवाल करना तो बेकार होगा” - सुनील बोला - “कि आपको दिलीप थापर के कत्ल की खबर है या नहीं ।”

किसी ने उत्तर न दिया । कीर्ति ने बेचैनी से पहलू बदला ।

“आप क्या समझती हैं” - सुनील बोला - “आप ताजिन्दगी इस काटेज में छुपी रह सकती हैं ?”

उसने फिर बेचैनी से पहलू बदला और अपने होंठों पर जुबान फेरी ।

“प्यारेलाल, लगता है तुम्हें समझने में मैंने गलती की । मैंने गलती की जो पुलिस के सामने तुम्हारी बाबत अपना मुंह नहीं खोला ।”

“तुमने... तुमने” - विकी बोला - “पुलिस से मेरा जिक्र नहीं किया ?”

“नहीं किया । वादा जो किया था मैंने इस बाबत तुम्हारे से ।”

“ओह !”

“लेकिन अब मेरे जिक्र के बिना भी पुलिस तुम्हारे बारे में जान जायेगी ।”

“क - कैसे ?”

“जब मैडम पुलिस की हिरासत में पहुंच जायेंगी तो पुलिस खुद ही इस हकीकत को खोद निकालेगी कि इनका तुम्हारे साथ लव-अफेयर है ।”

“ल - लेकिन... ये... ये पुलिस की हिरासत में क्यों होगी ?”

“आत्मसमर्पण करेंगी ये । इसलिए पुलिस की हिरासत में होंगी । ये भीतर पहुंचेगीं तो तभी नमिता बाहर आ पायेगी ।”

“लेकिन नमिता ने क्या किया है ?” - कीर्ति तनिक आवेशपूर्ण स्वर में बोली - “वो क्यों गिरफ्तार है ? उसने तो कत्ल नहीं किया ।”

“आपको क्या पता ?”

“म-मेरा मतलब है वो... वो ऐसा नहीं कर सकती ।”

“क्यों ? क्योंकि असल में कत्ल आपने किया है ?”

“नहीं । हरगिज भी नहीं ।”

“तुमने ?” - सुनील ने विकी से पूछा ।

“पागल हुए हो !” - विकी तीव्र प्रतिवादपूर्ण स्वर में बोला ।

“फिर तो आप दोनों से बड़ा अहमक कोई नहीं जो आप यहां छुपी हुई हैं और तुम इन्हें यहां छुपाये हुए हो । नूरेचश्म, अगर तुम इनके हितचिन्तक हो तो इन्हें यहां छुपाकर रखने की जगह तुम्हीं को इन्हें राय देनी चाहिये थी कि ये अपने-आपको पुलिस के हवाले कर दें ।”

“ताकि वो लोग इसे कत्ल के फर्जी इलजाम में फंसा देते ? तब बोलो, इसका क्या हाल होता ?”

“जो भी हाल होता उस हाल से बेहतर होता जो कि पकड़े जाने पर इनका अब होगा ।”

“ये नहीं पकड़ी जायेगी ।”

“पागल हुए हो ! यही करिश्मा है कि ये अभी तक आजाद हैं ।”

“हम ऐसी जगह चले जायेंगे जहां पुलिस हमें कभी तलाश नहीं कर पायेगी ।”

“अबे चिमनी के धुयें, दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं ।”

विकी ने जोर से थूक निगली ।

“और फिर तुम लोगों का ये कदम भारी खुदगर्जी होगी, नमिता के साथ सख्त नाइंसाफी होगी जिसने कि आपकी करतूत के निशान मिटाने की बेवकूफी की ।”

“उसने क्या किया था ?” - कीर्ति ने भयभीत भाव से पूछा ।

सुनील ने बताया ।

“ओह !” - वो पहले से ज्यादा भयभीत भाव से बोली ।

“लेकिन वो रिहा हो सकती है ।” - सुनील बोला - “उस पर लगे तमाम इल्जामात वापिस लिये जा सकते हैं बशर्ते कि आप अपने-आपको कानून के हवाले कर दें ।”

“क्या गारन्टी है ?” - विकी बोला ।

“है गारन्टी । ये पुलिस के एक जिम्मेदार अधिकारी का वादा है कि अगर आप आत्मसमर्पण कर दें तो नमिता को रिहा कर देगा ।”

“बकवास !”

“अरे, अक्ल के दुश्मन, अगर ऐसा न होता तो क्या मैं यहां बैठा तुम लोगों के साथ गुप्तगू में वक्त जाया कर रहा होता ! मैं जाकर पुलिस को खबर न करता कि ये कहां छुपी हुई थी !”

“लेकिन...”

“विकी” - एकाएक कीर्ति बदले स्वर में बोली - “ये ठीक कह रहे हैं ।”

“लेकिन ये...”

“मिस्टर सुनील, मैं आत्मसमर्पण के लिये तैयार हूं । मैं आपके साथ वापिस जाने वापिस जाने को तैयार हूं ।”

“कीर्ति !”

“मेरी बहन मेरी वजह से खता खाये, ये मुझे मंजूर नहीं । मैं अपने-आपको पुलिस के रहमो-करम पर छोड़ने के लिये तैयार हूं । लेकिन मिस्टर सुनील, पहले मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूं ।”

“क्या ?”

“क्या कोई ऐसी सूरत नहीं हो सकती कि बीच में विकी का नाम न आये ?”

“मुश्किल ही है ये काम । मैं अपनी जुबान खोलूँ या न खोलूँ, आपकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस किसी न किसी तरीके से इसके आपसे ताल्लुकात की बाबत जान ही जायेगी । कोई बड़ी बात नहीं कि इस बाबत वो खुद आपसे ही सब कुछ कुबुलवा लें ।”

“मेरे से नहीं कुबुलवा पायेंगे ।” - वो दृढ़ स्वर में बोली - “आप वादा कीजिये कि आप कुछ नहीं बतायेंगे ।”

“वो पूछेंगे नहीं तो नहीं बताऊंगा ।”

“आप इस बाबत बपने अखबार में भी कुछ नहीं छापेंगे ।”

“ओहो ! तो आप जानती हैं कि मैं कौन हूँ ।”

“पहले नहीं जानती थी । अब जानती हूँ । आज का ‘ब्लास्ट’ पढ़ने के बाद जानती हूँ । आप मेरी बात का जवाब दीजिये ।”

“इस बाबत ‘ब्लास्ट’ में कुछ छापना तो पुलिस को बताने जैसा ही होगा - बल्कि सारी दुनिया को बताने जैसा होगा ।”

“यानी कि नहीं छापेंगे ।”

“पुलिस के आगे जुबान खोलने की मजबूरी न आन खड़ी हुई तो नहीं छापेंगे ।”

“थैंक्यू । अब बोलिये मैं पुलिस तक कैसे पहुंचूंगी ?”

“मैं पहुंचाऊंगा ।”

“ठीक है ।” - वो उठती हुई बोली - “मैं तैयार हो के आती हूँ ।”

वो वहां से चली गयी ।

“वो लोग इसे कल्ल के इल्जाम में फंसा के मानेंगे ।” - पीछे विकी बोला - “तुम जो कर रहे हो, अच्छा नहीं कर रहे हो । मेरे से ऐसी दुश्मनी निकालकर तुम और किसी से होवो न होवो, खुद अपने-आपसे जरूर शर्मिन्दा होगे ।”

“तुम्हारे से दुश्मनी निकाल रहा हूँ मैं ?”

“और नहीं तो क्या ? तुम्हीं तो विलेन हो मेरी लव स्टोरी में । तुम्हीं तो यहां आये हो मेरे सपनों का महल उजाड़ने । जिन्दगी में पहली बार मैंने किसी को दिल से चाहा तो...”

“मरियम डिसूजा का क्या हाल है ?”

वो फौरन सकपकाकर चुप हुआ । उसने बेचैनी से पहलू बदला और फिर आश्वासनहीन स्वर में बोला - “क-कौन ?”

“तुम्हें नहीं मालूम कौन ? साले, पाखण्डी !”

“क्या बताया उसने तुम्हें मेरे बारे में ?”

“तुम्हारी असलियत बतायी और क्या बताया ?”

“मुझे उससे प्यार नहीं था । वो वक्ती आकर्षण था । वो मेरे प्यार के काबिल नहीं थी ।”

“क्यों काबिल नहीं थी ? क्योंकि वो दौलतमन्द नहीं थी ? क्योंकि तेरे जैसे कुत्ते के गले में डालने के लिये उसके पास सोने की जंजीर नहीं थी ?”

“तुम मेरा अपमान कर रहे हो ।” - वो तमककर बोला ।

“अच्छा !”

“मेरे से भड़की हुई उस लड़की ने खामखाह तुम्हें कोई उलटी-सीधी पट्टी पट्टी दी है। मेरे से बदला उतारने के लिये मेरी बाबत झूठी बकवास करके उसने मेरा इमेज बिगाड़ने की कोशिश की है। उसकी मंशा है कि क्यों कि मैं उसका न हो सका इसलिये मैं किसी का भी न हो सकूँ।”

“हा... हा... हा।”

वो फिर सकपकाया, उसने जोर से थूक निगली, कोई सख्त बात कहने के लिये मुंह खोला, तत्काल मुंह बन्द किया, फिर बेचैनी से पहलू बदला और फिर कदरन दबे स्वर में बोला - “पहले मैं जैसा था, था लेकिन अब मैं पहले जैसा नहीं हूँ। पहले मैं अपनी मंजिल की तलाश में भटक रहा था लेकिन कीर्ति से मिलने के बाद अब मैंने अपनी मंजिल पा ली है। कीर्ति से मिलने के बाद ही मुझे पता लगा है कि औरत औरत में क्या फर्क होता है। मेरे अतीत में बड़ी पोल हैं लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मेरा वर्तमान सलेट की तरह साफ है और गंगाजल की तरह पवित्र है।”

“यानी कि अब तुम औरतों पर आश्रित रहने वाले मर्द नहीं रहे जैसे कि पहले होते थे ?”

“मैं पहले भी औरतों पर आश्रित रहने वाला मर्द नहीं था। ये मेरे पर झूठा इलजाम है कि...”

“नूरेनजर, मैंने एक सीधा सवाल पूछा है, उसका सीधा जवाब दो।”

“मैं किसी औरत पर आश्रित रहने वाला मर्द नहीं हूँ।”

“कीर्ति के तुम्हारे ताल्लुकात में इस हकीकत का कोई दखल नहीं कि वो पहले एक दौलतमन्द शख्स की बीवी थी और अब एक दौलतमन्द बेवा है ?”

“कोई दखल नहीं। मैं उसे सच्चा प्यार करता हूँ इसलिये...”

“ये कॉटेज तुम्हारी मिल्कियत है ?”

“ये क्या सवाल हुआ ?”

“जवाब दो।”

“तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिये कि...”

“यानी कि नहीं है !”

“मैंने कहा न कि तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिये कि...”

“थापर के कत्ल के वक्त तुम कहाँ थे ?”

“मुझे क्या पता कहाँ था मैं ? मुझे तो ये ही नहीं पता कि उसका कत्ल कब हुआ था !”

“उसका कत्ल पिछली रात ग्यारह और बारह बजे के बीच में हुआ था, अलबत्ता पोस्टमार्टम के जरिये इस बात की तसदीक होना अभी बाकी है।”

“उस वक्त मैं यहाँ था।”

“कीर्ति के साथ ?”

“नहीं। तब वो यहाँ नहीं थी। तब मैं यहाँ अकेला था।”

“यानी कि कत्ल के वक्त की कोई एलीबाई तुम्हारे पास नहीं। किसी गवाह के जरिये तुम ये साबित नहीं कर सकते कि कल रात ग्यारह और बारह बजे के बीच तुम यहाँ थे ?”

उसने बड़े चिन्तायुक्त भाव से इन्कार में सिर हिलाया ।

“तब कीर्ति कहां थी ?”

“पता नहीं ।”

“यहां तुम्हारे पास कब आयी थी ?”

“आधी रात के बाद किसी वक्त । ऐन सही टाइम तब मैंने नहीं देखा था ।”

“क्यों आयी थी ?”

“मेरा कहना मान के आयी थी । मैंने कल ही उससे फरियाद की थी कि तलाक होता रहेगा, वो पहले ही थापर को छोड़कर मेरे पास चली आये । तुमने सुना होगा ।”

“सुना था । यानी कि वो थापर को हमेशा के लिये छोड़कर तुम्हारे पास आयी थी ?”

“हां ।”

“एकाएक ?”

“एकाएक क्यों ? कल रात फिर कोई वजह हो गयी होगी । उस कमीने ने - भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे - फिर कीर्ति के साथ कोई बदसलूकी की होगी जिससे भड़ककर उसने उस क्षण उसको छोड़ देने का इंकलाबी फैसला कर लिया होगा ।”

“और तुम्हारे पास चली आयी होगी !”

“और कहां जाती ?”

तभी कीर्ति ने वापिस वहां कदम रखा ।

“मैं तैयार हूं ।” - वो बोली ।

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

Chapter 3

कीर्ति खामोशी से कार में सुनील के साथ उसकी बगल में बैठी हुई थी जब कि सुनील ने कार को झेरी से बाहर ले जाने वाली सड़क पर डाला ।

“हम” - एकाएक वो बोली - “राजनगर नार्थ शोर होकर चल सकते हैं ?”

“घर जाना चाहती हो ?”

“हां । मैं वहां ज्यादा देर नहीं लगाऊ । बड़ी हद दस मिनट ।”

“जाना क्यों चाहती हो वहां ?”

“वहां से मैंने अपना कुछ जरूरी सामान उठाना है ।”

“ठीक है ।”

सुनील ने आगे कार को उस सड़क पर मोड़ा जो सीधी राजनगर जाने की जगह नार्थ शोर होकर राजनगर जाती थी ।

कुछ देर रास्ता खामोशी से कटा ।

“तुम तो” - एकाएक वो फिर बोली - “मुझे बड़ी खराब औरत समझते होगे ?”

सुनील की भवें उठीं, उसने सड़क पर से निगाह उठाकर एक बार उसकी तरफ देखा ।

“मेरे विकी से अफेयर की बजह से ।” - वो बोली ।

“मेम साहब, मैं कौन होता हूं पहला पत्थर मारने वाला ?”

“मैंने... मैंने अपने पति का कत्ल नहीं किया ।”

“कत्ल ग्यारह और बारह के बीच में हुआ बताया जाता है । उस वक्त की आपके पास कोई एलीबाई है ?”

“नहीं । नहीं है ।”

“उस दौरान कहां थीं आप ?”

“सड़क पर थी । अपनी कार ड्राइवर करके राजनगर जा रही थी ।”

“वहां कहां ?”

“अपने वकील के पास ।”

“इतनी रात गये ?”

“ये बात मुझे तब सूझी थी जब कि मैं लगभग राजनगर पहुंच गयी थी । मैं क्रोध और अपमान से जल रही थी जिसकी वजह से मेरी अकल पर पर्दा पड़ गया था । दिमाग ठिकाने आया तो वापिस लौट पड़ी ?”

“कहां ? विकी के पास ?”

“और कहां जाती ! जो कुछ बीती थी । उसकी रू में अब मैं घर तो कदम रखना नहीं चाहती थी ।”

“क्या बीती थी ?”

“उसने कैसीनो में दर्जनों मुअज्जिज मेहमानों के सामने मुझे बेइज्जत कर दिया था। गुस्से में मेरी बांह मरोड़कर मुझे ऐसा धक्का दिया था कि मैं फर्श पर जाकर गिरी थी। मिस्टर सुनील, वो बर्दाश्त की हद थी। मेरे पति का उस घड़ी का व्यवहार ऊंट का कूबड़ तोड़ने वाला आखिरी तिनका था। मैंने उसी क्षण कसम खा ली थी कि झील में डूब मारूंगी लेकिन वापिस उसके पास नहीं जाऊंगी।”

“लेकिन झील में डूब मरने का प्रोग्राम कैसल करके आप वापिस झेरी में विकी के पास चली आयी!”

“और कहा जाती?”

“हां। पहले भी कहा आपने। यानी कि आपको विकी के उस काटेज की खबर थी?”

“हां।”

“पहले भी आना-जाना होता रहता होगा न वहां!”

वो खामोश रही।

“अन्दाजन कितने बजे पहुंची थीं आप वहां?”

“डेढ़ या पौने दो बजे।”

“कत्ल की खबर कब लगी?”

“सुबह उठने पर। विकी ने बताया। उसने खबर अखबार में पढ़ी थी लेकिन उसमें विस्तार से कुछ नहीं छपा था। उसने थोड़ी इधर-उधर से पूछताछ की तो मालूम हुआ कि पुलिस मुझे कातिल समझ रही थी और मुझे तलाश कर रही थी। मेरे तो छक्के छूट गये थे।”

“तभी आपने विकी के साथ किसी गुमनाम जगह फरार हो जाने का फैसला कर लिया था?”

“ऐसा कोई फैसला नहीं हुआ था अलबत्ता इस बाबत हमने सोचा जरूर था।”

“फैसला क्या हुआ था?”

“फैसला कुछ अरसा वहीं काटेज में छुपे रहकर हालात का जायजा लेने का हुआ था। वो काटेज बहुत सेफ था, और विकी को यकीन था कि मेरी टोह में कोई वहां नहीं पहुंच सकता था लेकिन तुम तो... तुम तो पहुंच गये।”

“इसी से साबित होता है कि आपका यकीन कितना बेबुनियाद था।”

“हां।” - वो एक क्षण खामोश रही और फिर बोली - “तुम्हारे ख्याल से कत्ल किसने किया होगा?”

“इस सवाल का जवाब देने के लिये मुझे ये मान के चलना होगा कि आपने तो कत्ल किया नहीं है।”

“मैंने कत्ल किया होता तो क्या मैं गिरफ्तार होने के लिये तुम्हारे साथ जा रही होती?”

“बहन की खातिर।”

“मैंने कत्ल नहीं किया। कसम उठवा लो।”

“फिर तो कत्ल यकीनन किसी ऐसे शख्स ने किया है जिसकी आपकी रिवॉल्वर तक और आपके और निजी सानान तक पहुंच थी। अब सोचिये, ऐसा शख्स कौन हो सकता है?”

“ऐसा शख्स तो कोई वाकिफकार ही होगा। कोई अजनबी तो हो नहीं सकता ऐसा शख्स।”

“जाहिर है। रिवॉल्वर कहाँ थी?”

“मेरी कार के डैशबोर्ड में बने बक्से में।”

“कब से थी वो वहां ?”

“यही कोई एक महीने से ।”

“लाइसेंसशुदा है ?”

“हां ।”

“जरूरत क्यों महसूस हुई रिवॉल्वर रखने की ?”

“रिवॉल्वर मेरे पति ने मुझे तब लेकर दी थी जब हमारी नार्थ शोर की इतनी बड़ी कोठी में न मेरी बहनें मेरे साथ रहती और न चाई जी हमारे साथ रहती थीं । तब कई बार मैं कोठी में बिल्कुल अकेली होती थी ।”

“नौकर-चाकर ?”

“सब दिन के मुलाजिम । रात को वहां रहने वाला कोई नहीं ।”

“रिवॉल्वर कार में क्यों ?”

“पिछले महीने एक बार झेरी अकेली गयी थी जब कि आधी रात को मुझे वहां से वापिस भी अकेली लौटना था । तब मैं रिवॉल्वर साथ ले गयी थी और फिर उसे कार में से निकालना भूल गयी थी ।”

“यानी कि आपको खबर नहीं कि रिवॉल्वर वहां से एक महीना पहले निकाली गयी थी या एक दिन पहले ?”

“नहीं, मुझे खबर नहीं ।”

“सैंडल और बालों का क्लिप कहां थे ?”

“वो चाई जी की कार में थे ?”

“उसमें किसलिये ?”

“मैं उनके साथ शापिंग के लिये राजनगर गयी थी । तब क्लिप बालों में से बार-बार निकला जाता था इसलिये मैंने उतारकर कार में रख दिया था । सैंडल मैंने नयी खरीदी थी, उसकी एड़ी में नुक्स था इसलिये बदलवाने की नीयत से साथ ले गयी थी । दुकानदार ने जोड़ा बदलकर तो दिया नहीं था, सिर्फ एड़ी की छोटी-मोटी मरम्मत कर दी थी । बाद में सैंडल भी कार में ही रह गयी थी ।”

“ये कब की बात है ?”

“कल सुबह की ।”

“कार में कहां थीं ये दोनों चीजें ?”

“पिछली सीट पर ।”

“जहां पड़ी वो किसी को भी दिखाई दे सकती थीं ?”

“हां । वो तो है । क्यों ?”

“कुछ नहीं । आपकी मंजिल आ गयी ।”

उसने कार को कोठी के कम्पाउन्ड में प्रवेश द्वार के सामने ले जाकर रोका ।

“मैं गयी और आयी ।” - कीर्ति कार का दरवाजा खोलती हुई बोली ।

“मैं भी साथ चलता हूं ।” - सुनील अपनी ओर का दरवाजा खोलता हुआ बोला - “मैंने फोन करना है ।”

दोनों कोठी में दाखिल हुए। उन्होंने हाल में कदम रखा तो उन्हें सीढ़ियां उतरकर नीचे आती मोहिनी दिखाई दी। उसकी कीर्ति पर निगाह पड़ी तो वो सीढ़ियों पर ही ठिठक गयी, फिर उसके नेत्र फैले और उसके मुंह से निकला - “दीदी !”

“हां।” - कीर्ति बोली - “मैं। इसमें हैरान होने वाली क्या बात है ?”

“दीदी !” - उसने आर्तनाद किया - “तुमने ऐसा क्यों किया ?”

और वो जोर-जोर से रोने लगी।

कीर्ति सुनील को पीछे खड़ा छोड़कर तत्काल उसकी तरफ लपकी।

सुनील कोने में पूर्वपरिचित स्थान पर पड़े टेलीफोन की तरफ पड़ा। उसने रिसीवर उठाकर हैडक्वार्टर में प्रभूदयाल का नम्बर डायल किया तो जवाब उसके मातहत सब-इंस्पेक्टर बंसल ने दिया।

“सुनील बोल रहा हूं।” - वो बोला - “इंस्पेक्टर साहब कहां हैं ?”

“वो सीट पर नहीं हैं।” - जवाब मिला।

“गुलेगुजार, मैंने यह नहीं पूछा वो कहां नहीं हैं। मैंने पूछा है वो कहां हैं।”

“बड़े साहब के पास गये हैं।”

“यानी कि लौटते ही होंगे।”

“हां। कोई मैसेज है तो बोलो।”

“है मैसेज। उन्हें बोलना कीर्ति थापर मेरे साथ है। मैं उसे लेकर तीस-चालीस मिनट में हैडक्वार्टर पहुंच रहा हूं। मेरा इन्तजार करें।”

“वो मान गयी आत्मसमर्पण को ?”

“हां।”

“कैसे मान गयी ?”

“सुनील भाई मुलतानी का जहूरा है।”

“क्या कहने ! बोल कहां से रहे हो ?”

“थापर की कोठी से। इंस्पेक्टर साहब को कहना कीर्ति के बदले में नमिता को छोड़ने के अपने वादे पर टिके रहकर नमिता को रिहा करने की तैयारी करके रखें, मैं पहुंच रहा हूं।”

“ठीक है।”

सुनील ने रिसीवर वापिस क्रेडल पर रख दिया।

“तो ये माजरा है।”

सुनील ने घूमकर पीछे देखा तो अपने पीछे उस बूढ़ी औरत को खड़ी पाया जिसे पिछली रात को उसने ऊपर के बैडरूम में सोई पड़ी देखा था।

चाई जी। मकतूल की मां। पता नहीं कब वो वहां आ खड़ी हुई थी !

सुनील ने उसका अभिवादन किया।

“तो कीर्ति अपना अपराध कबूल करके आत्मसमर्पण कर रही है ताकि उसकी बहन रिहा हो सके।”

“वो सिर्फ आत्मसमर्पण कर रही है” - सुनील बोला - “कोई अपराध कबूल नहीं कर रही।”

“क्यों?”

“क्योंकि कोई अपराध उसने किया नहीं है।”

“उसने मेरे बेटे का खून नहीं किया?”

“वो कहती है उसने ऐसा नहीं किया।”

“वो कहती है।”

सुनील खामोश रहा।

“तुम कौन हो?” - वृद्धा ने पूछा।

“मेरा नाम सुनील है।”

“सुनील! तुम वो शख्स हो जिसने कल रात लाश बरामद की थी?”

“जी हां।”

“कौन-सी वाली के यार हो? बड़ी के, मंझली के, छोटी के, या तीनों के?”

“आप इस वक्त मातम में हैं इसलिये मैं आपकी इज्जत रख रहा हूं आपके सवाल का जवाब न देकर।”

“जरूर ज्यादा दिलचस्पी नमिता में है तुम्हारी। तभी तो वो रिहा हो रही है।”

“अम्माजी, अभी भी मेरा वही जवाब है जो मैंने पहले दिया।”

“कीर्ति कहां मिली? कहां छुपी हुई थी वो? तुम कैसे ढूँढ पाये उसे?”

“मेरे पास अलादीन का चिराग है, घिसने पर उसमें से जिन निकलता है जो, जो मैं पूछता हूं बता देता है।”

“मजाक कर रहे हो।”

सुनील खामोश रहा।

“तुम दिलीप से वाकिफ थे?” - वृद्धा ने नया सवाल किया।

“नाम से वाकिफ था। रूबरू कल शाम पहली बार मिला था।”

“क्या राय थी तुम्हारी उसके बारे में?”

“दिवंगत आत्मा के बारे में अच्छा-अच्छा बोलने का रिवाज न होता तो जाहिर करता राय।”

“ये कहकर भी तुमने अपनी राय बखूबी जाहिर कर दी है।” - वो एक क्षण ठिठकी और फिर आश्वासनपूर्ण स्वर में बोली - “कोई भी उसके बारे में अच्छी राय नहीं रखता था। हर कोई बस... अब मैं क्या कहूं! अच्छा बेटा बनने की कोशिश तो वो करता था लेकिन अच्छा पति बनने की तो उसने कभी कोशिश भी नहीं की थी।”

“दुनिया में हर किस्म के लोग होते हैं।”

“वो तो है। एक किस्म वो भी है जिसका मेरा बेटा था।”

“वो वाकेई आपका बेटा था?”

वृद्धा ने घूर के उसे देखा ।

“वो आपका बेटा हो सकता था ।” - सुनील निडर भाव से उसकी आंख से आंख मिलाता हुआ बोला - “लेकिन क्या वो हरिमोहन थापर का पोता था ? क्या आप हरिमोहन थापर की बहू और उसके बेटे प्रदीप थापर की बेवा हैं ?”

“हां ।” - वो सख्ती से बोली - “अब क्या मैं तुम्हारे इस वाहियात सवाल का मतलब पूछ सकती हूं ?”

“कोई मतलब नहीं । मुझे गाहे-बगाहे अनजाने में बड़बड़ाने की आदत है ।”

“अजीब आदमी हो !”

“कल आप झेरी से अकेली वापिस लौटी थीं ? अपनी कार खुद चलाकर ?”

“नहीं । दिलीप मेरे साथ था । कार उसी ने चलाई थी ।”

“दिन में आपकी कार की पिछली सीट पर कीर्ति ने अपनी सैंडिलों का जोड़ा और बालों का क्लिप रखा था । वो सब तब भी वहां था जबकि रात आप यहां वापिस लौटी थीं ?”

“हां ।”

“आपने खुद देखा था ?”

“न सिर्फ देखा था मैंने दिलीप को वो सामान कार से निकालकर भीतर ले आने को कहा था ।”

“वो लाया था ?”

“लाया ही होगा ।”

“लाकर कहां रखा ?”

“वो कीर्ति का सामान था इसलिये जाहिर है कि कीर्ति के कमरे में ही रखा होगा ।”

“आई सी । कल रात आपने गोली चलने की आवाज सुनी थी ?”

“नहीं ।”

“दिलीप कोठी से निकलकर बोट हाउस में कब गया था ?”

“मुझे नहीं मालूम ।”

“आपको कोई आहट नहीं मिली थी ?”

“नहीं । असलियत ये है बेटा, कि कल रात मेरी हालत कोई आहट सुनने के काबिल नहीं थी । कल तो मैं ऐसा सोई थी कि कोठी पर डाकुओं का हमला हो जाता तो मुझे खबर न लगती ।”

“आपके ख्याल से कौन हो सकता है आपके बेटे का कातिल ?”

“क्या पता ?”

“मैंने सोचा था आप कीर्ति का नाम लेंगी ।”

“नहीं ।” - वो बोली - “नहीं । वो नहीं ।”

“क्यों ?”

“मेरा दिल गवाही नहीं देता ।”

“हालात का इशारा तो है उसकी तरफ ।”

उसने फिर बड़ी मजबूती से इन्कार में गर्दन हिलाई ।

“आप सोच-समझकर इस सवाल का जवाब दे रही हैं ?”

“क्या मतलब ?”

“आप, गुस्ताखी माफ हो, इस वक्त नशे में तो नहीं हैं ?”

उसने बड़े कातर भाव से सुनील की तरफ देखा ।

“यानी कि नहीं है । आई एम सारी ।”

“चाई जी ।”

“दोनों ने सिर उठाया तो पाया कि करीब कीर्ति आन खड़ी हुई थी ।”

“चाई जी” - कीर्ति धीरे से बोली - “आपने मेरे पर जो विश्वास जाहिर किया उसके लिये मैं आपकी दिल से शुक्रगुजार हूँ । मेरा यकीन कीजियेगा, मैंने उनका कल्ल नहीं किया ।”

“मुझे मालूम है, बेटी ।” - वृद्धा बोली ।

“मैंने ऐसा कभी सोचा तक नहीं था ।”

“मुझे तेरी बात पर यकीन है ।”

“मेरे दिल को चैन पड़ गया आपकी बात से । अब मुझे अपने आपको पुलिस के हवाले करने का कोई रंज नहीं ।”

“तू बहुत जल्द रिहा हो जायेगी । मैं जो मुमकिन होगा, तेरे लिये करूंगी ।”

“शुक्रिया, चाई जी ।” - फिर वो सुनील की तरफ घूमी - “चलें ?”

सुनील ने सहमति में सिर हिलाया ।

कार खामोशी से राजनगर के रास्ते पर दौड़ रही थी ।

पुलिस हैडक्वार्टर जब थोड़ी ही दूर रह गया तो एकाएक कीर्ति ने खामोशी भंग की ।

“सुनील” - वो बोली - “मेरा एक काम करोगे ?”

“क्या ?” - सुनील बोला ।

“इस काम के लिये अगर तुम्हारी कोई फीस हो तो मैं वो भी भरने के लिये तैयार हूँ ।”

“काम बोलो ।”

“ये लिफाफा ।” - उसने एक मामूली बन्द लिफाफा उसकी तरफ बढ़ाया ।

“क्या है इसमें ?”

“एक चिट्ठी जिसमें दिलीप को मौत की धमकी दी गयी है ।”

“क्या !”

“हां ।”

“किसने दी धमकी ? क्या नाम है चिट्ठी लिखने वाले का ?”

“उल्हास मकवाना ।”

“उसने - उस उल्हास मकवाना ने - दिलीप को चिट्ठी लिखकर उसको जान से मार डालने की धमकी दी है ।”

“और ऐसी चिट्ठी आप अभी तक अपने पास रखे हुए हैं ? मैडम, ये चिट्ठी तो आपकी रिहाई का परवाना बन सकती है । इसे पुलिस के हाथों में...”

“मैं अभी नहीं दे सकती ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि मैं चाहती हूँ कि पहले तुम इस आदमी को चैक करो । इसका पता मैंने चिट्ठी के पीछे लिख दिया है । तुम चैक करो कि कल रात दिलीप के कत्ल के वक्त के आसपास ये कहाँ था ! अगर इस आदमी के पास उस वक्त की कोई पक्की एलीबाई हुई तो मैं नहीं चाहती कि उसकी खबर पुलिस को लगे । तब तुम इस चिट्ठी को नष्ट कर देना ।”

“न हुई तो ?”

“तो तुम ये चिट्ठी पुलिस को सौंप देना । बाकी आगे जो करना होगा, वो लोग खुद कर लेंगे ।”

“है कौन ये आदमी ?”

“दिलीप की पहली बीवी हर्षिता का पिता ।”

“ओह ! तो आपके पति की आपसे पहले भी कोई बीवी थी ?”

“हां ।”

“उसे तलाक देकर उसने आपसे शादी की थी ?”

“नहीं । हर्षिता दिलीप से मेरी मुलाकात से पहले ही परलोक सिंघार चुकी थी ।”

“कैसे ? क्या हुआ था उसे ?”

“उसने... आत्महत्या कर ली थी ।”

“आत्महत्या !”

“हां ।”

“जरूर थापर उसे भी वैसे ही सताता होगा जैसे आपको सताता था । बल्कि आपसे ज्यादा । तभी तो बेचारी ने खुद अपनी जान ले ली ।”

“नहीं, वो बात नहीं ।”

“तो क्या बात है ?”

“सुना है हर्षिता को किसी और मर्द से मुहब्बत हो गयी थी जिससे शादी करने की खातिर उसने दिलीप से बाकायदा तलाक लिया था । लेकिन जब तलाक के जरिये उसने दिलीप से आजादी हासिल कर ली थी तो उस... उस आदमी ने उससे शादी करने से इन्कार कर दिया था ।”

“ये तो बहुत बड़ा धोखा है । एक शख्स की खातिर उसने दूसरे से तलाक लिया तो उसने भी उसे न अपनाया ।”

“न सिर्फ अपनाया नहीं, बल्कि गायब हो गया । हर्षिता को ढूँढे न मिला । तब बेचारी ने हारकर आत्महत्या कर ली ।”

“ये इतना सीधा-सादा मामला है तो उसके बाप की थापर से क्या रंजिश है ?”

“ठीक से पता नहीं लेकिन सुना है वो भी कोई दिलीप जैसा ही सनकी और सिरफिरा है जो ये समझता है कि उसकी बेटी ने आत्महत्या नहीं की थी बल्कि दिलीप ने उसकी हत्या की थी क्योंकि उसने दिलीप से तलाक मांगने और हासिल कर लेने की जुर्रत की थी ।”

“इस बात के सच होने की कोई सम्भावना ?”

“नहीं है ! वो एक ओपन एण्ड शट सुइसाइड केस था । लेकिन उस आदमी ने अपनी बेटी तो खोई ही है न ! अब मैं नहीं चाहती कि मौजूदा हालात में इस चिट्ठी की वजह से - जोकि उसने किसी जुनून के हवाले होकर लिख दी होगी - वो अब एक नयी जहमत में फंस जाये । इसीलिये मैं चाहती हूँ कि तुम चुपचाप उसको चैक करो, अगर वो बेगुनाह है तो इस चिट्ठी को नष्ट कर दो और इसे भूल जाओ । इस काम की तुम्हारी जो फीस...”

“वो हम बाद में डिस्कस कर लेंगे ।”

“यानी कि तुम ये काम करोगे ? जैसे मैं चाहती हूँ, वैसे करोगे ?”

“हां ।”

“शुक्रिया । अब ये भी पकड़ो ।”

उसने उसकी गोद में ज्योमेट्री बॉक्स के आकार का भूरे कागज में लिपटा एक पैकेट रख दिया ।

“ये क्या है ?” - सुनील उत्सुक भाव से बोला ।

“है कुछ ।”

“इसका क्या करना है ?”

“इसे तुमने सिर्फ अपने पास रख छोड़ना है । सुरक्षित । मेरी अमानत के तौर पर ।”

“अपनी अमानत का जामिन मुझे क्यों बना रही हैं आप ?”

“किसी को तो मैंने बनाना ही है । इस वक्त तुम करीब हो ।”

“बस, यही वजह है ?”

“और ये वजह है कि मुझे तुम पर एतबार है ?”

“ऐसे शख्स पर जिससे आप सिर्फ चन्द घन्टे पहले मिली हैं ?”

“हां ।”

“विकी से ज्यादा ? मोहिनी से ज्यादा ? चाई जी से ज्यादा ? विवेक वर्मा से ज्यादा ?”

“हां । सबसे ज्यादा ।”

“जहेनसीब । लेकिन यकीन नहीं होता । लगता है वजह कोई और भी है ।”

“है ।”

“वही तो मैंने कहा । क्या है और वजह ?”

“इस पैकेट में ऐसा कुछ है जिसका उन लोगों की जानकारी में आना जिनके कि तुमने नाम लिये मेरे लिये भारी शर्म का बायस बन सकता है। मेरे कत्ल के इल्जाम से बरी हो जाने के बावजूद ये मेरी जिन्दगी तबाह कर सकता है।”

“ऐसा क्या बारूद भरा है इसमें?”

“है कुछ।”

“इसका आपकी मौजूदा दुश्मनी से कोई रिश्ता है?”

“पता नहीं।”

“है या नहीं?”

“बोला न, पता नहीं। न मुझे पता है और न इस वक्त पता करने का मेरे पास कोई जरिया है।”

“ये बात अभी भी मेरी समझ से बाहर है कि ऐसा विस्फोटक पदार्थ आप मुझे क्यों सौंप रही हैं?”

“अब छोड़ो भी वो किस्सा। बोला न मुझे तुम पर सबसे ज्यादा एतबार है। इसलिये है क्योंकि मेरे अन्दर से आवाज उठ रही है कि मैं तुम्हारा एतबार करूं।”

“चलो ऐसे ही सही। तो चाहती हैं कि मैं इस पैकेट को अपने पास सेफ कस्टडी में रखूं?”

“हां।”

“कब तक?”

“जब तक मैं इसे वापिस न मांगू या जब तक मैं तुम्हें इसके बारे में कोई और निर्देश न दूं।”

“इसका थापर के कत्ल से कोई रिश्ता है?”

“एक ही सवाल को घुमा-फिराकर जुदा तरीके से पूछने से क्या मेरा जवाब जुदा हो जायेगा? बोला न मुझे नहीं पता।”

“ठीक है। नहीं पता तो नहीं पता।”

“तो तुमने मेरी बात मानी?”

“हां, मानी।”

“शुक्रिया।”

सुनील ने कीर्ति के साथ पुलिस हैडक्वार्टर की लॉबी में कदम रखा तो उसने पाया कि शहर का, छोटा या बड़ा, शायद ही कोई अखबार था जिसका कोई प्रतिनिधि वहां मौजूद नहीं था।

जरूर वो इंस्पेक्टर प्रभूदयाल के खुद फोन पर न मिलने का नतीजा था।

लानत! - वो होंठों में बुदबुदाया - सत्यानाश हो सब-इंस्पेक्टर बंसल का।

तभी पटाक-पटाक कैमरों के बटन दबने लगे और फ्लैश लाइट्स चमकने लगीं।

सुनील लोगों को कोहनियां मार-मारकर कीर्ति के लिये रास्ता बनाता सीढ़ियों की तरफ बढ़ने लगा।

तभी विवेक वर्मा उसके बाजू में प्रकट हुआ।

“कीर्ति” - वो बोला - “घबराना नहीं। मैं यहां हूं। मैं तुम्हारे लिये शहर का सबसे बड़ा वकील साथ लेकर आया हूं।”

“थैंक्यू ।” - कीर्ति बोली - “लेकिन...”

“मैडम ।” - एक रिपोर्टर कीर्ति की बांह पकड़कर उसे रोकता हुआ बोला - “हमें आपका बयान चाहिये । क्या आपने अपने पति का कत्ल किया है ?”

“गो टु हैल ।” - कीर्ति अपनी बांह को झटका देकर उसे उसकी पकड़ से छुड़ाती हुई चिल्लाई ।

“रास्ते से हटो ।” - वर्मा चिल्लाया - “रास्ते से हटो ।”

“मैडम, आप कातिल हैं ?”

“हटो । हटो ।”

बड़ी कठिनाई से सुनील, विवेक वर्मा और उसके लाये वकील की हिफाजत में वो ऊपर प्रभूदयाल के कमरे तक पहुंच पाये ।

रिपोर्टरों के हुजूम ने वहां भी उनका पीछा किया । न सिर्फ पीछा किया, सबने उनके साथ प्रभूदयाल के कमरे में दाखिल होने की कोशिश की ।

तब प्रभूदयाल दरवाजे पर पहुंचा ।

“ये क्या बदतमीजी है ?” - वो चिल्लाया ।

“ऐसी तरफदारी नहीं चलेगी, इंस्पेक्टर साहब ।” - क्रानीकल का रिपोर्टर उससे ऊंची आवाज में चिल्लाया ।

“तरफदारी ! कैसी तरफदारी ?”

“ऐसी तरफदारी ।” - उसने खंजर की तरह एक उंगली सुनील की तरफ भोंकी - “जब ‘ब्लास्ट’ का रिपोर्टर मुलजिमा के साथ भीतर मौजूद रह सकता है तो हम क्यों नहीं रह सकते ?”

“लेकिन ये... ये किसी और हैसियत से यहां है ।”

“इसकी कोई दूसरी हैसियत इस हकीकत को नहीं झुठला सकती कि ये ‘ब्लास्ट’ का प्रतिनिधि है ।”

“ठीक है । ये यहां नहीं होगा । अब आप लोग जाइये यहां से ।”

“जाते हैं । पहले हमें ये जाता दिखाई दे ले ।”

प्रभूदयाल ने सुनील को इशारा किया ।

“ये नाइंसाफी है ।” - सुनील भुनभुनाया ।

“ये तुम्हारे ही भाई-बन्दों की डिमांड है ।”

“सालो ।” - सुनील अपनी बिरादरी से सम्बोधित हुआ - “जानते हो कुत्ते को कुत्ता नहीं काटता फिर भी...”

तत्काल विरोध में इतना शोर मचा कि उसकी आवाज शोर में खो गयी ।

“देख लूंगा मैं तुम सबको ।”

भुनभुनाता हुआ वो वहां से रुखसत हुआ और नीचे ग्राउन्ड फ्लोर पर पहुंचा ।

“गुरुजी !”

सुनील ने घूमकर देखा तो उसे सीढ़ियों पर अर्जुन दिखाई दिया जो अपने कैमरों से लदा-फंदा उसकी तरफ लपक चला आ रहा था ।

“तुम कहाँ थे ?” - वो करीब आया तो सुनील ने पूछा ।

“यहीं था ।” - वो बोला - “भाई-बन्दों की भीड़ में ।”

“मुझे तो दिखाई नहीं दिये थे ।”

“आपकी तवज्जो नहीं थी मुझे देखने की तरफ । आप उस लड़की के साथ बिजी थे इसीलिये मैं न दिखाई दिया । गलियारे में भीड़ इतनी थी कि मैं करीब आने की कोशिश करता था तो लोग वापिस धकेल देते थे ।”

“कब से यहां हो ?”

“दोपहर से । जब आपका हुक्म हुआ था ।”

“कुछ जाना ?”

“हां कुछ तो जाना । वो क्या है कि...”

“अभी नहीं । अभी वापिस ऊपर ही पहुंचो और देखो क्या होता है । बाद में ऑफिस में आना, वहां बात करेंगे ।”

“आप ऑफिस जा रहे हैं ?”

“फौरन नहीं । नमिता मेहरा के रिहा होने तक रुकूंगा ।”

“ठीक है । मैं चला ।”

अर्जुन वापिस सीढ़ियों की तरफ दौड़ गया ।

सुनील पार्किंग में पहुंचा और अपनी कार में जा बैठा ।

तब तक वातावरण में रात का अन्धेरा छाने लगा था ।

उसने एक सिगरेट सुलगा लिया और प्रतीक्षा करने लगा ।

वो तीसरा सिगरेट सुलगाने जा रहा था जब कि एकाएक इमारत का मुख्य द्वार खुला और उसमें से नमिता बाहर निकली । उसके साथ उससे एक कदम पीछे विवेक वर्मा था । उसे नमिता की बांह थामी और उसे पार्किंग में एक विशाल खम्बे की ओट में ले आया । वो खम्बा सुनील से इतनी दूर था कि वो उसे कार की खिड़की में से हाथ निकालकर छू सकता था ।

“नमिता !” - फिर उसे वर्मा की भर्राई हुई आवाज सुनाई दी - “मेरी जान !”

जान ! - सुनील सकपकाया - नमिता ! वर्मा की !

उसने गर्दन आगे करके खम्बे के पीछे झांकने की कोशिश की लेकिन कामयाब न हो सका ।

उसे रियर व्यू मिरर का ख्याल आया । खिड़की से बाहर हाथ निकालकर उसने वो शीशा आगे-पीछे सरकाया तो एक पोजीशन में उसमें से खम्बे का पृष्ठभाग प्रतिबिम्बित होने लगा ।

शीशे में से उसे नमिता, वर्मा की बांहों में दिखाई दी ।

प्रभूदयाल ने अपना वादा निभाया था ।

नमिता आजाद थी ।

और उस वक्त विवेक वर्मा की बांहों में गिरफ्तार थी ।

लेकिन जाहिर था कि वो गिरफ्तारी उसे पसन्द थी ।

बढिया - वो होंठों में बुदबुदाया - बढिया ।

एकाएक उसने कार का इंजन स्टार्ट कर दिया ।

रात ग्यारह बजे सुनील 'ब्लास्ट' के ऑफिस में पहुंचा ।

अर्जुन वहां नहीं था ।

वो अपने कक्ष में पहुंचा, अपनी कुर्सी पर ढेर हुआ और उसने कीर्ति का दिया लिफाफा और ज्योमेट्री बाक्स के आकार का पार्सल अपने सामने रख लिया । वो कुछ झण अपलक दोनों चीजों को घूरता रहा, फिर उसने लिफाफा उठाया और उसे उलट-पलटकर देखा । उसने नोट किया कि उस पर इकबालपुर डाकखाने की कोई चार महीने पहले की तारीख की मोहर लगी हुई थी ।

इकबालपुर विशालगढ़ के रास्ते में एक छोटा-सा कस्बा था ।

पाने वाले के तौर पर लिफाफे पर मोटे-मोटे अक्षरों में दिलीप थापर का नाम और पता लिखा था ।

भेजने वाले का नाम पता उस पर दर्ज नहीं था ।

उसने लिफाफे के भीतर से चिट्ठी बरामद की और उसे पढ़ा ।

लिखा था:

हत्यारे

जो हथ्र हर्षिता का हुआ, वही तेरा भी होगा । आंख के बदले आंख, जान के बदले जान, यही खुदाई इन्साफ है । खुदा ही तेरा इन्साफ करेगा । बहुत जल्द तू जहन्नुम रसीद होगा, अब इन्तजार कर उस दिन का ।

जल्लाद ।

उसने चिट्ठी को पलटा तो दूसरी तरफ पेंसिल से लिखा पाया:

उल्हास मकवाना

वार्ड नम्बर पांच, मकान नम्बर ग्यारह, इकबालपुर, जिला विशालगढ़

चिट्ठी में ये बात काबिलेगौर थी कि वो दिलीप थापर के नाम थी लेकिन वो कीर्ति के अधिकार में थी ।

क्या थापर के नाम आयी चिट्ठी कीर्ति ने अपने अधिकार में लेकर खोल ली थी और थापर को उसकी खबर ही नहीं की थी ?

या थापर ने चिट्ठी पढ़कर उसे सौंप दी थी ?

चिट्ठी में उल्हास मकवाना का कहीं नाम नहीं था । तो फिर कीर्ति को कैसे मालूम था कि वो चिट्ठी भेजने वाला उल्हास मकवाना था । शायद हर्षिता के जिक्र से और चिट्ठी की खतरनाक भाषा से उसने ऐसा अन्दाजा लगाया था ।

उसे उल्हास मकवाना का पता कैसे मालूम था ?

एक बार चिट्ठी का लेखक उल्हास मकवाना को तसलीम कर लेने के बाद - अपने सवाल का जवाब उसने खुद ही दिया - वो पता मालूम कर लेना इतना मुश्किल काम तो नहीं था । आखिर वो शख्स थापर की पहली बीवी का बाप था ।

उसने चिट्ठी को वापिस लिफाफे में धकेलकर लिफाफा एक ओर रख दिया और फिर पैकेट की तरफ आकर्षित हुआ ।

क्या था उसमें ?

वजन के लिहाज से वो गत्ते का डिब्बा मालूम होता था जिस पर भूरा कागज चढ़ाकर उसे ऊपर से सेलोटैप द्वारा सील कर दिया गया था। वो कुछ झण पैकेट को उलटता-पलटता रहा, फिर उसने सिगरेट को ऐश-ट्रे में झोंका और एक ब्लेड की सहायता से उसने उसे यूँ खोला कि बाद में उसे बन्द करके टेप पर नया टेप चढ़ा दिया जाता तो किसी को खबर न लगती कि उसे खोला गया था।

डिब्बा गत्ते का ही निकला जिसे खोलने के बाद उसने बड़े उत्सुक भाव से भीतर झाँका।

सिल्क का कपड़ा।

उसने उसे डिब्बे से बाहर खींचकर खोला तो पाया कि वो कपड़ा वस्तुतः सिल्क की एक हैण्डपेन्टिड टाई थी। उस पर पेन्ट द्वारा झील किनारे का दृश्य उकेरा गया था जिस पर एक अधनंगी युवती बड़े सैक्सी पोज में खड़ी दिखाई दे रही थी। नीचे एक कोने में 'ए के ए' लिखा हुआ था।

ए के ए !

आलसो नोन ऐज ?

नोन ऐज वाट ?

या वो टाई पर सीनरी बनाने वाले कलाकार के हस्ताक्षर थे ?

उसने टाई एक ओर रखी और फिर डिब्बे के भीतर झाँका।

तस्वीरें।

उसने डिब्बे को मेज पर उलटा तो दो तस्वीरें बाहर आ गिरी।

उसने बारी-बारी दोनों का मुआयना किया। पहली तस्वीर एक कड़क जवान युवती की थी जिसकी शक्ल-सूरत तो मामूली थी लेकिन जिसकी कसर उसके बनाने वाले ने उसे साँचे में ढली फिगर देकर पूरी कर दी थी। युवती के साथ एक पुरुष था जिसने एक हैट अपने चेहरे के सामने यूँ किया हुआ था कि उसकी सूरत उसके पीछे छुप गयी थी। पृष्ठभूमि में एक तीनमंजिली इमारत थी जिस पर टंगे एक बोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था: *होटल न्यू हैवन, इकबालपुर*

दूसरी तस्वीर पहली तस्वीर के एक भाग का एनलार्जमेंट थी और उसमें सिर्फ पुरुष द्वारा पहनी हुई नई चित्रित थी। उसने एनलार्जमेंट का सामने पड़ी टाई से मिलान किया तो पाया कि वो हूबहू तस्वीर वाली ही टाई थी।

क्या मतलब था उन तस्वीर का और उस टाई का ?

उसने तस्वीरें रख दीं और टाई उठाकर बड़ी बारीकी से फिर उसका मुआयना किया तो टाई की उलटी तरफ एक कपड़े का बिल्ला लगा पाया जिस पर लिखा था :

एम्पायर स्टोर, कमर्शियल स्ट्रीट, विशालगढ़

अब सवाल ये था कि ऐसा क्या था उन चीजों में जो डायनामाइट साबित हो सकता था, जो कीर्ति के लिये शर्म का बायस बन सकता था, जो उसकी जिन्दगी तबाह कर सकता था ?

पता नहीं क्या माजरा था !

उसने तस्वीरों को और टाई को वापस डिब्बे में रखकर उसे बन्द किया और फिर पैकेट और चिट्ठी वाला लिफाफा दोनों अपने कोट की भीतरी जेब में रख लिये।

तभी अर्जुन ने वहाँ कदम रखा। सुनील ने घड़ी पर निगाह डाली तो पाया कि साढ़े ग्यारह बज चुके थे।

“क्यों, भई ?” - सुनील भुनभुनाया - “ये वक्त है तेरे आने का ?”

“क्या हुआ इस वक्त को ?” - अर्जुन उसके सामने एक कुर्सी पर ढेर होता हुआ बोला - “ग्रहण लग गया क्या ?”

“कहां था अब तक ?”

“यहां था, वहां था, बस ये पूछो कि कहां नहीं था ।”

“वो पूछने की जरूरत नहीं, मेरे जिगर के टुकड़े । मुझे मालूम है कि तू कहां नहीं था । तू यहां नहीं था ।”

“अब तो हूं ।”

“हां । शुक्र है । बधाई अभी दे रहा हूं, लड्डू सुबह बांट दूंगा ।”

“लड्डू !” - अर्जुन ने मुंह बिगाड़ा - “वो तो हुक्के जैसी आउटडेटिज चीज है । गुरुजी, अगर बधाई देनी है तो किसी तीखी, तुर्श, इंकलाब जिन्दाबाद चीज के जरिये दीजिये ।”

“ये क्या चीज हुई ?”

“ये वही चीज हुई जो आपकी मेज के दाईं ओर के सबसे नीचे के दराज में बन्द है ।”

“मेरे कलेजे की ठण्डक, जो काम तुझे तनखाह की एवज में करना है, उसके लिये तुझे रिश्तत चाहिये !”

“तौबा ! आपकी बोतल में से एक घूंट भर लिया, तो वो रिश्तत हो गयी ।”

“अभी भर नहीं लिया, भरेगा । पहले कुछ मुंह से फूट ।”

“ठीक है । ऐसे ही सही । पहले तो मैं यही फूटता हूं कि नम्रता रिहा हो गयी है और...”

“मुझे मालूम है । आगे फूट ।”

“लाश का पोस्टमार्टम हो गया है और वो थापर की मां को सौंप दी गयी है । सुबह आठ बजे अंतिम संस्कार होगा ।” - अर्जुन एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “पोस्टमार्टम ने इस बात की तसदीक की है कि थापर पिछली रात ग्यारह और बारह के बीच मरा था ।”

“हूं । और ?”

“और ये कि हैडक्वार्टर में प्रैस प्रतिनिधियों के चले जाने के बाद आपके खासुलखास इंस्पेक्टर प्रभूदयाल में और सरकारी वकील ढींगरा में खूब गर्मागर्मी हुई थी ।”

“वजह ?”

“वजह विक्रम सूरी के नाम से जानी जाती है ।”

“विक्रम सूरी !” - सुनील हड़बड़ाकर सीधा हुआ - उन्हें क्या मालूम उसके बारे में !”

“हो गया है मालूम ।”

“कैसे ? कीर्ति से कुबुलवाया ?”

“नहीं । दास्तान-ए-विक्रम सूरी सुनाने एक लड़की हैडक्वार्टर पहुंची थी । उसी ने पुलिस को बताया था कि वो आदमी - विक्रम सूरी - मकतूल की बेवा का यार था और कत्ल के बाद से उसी ने कीर्ति को अपने ‘विकी की डिकी’ के नाम से जाने जाने वाले काटेज में छुपाया हुआ था ।”

“वो लड़की कौन थी ? नाम मालूम है ?”

“हां । मरियम डिसूजा ।”

“ओह !”

“आप जानते हैं उसे ?”

“हां । तो वो मुखबिरी करने पुलिस हैडक्वार्टर पहुंच गयी ?”

“हां ।”

“विक्रम सूरी को तो फिर पुलिस ने पकड़ मंगवाया होगा !”

“अभी नहीं । सरकारी वकील ढींगरा उसकी फौरन गिरफ्तारी के हक में नहीं जब कि प्रभूदयाल उसे फौरन गिरफ्तार करना चाहता था । इसी बात को लेकर उसमें और प्रभूदयाल में तू-तू मैं-मैं हुई थी ।”

“तकरार में जीत किसकी हुई ?”

“वक्ती तौर पर तो ढींगरा की ही हुई क्योंकि प्रभूदयाल सूरी की गिरफ्तारी को थोड़ी देर के लिये मुलतवी करने के लिये मान गया था ।”

“सरकारी वकील उसकी गिरफ्तारी क्यों नहीं चाहता ?”

“क्योंकि वो विक्रम सूरी को - कीर्ति के ब्वाय फ्रेंड को - तुरुप के पत्ते की तरह कीर्ति के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहता है । वो कीर्ति के ट्रायल के दौरान बड़े ड्रामेटिक अन्दाज से सूरी को एकाएक कीर्ति के सामने खड़ा करना चाहता है और ये स्थापित करना चाहता है कि सूरी से आशनाई की वजह से कीर्ति ने अपने पति का कत्ल कर दिया था ।”

“आई सी ।”

“सूरी अगर फौरन गिरफ्तार हो जाता तो कल के अखबारों में उसकी गिरफ्तारी की और उसकी कीर्ति से आशनाई की खबर निश्चित रूप से छपती । तब सरकारी वकील का तुरुप का पत्ता खेल शुरू होने से पहले ही पिट जाता ।”

“और ?”

“और इंसपेक्टर प्रभूदयाल आपसे बहुत खफा है ।”

“क्यों ? मैंने क्या किया है ?”

“आपको बेवा के यार की खबर थी लेकिन आपने पुलिस को उस बाबत कुछ न बताया ।”

“कैसे बताता ? कब बताता ? प्रभूदयाल ने तो मुझे खदेड़कर हैडक्वार्टर से भगाया था । वो मुझे वहां रुकने देता तो मैं कुछ बताता न ?”

“ये सब आप प्रभूदयाल को ही कहियेगा । मेरे लिये तो ये फारसी है ।”

“ये सब कैसे जाना तूने ?”

“हैडक्वार्टर का एक हवलदार फोड़ा । पांच सौ रुपये रिश्तत दी उसे - जो कि आप मुझे वापिस दिलवा ही देंगे - उसी ने सारी कथा सुनायी ।”

“हूँ । और ?”

“और फिलहाल बस ।” - अर्जुन एक क्षण ठिठका और फिर बोला - “सिवाय तड़के के ।”

“उसके लिये अभी एक मिनट रुक । एक मिनट रुक और पहले मेरी जरूरी बात सुन ।”

“बोलिये ।”

“कल सुबह-सवेरे पहली बस से इकबालपुर पहुंच । वहां कोई डेढ साल पहले हर्षिता नाम की एक युवती ने आत्महत्या कर ली थी । हर्षिता हत्प्राण दिलीप थापर की पहली पत्नी थी जिसने कि किसी और मर्द की मुहब्बत में गिरफ्तार होकर थापर से तलाक ले लिया था लेकिन बाद में उस मर्द ने हर्षिता को धोखा दिया था, उससे शादी करने की जगह वो उसकी जिन्दगी से गायब ही हो गया था । उससे हर्षिता का ऐसा दिल टूटा था कि उसने आत्महत्या कर ली थी । हर्षिता का पिता उल्हास मकवाना अभी भी इकबालपुर ही रहता है और

उसका पता है... नोट कर ले... वार्ड नम्बर पांच, मकान नम्बर ग्यारह, इकबालपुर। तूने स्थानीय लोगों से पूछताछ करके या वहां के किसी लोकल अखबार के दफ्तर में जाकर ये मालूम करना है कि हर्षिता ने किन हालात में आत्महत्या की थी और उसका वो प्रेमी कौन था जो उसे धोखा दे के भाग गया था। इस सिलसिले में वहां के होटल न्यू हैवन पर खास तवज्जो देना।”

“वो किसलिये?”

“कोई खास वजह नहीं। ये समझ लो कि तुम्हारे के तौर पर।”

“ठीक है।”

“दोपहर बाद किसी वक्त मैं भी वहां पहुंचूंगा। मैं दो बजे के करीब तुझे होटल न्यू हैवन - जहां कहीं भी वो होगा, मैं खोज लूंगा - के आगे मिलूंगा। फिर राजनगर वापिस हम दोनों इकट्ठे आ जायेंगे।”

“बढ़िया। और?”

“बस।”

“तो अब तड़का...”

सुनील ने मेज के दर्राज में से निकालकर विस्की की एक तीन चौथाई भरी बोतल मेज पर रखी और उठता हुआ बोला - “तू तड़का लगा, मैं जरा राय से मिलकर आता हूँ।”

अर्जुन ने सहमति में सिर हिलाया और बोतल कब्जा ली।

सुनील राय के ऑफिस में पहुंचा।

राय ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा।

“वो कीर्ति की गिरफ्तारी और उसकी बहन नमिता की रिहाई की खबर...”

“चली गयी है।” - राय बोला - “बमय दोनों बहनों की तस्वीरों के जो कि अर्जुन ने खींची थीं।”

“उस खबर में थोड़ा इजाफा करने की जरूरत है।”

“कैसा इजाफा?”

“उसमें इस बात का जिक्र नहीं है कि वो कहां छुपी हुई थी... यानि कि मैंने उसे कहां से बरामद किया था।”

“कहां से बरामद किया था?”

सुनील ने उसे विक्रम सूरी की बाबत, उसके काटेज ‘विकी की डिकी’ की बाबत और उसके मकतूल की बीवी से अफेयर की बाबत बताया।

“ये तो बड़ी अहम न्यूज है” - राय बोला - “और तुम इसे दबा के बैठे हुए हो!”

“पहले मेरा किसी से वादा था कि जब तक पुलिस खास तौर से जोर देकर नहीं पूछेगी, मैं उन्हें विक्रम सूरी के बारे में कुछ नहीं बताऊंगा।”

“अब क्यों बता रहे हो?”

“इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि यह बात पुलिस को पहले ही मालूम हो चुकी है। मेरे बिना बताये। जो बात पहले ही आम हो चुकी है, अब उसको छुपाये रखने का कोई फायदा नहीं।”

“तुमने पुलिस को इस... इस विक्रम सूरी की बाबत कुछ नहीं बताया था?”

“न। नौबत ही नहीं आयी थी।”

“रिपोर्ट तैयार है ?”

“नहीं, अभी करूंगा ।”

“कब करोगे ? जब पेपर छप जायेगा ?”

“मैं अभी करता हूँ ।”

“जो करना है यहीं बैठकर करो, मैं प्रैस रुकवाकर आता हूँ ।”

“ठीक है ।”

राय वहां से चला गया तो विमल ने उसका पैड और एक बालपैन अपनी तरफ घसीटा और रिपोर्ट तैयार करने में जुट गया ।

सुबह आठ बजे सुनील श्मशान घाट पर पहुंचा ।

वहां दिवंगत दिलीप थापर की चिता के हवाले करने की तैयारियां हो रही थीं ।

सुनील ने देखा कि वहां कीर्ति भी मौजूद थी ।

उसके थोड़ा पीछे इंस्पेक्टर प्रभूदयाल खड़ा था जो कि जरूर कीर्ति को अन्तिम संस्कार में शामिल होने का मौका देने के लिये वहां लाया था ।

कीर्ति के अलावा उसे जो परिचित चेहरे वहां दिखाई दिये, वे थे - उसकी दोनों बहनें, मकतूल की मां लाजवन्ती थापर उर्फ चाई जी, विवेक वर्मा और डॉक्टर निगम ।

सुनील उनके करीब पहुंचा, उसने आंखों-ही-आंखों से कीर्ति को खेदप्रकाश किया और फिर हौले से प्रभूदयाल के कन्धे को छुआ ।

“क्या है ?” - प्रभूदयाल अप्रसन्न स्वर में बोला ।

“जरा इधर आओ । तुम्हें एक जरूरी बात कहनी है ।”

प्रभूदयाल एक क्षण को हिचकिचाया और फिर सुनील के साथ भीड़ से परे एक पेड़ की ओट में पहुंच गया ।

“क्या है ?” - वो बोला ।

“हैडक्वार्टर पर कल शाम की गहमागहमी में मैं तुम्हें ये नहीं बता पाया था कि कीर्ति को मैंने कहां से बरामद किया था ।”

“रिपोर्टर साहब” - प्रभूदयाल सख्ती से बोला - “मेरा दिल तो ये था कि तुम्हारी इस कोताही वजह से मैं तुम्हें गिरफ्तार कर के हैडक्वार्टर बुलवाता लेकिन मैंने तुम्हारा लिहाज किया ।”

“माई-बाप, ये तो आप खामखाह मेरा पुलन्दा बान्धने पर तुले हैं । आप भूल रहे हैं कि आप ही वो शख्स थे जिसने मुझे वहां से चलता हो जाने को कहा था - कहा था क्या, जिद की थी, सख्त आर्डर दिया था ।”

“तुम्हें लौट के आना चाहिये था ।”

“मैं आया था” - सुनील साफ झूठ बोलता हुआ बोला - “लेकिन आप तो थे नहीं वहां ।”

“तकरीबन कितने बजे ?”

“यही कोई नौ सवा नौ बजे ।”

“मेरे पास इकलौता थापर वाला ही केस नहीं है । मैं एक और केस की तफ्तीश के लिये गया हुआ था ।”

“तभी तो । मैं आपको अब सब बताने को तैयार हूँ ।”

“अब क्या फायदा ? अब वो बात मुझे वैसे ही मालूम है ।”

“अच्छा ! कैसे मालूम हुई ?”

“हुई किसी तरह से । पुलिस के पास अपने मतलब की बातें जानने के कई जरिये होते हैं ।”

“कीर्ति से कुबुलवाया ?”

“कुबुलवाया नहीं लेकिन जो कुछ हमें पहले से मालूम था उसकी कीर्ति से तसदीक कराने की कोशिश जरूर की ।”

“की तसदीक उसने ?”

“नहीं । उसने तो विक्रम सूरी का जिक्र आते ही चुप्पी साध ली और फिर मेरे डराने-धमकाने पर भी उसने जुबान खोलकर न दी !”

“कल्ल की बाबत क्या कहती है वो ?”

“यही कि कल्ल उसने नहीं किया । मैंने उसे ये तक समझाया कि अगर वो कबूल कर ले कि उसने आत्मरक्षा के लिये अपने पति पर गोली चलायी थी तो वो छूट भी सकती थी लेकिन उसकी ये ही जिद थी कि कल्ल से उसका कुछ लेना-देना नहीं था और विक्रम सूरी से उसका कोई अफेयर नहीं था, वो महज उसका फ्रेंड था ।”

“विक्रम सूरी की पोजीशन क्या है इस वक्त ?”

“छुट्टा घूम रहा है । हमारे सरकारी वकील ढींगरा की जिद की वजह से । वो उस आदमी को कोर्ट में कीर्ति के खिलाफ एकाएक एक सरपराइज विटनेस के तौर पर पेश करना चाहता है और ये दावा करना चाहता है कि उन दोनों की आशनाई थापर की मौत का कारण बनी थी ।”

“अब तो उसकी ये मंशा पूरी नहीं हो सकेगी ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि वो सम्भावित सरपराइज विटनेस सूरी अब कोई राज नहीं रहा । उसकी बाबत तो अब सारा शहर जानता है, सारा मुल्क जानता है !”

“कैसे जानता है ?” - प्रभूदयाल तनिक झल्लाया - “और साफ जवाब दो । पहेलियां न बुझाओ ।”

“उसकी बाबत आज के ‘ब्लास्ट’ में सब कुछ छपा है ।”

सुनील, जो उसके एकाएक भड़क उठने की अपेक्षा कर रहा था, यह देखकर बड़ा हैरान हुआ कि भड़कने की जगह प्रभूदयाल खुश दिखाई देने लगा था ।

“गुड ।” - वो सन्तुष्टिपूर्ण स्वर में बोला ।

“क्या गुड है इसमें ?”

“अब वो सरकारी वकील मुझे सूरी के खिलाफ कोई कदम उठाने से नहीं रोक पायेगा ।”

“अब, जबकि बात आम हो चुकी है, तो रोकने से क्या हाथ आयेगा उसके ?”

“वही तो । अब मैं इस बीवी के यार को बड़े आराम से गिरफ्तार कर लूंगा ।”

“वो पहले ही कहीं खिसक गया तो ?”

“क्या मतलब ?”

“आज का अखबार पढ़कर उसे भी तो मालूम हो जायेगा कि उसके कीर्ति से प्रेम-सम्बन्धों की पोल खुल चुकी थी। फिर क्या वो गिरफ्तार होने के लिये बैठा रहेगा अपनी विकी की डिकी में?”

“भाग जाये। बेशक भाग जाये।” - प्रभूदयाल बड़े इत्मीनान से बोला - “फिर मैं उसको फरार घोषित करवा दूंगा। और उसके खिलाफ वारन्ट गिरफ्तारी जारी करवा दूंगा। मुझे फरार अपराधी को गिरफ्तार करके ज्यादा खुशी होगी।”

“वो ऐसा फरार हुआ कि ढूँढे न मिला तो?”

“तो भी देख लेंगे। देख लेंगे कहाँ जाता है बच के। रिपोर्टर साहब कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। समझे?”

“जी हाँ, समझा। लेकिन मेरी राय में अगर बांहें लम्बी होतीं तो ज्यादा कारआमद नतीजे निकलते।”

प्रभूदयाल मुस्कराया और तत्काल संजीदा हो गया। आखिर वो श्मशान घाट पर खड़ा था।

“तुम्हें” - फिर वो बोला - “खबर कैसे लगी विक्रम सूरी की।”

“बस, इत्तफाक से लग गयी।” - सुनील बोला - “जैसा वो आदमी सुनने को मिला उसकी रू में मुझे लगा कि कीर्ति उसके पास पनाह पाये हो सकती थी। वो वहीं निकली।”

“कल जब तुम हैडक्वार्टर आये थे, जब कि तुम्हें नमिता से बात करने का मौका दिया गया था, तब तुम्हें सूरी की खबर थी या बाद में हुई थी?”

“बाद में हुई थी।”

“या दौरान हुई थी?”

“दौरान?”

“नमिता से वार्तालाप के दौरान।”

“क्या बात करते हो, कृपानिधान! आप एक-एक अक्षर तो सुन रहे थे उस वार्तालाप का। अगर नमिता की जुबानी मुझे कुछ मालूम हुआ होता तो क्या वो आपको न मालूम हुआ होता?”

“मैं सुन सकता था, देख नहीं सकता था। तुम दोनों में कोई इशारेबाजी चली हुई होती तो मुझे उसकी खबर कैसी लगती?”

“कैसे लगती?”

“रिपोर्टर साहब, मेरा दावा है कि कल तुम हैडक्वार्टर में मुझे अपनी कोई सुनीलियन पुड़िया देने में कामयाब हो गये थे। नमिता से ही तुम्हें ऐसा कुछ मालूम हुआ था जिसके सदेक तुम नाक की सीध में कीर्ति के पास पहुंच गये थे।”

“नाक की सीध में नहीं। काफी भटकने के बाद।”

“तुम्हारे जाने के बाद और नमिता को वापस हवालात में भेज देने के बाद मैंने बगल के कमरे का मुआयना किया था। वहाँ मेज पर पड़ी ऐश-ट्रे में मुझे कुछ जले हुए कागजों की राख दिखाई दी थी। मुझे लगता है कि नमिता ने तुम्हें कुछ लिख के दिया था जिसको पढ़कर तुमने आग के हवाले कर दिया था।”

“ऐसा कुछ नहीं हुआ था। ये आपकी खामख्याली है कि...”

“मैंने उस बाबत नमिता से सवाल किया था तो वो मासूमियत की पुतली बनकर बोली थी कि उसे तो ये भी नहीं पता था कि वहाँ कोई ऐश-ट्रे भी रखी हुई थी।”

सुनील चुप रहा।

“बहरहाल तुम्हारी वो खता माफ है। जो नतीजा निकला है वो सुखद निकला है। मुलजिम कीर्ति थापर हमारी हिरासत में है और उसके ब्वाय फ्रेंड की हमें खबर है।”

“यानी कि आप खुश हैं ।”

“कदरन ।”

“इसी खुशी में एकाध मामूली सवाल पूछने की इजाजत मुझे भी दीजिये ।”

“क्या पूछना चाहते हो ?”

“पोस्टमार्टम से क्या पता लगा ?”

“यही कि वो एक बत्तीस कैलीबर की गोली खाकर मरा था और उसकी मौत का समय रात ग्यारह और बारह के बीच में था ।”

“उसकी जेबों से क्या बरामद हुआ ?”

“वही जो अमूमन लोगों की जेबों से बरामद होता है । बटुवा, कंघी, रूमाल वगैरह ।”

“बटुवे में कितनी रकम थी ?”

“यही कोई दो-ढाई हजार की । सौ-सौ के नोटों की सूरत में ।”

“पांच सौ का कोई नोट नहीं था उसकी जेब में या बटुवे में ?”

“नहीं । क्यों ?”

“कोई खास बात नहीं ।”

“जानना सब कुछ चाहते हो ! बताना कुछ नहीं चाहते ।”

सुनील खामोश रहा ।

“पांच सौ के नोट का जिक्र ही कैसे सूझा तुम्हें ?”

सुनील कुछ क्षण सोचता रहा और फिर निर्णयात्मक स्वर में बोला - “मुझे विश्वस्त सूत्रों से मालूम हुआ है कि परसों रात होटल लेकर व्यू के उसी रोज खुले कैसीनो में वो चालीस हजार रुपये जीता था जो कि पांच-पांच सौ के नये नकोर नोटों की सूरत में थे । प्रभू, वो रुपये उसकी जेब में होने चाहिये थे लेकिन तुम कहते हो कि नहीं थे ।”

“नहीं थे ।”

“क्यों नहीं थे ?”

“क्योंकि कातिल ने कत्ल के बाद उसकी पाकेट मार ली होगी ।”

“तो बटुवे में मौजूद दो-ढाई हजार रुपये क्यों नहीं कब्जाये उसने ?”

“क्योंकि बटुवा खाली होना अजीब लगता । चालीस हजार के नोट उसने ये सोचकर पार कर लिये होंगे कि किसी को उनकी खबर नहीं होगी ।”

“ये हो सकता है ।”

“अब बोलो कहां से जाना उन नोटों की बाबत ?”

“कैसीनो से जाना ।”

“किससे जाना ?”

“उसी अतिज्ञानी बहनजी से जाना जिसने हैडक्वार्टर जाकर सूरी की पोल खोली ।”

प्रभूदयाल ने उसे घूरकर देखा ।

सुनील ने तत्काल होंठ काटे ।

“कैसे जानते हो ?” - प्रभूदयाल बदस्तूर उसे घूरता हुआ बोला ।

“एक उड़ती चिड़िया ने बताया ।”

“चिड़िया ने या कबूतर ने ?”

“जनाब, वो बात छोड़िये । वो अहम बात नहीं है क्योंकि वो देर-सवेर पब्लिक की नालेज में आनी ही है । वो अतिवाचाल लड़की, जिसने तुम्हारे सामने मुंह फाड़ा, औरों को भी अपने मिजाज का प्रसाद दे सकती है ।”

“लड़की ने सूरी की चुगली क्यों की ?”

“उसी से पूछना था ।”

“पूछा था । उसने कोई विश्वसनीय वजह नहीं बतायी थी ।”

“वजह ये है कि वो सूरी की माशूक रह चुकी है और उससे खुन्दक खाती है, प्यार में खता खायी औरतें ऐसे कदम आम उठाती हैं ।”

“मुझे उस लड़की से फिर मिलना होगा ।” - प्रभूदयाल बड़बड़ाया ।

“अब कोई और बात बताइये ।”

“किस बाबत ?”

“मसलन बारूद की ही बाबत जो कि थापर की बोट में लगा हुआ था ।”

“हमें मालूम हुआ है कि थापर को विरसे में तारकपुर की पहाड़ियों में कोई पचास एकड़ जमीन मिली थी जिसमें कि अबरक निकल आया है । वो बारूद वहां पहाड़ियों में ब्लास्ट करने के लिये मुहैया किया गया था । बारूद की छड़ें सौ छड़ों के एक सीलड बक्से में थीं जिसे कि खोलकर उसमें से दो छड़ें निकाल ली गयी थीं ।”

“दो ?” - सुनील की भवें उठीं ।

“हां, दो । बोट हाउस में पड़े बक्से में अट्टानवे छड़ें मौजूद थीं । मैंने खुद गिना था ।”

“एक छड़ तो थापर की बोट में लगी हुई थी, दूसरी कहां गयी ?”

“क्या पता कहां गयी ?”

“कोई और बात ?”

“और क्या बात ? अब क्या रखा है इस केस में ? कत्ल के उद्देश्य की सूरत में विक्रम सूरी हमारे सामने है और कीर्ति हमारी हिरासत में है जिसे कि सजा हो जाना महज वक्त की बात है ।”

“यानी कि आपको पूरा एतबार है कि कत्ल कीर्ति ने किया है ?”

“भई, तुम्हारी निगाह में कोई दूसरा, इतना ही तगड़ा सस्पैक्ट हो तो नाम लो उसका ।”

सुनील खामोश रहा ।

“चिता जल पड़ी है ।” - प्रभूदयाल एकाएक बोला - “अब मुझे मुलजिमा को वापस लेकर जाना है ।”

“आई सी ।”

“और फैमिली मेम्बर्स से भी कुछ अहम बातें करनी हैं ।”

और वो वापिस परिवार के जमघट की तरफ लपका ।

नौ बजे घरवाले श्मशानघाट से रुखसत हुए । वे सब एक कार में सवार हुए जिसकी ड्राइविंग सीट पर विवेक वर्मा बैठा था ।

नमिता कार की पिछली सीट पर सवार होने से पहले तनिक ठिठकी, उसकी निगाह एम्बैसेडर में बैठे सुनील से मिली, फिर उसने झुककर चाई जी को कुछ कहा और कार से अलग हट गयी ।

कार विवेक वर्मा, चाई जी और मोहिनी को लेकर वहां से चली गयी ।

तब नमिता सुनील की कार के करीब पहुंची ।

“लिफ्ट मिलेगी ?” - वो बोली ।

जवाब में सुनील ने हाथ बढ़ाकर कार का पैसेन्जर सीट की ओर का दरवाजा खोल दिया । नमिता कार में सवार हो गयी । सुनील ने कार आगे बढ़ाई ।

“जरा धीरे चलाओ ।” - वो एकाएक बोली - “मुझे वहां पहुंचने की जल्दी नहीं है ।”

सुनील ने कार की रफ्तार कम कर दी ।

“सिगरेट है ?” - वो बोली ।

सुनील ने जेब से लक्की स्ट्राइक का पैकेट और लाइटर निकालकर उसकी गोद में डाल दिया ।

नमिता ने दो सिगरेट सुलगाये और एक कार चलाते सुनील के होंठों से लगा दिया । फिर वो बड़े चिन्तित भाव से सिगरेट के कश लगाने लगी ।

“आज का अखबार पढ़ा ?” - एकाएक सुनील बोला ।

“नहीं ।” - उत्तर मिला ।

यानी कि अभी उसे विक्रम सूरी की और उससे सम्बन्धित किस्से की खबर नहीं लगी थी ।

“ये पता लगा कि कीर्ति कहां छुपी हुई थी ?”

“नहीं । पुलिस ने इस बाबत कुछ नहीं बताया लेकिन तुम बताओ वो कहां थी । तुम्हें तो मालूम ही है ।”

“वो कोई अहम बात नहीं ।”

“फिर भी ?”

“अहम बात ये है कि कीर्ति ने अपनी मर्जी से पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया है और तुम आजाद हो ।”

“लेकिन वो तो फंस गयी बेचारी ।”

“अगर वो बेगुनाह है तो उसे कुछ नहीं होगा । देख लेना बहुत जल्द वो आजाद होगी और असली कातिल जेल के सींखचों पर सिर पटक रहा होगा ।”

“तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर ।”

“कल हैडक्वार्टर में तुम्हारी कीर्ति से मुलाकात हुई थी ?”

“हां, लेकिन न होने जैसी। सिर्फ एक मिनट के लिये।”

“कोई बातचीत?”

“मामूली।”

“तुमने उसे कई जगह तलाश किया था लेकिन वो नहीं मिली थी। तुम्हें ये जानने की उत्सुकता होनी चाहिये थी कि वो कहां छुपी हुई थी।”

“मुझे बहुत उत्सुकता थी। मैंने पूछा था ये सवाल उससे।”

“क्या जवाब मिला?”

“यही कि वो एक होटल में थी जहां कि तुम पहुंच गये थे।”

“ओह!”

“कल तुमने मेरे से विक्रम सूरी की बाबत सवाल किया था और ये सम्भावना जाहिर की थी कि उसका कीर्ति से लव अफेयर था। मैंने कीर्ति से दो टूक पूछा था कि क्या वो किसी विक्रम सूरी को जानती थी! उसने दो टूक जवाब दिया था कि वो किसी विक्रम सूरी को नहीं जानती थी। लेकिन अन्धा भी देख सकता था कि वो साफ झूठ बोल रही थी।”

“विक्रम सूरी अब कोई राज नहीं रहा, पुलिस को उसकी और उसके कीर्ति से ताल्लुकात की खबर लग चुकी है। और उसकी बाबत अखबार में भी छप चुका है।”

“कहीं वो उसी की शरण में तो नहीं थी?”

“उसी की शरण में थी और वो लोग किसी नामालूम जगह के लिये भाग निकलने की योजना बना रहे थे।”

“यानी कि ये बात एकदम दुरुस्त है कि कीर्ति का विक्रम सूरी से लव अफेयर है?”

“पुलन्दा बान्ध देने वाला लव अफेयर है।”

“और मुझे कभी इसकी भनक तक न लगी। बहुत पहुंची हुई निकली मेरी बहन।”

“जानेबहार, इस मामले में तो तुम भी कम नहीं हो।”

“क्या मतलब?”

“क्या कीर्ति को खबर है कि तुम विवेक वर्मा से फिट हो?”

“फिट?”

“फुल। लाइक हैण्ड इन ग्लोव।”

“तुम ये कहना चाहते हो कि मेरा विवेक से अफेयर है?”

“क्या नहीं है?”

“नहीं है।”

“फिर तो मैंने सपना देखा होगा।”

“कैसा सपना?”

“तुम्हारा और विवेक वर्मा का सपना । सपने में मुझे दिखाई दिया था कि तुम वर्मा की बांहों में थीं और वो भावविह्वल होकर ‘नमिता मेरी जान, नमिता मेरी जान’ भज रहा था ।”

“नानसेंस ।” - वो मुंह बिगाड़कर बोली - “जब मैंने कह दिया कि मेरा उससे अफेयर नहीं है तो...”

“यानी कि जैसे लोग अभिवादन में नमस्ते कहते हैं, हाथ मिलते हैं, वैसे तुम गले लगती हो । यही पुलन्दा बांध देने वाला तरीका है तुम्हारा लोगों से राम-सलाम का ?”

“ओह, ले आफ नाओ ।”

“ओके ।”

“तुम कहते हो कि पुलिस को भी विक्रम सूरी की खबर है । कैसे लगी ? तुमने बताया ?”

“नहीं, मैंने नहीं बताया । मैंने उससे वादा किया था कि मैं अपनी जुबानी सूरी का जिक्र नहीं करूंगा ।”

“तो कैसे मालूम हुआ पुलिस को ?”

“किसी और शख्स के जरिये जिसने कि मुखबिरी की । सूरी की एक एक्स-माशूक उसके उस झील वाले काटेज के बारे में जानती थी जहां कि कीर्ति छुपी हुई थी ।”

“उसने अखबार वालों को भी बताया ?”

“नहीं ।”

“पुलिस ने ?”

“उन्होंने भी नहीं ।”

“फिर अखबार में सूरी की बाबत कैसे छपा ?”

“सब अखबारों में नहीं छपा । सिर्फ मेरे अखबार में छपा । ‘ब्लास्ट’ में ।”

“तुम्हारी मेहरबानी से ?”

“जाहिर है ।”

“यानी कि कीर्ति से किया अपना वादा तो न निभाया तुमने ?”

“तूफानेहमदम, जो बात पहले ही किसी और जरिये से आम हो चुकी थी, उस पर पर्दा डाले रखना बेवकूफी होती । और फिर मेरा दायित्व कीर्ति के लिये कम है, अपने अखबार के लिये ज्यादा है । कीर्तियां आती-जाती रहती हैं लेकिन ‘ब्लास्ट’ मेरी जिन्दगी है ।”

“यानी कि वादाखिलाफी तुम्हारे लिये एक सहज-स्वाभाविक प्रक्रिया है, तुम्हारी आदत है । पहले मेरे से वादाखिलाफी की...”

“मैंने तुमसे कोई वादा नहीं किया था ।”

“...फिर कीर्ति से वादाखिलाफी की ।”

“कीर्ति से मेरा वादा कन्डीशनल था ।” - सुनील तनिक झुंझलाकर बोला - “मैंने ये नहीं कहा था कि मरता मर जाऊंगा लेकिन अपनी जुबान नहीं खोलूंगा । मैंने कहा था कि अगर मेरे से खास कील ठोककर सवाल नहीं किया जायेगा तो मैं इस बाबत चुप रहूंगा ।”

“पुलिस ने किया था सवाल तुमसे ? खास ? कील ठोक कर ?”

“नहीं लेकिन वो इस हकीकत को पहले ही जान चुके थे ।”

“कैसे ?”

“मरियम डिसूजा नाम की एक लड़की के बताये ।”

“वो कौन है ?”

“वो होटल लेक-व्यू के कैसीनो की असिस्टेंट मैनेजर है और विक्रम सूरी की माशूक रह चुकी है ।”

“उसने पुलिस के सामने सूरी की पोल खोली ?”

“हां ! उसके बाद मैंने तो महज उनकी जानकारी की तसदीक करनी थी । जो कि मैंने की । जुबानी भी और ‘ब्लास्ट’ के जरिये भी ।”

“चलो, छोड़ो ये किस्सा । अब ये बताओ कि कातिल कौन है ?”

“मुझे क्या मालूम ?”

“अपना कोई अन्दाजा ही बताओ ।”

“अन्दाजा तो ये ही है कि यह या तो थापर परिवार के किसी सदस्य का काम है या फिर परिवार के किसी मित्र का ।”

“क्या जरूरी है ? कोई बाहरी आदमी कातिल क्यों नहीं हो सकता ?”

“इसलिये नहीं हो सकता क्योंकि कल्ल से सम्बन्धित कुछ बातें ऐसी हैं जो कि किसी बाहरी आदमी को नहीं मालूम हो सकतीं । मसलन किसी बाहरी आदमी को ये नहीं मालूम हो सकता था कि कीर्ति एक रिवॉल्वर की स्वामिनी थी और वो रिवॉल्वर कहां उपलब्ध थी ! मसलन किसी बाहरी आदमी को ये नहीं मालूम हो सकता था कि टूटी एड़ी वाली सैंडल और बालों का क्लिप कहां उपलब्ध था ! किसी ने चाईजी की कार की पिछली सीट पर पड़ी वो दोनों चीजें देख भी ली होतीं तो भी वो ये नहीं जान सकता था कि वो चीजें कीर्ति की मिल्कियत थीं । उन पर कीर्ति का नाम तो लिखा नहीं था । मसलन किसी बाहरी आदमी को ये नहीं मालूम हो सकता था कि थापर की इतनी बड़ी कोठी में कीर्ति का बैडरूम कहां था जहां कि उसकी टूटी एड़ी वाली सैंडल पड़ी पायी गयी थी । ब्राइटआइज ये तो कोई घर का भेदी ही जान सकता था कि चाईजी की कार की पिछली सीट पर पड़ी सैंडलें और बालों का क्लिप कीर्ति के थे, कीर्ति की रिवॉल्वर उसके कार के ग्लोव कम्पार्टमेंट में पड़ी थी और ये कि कोठी में कीर्ति का बैडरूम कहां था !”

“कह तो तुम ठीक रहे हो । खास तौर से उस क्लिप के बारे में । वो क्लिप कीर्ति ने सिर्फ दो दिन पहले खरीदा था ।”

“सो देअर ।”

वो सोचने लगी ।

“अब परिवार के मित्रों के बारे में बताओ ।” - सुनील बोला ।

“परिवार के मित्रों के बारे में या दिलीप के मित्रों के बारे में ?”

“एक ही बात नहीं है ?”

“नहीं हैं । हकीकत ये है कि हमारा जीजा एक बहुत ही खुशक, झगड़ालू और गैरमिलनसार आदमी था । उसके उस मिजाज की वजह से सारी फैमिली के पास ही फटककर कोई राजी नहीं था ।”

“तुम, तुम्हारी छोटी बहन मोहिनी... तुम तो जवान हो, मिलनसार हो, तुम्हारे तो कई फ्रेंड्स होंगे ?”

“कोई खास नहीं । नार्थ शो पर तो कोई भी नहीं । मोहिनी की झेरी में एक-दो सहेलियां हैं और मेरे राजनगर में एक दो फ्रेंड हैं ।”

“आई सी ।”

“चाईजी की हाटल फ्रेंडशिप बोटल से है । बाकी बची कीर्ति तो उसकी बाबत तो मैंने कभी सपने में नहीं सोचा था कि दिलीप का खौफ खाये बिना वो किसी के साथ गम्भीर प्रेम-सम्बन्धों में फंसी होगी ।”

“विवेक वर्मा के बारे में क्या ख्याल है ?”

“वो दुनियादार आदमी है, यार-दोस्त तो उसके जरूर होंगे लेकिन कोई कभी कोठी पर नहीं आता था ।”

“वो थापर का कातिल हो सकता है ?”

“ये तुम मुझे बता रहे हो या मेरे से पूछ रहे हो ?”

“पूछ रहा हूं ।”

“पूछ रहे हो तो नहीं हो सकता । उसमें और थापर में भाइयों जैसा प्रेम था ।”

“आज की दुनिया में भाई ही भाई का गला काटता है ।”

“मेरा मन नहीं मानता ।”

“उसके बारे में और क्या जानती हो ?”

“मैं जितना जानती हूं, तुम्हें पहले बता चुकी हूं ।”

“वो तुम लोगों के साथ क्यों रहता है ?”

“रहता है तो क्या हर्ज है ? इतनी बड़ी कोठी है ? ऊपर से वो यहां परदेसी है । और ऊपर से थापर को उसके कोठी में रहने से कोई एतराज नहीं था ।”

“उसके परिवार के बारे में बताओ ।”

“उसका अपना परिवार तो है ही नहीं क्योंकि उसने शादी नहीं की । बाकी मां-बाप भाई-बहन कहीं हों तो उनकी मुझे खबर नहीं ।”

“यानी कि मिस्टर एक्स हैं ये विवेक वर्मा ।”

“मिस्टर एक्स ?”

“बहुत रहस्यपूर्ण आदमी । जानेजहां, इस वक्त पुलिस की कृपादृष्टि कीर्ति पर और सिर्फ कीर्ति पर है लेकिन अगर किसी वजह से उसके कातिल होने पर से उनका एतबार डगमगा गया तो उनको जो कीर्ति जैसा दूसरा कैन्डीडेट सूझेगा, वो विवेक वर्मा ही होगा ।”

“लेकिन उसकी दिलीप से कोई अदावत नहीं थी ।”

“तुम्हें क्या पता ?”

वो खामोश रही ।

“वो घर का आदमी है । वो थापर के हाउसहोल्ड के तमाम इन एण्ड आउट जानता है । ऐसे आदमी के लिये कत्ल करके इलजाम कीर्ति के सिर लाद देना मामूली काम था ।”

“खास कीर्ति के सिर क्यों ?”

“दो वजह मुमकिन हैं । एक तो यह कि कीर्ति स्वभाविक कैन्डीडेट थी क्योंकि हत्याण उस पर जुल्म ढाता था, उसे बेइज्जत करता था और उसे एक गैरमर्द से मुहब्बत थी । दूसरे, मुमकिन है कि हत्यारे को कीर्ति से कोई खास ही खुन्दक हो और थापर का कत्ल करके उसका इलजाम कीर्ति के सिर मढ़ के उसने कीर्ति से बदला उतारा हो ।”

“ऐसा आदमी कौन हो सकता है ?”

“तुम बताओ ।”

“मैं क्या बताऊं ? तुम तो विवेक वर्मा का ही नाम लोगे लेकिन मुझे यकीन नहीं कि उसकी कीर्ति से कोई खुन्दक हो या उसका दिलीप से कत्ल तक पहुंच जाने वाला मतभेद हो ।”

“लाजवन्ती थापर कैसी औरत है ?”

“अच्छी औरत है । नेक है, भलीमानस है, हम तीनों बहनों से मुहब्बत से पेश आती है । उसमें कोई खामी है तो ये ही है कि ड्रिंक करती है लेकिन आज की माडर्न सोसायटी में ये कौन-सी बड़ी बात है ? बहुत औरतें ड्रिंक करती हैं ।”

“वो ड्रिंक करती हैं लेकिन तुम्हारी वो चाईजी तो दारू से हाथ-मुंह धोती है, नहाती है, डुबकी लगाती है उसमें ।”

“वो बूढ़ी औरत है, किसी अंजाम से डरने की अब उसकी उम्र नहीं इसलिये उसे जो अच्छा लगता है, वो करती है ।”

“वो थापर का कत्ल कर सकती है ?”

“पागल हुए हो ! कोई मां अपनी औलाद का खून नहीं कर सकती ।”

“कई बार हालात ऐसे बन जाते हैं कि...”

“कबूल । कबूल कि हालात के हवाले होकर उसने अपने बेटे को गोली मार दी । लेकिन फिर उसने कत्ल के इलजाम में कीर्ति को फंसाने की चाल क्यों चली ? कीर्ति की सैंडल की टूटी एड़ी और उसके बालों का क्लिप घटनास्थल पर प्लांट करना एक सोची-विचारी साजिश के तहत ही हो सकता है । यानी कि हत्यारा पहले से फैसला किये बैठा था कि वो कीर्ति की रिवॉल्वर से थापर का कत्ल करेगा और फिर घटनास्थल पर ऐसे सबूत छोड़ेगा जिसकी वजह से कीर्ति का फंसना लाजमी होगा । ऐसा चाईजी कैसे कर सकती है ? कोई मां एक सोची-विचारी साजिश के तहत अपने इकलौते बेटे का खून भला कैसे कर सकती है ?”

“कैसे कर सकती है ?”

“मेरे से पूछ रहे हो ?”

“नहीं । अपने-आपसे ही सवाल कर रहा था । अब जरा मरने वाले पर लौटते हैं । कहते हैं कि उसके दिमाग में नुक्स था !”

“पागल तो नहीं था अलबत्ता ताव बहुत जल्दी खाता था । छोटी-मोटी बात पर भी ऐसा बिफरता था जैसे तबाही बरपा देना चाहता हो । ऊपर से उसका लाइफ स्टाइल भी ऐसा था जैसा कि किसी सनकी का ही हो सकता है ।”

“क्या मतलब ?”

“जैसे उसका मोटर बोट ड्राइविंग से लगाव था ।”

“बहुत लोगों का होता है ।”

“वैसा नहीं होता होगा जैसा दिलीप का था । किसी ने स्पेशल अपनी जरूरत और पसन्द बयान करके मोटर बोट नहीं बनवाई होगी । अपनी बीवी पर वो उतना कब्जा नहीं दिखाता था जितना कि मोटर बोट पर । किसी को उसमें सवार होने की इजाजत नहीं थी, किसी को उसके पास भी फटकने की इजाजत नहीं थी । अपनी जिन्दगी में दिलीप ने अगर किसी को चाहा था तो अपनी मोटर बोट को । वो तब तक रात को सोता नहीं था जब तक कि मोटर बोट पर सवार होकर वो समुद्र की लम्बी सैर नहीं कर आता था । कहता था यूं उसे बहुत सुकून हासिल होता था और फिर उसे बड़ी चैन की नीन्द आती थी । इस मामले में उसकी सनक और दीवानगी का ये आलम था कि बारिश में, आंधी-तूफान में भी वो मोटरबोट लेकर समुद्र की छाती रौंदने निकल पड़ता था । मौसम सुहाना हो, ठण्डी हवायें चल रहीं हों, चांदनी छिटकी हुई हो तो फिर तो बात ही क्या थी ! फिर तो लगता था जैसे वो गया हुआ लौटने वाला ही न हो ।”

“उसकी कोई और खूबी या खामी ?”

“पीता बहुत था । दोपहर से ही शुरू हो जाता था । किसी का एतबार नहीं करता था । हर किसी को शक की निगाहों से देखता था ।”

“ऐसे मिजाज की हमेशा कोई वजह होती है ।”

“आम लोगों के साथ होती है । दिलीप के साथ ये सब बेवजह भी हो सकता था ।”

“क्योंकि उसका दिमागी तवाजन बिगड़ा हुआ था ।”

“चलो ऐसे ही सही ।”

“उसकी जिन्दगी में कोई और औरत हो क्या ये मुमकिन था ? इस बात का जवाब ये सोच के देना कि वो अपनी दो अपनी दो छोटी सालियों पर मैली निगाह रखता था और अक्सर उन्हें बेइज्जत करता था, बेइज्जत होता था ।”

“अगर उसकी जिन्दगी में कोई औरत थी तो कम से कम मुझे उसकी खबर नहीं, मेरा मतलब है सिवाय उसकी पहली बीवी हर्षिता के जिसने कि अपने प्रेमी की खातिर दिलीप से तलाक ले लिया था लेकिन जब प्रेमी भी दगा दे गया था तो जिसने आत्महत्या कर ली थी ।”

“वो कहानी तो उसकी मौत के साथ खत्म हो गयी । उसको थापर की जिन्दगी में पैबस्त कोई औरत कैसे माना जा सकता है ?”

“ये बात तो है ।”

“तुम्हारी अपने जीजा से फंसने की कोई सम्भावना थी ?”

नमिता ने आंखें तरेरकर उसकी तरफ देखा ।

“देर सवेर ?”

“ओह, ले आफ, मिस्टर ।”

“मोहिनी के ? जवाब ये सोचकर देना कि वो कमसिन है, नादान है और, बकौल खुद तुम्हारे, दौलत की दीवानी है, ऐश्वर्यशाली रहन-सहन की आदी है जो कि डियर जीजा जी के जहूरे से ही मुमकिन हो सकता था । और ये न भूलो कि तुम्हारी इसी बहन ने मुझे फांसकर झेरी पहुंचाने में उसकी मदद की थी ।”

“उस बाबत मैंने मोहिनी से बात की थी । वो कहती है कि उसे नहीं मालूम था कि तुम्हारे झेरी पहुंचने के बाद दिलीप तुम्हारे साथ कैसे पेश आने वाला था । वो कहती है कि उसे तो तुम्हें राजनगर से झेरी लिवा लाने का काम सौपा गया था, जो कि उसने कर दिया था । दैट्स आल ।”

“आई सी ।”

“उसकी दिलीप से कोई कन्टीन्यूटी होती तो क्या वो उसके कत्ल की खबर सुनकर कहती ‘अच्छा हुआ’ ?”

“कैसे जाना ?”

“विवेक ने बताया ।”

“फंसी हुई औरत फांसी से निजात पा जाने पर भी ऐसे उदगार प्रकट कर सकती है ।”

“मिस्टर, यूं हैव ए नेस्टी माइन्ड ।”

“ये बात फिर भी अपनी जगह कायम है कि मोहिनी के ऐश्वर्यशाली जीवन का सपना जीजाजी की दौलत ही पूरा कर सकती थी । अब कुछ पाने के लिये कुछ देना तो पड़ता ही है ।”

“ओह, शटअप । तुम तो मोहिनी का यूं जिक्र कर रहे हो जैसे वो... वो कोई बाजारी औरत हो ।”

“बहारेचमन, ताव मत खाओ और सोच-समझकर मेरे सवाल का जवाब दो । अब देखो, ये तो हकीकत हैं कि तुम बहनों का तमाम मौज-मेला थापर की दौलत की वजह से है । यानी कि थापर के हाथ में दौलत की ताकत है । ऊपर से वो ऐसा इनसान नहीं था जो कि हाथ आयी ताकत को इस्तेमाल करने से झिझकने वाला हो । ऐसा शख्स अगर मोहिनी को ये दो टूक धमकी देता कि या तो वो उस पर मेहरबान हो या फिर चलती-फिरती नजर आये तो मोहिनी क्या करती ? वो थापर पर मेहरबान होती या चलती फिरती नजर आती ?”

“दिलीप उसे हासिल करने की बहुत कोशिशें कर चुका था लेकिन कभी कामयाब नहीं हुआ था ।”

“वो कोशिशें अहमकाना, वक्ती जोशोजुनून का नतीजा थीं, झपट्टा मारने जैसी थीं। मेरा सवाल ये है कि अगर वो मोहिनी को दो आप्शन पेश करता तो वो कौन-सी चुनती? यहां का सब भोग-विलास, ऐशो-आराम छोड़कर चलती-फिरती नजर आती या हथियार का मुकाबला हथियार से करती?”

“मोहिनी के पास कौन-सा हथियार है?”

“वही जो तुम्हारे पास है। वही जो हर खूबसूरत नौजवान लड़की के पास होता है। खूबसूरती और जवानी का हथियार दौलत के हथियार से कम ताकतवर नहीं होता।”

“लेकिन मोहिनी अभी बहुत छोटी है वो इन बातों को नहीं समझती?”

“छोटी ज्यादा खोटी होती है। कई इंकलाबी फैसले कमउम्र में करने ज्यादा आसान होते हैं। वो कहते नहीं है कि चिड़ी चोंच भर ले गयी, नदी न घटियो नीर। थापर ने एक चोंच अगर...”

“ओह, शटअप।”

“यानी कि तुम्हारी छोटी बहन थापर से यूं फंसने वाली नहीं थी।”

“नहीं थी।”

“पक्की बात?”

“हां।”

“फिर तो ये बहुत मुमकिन है कि परसों रात थापर ने उसे बोट हाउस में घेरे लिया हो, उसके साथ मनमानी करने की कोशिश की हो और नतीजतन उसने थापर पर गोली चला दी हो।”

“मैं नहीं मानती।”

“जानेजहां, असल में चाहे ऐसा न हुआ हो लेकिन थ्योरी के तौर पर तो ऐसा हुआ होना मुमकिन हो सकता है।”

“आलराइट, थ्योरी के तौर पर मैंने कबूल किया कि किन्हीं हालात के हवाले होकर वो दिलीप पर गोली चलाने की नादानी कर बैठी लेकिन अपनी करतूत अपनी बड़ी बहन के सिर थोपना उसे क्यों कर कबूल हुआ?”

सुनील सोचने लगा।

“जवाब दो।” - उसकी खामोशी से उत्साहित होकर वो चैलेंजभरे स्वर में बोली।

“यू आर राइट देयर, माई हनी चाइल्ड।” - सुनील बोला।

“गुड। यानी कि अब बाकी बची मैं।”

“क्या मतलब?”

“भई, कीर्ति की बेगुनाही से तुम पहले से आश्वस्त हो, मोहिनी की बेगुनाही से अब आश्वस्त हो गये हो। अब बाकी मैं ही तो बची। कह दो कि कत्ल मैंने किया है।”

“मैं क्या कहूं? तुम खुद ही कह लो।”

“मैंने कत्ल नहीं किया। तुम ये भूल रहे हो कि उस रात हर घड़ी मैं तुम्हारे साथ थी।”

“हर घड़ी नहीं।”

“क्या मतलब?”

“मुझे डॉक्टर निगम के पास छोड़कर तुम अपनी कोठी में गयी थीं और दस-बारह मिनट बाद वहां से लौटी थीं। इतना वक्फा कत्ल के लिये काफी होता है। बल्कि काफी से ज्यादा होता है।”

“इसके जवाब में जो बात मैंने मोहिनी के लिये कही थी, वही मैं अपने लिये भी कहती हूं। अपनी करतूत मैं अपनी बड़ी बहन के सिर थोपना कबूल नहीं कर सकती।”

“ओके। अब मैं जरा डिफेंड वेवलैंग्थ पर आता हूं। अब जबकि ये उजागर हो चुका है कि कीर्ति का एक गैरमर्द से, विक्रम सूरी से, गम्भीर प्रेम सम्बन्ध है तो अगर थापर का कत्ल न हो गया होता तो क्या वो उससे तलाक लेने की कोशिश करती?”

“वो मैं नहीं जानती लेकिन ये हकीकत है कि परसों रात जब दिलीप ने कैसीनो में हर किसी के सामने उसके साथ बद्सलूकी की थी तो...”

“तुम्हें क्या पता दिलीप ने उसके साथ क्या किया था? तुम तो पहले ही वहां से उठ के चली आयी थीं। बोर होकर। तुमने खुद कहा था।”

“मुझे मोहिनी ने बताया था कि मेरे पीछे कैसे वहां दिलीप सबके सामने कीर्ति के साथ एक वहशी जानवर की तरह पेश आया था।”

“ओह! आगे बढ़ो।”

“तब बेइज्जत हुई कीर्ति ने वहां से जाने से पहले तड़पकर कहा था कि अब पानी सिर से ऊपर पहुंच गया था, अब वो एक क्षण भी उस कसाई के साथ नहीं रह सकती थी। उसके ऐसा कहने का मतलब तलाक लेने का इरादा ही होगा।”

“वो अकेली कैसीनो से रवाना हुई। उसको रोकने की किसी ने - विवेक वर्मा ने या मोहिनी ने कोशिश न की? खास तौर से मोहिनी ने उसके साथ जाने के कोशिश न की?”

“मोहिनी कहती है कि उसकी नौबत ही नहीं आयी थी। वो तो आगबबूला होकर वहां से निकली थी, झपट कर कार में सवार हुई थी और फिर ये जा वो जा।”

“किसी को उसकी फिक्र न हुई? किसी ने ये न सोचा कि वो कहां जायेगी!”

“इतनी रात को घर के सिवाय और कहां जाती! तब सबका यही खयाल था।”

“फिर भी?”

“फिर भी ये कि आधे घन्टे बाद मोहिनी ने कैसीनो से नार्थ शोर कोठी पर फोन किया तो उसने पाया था कि वो वहीं थी। वो सही-सलामत बिना रास्ते में कोई एक्सीडेंट किये घर पहुंच गयी थी। तभी मोहिनी की जान में जान आयी थी।”

“क्या पता मोहिनी की किसी और से बात हुई हो! उसने किसी और को कीर्ति समझ लिया हो!”

“पागल हुए हो! वो क्या अपनी मां-जाई बहन की आवाज नहीं पहचानती?”

“फिर भी?”

“फिर भी कोठी में और कौन होती? होती तो वो अपने-आपको कीर्ति क्यों कहती? वो भी कहती तो वो जवाब क्यों कर दे पाती जो कि कीर्ति ने दिया?”

“कैसा जवाब?”

“उसने फोन पर कहा था कि वो अपने वकील से मिलने राजनगर जा रही थी और यह कि सुबह वो वहां से फोन करेगी।”

“वक्त क्या था उस फोन काल का?”

“वक्त था दस बजे के करीब का। यानी कि दिलीप के कत्ल से बहुत पहले का। कम से कम डेढ़ घन्टे पहले का।”

“यानी कि ये बात स्थापित है कि झेरी से वो सीधे राजनगर के लिये रवाना नहीं हुई थी, वो पहले नार्थ शोर गयी थी?”

“हां।”

“उसने फोन पर कहा था कि वो राजनगर के लिये रवाना हो रही थी लेकिन हो भी गयी थी, इस बात का क्या सबूत है?”

“क्या मतलब?”

“वो ‘विकी की डिकी’ में डेढ़ पौने दो बजे पहुंची बताती है। कहती है। कि बीच का वक्फा वो राजनगर के रास्ते पर थी लेकिन अपनी बात को सिद्ध करने का उसके पास कोई साधन नहीं है। कहने का मतलब ये है कि कत्ल के वक्त की उसके पास कोई एलीबाई नहीं। उसे न किसी ने कोठी में पहुंचते देखा था और न वहां से रुखसत होते देखा था। पता नहीं उसने राजनगर का रुख भी किया था या नहीं।”

“फिर कह रहे हो कि कत्ल उसने किया हो सकता है।”

“या तुमने!”

“फिर पहुंच गये एक आने वाली जगह पर?”

“उसके कथनानुसार वो राजनगर के लिये रवाना हो रही थी जहां कि उसने तलाक के मशवरे के लिये अपने वकील के पास जाना था। मेरा कहना ये है कि तुमने उसे वकील के पास पहुंचने तक के टाइम की मोहलत दी ताकि उसका वकील उसकी बेगुनाही का गवाह बन सके और फिर मुझे बाकायदा ज़िद कर के, बल्कि जबरन डॉक्टर निगम के हवाले करके कोठी में पहुंच गयीं और वहां जो काम बहन ने करना था, वो खुद कर डाला।”

“मैं तो कैसीनो से पहले ही चली आयी थी। मुझे क्या पता पीछे क्या हुआ था? मुझे क्या पता कीर्ति अपने वकील से मिलने राजनगर जा रही थी?”

“पता हो सकता है। तुम्हारी मोहिनी से फोन पर बात हुई हो सकती है। तुम कैसीनो वापिस गयी हो सकती हो। तुम्हारी नार्थ शोर में कीर्ति से ही मुलाकात हुई हो सकती है।”

“यानी कि कत्ल मैंने किया?”

“हो सकता है।”

“और” - वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली - “बहन को फंसाने के लिये घटनास्थल पर उसकी सैडल की टूटी एड़ी और बालों के क्लिप की सूरत में बहन के खिलाफ सबूत प्लांट कर दिये?”

“हां। क्योंकि तुम जानती थीं कि क्योंकि कीर्ति के पास अपने वकील की सूरत में ठोस एलीबाई थी, इसलिये उन सबूतों को कातिल द्वारा प्लांट किया ही समझा जाना था।”

“मैंने उन्हें वहां प्लांट किया था तो वहां पड़ा क्यों न रहने दिया। वहां से उन्हें हटा क्यों दिया मैंने?”

“हटा दिया लेकिन कब हटा दिया? मुझे उनके दर्शन कर लेने का मौका देने के बाद। मुझे उनकी वहां मौजूदगी का गवाह बना चुकने के बाद वो चीजें वहां से उठाकर भाग जाने के पीछे तुम्हारी मंशा ये थी कि ये समझा जाता कि तुम अपनी प्यारी-प्यारी बहन की, मासूम बेगुनाह बहन की रक्षा करने को कोशिश कर रही थीं इस तरीके से तुम खुद को भी शक से बरी करा सकती थीं और बहन को भी।”

“बढ़िया। अब तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो।”

“पूछो।”

“मुझे क्या सपना आया था कि झेरी में मुझे तुम मिल जाने वाले थे? इत्तफाक से मैं काटेज पर न गयी होती, मैंने वहां तुम पर रहम न खाया होता तो कोठी पर तो मैं अकेली पहुंची होती। उस सूरत में सैडल की एड़ी और बालों का क्लिप मैं वहां से हटाती तो कौन गवाह होता इस बात का कि वो चीजें पहले वहां मौजूद थीं?”

“तब तुम अपनी स्ट्रेटेजी तब्दील कर लेतीं। तब तुम किसी और को उन चीजों का गवाह बनाने की कोशिश करतीं।”

“मसलन किसे? चाईजी को?”

“नहीं, उसे तो नहीं। वो तो तब तक कीर्ति के बैडरूम में मुर्दों से शर्त लगाकर सोई पड़ी थी।”

“तो और किसे?”

“अपने पड़ोसी डॉक्टर निगम के बारे में क्या ख्याल है?”

“क्या मतलब?”

“तुम उसे ये कहकर बुलाकर लाती कि बोट हाउस से अजीब-अजीब आवाजें आ रही थीं, जरूर वहां कोई चोर था। डॉक्टर निगम बोट हाउस में पहुंचता, लाश बरामद करता और फिर वो तमाम ड्रामा तुम उसकी मौजूदगी में करतीं जो कि तुमने मेरी मौजूदगी में किया था।”

“मिस्टर, तुम तो बड़े खतरनाक आदमी हो।”

“अब तो मैं आधा खतरनाक भी नहीं हूँ। अब तो मैंने सींग कटवा लिये हैं और दांत ठीक करवा लिये हैं। पहले देखतीं तो यकीनन बेहोश हो जातीं। धड़के से मर भी गयी होती तो कोई बड़ी बात नहीं थी।”

“बार्ते बढिया करते हो।”

“और मुझे आता क्या है?”

वो खामोश रही।

“कहने का मतलब ये है कि जहां तक थ्योरी का सवाल है, ये काम तुम तीनों बहनों में से किसी का भी हो सकता है। और अब” - सुनील कार को थापर की कोठी के सामने रोकता हुआ बोला - “इसी के साथ हमारा ये प्रोग्राम खत्म होता है, अगले हफ्ते इसी रोज इसी वक्त हम आपसे फिर मिलेंगे। तब तक के लिये हमें आज्ञा दीजिये। नमस्कार।”

“घर में मातम का माहौल न होता तो मैं बहुत जोर से हंसती।”

“फिलहाल धीर-से हंस लो ताकि फूल नहीं तो कलियां झरती तो देख ही लूं मैं।”

“बोट हाउस में कोई है।” - एकाएक वो बोली।

“कैसे जाना?” - सुनील बोट हाउस की दिशा में निगाह उठाता हुआ बोला।

“उसके सामने एक अजनबी मोटर साइकल खड़ी है और उसका दरवाजा खुला है। अभी भीतर से आती आहट भी मुझे मिली थी।”

“मुझे तो नहीं मिली थी।”

“तुम बिजी थे। तुम रेडियो प्रोग्राम दे रहे थे।”

“तुम यहीं ठहरो, मैं देखता हूँ।”

“मैं भी चलती हूँ।”

“नहीं। पहले मुझे देखने दो। कोई गड़बड़ हो तो शोर मचा देना।”

“ठीक है।”

सुनील कार से निकला और लपकता हुआ बोट हाउस पर पहुंचा। वहां वाकेई कोई था।

वो एक भारी-भरकम आदमी था जो कि थापर की बोट में से उसकी डीजल की टंकी उठा रहा था। करीब ही बोट हाउस के फर्श पर एक और टंकी पड़ी थी।

“हल्लो!” - सुनील बोला - “कौन हो तुम?”

“मकैनिक हूं। थानसिंह नाम है। आप कौन हैं?”

“क्या कर रहे हो?”

“देखते जाइये। अभी पता चलता है।”

उसने उठाई हुई टंकी फर्श पर रखी, वहां रखी दूसरी टंकी उठाई और उसे बोट में यथास्थान फिट करने लगा।

“जो टंकी निकाली है” - सुनील बोला - “उसमें क्या खराबी है?”

“कोई खराबी नहीं।” - जवाब मिला।

“तो बदल क्यों रहे हो?”

“वो टंकी मेरी है जो कि मैंने थापर साहब को तब तक के लिये उधार दी थी जब तक कि बोट मैन्यूफैक्चरर के पास से नयी टंकी नहीं आ जाती थी। अब नयी टंकी आ गयी है इसलिये मैं अपनी टंकी उठा रहा हूं और उसकी जगह नयी टंकी फिर कर रहा हूं।”

“उठा रहे हो क्या मतलब? ये टंकी इंजन के साथ कनेक्ट नहीं हुई हुई थी?”

“नहीं हुई हुई थी।”

“क्यों?”

“आप इतने सवाल क्यों पूछ रहे हैं? आप क्या पुलिस के महकमे से हैं?”

“मैं फैमिली फ्रेंड हूं। जो कुछ तुम कर रहे हो, उसकी पुलिस को खबर है?”

“कैसे होगी? मेरा पुलिस से क्या वास्ता?”

“ये मौकायेवारदात है। ये वो जगह है जहां थापर साहब का कत्ल हुआ था। पुलिस को तुम्हारी या किसी की यहां छेड़छाड़ पसन्द नहीं होगी।”

“मैंने क्या किया है? मैं क्या कर रहा हूं? मैं तो सिर्फ वो काम कर रहा हूं जिसे करने का मेरे पास आर्डर है।”

“किसका?”

“थापर साहब का और किसका?”

“क्या किस्सा है?”

“टंकी लीक कर रही थी जिसकी वजह से उन्होंने मुझे यहां बुलाया था।”

“कब?”

“परसों।”

“यानी कि कत्ल वाले दिन?”

“हां लेकिन सवेरे। मैं उनके बुलाने पर सुबह ग्यारह बजे यहां आया था।”

“फिर?”

“मैंने टंकी का मुआयना किया था। उसमें लीक वाकेई था। थापर साहब चाहते थे कि मैं वैल्विंग का टांका लगाकर लीक बन्द कर देता लेकिन मैंने उन्हें समझाया था कि क्योंकि ऐसी मरम्मत मैं दो बार पहले ही टंकी की कर चुका था इसलिये अब भलाई इसी में थी कि टंकी बदल दी जाती। वो टंकी इतनी खस्ता हो चुकी थी कि इंजन की बाइब्रेशन से ही टांका खुल सकता था या नयी जगह लीक निकल सकता

था। ऊपर से थापर साहब बोट चलाते शैतानी रफ्तार से थे। उन हालात में तो टंकी मजबूत और चौकस ही होनी चाहिये थी वरना हादसा हो सकता था।”

“फिर क्या बोले थापर साहब?”

“उन्होंने मेरी बात समझी और मुझे नयी टंकी का आर्डर दे दिया। मेरे को नयी टंकी मैनुफैक्चरर से मंगानी पड़नी थी जिसमें कि वक्त लगता। तब वो बोले कि मैं तब तक के लिये उसकी जगह कोई स्टैंडबाई टंकी लगा दूं। मेरे पास एक पुरानी टंकी थी जो कि चौकस थी, जो कि उनकी लीक करती टंकी से तो कहीं बेहतर हालत में थी। मैं अपनी वर्कशाप में जाकर वो टंकी ले आया था।”

“तुम्हारी टंकी वो थी जो तुमने अभी बोट में से बाहर निकाली थी?”

“हां।”

“तुमने अभी कहा था कि ये टंकी इंजन से कनेक्ट नहीं हुई हुई थी।”

“हां।”

“वजह?”

“टंकी को बाड़ी के साथ उसके आजू-बाजू के जिन चार पेचों से जोड़ा जाता है उनके छेद और बाड़ी के छेद एक कतार में आमने-सामने नहीं आ रहे थे। उसके लिये या तो ड्रिल लाकर मुझे टंकी में नये छेद करने पड़ते या फिर बोट की बाड़ी में। ऐसा मैं थापर साहब से पूछे बिना करना नहीं चाहता था। पता नहीं वो अपनी बोट में नये छेद किये जाना पसन्द करते या न करते। तब थापर साहब कोठी में थे नहीं। थापर साहब क्या, कोई भी कोठी में नहीं था। ऊपर से शाम होने को आ रही थी। तब मैंने अपनी टंकी को बिना कनेक्ट किये बोट में छोड़ जाने का और अगले रोज थापर साहब की मौजूदगी में फिर यहां आने का फैसला किया था।”

“कल आये थे तुम यहां?”

“नहीं।”

“क्यों?”

“मुझे कहीं और का एक काम मिल गया था जिसमें मेरा सारा दिन लग गया था। ऊपर से अखबार के जरिये मुझे ये भी खबर लग गयी थी कि थापर साहब भगवान को प्यारे हो गये थे। तब मैंने ये ही सोचा कि जब बोट का मालिक ही नहीं रहा था तो फिर उसके काम की भी क्या जल्दी थी?”

“हूं।”

“आज मैनुफैक्चरर के पास से नयी टंकी मेरे पास आ गयी तो उसे लेकर मैं यहां पहुंच गया।”

“बोट का मालिक तो मर गया। अब नयी टंकी का बिल कौन भरेगा?”

“बिल भरा जा चुका है।” - वो बड़े धूर्त भाव से मुस्कराया।

“अच्छा! किसने भरा?”

“खुद थापर साहब ने। पूरी रकम एडवांस में हासिल होने पर ही मैंने नयी टंकी का आर्डर दिया था।”

“हूं।” - सुनील कुछ क्षण सोचता रहा और फिर बोला - “यानी कि थापर साहब को इस बात की खबर नहीं थी कि जो स्टैंडबाई टंकी तुम लाये थे, वो बोट में फिट नहीं थी, इंजन के साथ कनेक्ट नहीं थी?”

“मेरे ख्याल से तो न थी और न हो सकती थी। मेरे यहां से फारिग होने से तो बहुत पहले वो फैमिली समेत कोठी से चले गये थे। जब ये बात उन्हें मैं नहीं बता सका था तो और कौन बताता?”

“ठीक। लेकिन अगर वो मर न गये होते तो वो यही समझते कि तुमने स्टैंडबाई टंकी फिट कर दी हुई थी?”

“जी हां ।”

“तुम्हारे वाली टंकी बोट में फिट नहीं हो सकी थी, इस बात की और किस को खबर थी ?”

“किसी को नहीं । मेरे सिवाय किसी को नहीं ।”

“यानी कि तुमने किसी से इस बात का जिक्र नहीं किया था ?”

“न । मैं तो बस...”

“ये क्या हो रहा है यहां ?”

दोनों तत्काल आवारज की दिशा में घूमे ।

दरवाजे पर सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर खड़ा था ।

“क्या हो रहा है ये ?” - वो कड़ककर बोला ।

“ये टंकी म-मेरी है” - थानसिंह हकलाता-सा बोला - “जिसे कि मैं यहां से निकाल रहा हूं ।”

“क्यों निकाल रहे हो ?”

“ताकि इसे मैं अपने साथ ले जा सकूं ।”

“क्यों ? क्यों ? जानता नहीं यहां एक ब्लड हो चुका है और जहां ब्लड हुआ हो वहां कोई छेड़खानी नहीं की जानी चाहिये ।”

“ब्लड ?”

“खून । अंग्रेजी नहीं समझता ?”

“ज्यादा नहीं समझता ।”

“या वो वाली नहीं समझता” - सुनील बोला - “जो तुम बोलते हो !”

“क्या मतलब ?”

“कुछ नहीं ।”

“तुम यहां क्या कर रहे हो ?”

“जहां ब्लड हुआ है वहां कोई छेड़खानी नहीं कर रहा ।”

“समझदारी कर रहे हो वर्ना सीधा वन टू का ट्वैल्व कर देता । मेरा भी नाम अनिल कपूर वैसे ही नहीं है ।”

सुनील खामोश रहा ।

“और तुम” - सब-इन्स्पेक्टर फिर मकैनिक की तरफ आकर्षित हुआ - “नाम क्या है तुम्हारा ?”

“थानसिंह ।” - वो बोला - “मैं थापर साहब के बुलावे पर यहां आया था ।”

“फालतू बात नहीं । फालतू बात नहीं ! जो पूछा जाये उसका जवाब दो । समझे ?”

“जी हां ।”

“तुम बोट ठीक करने वाले मकैनिक हो ?”

“जी हां ।”

“थापर साहब ने बुलाया था ?”

“जी हां ।”

“खराबी क्या थी ?”

“डीजल की टंकी लीक करती थी ।”

“टंकी तुम्हारी क्यों है ?”

उसने स्टैंडबाई टंकी की वजह बताई ।

“और कहां-कहां डिस्टर्बेंसिंग की थी ?”

“जी !”

“अंग्रेजी वाकेई नहीं समझता ! मैं पूछता हूं और कहां-कहां छेड़खानियां की थीं ?”

“कहीं नहीं । मैंने बस सिर्फ अपनी टंकी...”

“वापिस रखो उसे । ऐन वैसे ही जैसे वो पहले रखी हुई थी । ऐन वैसे ही । वन पर वन, टू पर टू, ट्वैल्व पर ट्वैल्व । समझे ?”

“जी हां ।”

वो आदेश के पालन में जुट गया ।

“पता नहीं कहां-कहां से आ जाते हैं ?” - सब-इन्स्पेक्टर बड़बड़ाया - “आ जाते हैं सरकारी काम में इन्टरकोर्स करने ।”

“इन्टरफियर करने ।” - सुनील बोला - “दखल देने ।”

“वही । साले मकैनिक हैं तो जाके मकैनिस्तान में रहें जहां से कि वो आये हैं । साले...”

तभी नमिता वहां पहुंची ।

“क्या हो रहा है यहां ?” - वो बोली ।

“कुछ नहीं हो रहा ।” - सब-इन्स्पेक्टर शान से बोला - “अब मैंने सम्भाल लिया है ।”

“गुड ।” - फिर वो सुनील की तरफ घूमकर बोली - “आओ ।”

“कहां ?” - सुनील बोला ।

“कोठी में । एक प्याली चाय पी के जाना ।”

“ठीक है ।”

“आप लोग चाय पीना पसन्द करेंगे ?”

“मैं तो टंकी लेकर जा रहा हूं ।” - थानसिंह बोला ।

“मैं ड्यूटी पर हूं ।” - सब-इन्स्पेक्टर बड़ी शान से बोला ।

“चाय ड्यूटी को क्या कहती है ?” - नमिता हैरानी से बोली ।

“कुछ नहीं लेकिन मैडम, अपनी-अपनी प्रिंसीपलिटी होती है...”

“ये” - सुनील बोला - “जरूर कोई म्यूनिस्पैलिटी से मिलजी-जुलती चीज होगी।”

“अरे, मैं सिद्धान्तों की बात कर रहा हूँ।”

“ओह ! आई सी।”

“तो मैडम, अपने-अपने उसूल होते हैं इसलिये...”

उसने बड़े स्टाइल से कन्धे झटकाये।

“ठीक है।” - नमिता बोली - “मर्जी तुम्हारी।”

फिर वो घूमकर वापिस चली।

सुनील उसके साथ हो लिया।

दोनों ड्राइंगरूम में पहुँचे। वहाँ विवेक वर्मा और मोहिनी पहले से मौजूद थे और चाय सर्व की जा रही थी। वो दोनों बैठ गये तो चाय उन्हें भी सर्व हुई।

“श्मशान घाट पर इन्स्पेक्टर प्रभूदयाल” - चाय चुसकता सुनील सहज भाव से बोला - “फिर आप लोगों से कोई सवाल-जवाब कर रहा था। क्या पूछ रहा था वो?”

“पूछ नहीं रहा था” - मोहिनी तीखे स्वर में बोली - “बता रहा था।”

“क्या?”

“तुम्हारा कारनामा, और क्या?”

“क्या मतलब?”

“अपने कारनामे का मतलब हमसे पूछोगे?”

“ब्राइटआइज, क्विज प्रोग्राम चालू करने का ये मुनासिब वक्त नहीं है। और फिर कारनामे तो बेइन्तहा हैं। अब मुझे कैसे पता लगे कि तुमने उनमें से कौन-सा कारनामा जिक्र के लिये चुना है!”

“वो इन्स्पेक्टर पूछ रहा था” - इस बार मोहिनी के जुबान चला पाने से पहले ही वर्मा बोल पड़ा - “कि क्या हम लोग विक्रम सूरी नाम के किसी शख्स को जानते थे!”

“और उस शख्स के बारे में तुमने पुलिस को बताया था।” - इलजाम लगाती आवाज में मोहिनी बोली - “तुमने पुलिस को बताया था कि कीर्ति उस विक्रम सूरी नाम के आदमी के घर में छुपी हुई थी।”

“बिल्कुल गलत। इन्स्पेक्टर को इस बाबत मैंने आज बताया था। हकीकतन ये बात उसे पहले ही - कल शाम से मालूम थी।”

“ये बात” - वर्मा धीरे से बोला - “तुम्हारे अखबार में भी छपी है।”

“आज के अखबार में।” - सुनील बोला - “जो बात राज न रही हो, उसे छुपाने से क्या फायदा?”

“लेकिन ये झूठ है।” - मोहिनी बोली।

“क्या झूठ है?”

“कि कीर्ति उस आदमी के साथ थी। मैं क्या अपनी बहन को जानती नहीं? वो कभी...”

“ये झूठ नहीं है। ये सच है। हकीकत है।”

“मोहिनी, ये ठीक कह रहा है।” - वर्मा बोला - “वो इन्स्पेक्टर खुद इस बात की तसदीक कर चुका है।”

“फिर भी इसे क्या जरूरत थी अपना मुंह फाड़ने की?”

“तुम्हें क्या जरूरत थी” - सुनील तीखे स्वर में बोला - “मेरा कत्ल कराने को आमादा अपने जीजा की मदद करने की?”

“क्या मतलब?”

“परसों तुम खास अपने जीजा के लिये मुझे यहां के रास्ते से भटकाकर झेरी नहीं लायी थीं?”

“तब... तब मुझे क्या पता था उनके मन में क्या था?”

“पता किया होता। ऐसी जी हुजूरी वाली किस्म वाली लड़की तो तुम नहीं हो। होतीं तो साली को घरवाली बनाने के लिये टक्करें ने मारनी पड़तीं तुम्हारे जीजा को।”

“ओह, शटअप।”

“मोहिनी!” - नमिता डपटकर बोली - “बिहेव।”

“वाट बिहेव!” - मोहिनी तमककर बोली - “आई विल से इट अगेन एण्ड अगेन एण्ड अगेन दैट दिस मैन इज ए ट्रेटर। इसने कीर्ति के साथ विश्वासघात किया है। इसे अपना मुंह...”

“मोहिनी! चाय पी ली है तो उठ के अपने कमरे में जा।”

“जाती हूं।” - वो तड़पकर बोली और उसने हाथ में थमी कप प्लेट यूं मेज पर पटकी कि कप प्लेट में उछला और सुनील की छाती से आकर टकराया।

“ओह, माई गाड!” - नमिता बोली - “ये लड़की तो पागल हो गयी है।”

सुनील हड़बड़ाकर उठा और अपना कोट झटकने लगा।

मोहिनी फर्श को रौंदती हुई वहां से रुखसत हो गयी।

“कोट उतार दो।” - नमिता बोली।

सुनील ने कोट उतारा तो नमिता ने उसे उसके हाथ से झपट लिया।

“मैं अभी इसे ठीक करके लाती हूं” - वो बोली - “वर्ना इस पर चाय के दाग पड़ जायेंगे।”

इससे पहले कि सुनील विरोध में कुछ कह पाता, वो कोट के साथ वहां से यह जा वह जा।”

“बैठो!” - वर्मा बोला - “कोट अभी आता है।”

सुनील वापिस बैठ गया।

“आई एम सारी।”

“यू आर सॉरी?” - सुनील बोला।

“ऑन बिहाफ आफ मोहिनी। वो छोटी है, नादान है, बहनों की लाड़ली है, इसलिये जल्दी भड़कती है।”

“आई अन्डस्टैण्ड।”

“आई एम सॉरी ऑन हर बिहाफ ।”

“नैवर माइन्ड ।”

“जो हो गया, सो हो गया ।”

“जो हो गया है” - सुनील बोला - “उस पर मेरा कोई जोर नहीं था । पुलिस को मैंने विक्रम सूरी की बाबत तभी बताया था जबकि इस बात की तसदीक हो गयी थी कि उन्हें किसी और जरिये से वो बात पहले ही मालूम हो चुकी थी । तभी मैंने उसे ‘ब्लास्ट’ में भी छपने दिया था । विक्रम सूरी की बाबत मैं अभी भी खामोश रहता तो पुलिस की गाज मेरे ऊपर बहुत बुरी तरह से गिर सकती थी ।”

“आई अन्डरस्टैण्ड । लेकिन तुम्हें खबर कैसे लगी उसकी ? विक्रम सूरी का नाम सूझा कैसे तुम्हें ?”

“तुम उसके बारे में कुछ नहीं जानते ?”

“कतई कुछ नहीं जानता । मैं कीर्ति को इतनी अच्छी तरह से जानता हूँ कि मुझे ये करिश्मा मालूम होता है कि इतनी अहम बात की मुझे खबर नहीं लगी - खबर क्या नहीं लगी, भनक तक नहीं लगी ।”

“जब कि कहते हैं कि इश्क और मुश्क छुपाये नहीं छुपते ।”

“तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया ! कैसे जाना विक्रम सूरी के बारे में ?”

“बस, जान लिया किसी तरह से ।”

“फिर भी ?”

“रात को सपना आया था ।”

“तुम मजाक कर रहे हो ।”

तभी सुनील के कोट के साथ नमिता वापिस पहुंची । उसने कोट सुनील को सौंपा तो सुनील ने पाया कि अब ये पता नहीं लग रहा था कि उस पर चाय कहां बिखरी थी ।

“थैंक्यू ।” - वो कोट पहनता हुआ बोला ।

नमिता कवेल मुस्कराई ।

“मैं अब इजाजत चाहता हूँ । नमस्ते ।”

वो घूमा और लम्बे डग भरता हुआ वहां से बाहर निकल आया । उसे उम्मीद थी कि वर्मा उसके पीछे आयेगा लेकिन उसने ऐसी कोई कोशिश न की ।

बाहर अपनी कार में सवार होने के बाद उसने अपने कोट की जेबें टटोलकर उनका सामान चौकस किया ।

सब कुछ ठीक था ।

कीर्ति से मिली चिट्ठी और पैकेट भी ।

उसने पैकेट को खोला । टाई और तस्वीरें भी ।

वो तस्वीरें वापिस पैकेट में रखने लगा था कि ठिठका ।

टाई के एनलार्जमेंट वाली तस्वीर ऊपर थी ?

क्या वो पहले नीचे नहीं थी !

उसने दिमाग पर बहुत जोर दिया लेकिन इस बाबत वो निश्चित रूप से कोई फैसला न कर सका ।

हो सकता था कि नमिता ने उस पैकेट को टटोला होता लेकिन नहीं भी हो सकता था ।

झुंझलाकर उसने तस्वीरों को वापिस पैकेट में रखा, पैकेट और चिट्ठी को अपने कोट की भीतरी जेब के हवाले किया और इंजन स्टार्ट करने लगा । तभी उसकी निगाह इमारत की तरफ उठी तो उसे पहली मंजिल की एक खिड़की में चाईजी दिखाई दी जो कि एकटक उसकी तरफ देख रही थी । सुनील ने कार की खिड़की में से हाथ निकालकर उसका अभिवादन किया लेकिन अभिवादन को कोई उत्तर उसे न मिला । फिर एकाएक वो खिड़की पर से हट गयी ।

सुनील ने एक गहरी सांस ली और फिर कार को आगे बढ़ा दिया ।

चार घन्टे की लम्बी और मुतवातर ड्राइव के बाद सुनील इकबालपुर पहुंचा ।

वहां होटल न्यू हैवन की बाबत उसे किसी से सवाल न करना पड़ा । नगर में दाखिल होते ही जिस पहली सड़क से वो गुजरा उसी पर वो था । होटल के बोर्ड से पहले उसे उसके सामने अर्जुन खड़ा दिखाई दिया । सुनील ने उसके करीब कार रोकी और उसे भीतर आने का इशारा किया ।

अर्जुन उसके पहलू में कार में आ बैठा ।

“वक्त की बड़ी पाबन्दी दिखाई, गुरुजी ।” - वो बोला ।

“क्या खबर है ?” - सुनील ने पूछा ।

“अच्छी खबर है ।”

“पता लगा कुछ ?”

“कुछ लगा ।”

“खाना खाया ?”

“अभी नहीं ।”

“कोई अच्छा रेस्टोरेंट मालूम है ?”

“इसी सड़क पर आगे जाकर एक सूरत में चमक-दमक और रोबदाब वाला रेस्टोरेंट मैंने देखा था । वो अच्छा भी है या नहीं, ये तो जा के ही पता चलेगा ।”

“वहीं चलते हैं ।”

दोनों रेस्टोरेंट में पहुंचे और भोजन का आर्डर दिया ।

“अब बोल ।” - फिर सुनील बोला - “क्या जाना ?”

“ये जाना कि आत्महत्या की वो घटना पिछले साल अप्रैल की सोलह तारीख को घटित हुई थी । और घटनास्थल वो होटल ही था, जिसकी तरफ आपने मुझे एक तुक्के के तौर पर खास तवज्जो देने के लिये कहा था । तुक्के के तौर पर, गुरुजी !”

“आगे बढ़ ।”

“मरने वाली यानी कि हर्षिता मकवाना यानी की भूतपूर्व हर्षिता थापर होटल न्यू हैवन के एक कमरे में मिसेज कमल सक्सेना के नाम से रजिस्टर्ड थी । आत्महत्या उसने एक पिस्तौल से की थी जिसे कि उसने अपनी कनपटी से लगाकर घोड़ा दबा दिया था ।”

“ये पक्की बात है कि थी ये आत्महत्या ही ?”

“हां। क्योंकि कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द पाया गया था जिसे कि बाद में तोड़ के खोल गया था। और उसने अपने पीछे एक सुइसाइड नोट भी छोड़ा था जोकि खुद उसके हस्तलेख में एक गिनती की सतारों वाली चिट्ठी थी जो किसी व्यक्तिविशेष को सम्बोधित नहीं थी और जिसमें लिखा था कि क्योंकि वो कमल के बिना नहीं रह सकती थी इसलिये जीवन से निराश होकर खुद अपने हाथों से अपनी जान ले रही थी। आत्महत्या का बिल्कुल खुलबन्द केस था वो।”

“खुलबन्द?”

“ओपन एण्ड शट केस आफ सुइसाइड।”

“हूं। ये कैसे पता चला था कि मरने वाली कोई मिसेज कमल सक्सेना नहीं, हर्षिता मकवाना या थापर थी?”

“उसके सामान से बरामद कुछ कागजात से। इन कागजात से ही पुलिस को ये भी पता चला था कि वो राजनगर के दिलीप थापर की तलाकशुदा बीवी थी। होटल के रिकार्ड से पुलिस को ये भी पता चला था कि वही युवती और एक पुरुष उससे पिछले महीने भी मिस्टर एण्ड मिसेज कमल सक्सेना के नाम से उस होटल में ठहरे थे। रजिस्टर में उन्होंने अपना जो पता लिखा था, वो था - 44, वैस्टएण्ड स्ट्रीट, विशालगढ़। उनकी पिछली बार की होटल में रिहायश के दौरान इत्तफाकन एक वाक्या हुआ था जो कि दिलचस्पी से खाली नहीं।”

“क्या हुआ था?”

“होटल के मालिक ने अपने पन्द्रह साल के लड़के को एक बड़ा कीमती कैमरा खरीदकर दिया था और वो खामखाह तस्वीरें खींचकर, रील निकालकर, प्रिंट बनवाकर, अपनी कारस्तानी देखने को तड़प रहा था। अपने इसी जोश में छोकरे ने कैमरे का रुख मिस्टर एण्ड मिसेज सक्सेना की तरफ कर दिया था। पुरुष को - सक्सेना को - जब ये अहसास हुआ था कि उसकी तस्वीर खींची जा रही थी तो उसने एकाएक अपना हैट सिर से उतारकर अपने चेहरे के सामने कर लिया था। उसकी उस हरकत की वजह से ही वो शख्स उस छोकरे को याद रह गया था और बाद में जब वो फिर वहीं आकर ठहरे थे और हर्षिता ने आत्महत्या कर ली थी तो उसने ये बात अपने पिता को बताई थी। पिता ने आगे बात पुलिस को बताई थी तो वो तस्वीर बरामद की गयी थी। वारदात के बाद वो तस्वीर यहां के लोकल अखबार में भी छपी थी। मैं उस तस्वीर का एक प्रिंट हासिल करने की बात वहां कर आया हूं, शाम तक वो मिल जायेगा।”

“उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।”

“जी!” - अर्जुन हैरानी से बोला।

सुनील ने अपनी जेब से पैकेट निकाला और उसमें से तस्वीर बरामद कर के उसे अर्जुन के सामने किया।

“यही थी न वो तस्वीर” - वो बोला - “जो तूने अखबार में छपी देखी थी?”

अर्जुन ने तस्वीर पर निगाह डाली तो उसके चेहरे पर हैरानी के भाव और भी गहरे हो गये।

“ये तो हूबहू वही तस्वीर है” - उसके मुंह से निकला - “जो मैंने अखबार में छपी देखी थी।”

सुनील ने तस्वीर को वापिस पैकेट में रखा और पैकेट जेब के हवाले किया।

“आपके पास कहां से आयी ये तस्वीर?” - अर्जुन बोला।

“आ गयी कहीं से।” - सुनील लापरवाही से बोला।

“लेकिन फिर भी...”

“तो तस्वीर में जो युवती है, वो हर्षिता है जो कि मिसेज सक्सेना के नाम से उस होटल में ठहरी हुई थी?”

“हां।”

“और हैट के पीछे मुंह छुपाये जो शख्स है, वो कमल सक्सेना है जोकि वस्तुतः युवती का वादाखिलाफ, दगाबाज यार निकला?”

“और कौन होगा?”

“होटल के रजिस्टर में उसका पता दर्ज था । पुलिस ने उसके जरिये उस तक पहुंचने की कोशिश नहीं की थी ?”

“की थी लेकिन हाथ कुछ नहीं आया था ।”

“क्यों ?”

“वो पता फर्जी था । विशालगढ़ में कोई वैस्टएण्ड स्ट्रीट है ही नहीं । एक ईस्टएण्ड स्ट्रीट वहां है लेकिन उसमें मकानों के नम्बर बत्तीस से आगे नहीं है । पुलिस ने वहां के वोटर्स की लिस्ट की और राशन कार्डों के रिकार्ड की भी छानबीन की थी । कहीं कोई कमल सक्सेना दर्ज नहीं था ।”

“यानी कि पते की तरह नाम भी फर्जी था ?”

“ऐसा ही जान पड़ता है ।”

“और ?”

“पेपर के मुताबिक बाद में हर्षिता के पिता उल्हास मकवाना ने ये दुहाई देनी शुरू कर दी थी कि उसकी बेटी का कत्ल हुआ था । उस बात को लोकल अखबार ने इतना उछाला था कि केस लोकल पुलिस के हाथों से निकलकर सी.आई.डी. के हाथों में पहुंच गया था । सी.आई.डी. के जासूसों ने बड़ी बारीकी से केस की छानबीन की थी जिसका जो नतीजा निकला था, वो यही था कि वो सच में ही आत्महत्या का केस था ।”

“तब तो मकवाना खामोश हो गया होगा ?”

“तब क्या, वो तो आज तक भी खामोश नहीं हुआ है । उसकी तो आज तक ये हाल-दुहाई जारी है कि उसकी बेटी का कत्ल हुआ था ।”

“ये हैरानी की बात नहीं कि जिस शहर में मरने वाली का पिता रहता था, उसी में वो एक होटल में ठहरी हुई थी ?”

“उस वारदात के दौर में उल्हास मकवाना यहां इकबालपुर में नहीं रहता था । वो पहले राजनगर में रहता था और फिर वहां शिफ्ट कर आया था ताकि उसकी ये हाल-दुहाई मुतवातर लोकल पुलिस के कानों में पड़ती रहती कि उसकी बेटी का कत्ल हुआ था ।”

“कारोबार क्या है उसका ?”

“सुनार है । बढिया कारीगर बताया जाता है अपने पेशे का ।”

“तभी तो यहां आया तो यहीं का हो के रह गया । कारीगरी की तो हर जगह कद्र है ।”

“वही तो ।”

“तस्वीर में तो कमल सक्सेना ने अपना चेहरा हैट में छुपा लिया था लेकिन पूछताछ के नतीजे के तौर पर उसके चेहरे-मोहरे का, उसके कद-काठ का कोई बयान सामने तो आया होगा ?”

“आया था । कई बयानों की बिना पर पुलिस ने जो फाइनल नतीजा निकाला था, वो ये था कि वो कोई पौने छः फुट कद का, कसरती बदन वाला और गोरी रंगत वाला आदमी था । चेहरे पर शत्रुघ्न सिन्हा जैसी मूंछें रखता था और कन्धों तक लटक आने वाले फिल्म स्टारों जैसे ही बाल रखता था जिनमें कि वो मांग नहीं निकालता था । आंखों पर निगाह का चश्मा लगाता था और उसकी उम्र का अन्दाजा पैंतीस और चालीस के बीच का है ।”

सुनील के मानस-पटल पर बारी-बारी उन व्यक्तियों की सूरतें उभरीं जिनसे वो मौजूदा केस के सिलसिले में मिला था । उसे सक्सेना के बयान किये गये हुलिये से किसी का भी कोई रिश्ता न लगा ।

लेकिन काबिलेगौर बात ये थी कि हर्षिता की मौत के बाद जिस नाटक को कोई नहीं जानता था, उसे कीर्ति थापर जानती थी । न जानती होती तो उस शख्स की टाई उसके अधिकार में कैसे होती !

ये तो निश्चित था कि हत्या की हालदुहाई के बाद पूछताछ के लिये पुलिस दिलीप थापर तक भी पहुंची होगी । क्या ये सम्भव था कि उस तस्वीर की एक कापी पुलिस ने ही थापर को सौंपी हो ताकि वो अपने दिमाग पर जोर देकर या अपने मिलने-जुलने वालों से पूछताछ कर

के कथित कमल सक्सेना की बाबत कोई बात बता पाता और यूं वो तस्वीर थापर के पास से होती हुई उसकी बीवी के पास पहुंच गयी हो ! लेकिन फिर ये ही सवाल सामने आता था कि अगर वो कमल सक्सेना को जानती थी तो वो उसकी बाबत खामोशी क्यों थी ? क्या उसी वजह से जो उसने कल शाम सुनील को बताया थी कि उसका आम हो जाना उसके कल्ल के इलजाम से बरी हो जाने के बावजूद उसकी जिन्दगी तबाह कर सकता था ?

अगर उन तस्वीरों का, उस टाई का हर्षिता की मौत से वाकेई कोई रिश्ता था तो फिर उन्हें सुनील के सिर थोपना भी तो कीर्ति की ज्यादाती थी !

नहीं - फिर सुनील ने खुद ही उस इलजाम की काट की - कीर्ति ने ये कहा सोचा होगा कि वो उसके दिये पैकेट को खोल लेगा ! कीर्ति का उसमें कोई दोष नहीं था, उसकी खुद की उत्सुकता ने, उसकी खास खुराफाती फितरत ने उसे उस विकट स्थिति में पहुंचाया था ।

लेकिन कमल सक्सेना से प्यार में धोखा खाकर अगर हर्षिता ने आत्महत्या कर ली थी तो इससे कीर्ति को क्या लेना-देना था ? उसकी जिन्दगी इससे कैसे बर्बाद हो सकती थी ?

“कहां खो गये, गुरुजी ?”

सुनील ने सकपकाकर अर्जुन की तरफ सिर उठाया

“कहां खो गये ?” - अर्जुन बोला ।

“कहीं नहीं ।” - सुनील बोला - “मैं सोच रहा था ।”

“ज्यादा न सोचिये । गंजे हो जायेंगे ।”

“ये उल्लास मकवाना ! उसका घर मालूम किया तूने ?”

“किया ।”

“अगर मैं उससे मिलना चाहूं तो इस वक्त वो घर पर होगा ?”

“इस वक्त क्या, वो हर वक्त घर पर होता है । अपना सुनार का काम वो घर पर ही करता है ।”

“फिर तो चलते हैं उसके घर ।”

“जरूर ।”

सुनील ने भोजन का बिल चुकाया और फिर रेस्टोरेंट से निकलकर दोनों कार में सवार हुए । अर्जुन के निर्देश पर कार चलाता सुनील वार्ड नम्बर पांच में मकान नम्बर ग्यारह के सामने पहुंचा ।

सुनील ने काल बैल बजाई ।

दरवाजा एक कोई पचास साल के लेकिन मजबूत काठी वाले सिर से तीन चौथाई गंजे आदमी ने खोला । उसके चेहरे पर तीन-चार दिन की दाढ़ी थी और उस घड़ी उसकी सूरत पर फटकार बरस रही थी ।

सुनील ने प्रश्नसूचक नेत्रों से अर्जुन की तरफ देखा ।

“यही है ।” - अर्जुन होंठों में बुदबुदाया ।

सुनील फिर उस शख्स की तरह आकर्षित हुआ और मीठे स्वर में बोला - “मकवाना साहब !”

“हां ।” - वो संदिग्ध भाव से बोला - “कौन हो तुम ? क्या चाहते हो ?”

“आपसे चन्द बातें करना चाहता हूं ।”

“करो ।”

“जरा कहीं बैठ जाते तो...”

“कोई जरूरत नहीं ।”

“मैं बहुत दूर से आया हूं ।”

“मैंने तो नहीं बुलाया । अब बोलो क्या चाहते हो ?”

सुनील ने असहाय भाव से गर्दन हिलायी और जेब से चिट्ठी वाला लिफाफा निकाला, लिफाफे में से चिट्ठी निकालकर खोली और उसे मकवाना की आंखों के सामने किया ।

“क्या है ये ?” - मकवाना बोला ।

“देखिये ।” - सुनील बोला ।

“कोई चिट्ठी मालूम पड़ती है ।”

“चिट्ठी ही है । अब जरा पढ़िये इसे ।”

“मैं चश्मे के बिना नहीं पढ़ सकता । तुम्हीं बताओ क्या लिखा है इसमें ?”

“ठीक है । सुनिये ।”

सुनील ने उसे चिट्ठी पढ़कर सुनायी और बोला- “अब बोलिये ।”

“मैं क्या बोलूं ?” - मकवाना पूर्ववत् शुष्क स्वर में बोला ।

“ये चिट्ठी आपने लिखी है ?”

“मैंने नहीं लिखी ।”

“ये हाथ से लिखी गयी चिट्ठी है । इस बात की तसदीक बड़ी आसानी से हो सकती है कि ये हस्तलेख आपका है या नहीं ।”

“बोला न मैंने नहीं लिखी । और तुम कौन होते हो मेरे से ऐसे सवाल पूछने वाले ?”

“मेरा नाम सुनील है । ये मेरा सहयोगी अर्जुन है ।”

“मैंने नाम नहीं पूछा ।”

“हम पत्रकार हैं । राजनगर से आये हैं । मैं ‘ब्लास्ट’ का चीफ रिपोर्टर हूं । ‘ब्लास्ट’ का नाम तो सुना होगा आपने ! नेशनल डेली है ।”

उसने उत्तर न दिया ।

“अपने भूतपूर्व दामाद दिलीप थापर के कत्ल की खबर तो लगी होगी आपको ?”

“अरे, मेरी खबर या बेखबरी से तुमने क्या लेना-देना है ? तुम अपना मकसद बोलो यहां आने का ?”

“मेरा मकसद आपको एक बहुत बड़ी जहमत से निजात दिलाना है, आइन्दा वक्त में जिसके कि आप हवाले हो सकते हैं ।”

“अरे, क्या पहेलियां बुझा रहे हो ? साफ-साफ जुबान बोलो ।”

“आप पर दिलीप थापर के कत्ल का इलजाम आ सकता है ।”

“क्या बकते हो ?”

“मौजूदा हालात में आपकी ये चिट्ठी आपको जेल के सींखचों के पीछे पहुंचा सकती है ।”

“मैंने बोला न कि ये चिट्ठी मैंने नहीं लिखी।”

“पुलिस बड़ी आसानी से ये बात स्थापित कर लेगी कि ये चिट्ठी आपने लिखी है या नहीं। जैसे जुबानी जमाखर्च से आप इस वक्त मेरे से पीछा छुड़ाने की कोशिश कर रहे हैं, वैसे आप पुलिस से पीछा नहीं छुड़ा पायेंगे।”

“लेकिन ये चिट्ठी पुलिस के पास थोड़े ही है? ये तो तुम्हारे पास है।”

“ये पुलिस के पास पहुंच सकती है।”

“कैसे पहुंच सकती है?”

“मेरे पहुंचाये पहुंच सकती है।”

“तुम ऐसा क्यों करोगे?”

“कोई खास वजह नहीं। आप मेरे एक सवाल का माकूल जवाब देगे तो नहीं पहुंचेगी ये चिट्ठी पुलिस के पास। उन्हें इसकी भनक भी नहीं लगेगी। जैसे” - सुनील ने अपलक मकवाना की तरफ देखा - “आज तक नहीं लगी।”

“तुम्हारे पास कहां से आयी ये चिट्ठी?”

“वो एक जुदा मसला है।”

वो खामोश हो गया। उसने तनिक बेचैनी से पहलू बदला।

“तो फिर क्या जवाब है आपका?” - सुनील बोला।

“अरे, मैं पहले सवाल तो सुनूं।” - वो झल्लाया-सा बोला।

“मेरे सवाल का जवाब देने की बाबत क्या जवाब है आपका?”

“सवाल बोलो।”

“परसों, रात ग्यारह और बारह बजे के बीच आप कहां थे?”

“क्यों जानना चाहते हो?”

“क्योंकि इसी वक्त के दौरान परसों रात दिलीप थापर का, उस शख्स का जिसे कि आपने चिट्ठी लिखी थी, कत्ल हुआ था।”

“मैंने उसका कत्ल नहीं किया। मैं भला क्यों उसका कत्ल करता?”

“कारण चिट्ठी की इबारत में से साफ झलक रहा है।”

“मैंने ये चिट्ठी नहीं लिखी।”

“एक ही बात बार-बार भजना बन्द कीजिये, जनाब।” - सुनील चिढ़कर बोला- “बार-बार दोहराने से कोई झूठ सच नहीं हो जाता।”

“मेरी बेटी के साथ जो बीती, उसे डेढ़ साल से ऊपर हो गया है। मैं क्या अब, इतना वक्त गुजर जाने के बाद उससे बदला निकालता?”

“बासी कढ़ी में उबाल देर से आता है।”

“मेरा उसके कत्ल से कोई लेना-देना नहीं।”

“थे कहां आप कत्ल के आसपास?”

“यहीं था। सोया पड़ा था।”

“कोई गवाह ?”

“कहां से आता ? मैं तनहा आदमी हूं। अमूमन रात को तो क्या, मैं दिन में भी घर में अकेला ही होता हूं।”

“यानी कि अपनी बेगुनाही का कोई अकाट्य सबूत आप नहीं पेश कर सकते ?”

“कैसे करूं ?”

“जब कि आपके गुनाह का सबूत ये चिट्ठी बन सकती है।”

“तुम इसे पुलिस को सौंपोगे ?”

“कोई एतराज ?”

“जरूरत क्या है ?”

“हर्ज भी क्या है ?”

“इसे पुलिस को सौंपने से तुम्हें क्या मिलेगा ?”

“क्या मतलब ?”

“पुलिस से तो तुम्हें बदले में शुक्रिया सुनने को भी मिल जाये तो भली कहना जब कि अगर ये चिट्ठी तुम मुझे लौटा दो तो मैं...”

वो खामोश हो गया। उसने आशापूर्ण नेत्रों से सुनील की तरफ देखा।

“यानी कि” - सुनील बोला- “आप कबूल करते हैं कि ये चिट्ठी आपने लिखी है ?”

“चिट्ठी लिखने के पीछे मेरा कोई गम्भीर मकसद नहीं था।” - वो धीरे से बोला- “मैंने सिर्फ वक्ती जुनून के हवाले होकर, जज्बात की रौ में बहकर ये चिट्ठी लिखी थी।”

“मुझे आपसे हमदर्दी है।”

“तो ये चिट्ठी मुझे दे दो। बदले में मैं तुम्हें हजार रुपये देने को तैयार हूं।”

“सारी।”

“दो हजार।”

“बोला न, सारी।”

“पांच।”

“बन्दानवाज, ये चिट्ठी बिकाऊ नहीं है।”

“क्यों बिकाऊ नहीं है ?”

“क्योंकि ये मेरी मिल्कियत नहीं है। जिस चीज का मैं मालिक नहीं, उसे मैं कैसे बेच सकता हूं।”

“तो कौन है इसका मालिक ?”

“वही जिसे आपने ये चिट्ठी लिखी थी।”

“वो तो मर गया ?”

“उसकी बेवा, जो कि उसकी वारिस है।”

“तुम ये चिट्ठी उसे लौटाओगे ?”

“हां । फिर आगे जो करना होगा, वो खुद करेगी ।”

“ये चिट्ठी उसके किसी काम की नहीं । इसे अपने काम की बनाओ । मैं दस हजार...”

“ये चिट्ठी उसके पति के कातिल को उसकी करतूत की सजा दिलाने में मददगार साबित हो सकती है ।”

“मिस्टर, मेरा यकीन करो । मैंने उसका कत्ल नहीं किया ।”

सुनील ने लापरवाही से कन्धे झटकाये ।

“ये चिट्ठी में तुमसे छीन भी सकता हूं ।”

“अच्छा !” - सुनील विनोदपूर्ण स्वर में बोला ।

“हां ।” - वो दृढ़ स्वर में बोला ।

“हम दो हैं ।”

“मैं दोनों को देख लूंगा ।”

“क्या कहने !”

मकवाना एकाएक सुनील के चिट्ठी वाले हाथ पर झपटा । चिट्ठी उसके हाथ में आने से बाल-बाल ही बची । उसके धक्के से चिट्ठी सम्भालता सुनील पीछे को लड़खड़ाया तो जमीन पर गिर पड़ा । मकवाना ने उस पर छलांग लगा दी और उसकी छाती पर चढ़कर फिर उसका चिट्ठी वाला हाथ अपने काबू में करने की कोशिश करने लगा । अर्जुन ने उसे पीछे से पकड़कर सुनील पर से उठाने की कोशिश की तो मकवाना ने अपनी पीठ को इतनी जोर से पीछे को हूला कि अर्जुन उस पर से छिटककर परे जा कर गिरा । वो फिर सुनील के चिट्ठी वाले हाथ को काबू में करने की कोशिश करने लगा । पता नहीं कहाँ से उस वक्त उसमें ऐसी बला की ताकत आ गयी थी कि सुनील उसके नीचे दबा आजाद होने को छटपटा रहा था ।

अर्जुन फिर उस पर झपटा लेकिन जितनी तेजी से वो सामने झपटा उस बार भी उतनी ही तेजी से वो पीछे जाकर गिरा ।

तभी वातावरण में कए अधिकारपूर्ण आवाज गूंजी - “ये क्या हो रहा है ? बन्द करो ये लड़ना-भिड़ना वर्ना सबको गिरफ्तार कर लूंगा ।”

प्रतिक्रियास्वरूप क्षण भर को मकवाना की रीछ जैसी पकड़ सुनील पर से ढीली हुई ।

सुनील ने जोर से उसे अपने ऊपर से परे धक्का दिया ।

“अरे, बन्द करो ये फाइटिंग, वर्ना सीधा वन टू का ट्वैल्व कर दूंगा ।”

सब-इन्स्पेक्टर अनिल कपूर !

मकवाना सुनील के शरीर पर से परे को उलटा । सुनील ने उठकर खड़ा होने का उपक्रम किया लेकिन अभी वो मुकम्मल तौर से सीधा हो भी नहीं पाया था कि एक अरने भैसे की तरह बिफरा हुआ मकवाना फिर उससे लिपट गया ।

दोनों फिर जमीन पर कलाबाजियां खाने लगे ।

“मैं, गोली चला दूंगा ।” - अनिल कपूर चिल्लाया ।

मकवान ने जैसे सुना ही नहीं ।

सुनील को अपने सामने अनिल कपूर दिखाई दिया । उसने देखा कि उसने अपनी रिवॉल्वर निकालकर नाल की तरफ अपने हाथ में पकड़ ली थी । फिर आगे बढ़कर उसने रिवॉल्वर की मूठ का प्रहार सुनील के ऊपर चढ़े मकवाना की खोपड़ी पर करने की कोशिश की । मूठ

मकवाना की खोपड़ी की जगह उसके बैल जैसे मजबूत कन्धे से टकराई, वो तड़पकर सीधा हुआ तो उसका सिर कपूर की छाती से टकराया, साथ ही एक जोर की धांय की आवाज हुई ।

गोली चल गयी थी ।

वो आवाज होने की देर थी कि जैसे तमाम एक्शन फ्रीज हो गया । सब हकबकाये से एक-दूसरे को देखने लगे और सोचने लगे ।

गोली कैसे चली ? किसे लगी ?

“हाय !”

तब सुनील ने देखा कि अनिल कपूर के एक जूते के अग्र भाग में छेद दिखाई दे रहा था और वो उसे दोनों हाथों से थामे हाय हाय करता दूसरे पांव पर नाच रहा था ।

रिवॉल्वर उसके हाथ से छिटककर परे जा गिरी थी ।

“हाय मर गया !”

सुनील उठकर खड़ा हुआ । बात उसकी समझ में आयी तो उस विकट स्थिति में भी उसकी हंसी छूटने लगी ।

अपने फिल्मी अन्दाज़ में अनिल कपूर ने रिवॉल्वर को उलटी कर के हाथ में थामा था, वो पता नहीं कैसे चल गयी थी और गोली उसी के पांव में जा लगी थी ।

तब तक वहां भीड़ इकट्ठी होने लगी थी लेकिन भीड़ को क्योंकि सामने कए पुलिस अधिकारी भी दिखाई दे रहा था, इसलिये कोई करीब नहीं फटक रहा था ।

सुनील ने अर्जुन को इशारा किया । तत्काल अर्जुन कार की ओर सरकने लगा । सुनील ने भी उसका अनुकरण किया ।

अनिल कपूर जमीन पर बैठ गया और अपने घायल पांव का जूता उतारने लगा ।

“बीच सड़क पर लड़ते है साले कमीने । पता नहीं कहां-कहां से आ जाते है । साले जा के कमीनिस्तान में नहीं रह सकते जहां से कि आये हैं । यहीं मरेंगे । सब को गिरफ्तार कर लूंगा । हाय ! हाय !”

सुनील और अर्जुन कार में सवार हो गये ।

फिर कार तोप से छूटे गोले की तरह वहां से भागी ।

“हम कहां जा रहे हैं ?” - एकाएक अर्जुन बोला ।

“विशालगढ़ ।” - सुनील ने उत्तर दिया - “करीब ही है । बस थोड़ी देर का ही काम है, फिर वापिस चलते हैं ।”

“वापिसी में वो फिर तो नहीं मिल जायेगा ?”

“कौन ?”

“वही गामा पहलवान ! तौबा ! हम दोनों के काबू में नहीं आ रहा था । कैसे शैतान की तरह भिड़ रहा था !”

“हां । मैं अकेला होता तो कमीना जरूर मेरी हालत हस्पताल जाने जैसी कर देता ।”

“या श्मशान घाट जाने जैसी ?”

सुनील ने एक क्षण को सड़क पर से निगाह हटाकर उसे घूरा ।

अर्जुन ने उससे निगाह न मिलायी ।

“वो सब-इन्स्पेक्टर वहां कैसे पहुंच गया ?” - वो बोला ।

“कमीना मेरे पीछे लगा हुआ था । मैंने एक बार टाला था तो टल गया था लेकिन लगता है कि दिखाने को ही टला था, उल्टे अब ज्यादा होशियारी से पीछे लग लिया था ।”

“लेकिन प्रकट तो देर से भया ।”

“हो सकता है अभी भी न भया होता अगरचे कि पीछे मारकुटाई का आलम न बन गया होता । आखिर पुलसिया ठहरा । आंखों के आगे फौजदारी होती देखकर सरकारी धौंसपट्टी से कैसे बाज आ सकता था !”

“अपने ही पांव में गोली मार ली !”

“जो कि अच्छा ही हुआ । अब कुछ देर तो टिककर बैठेगा ।”

“वो... मकवाना... थापर का कातिल हो सकता है ?”

“मुझे उम्मीद नहीं । जो शख्स किसी को धमकी-भरी चिट्ठी लिखते वक्त अपने हैण्डराइटिंग को छुपाने तक की समझदारी नहीं दिखा सकता था, वो अपनी करतूत को कवर करने के लिये बोट में लम्बे पलीते वाला बारूद लगाने और वहां किसी और के खिलाफ सबूत प्लांट करने वैसी होशियारी भी नहीं दिखा सकता था । किसी भी समस्या से निपटने का उसका स्टाइल जोराजोरी, हाथापायी और धींगामुश्ती ही मालूम होता है । थापर की लाश ऐसी क्षत-विक्षत हालत में पायी गयी होती जैसे किसी ने मार-मारकर उसकी जान निकाल दी थी तो मैं मान सकता था कि वो मकवाना का काम था ।”

“आप ठीक कह रहे हैं ।”

“ऊपर से ये बात भी हज्म होने वाली नहीं कि बदले की भावना से थापर के खिलाफ कोई कदम उठाने से पहले उसने थोड़ा बहुत नहीं डेढ़ साल से भी ज्यादा का इन्तजार किया ।”

“वो चिट्ठी के लिये क्यों मरा जा रहा था ?”

“क्योंकि मूर्ख है । कमअक्ल है । और इसीलिये वो थापर का कातिल नहीं हो सकता क्योंकि कि वो मूर्ख है, कमअक्ल है । अगर उसमें अक्ल होती तो वो थापर को धमकी-भरी चिट्ठी लिखता ! वो भी अपने खुद के हैण्डराइटिंग में ! कुछ वो वैसे ही कमअक्ल है, रही-सही अक्ल तक बेटी की मौत के गम ने मार दी होगी ।”

“तो फिर कातिल कौन है ?”

“यही तो वो लाख रूपये का सवाल है जिसके जवाब की तलाश में हम भटक रहे हैं ।”

अर्जुन खामोश हो गया ।

तभी कार विशालगढ़ में दाखिल हुई ।

पहले कमर्शियल स्ट्रील और फिर उसमें एम्पायर स्टोर तलाश करने में उन्हें कोई दिक्कत न हुई ।

एम्पायर स्टोर मर्दों के लिये फैशनेबल रेडीमेड गारमेन्ट्स का बहुत बड़ा शो रूम निकला । उसका मालिक एक ऐसा छैलछबीला नाजुक बदन नौजवान निकला जो कि सीधा फ्रांस से आयातित मालूम होता था ।

सुनील ने उसे अपना परिचय दिया और फिर उसे जेब से निकालकर सिल्क की हैण्ड पेन्टिड टाई दिखाई ।

“हमारी ही आइटम है ।” - वो तत्काल निस्संकोच बोला ।

“काफी बिकने वाली आइटम है ये ?” - सुनील बोला ।

“नहीं । काफी बिकने वाली तो नहीं ।”

“वजह ?”

“महंगी आइटम है । हर किसी के मतलब की भी नहीं । खास तरह की शौकीनमिजाजी को केटर करने वाली आइटम है ये ।”

“महंगी क्यों है ?”

“क्योंकि हर टाई एक अलहदा आर्टवर्क है जो कि किसी दूसरी टाई से नहीं मिलता । एक-एक पीस आर्टिस्ट के हाथ से पेंट करना पड़ता है ।”

“कितने की है ये टाई ?”

“सात सौ रूपये की ।”

“अच्छा ! इतनी महंगी ?”

“आधी रकम आर्टिस्ट की फीस होती है न ।”

“ये नीचे एक कोने में ए के ए लिखा हुआ है । इसका क्या मतलब है ? क्या आलसो नोन ऐज ?”

वो हंसा और बोला- “ये आर्टिस्ट का नाम है ।”

“आलसो नोन ऐज ?” - सुनील हैरानी से बोला ।

“जी नहीं, आनन्द कुमार आनन्द । आलसो नोन ऐज विप्लव ।”

“विप्लव ?”

“कवि भी है । वीर रस का । इसीलिये तरक्की न कर सका । उसके भीतर का कवि और कलाकार बस आपस में लड़ते ही रहते हैं, इसीलिये दो किश्तियों का सवार बनकर रह गया । कभी अपनी मंजिल न पा सका ।”

“आप जानते हैं उसे ?”

“हां । मैंने ही तो उसे चार पैसे कमाने का ये आइडिया दिया था । वो यहीं शोरूम में बाहर बरामदे में बैठता था और ग्राहक की खास फरमायश पर खास टाई पेंट करके उसे देता था । उसके पास कई पेंसिल स्कैच होते थे जो वो ग्राहक को दिखाता था । ग्राहक जो स्कैच छांटता था, वो उसको टाई पर पेंट कर देता था । जो स्कैच एक टाई पर पेंट हो जाता था, वो दोबारा किसी दूसरी टाई पर पेंट नहीं किया जाता था ।”

“यानी कि ऐसी किसी एक प्रकार की दो टाइयां नहीं हो सकतीं ?”

“बिल्कुल नहीं हो सकतीं । इसीलिये तो ये आइटम एक्सक्लूसिव है, महंगी है ।”

“इसे पेंट करने में तो बहुत वक्त लगता होगा ?”

“नो, सर । बड़ी हद आधा घन्टा । स्कैच सिम्पल हो तो पन्द्रह मिनट । लेकिन आधे घन्टे से ज्यादा तो कभी भी नहीं ।”

“आप याद कर सकते हैं कि ये टाई आपके यहां से किसने खरीदी थी, कब खरीदी थी ?”

“मैं नहीं लेकिन मैनेजर को याद हो सकता है । मैं उसे बुलाता हूं ।”

“हां । प्लीज ।”

मैनेजर एक घुटनों तक आने वाली झोले जैसी मर्दाना कमीज और स्लैक्सधारी, कटे बालों वाली युवती निकली ।

“काफी पुरानी सेल की आइटम है ।” - वो टाई को मुआयना करने के बाद बोली - “दो ढाई साल तो हो ही गये होंगे ।”

“आप याद कर सकती हैं कि यहां से ये टाई किसने खरीदी थी ?”

“नहीं ।”

“फिर क्या बात बनी ?” - सुनील निराश स्वर में बोला ।

“लेकिन आर्टिस्ट को शायद याद हो ।”

“इतने सालों बाद ।”

“ऐसी टाइयां उसने कोई सैंकड़ों में पेंट नहीं की थीं । सात सौ रूपये की इस किस्त की टाई का ग्राहक कभी-कभार ही आता था । बीस-पच्चीस से ज्यादा टाइयां नहीं पेंट की थीं उसने । इसलिये हो सकता है उसे ये डिजाइन पसन्द करने वाले ग्राहक की याद हो ।”

“ये सिलसिला ज्यादा देर नहीं चला था ।” - मालिक बोला ।

“क्यों ?”

“क्योंकि इस खाम आइटम का ग्राहक कभी-कभार आता था जबकि आर्टिस्ट को यहां हर वक्त हाजिरी भरनी पड़ती थी । जल्दी ही बोर हो गया था वो ।”

“उसका कोई पता-ठिकाना ।”

मालिक ने बताया ।

वो पता चाल से जरा बेहतर एक चार मंजिली इमारत का निकला जिसकी चौथी मंजिल के एक कमरे में आर्टिस्ट कम कवि आनन्द कुमार आनन्द उर्फ विप्लव रहता था । वो कोई पचास साल का रूखे बिखरे बालों वाला, घनी दाढ़ी-मुँछ वाला आदमी निकला ।

सुनील ने उसे अपना और अर्जुन का परिचय दिया, एम्पायर स्टोर के मालिक का हवाला दिया और उसे टाई दिखाई ।

“ये टाई आपने पेंट की थी ?” - उसने पूछा ।

“हां, भई ।” - वो बड़ी स्पष्ट, बड़ी तीखी आवाज में बोला - “की थी । पापी पेट की खातिर की थी । हुसेन भी तो कभी सिनेमा के बोर्ड बनाता था ।”

“ग्राहक की याद है आपको ?”

“भई, ढाई साल से ऊपर हो गये हैं ।”

“ओह ! यानी कि...”

“लेकिन फिर भी मुझे सब याद है ।”

“दैट्स गुड न्यूज ।”

“न सिर्फ मुझे सब याद है, मैं तुम्हें उस आदमी का स्कैच भी दिखा सकता हूँ जिसके लिये मैंने ये टाई पेंट की थी ।”

“वाह ! इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती है ।”

“एम्पायर स्टोर के बाहर बैठा मैं तफरीहन उन आदमियों की सूरतें भी स्कैच कर लिया करता था जिनके लिये कि मैं टाई पेंट करता था ।”

“ऐसा स्कैच बनाने में तो बड़ा टाइम लगता होगा ।”

उसने उत्तर न दिया । उसने मेज पर से एक पैड और एक पेंसिल उठायी और बड़ी दक्षता से उस पर पेंसिल के स्ट्रोक लगाने शुरू किये । फिर उसने पैड में से वो वरका फाड़कर सुनील को थमा दिया ।

सुनील ने देखा पैड पर से उसकी सूरत उसकी तरफ झाँक रही थी ।

“वाह !” - सुनील प्रशंसात्मक स्वर में बोला- “कमाल कर दिया आपने तो ।”

“कितनी देर लगी ?” - कलाकार बोला ।

“दो मिनट । बड़ी हद तीन ।”

“सो, देयर यू आर ।”

“आप तोप हैं, जनाब । बल्कि पोप हैं, घटाटोप हैं ।”

वो हंसा ।

“मेरे पास एक एलबम है” - फिर वो बोला- “जिसमें मेरे द्वारा एम्पायर स्टोर के लिये पेंट की गयी तमाम टाइयों के और उनके ग्राहकों के स्कैच हैं । उसमें इस टाई पर पेंट हुई सीनरी का स्कैच भी जरूर होगा । और अगर वो स्कैच होगा तो उसकी बाजू में इस टाई को खरीदने वाले ग्राहक का भी स्कैच जरूर होगा ।”

“बन्दानवाज, इससे पहले कि मैं सस्पेंस से बेहोश हो जाऊं, वो एलबम निकालिये न !”

सहमतिसूचक ढंग से सिर हिलाया वो एक अलमारी के करीब पहुंचा, उसमें से उसने एक बड़ी सी स्कैचबुक बरामद की और उसके साथ वापिस सुनील के पास पहुंचा । उसने उसका एक-एक पन्ना पलटना शुरू किया ।

एक स्थान पर वो ठिठका । उसने एक निगाह सुनील के हाथ में थमी टाई पर डाली और फिर बोला - “यही है ।”

सुनील ने उचककर उस पृष्ठ पर निगाह डाली जिस पर टाई पर अंकित दृष्य का स्कैच था और एक आदमी की सूरत का स्कैच था ।

तत्काल उसके नेत्र फैले ।

“ये है उस आदमी की सूरत जिसने ये टाई खरीदी थी ?” - वो उत्तेजित स्वर में बोला ।

“हां ।” - कलाकार बोला - “तुम पहचानते हो इसे ?”

“पहचानता भी हूं और जानता भी हूं ।”

“अच्छा ! कौन है ये ?”

“विवेक वर्मा ।”

वे फिर इकबालपुर पहुंचे ।

इस बार सुनील का लक्ष्य होटल न्यू हैवन था ।

होटल का मालिक एक बड़ा झोलझाल, गायबख्खाल आदमी निकला ।

सुनील ने उसे विवेक वर्मा की सूरत का वो स्कैच दिखाया जिस पर उसकी फरमायश पर कलाकार आनन्द कुमार आनन्द ए के ए विप्लव ने उसके ऊपरी होंठ पर शत्रुघन सिन्हा जैसी मूँछे उकेर दी थीं, आंखों पर चश्मा लगा दिया था और बाल बिना मांग के पीछे को कन्ची किये हुए कन्धों तक झूलने वाले बना दिये थे ।

“आप पहचानते हैं इसे ?” - सुनील आशापूर्ण स्वर में बोला ।

मैनेजर के चेहरे पर अनिश्चय के भाव आये ।

“क्या ये कमल सक्सेना की सूरत है ?”

“कमल सक्सेना ?”

“जो कभी आपके होटल में ठहरा था । उस औरत का पति बन के जिसने यहां आत्महत्या कर ली थी ।”

“वो तो बहुत पुरानी बात हो गयी है ।”

“फिर भी याद कीजिये अपने कमल सक्सेना नाम के उस गैस्ट की सूरत को । क्या ये स्कैच उसी आदमी की सूरत का है ?”

“कहना मुहाल है ।”

“कोशिश कीजिये । जोर दीजिये याद्दाशत पर ।”

“मुझे खास कुछ याद नहीं आ रहा ।”

“आप उस शख्स की सूरत कैसे भूल सकते हैं जो दो बार आपके होटल में ठहरा और जिसका नाम आपके होटल में हुए इतने बड़े काण्ड से जुड़ा हुआ है ?”

“भई, वक्त बहुत गया है न ? अब वो कोई कल की बात तो है नहीं !”

“फिर भी...”

“आई एम सारी ।”

“आपका वो बेटा कहाँ है जिसने अपने कैमरे से बाहर सड़क पर इस शख्स की तस्वीर खींची थी ? शायद वो इस स्कैच को पहचान ले !”

“वो... वो तो... अब इस दुनिया में नहीं है ।”

“क्या !”

“टाईफायड ने जान ले ली । पिछले साल ।”

उसने बड़े अवसादपूर्ण ढंग से गर्दन हिलाते हुए आह भरी ।

“ओह । आई एम सारी ।”

आगे उससे कुछ पूछना बेकार था । वो शख्स कमल सक्सेना की सूरत में विवेक वर्मा की शिनाख्त का जरिया नहीं बनने वाला था । और जो दूसरा शख्स - उसका बेटा - कमल सक्सेना की शिनाख्त कर सकता था, वो मर चुका था ।

रात नौ बजे वो दोनों ‘ब्लास्ट’ के दफ्तर में जाकर लगे ।

सुनील राय के कमरे में पहुंचा ।

“कहां थे तुम ?” - राय उसे देखते ही बोला ।

“क्यों ?” - सुनील सकपकाया- “क्या हुआ ?”

“पुलिस तुम्हें तलाश कर रही है । वो इंस्पेक्टर, जो तुम्हारा यार है...”

“प्रभूदयाल !”

“वही । कई बार यहां फोन कर चुका है । एक बार खुद भी फेरा लगा गया है ।”

“हो क्या गया है ?”

“कुछ ठीक से नहीं बताया उसने लेकिन कहता था कि तुम्हारी वजह से उसका एक सब-इंस्पेक्टर जख्मी हो गया है । तुमने उसके किसी सब-इंस्पेक्टर को गोली मारी है ?”

“पागल हुए हो !”

“तो तुम्हारी वजह से उसे गोली लगी होगी ।”

“वो भी गलत ।”

“तो क्या बात हुई थी ?”

“उस अहमक पुलसिये ने - जो रिवॉल्वर में सेफ्टी कैच की अहमियत नहीं समझता, पुलिस अधिकारी होने के बावजूद नहीं समझता - खुद अपने पांव में गोली मार ली थी ।”

“कैसे ?”

सुनील ने बताया ।

“ओह !” - राय बोला - “अब क्या इरादा है तुम्हारा ? उस इंस्पेक्टर का फोन फिर आता ही होगा ।”

“मैं उससे मिल के आता हूं ।”

“मैं साथ चलूं ?”

“काहे को ? मुझे वहां क्या खतरा है ?”

“फिर भी कोई जरूरत पड़े तो फोन करना ।”

“ठीक है ।”

“तुम्हारे लौटने तक मैं यहीं हूं ।”

सुनील वहां से रुखसत हुआ ।

वो पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचा ।

रात की उस घड़ी में प्रभूदयाल के ऑफिस वाले फ्लोर पर सन्नाटा था । उसके कमरे के बाहर कोई हवलदार भी नहीं था जो कि हमेशा वहां होता था । वो दरवाजे के करीब पहुंचा तो उसने पाया कि उसका एक पल्ला खुला हुआ था और भीतर से वार्तालाप की आवाजें आ रही थीं ।

सुनील दरवाजे की ओट में ठिठक गया और कान लगाकर सुनने लगा ।

“सर, आप उस आदमी के साथ नर्मी से पेश आ रहे हैं ।” - उसे सब-इंस्पेक्टर अनिल कपूर की आवाज सुनाई दी - “जब तक वो गिरफ्तार नहीं होगा और उसकी डण्डा परेड नहीं होगी, तब तक वो नहीं बतायेगा कि उसने कौन-कौन सी कन्सीलनिंग की हुई है ।”

“क्या !” - प्रभूदयाल की आवाज आयी ।

“कौन-कौन सी बातें छुपाई हुई हैं । आपको तो उसका इसी बात पर वन टू का ट्वैल्व कर देना चाहिये कि उसके पास उल्हास मकवाना का दिलीप थापर को लिखा जान से मार देने वाली धमकी वाला खत था लेकिन उसने उसकी पुलिस से कंसीलनिंग करके रखी ।”

“भई, वो जुबान बोलो जो मेरी समझ में आये ।”

“उसको वो खत अपने पास छुपा के नहीं रखना चाहिये था। उसको उसे पुलिस को सौंपना चाहिये था। मैं उसके पीछे लगा इकबालपुर तक गया। अपनी जान पर खेलकर जब मैंने वो खत अपने काबू में लेने की कोशिश की तो वो फरार हो गया। उस खत जैसे और भी कई कालू उसके पास हो सकते हैं।”

“कालू?”

“सूत्र।”

“ओह! कलू।”

“सर, मुझे तो लगता है कि उसी ने ब्लड किया है।”

“अब पांव कैसा है तुम्हारा?”

“ठीक है, सर। इत्तफाक से गोली हड्डी में नहीं टकराई थी, वो अंगूठे और उंगली के बीच में से गुजर गयी थी, बस जरा दुखता है लेकिन वैसे बिल्कुल ठीक है।”

“गुड।”

“सर, मैं कह रहा था कि वो... वो सुनील... वो ही...”

“कातिल हो सकता है। मैंने सुना।”

“हमें उसे फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिये और जबरन उससे उसकी कनफैसिंग करानी चाहिये।”

“क्या!”

“कुबुलवाना चाहिये उससे कि वो कातिल है।”

“वो कातिल नहीं, एक जिम्मेदार प्रैस रिपोर्टर है।”

“रिपोर्टर है तो जाकर रिपोर्टिस्तान में रहे जहां से कि वो आया है, यहां क्या कर रहा है।”

“तुम... कब से सब-इंस्पेक्टर हो?”

“जी, चार साल से।”

“पहले किसी कत्ल के केस से वास्ता पड़ा?”

“जी! जी, नहीं।”

“यानी कि कत्ल के केस की तपत्तीश का तुम्हें कोई तजुर्बा नहीं।”

“आगे-आगे हो जायेगा, सर अभी तो मैंने बस कदम रखा है इस कारोबार में।”

“चार साल से तुम सब-इंस्पेक्टर हो और कहते हो कि अभी तुमने कदम रखा है इस कारोबार में?”

“सर, वो क्या है कि...”

“शटअप। मुझे मालूम है कि वो क्या है। जो बातें पुलिस ट्रेनिंग में पहले दिन सिखाई जाती हैं, वो तुम्हें आज तक नहीं आतीं! चार साल से सब-इंस्पेक्टर हो लेकिन इतनी मामूली बात नहीं समझते कि सर्विस रिवॉल्वर का सेफ्टी कैच लगा के रखते हैं! खुद अपने आपको गोली मार ली! गोली इधर-उधर चल जाती, एक से ज्यादा गोलियां चल जातीं तो जानते हो तुम्हारे सामने वो तीनों जने मरे पड़े होते जिनकी धींगामुश्ती तुम बन्द कराने की कोशिश कर रहे थे! चार साल के वक्फे को अभी कदम रखा बताते हो पुलिस के कारोबार में इसी रफ्तार से आगे बढ़े तो किसी मुकाम तक पहुंचने तक तो तुम्हें दस जन्म दरकार होंगे। और तब भी क्या करोगे? जैसे आज अपना अंगूठा फोड़ा, वैसे सौ-पचास नागरिकों की मूंड़ी उड़ा दोगे?”

“सर, सर...”

“किसने कहा था तुम्हें चौकी छोड़कर सुनील के पीछे इकबालपुर जाने के लिये ? गये भी तो उसकी किन्हीं फौजदारियों में दखलअन्दाज होने की क्या जरूरत थी तुम्हें ?”

“सर, मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे यकीन था कि वो कि कातिल है ।”

“और तुम अकेले कातिल के पीछे लग लिये ताकि वो तुम्हें भी कत्ल कर देना और तुम्हारी ये प्राइज विनिंग डिस्कवरी, कि वो ही कातिल था, तुम्हारे साथ जहन्नुम रसीद हो जाती !”

अनिल कपूर के मुंह से बोल न फूटा ।

“फिल्मों में जो पुलिस इंस्पेक्टर का लार्जर दैन लाइफ इमेज बनता है, उसमें फिल्म का स्टोरी राइटर, उसका डायरेक्टर, उसका डायलॉग राइटर, उसका फाइट कम्पोजर उसके मददगार होते हैं । इसलिये होते हैं क्योंकि उन्होंने हीरो का इकबाल बुलन्द करना होता है । असल जिन्दगी में ये सब कुछ नहीं होता । यहां अपना इकबाल खुद अपनी मेहनत से, खुद अपनी मशक्कत से, खुद अपनी जांमारी से बुलन्द होता है, न कि अपनी सर्विस रिवॉल्वर से खुद पर ही गोली चलाकर ! समझे ?”

“यस, सर ।”

“नाओ, गैट आउट आफ माई साइट ।”

“यस, सर ।”

सुनील वहां से पहले ही खिसक गया ।

बुरी तरह भड़के हुए प्रभुदयाल से मिलने के लिये वो मुनासिब वक्त नहीं था ।

Chapter 4

सुनील नार्थ शोर पहुंचा ।

उसने थापर की कोठी की काल बैल बजाई ।

दरवाजा नमिता ने खोला ।

“हल्लो !” - सुनील जबरन मुस्कराता हुआ बोला ।

“तुम !” - वो सकपकाई - “इतनी रात गये कैसे आये ?”

“कितनी रात, जाने जिगर ? अभी तो मुश्किल से शाम ढली है ।”

“क्या चाहते हो ?”

“भीतर आना चाहता हूं । बाहर ठण्ड लग रही है ।”

“क्यों भीतर आना चाहते हो ?”

“ब्राइटआइज बड़ी रूखाई से पेश आ रही हो । ऐसे एकाएक तेवर बदलकर दिखा रही हो जैसे...”

“मतलब की बात करो ।”

“मतलब की बात मैंने तुमसे नहीं, विवेक वर्मा से करनी है ।”

“क्या बात करनी है ?”

“तुम्हें बताना जरूरी है ?”

“हां ।”

“बड़ी ढीठ हो !”

वो खामोश रही ।

“जानेजहां, वो मर्दों वाली बात है, तुम्हारा उसे सुनना ठीक नहीं होगा । इसलिये या तो मुझे भीतर आने दो या वर्मा को बाहर भेजो ।”

उसके चेहरे पर अनिश्चय के भाव आये ।

“है कहां वो ? घर पर तो है न ?” - एकाएक सुनील उच्च स्वर में बोला - “मिस्टर वर्मा साहेब !”

“अरे, अरे ! चिल्ला क्यों रहे हो ?”

“वर्माजी !”

तभी ड्राइंगरूम के दरवाजे पर विवेक वर्मा प्रकट हुआ, उसने एक क्षण सामने निगाह डाली और फिर लम्बे डग भरता हुआ उनके करीब पहुंचा ।

“मिस्टर सुनील !” - वो बोला - “कैसे आये ?”

“आपसे मिलने आया हूं । बागड़बिल्ली मिलने नहीं दे रही ।”

“क्या !” - नमिता आंखें निकालकर बोली ।

“एकाएक मेरी शक्ल नहीं पहचानती ।” - सुनील पूर्ववत् वर्मा से मुखातिब रहा - “समझ रही है कि मैं गऊशाला से चन्दा लेने आया हूं । या शायद यतीमखाने से...”

“मिस्टर, माइंड युअर लैंग्वेज ।”

“नमिता !” - वर्मा सख्ती से बोला ।

वो खामोश हो गयी ।

“एक तरफ हटो ।”

बड़ी अनिच्छा से वो एक तरफ हटी ।

“आओ ।” - वो सुनील से बोला ।

“थैंक्यू ।” - सुनील तत्काल दरवाजे से भीतर कदम डालता हुआ बोला ।

वर्मा घूमकर ड्राइंगरूम की तरफ बढ़ा । सुनील उसके साथ हो लिया । नमिता एक क्षण हिचकिचाई, फिर वो भी उनके पीछे-पीछे वहां पहुंच गयी ।

सब ड्राइंगरूम में जा बैठे ।

“अब बोलो कैसे आये ?” - वर्मा बोला ।

“तुम्हें कुछ दिखाने आया हूं ।” - सुनील बोला ।

“क्या ?”

सुनील ने जेब से टाई निकालकर उसके सामने रख दी ।

“ये क्या है ?” - वर्मा बोला ।

“टाई है । हैण्ड पेन्टिड । अपनी किस्म की अकेली । एकाएक स्टोर, कमर्शियल स्ट्रील, विशालगढ़ द्वारा बेची गयी ।”

“मुझे क्यों दिखा रहे हो ?”

“क्योंकि इस टाई के ग्राहक तुम थे ।”

“क्या !”

“मैं और तफसील से समझाता हूं ।” - उसने जेब से आनन्द कुमार आनन्द उर्फ विप्लव के स्कैच निकाले - “ये स्कैच देखो । इन पर वो डिजाइन चित्रित है जो कि टाई पर पेंट हुआ दिखाई दे रहा है । इसके करीब उस शख्स का चेहरा चित्रित है जिसके लिये ये टाई पेंट की गयी थी और जो कि इस टाई का खरीददार था । ये दूसरा स्कैच उसी शख्स का मूखों और चश्मे के इजाफे के साथ है और जुदा हेयर स्टाइल के साथ है । ये स्कैच उस शख्स के उस हुलिये का है जिसके साथ वो एक महिला के साथ मिसेज एण्ड मिस्टर कमल सक्सैना बनके इकबालपुर के होटल न्यू हैवन में ठहरा था ।”

“कब ?”

“थापर की पहली बीवी हर्षिता के उसी होटल में आत्महत्या कर लेने से एक महीना पहले ।”

तब नमिता भी झुककर दोनों स्कैच देखने लगी । उसने पहले स्कैच को बड़ी गौर से देखा और फिर बोली - “ये टाई की बगल वाला स्कैच तो आपका मालूम होता है ।”

“मालूम तो होता है !” - वर्मा ने स्वीकार किया ।

“मालूम नहीं होता” - सुनील बोला - “है । ये तुम्हारा ही स्कैच है । दूसरा मूँछ और चश्मे वाला स्कैच भी तुम्हारा है ।”

“पागल हुए हो ! मेरी निगाह बिल्कुल ठीक है और मैंने सारी जिन्दगी कभी मूँछ नहीं रखी ।”

“तुम इस बात से इन्कार करते हो” - सुनील चैलेंजभरे स्वर में बोला - “कि ये टाई तुम्हारी है और इसे तुमने विशालगढ के एम्पायर स्टोर से खरीदा था ?”

वो हिचकिचाया ।

“ये खास टाई है, जो कि खास ग्राहक की फरमायश पर पेंट की गयी थी । ये आसानी से भूल जाने वाली चीज नहीं, वर्मा साहेब ।”

“हां” - वो कठिन स्वर में बोला - “मुझे याद तो पड़ता है कि ऐसी एक टाई मैंने खरीदी थी लेकिन वो सालों पुरानी बात है ।”

“सिर्फ दो ढाई साल पुरानी, कोई सौ पचास साल पुरानी नहीं ।”

“ये तुम्हारे पास कहां से आयी ?”

“कीर्ति ने दी ।”

“क्यों ?” - नमिता तमककर बोली - “तुम्हें क्यों दी ?”

“सुरक्षित रखने के लिये ।” - सुनील ने तस्वीरें भी निकालकर मेज पर रखीं - “और ये तस्वीरें भी । जाहिर है कि इस साजो-सामान को वो अपने पीछे कोठी में असुरक्षित छोड़कर नहीं जाना चाहती थी और जेल में भी अपने साथ नहीं ले जाता । वो कहती थी कि इस टाई का और इन तस्वीरों का रात खुल जाना उसे बर्बाद कर सकता था ।”

“फिर भी तुमने ये राज खोल दिया ।” - नमिता गुस्से में बोली - “यानी कि तुमने एक बार फिर कीर्ति के विश्वास की हत्या की ।”

“तूफानेहमदम, तुम यूँ एकाएक मेरे खिलाफ क्यों हो गयी हो ?”

“मैं तुम्हारी तरफ कब थी ?”

“ये भी ठीक है । तरफ तो तुम किसी और की ही हो ।”

“किस्सा क्या है इन चीजों का ?” - वर्मा उतावले स्वर में बोला ।

“ये टोका-टाकी बन्द करे तो कुछ कहूँ न ?”

“नमिता ! एक मिनट खामोश बैठो ।”

नमिता ने जोर से होंठ भींचे ।

“अब बोलो ।” - वर्मा सुनील से बोला ।

सुनील ने संक्षेप में उसे अपनी इकबालपुर और विशालगढ की विजिट के बारे में बताया ।

“तो ?” - वो खामोश हुआ तो वर्मा बोला ।

“तो ये कि अब असल कहानी कुछ-कुछ मेरी समझ में आ गयी है ।”

“क्या समझा है तुमने ?”

“पहले तो ये ही समझा है कि कीर्ति ने दिलीप थापर से शादी क्यों की ?”

“क्यों की ?”

“उसकी दौलत की खातिर ।”

“पागल हुए हो ! तब कहाँ रखी थी थापर के पास दौलत ! जब उसकी कीर्ति से शादी हुई थी, तब तो वो तारकपुर की एक स्टील मिल में मामूली फोरमैन था ।”

“कबूल । लेकिन ये भी हकीकत है कि तब दौलत के दरबार में उसके कदम बस पड़ने ही वाले थे, दौलत के अम्बार पर वो बस काबिज होने ही वाला था । और ये बात तब थापर को नहीं मालूम थी लेकिन कीर्ति को मालूम थी ।”

“कैसे मालूम थी ?”

“तुम मेरे चन्द सवालों का जवाब दो, फिर खुद ही समझ जाओगी कि कैसे मालूम थी !”

“क्या पूछना चाहते हो ?”

“हरिमोहन थापर के वारिस की तलाश का काम कब तुम्हारे सुपुर्द किया गया था ?”

“दो साल से ऊपर हो गये हैं ।”

“ये फैसला करने से पहले, कि वो तलाश किसी सिरे नहीं चढ़ने वाली थी, कितना अरसा तुमने इस केस पर काम किया था ?”

“दो महीने ।”

“उस वक्ते में वारिस की बाबत तुमने क्या जाना था ?”

“कुछ भी नहीं ।”

“उसने कितने अरसे बाद तुमने एकाएक वारिस खोज निकाला था ?”

“यही कोई आठ-दस महीने बाद ।”

“उस अरसे में थापर की पहली बीवी के साथ क्या बीती थी ?”

“उसकी मौत हो गयी थी ।”

“क्यों मौत हो गयी थी ? क्योंकि उसने आत्महत्या कर ली थी । क्यों आत्महत्या कर ली थी ? क्योंकि कमल सक्सेना नाम का जो सब्ज शहजादा एकाएक उसकी जिन्दगी में आया था, उसके इसरार पर उसने थापर से तलाक ले लिया था लेकिन फिर उसे अपनाने की जगह वो ऐसे उसकी जिन्दगी से गायब हुआ था कि वो बेचारी उसे ढूँढती ही रह गयी थी । नतीजतन उस शख्स के महा धोखे की शिकार उस बेचारी औरत ने आत्महत्या करके जान दे दी थी ।”

“ठीक है ।”

“फिर उसी साल कीर्ति, जो कि हर्षिता से कहीं ज्यादा खूबसूरत थी, थापर को अपने पर आशिक करवाने में कामयाब हो गयी थी । थापर ने उससे शादी कर ली थी । गुलेगुलजार, थापर से शादी हो जाने के बाद तुमने एक जादुई करिश्मे की तरह यह हकीकत खोद निकाली थी कि और कोई नहीं, खुद दिलीप थापर ही हरिमोहन थापर का खोया हुआ पोता था ।”

“इसमें कोई जादूगरी नहीं । वो महज एक इत्तफाक था ।”

“इत्तफाक मैं इसे जरूर मान लेता बशर्ते कि अब मुझे ये न मालूम हो चुका होता कि विवेक वर्मा और कमल सक्सेना एक ही शख्स के दो नाम हैं । इसी वजह से जो टाई विशालगढ़ से *उसने खरीदी थी*, वो *इस तस्वीर में कमल सक्सेना* पहने दिखाई दे रहा है । टाई पेंट करने वाले कलाकार का दावा है कि ऐसी टाइयां दो नहीं हो सकतीं । विवेक वर्मा, तुम्हीं वो शख्स हो जिसने कमल सक्सेना का बहुरूप धारण करके, यानी कि मूँछ उगाकर, जीरो नम्बर का चश्मा लगाकर और बाल लम्बे करके हेयर स्टाइल बदलकर, हर्षिता को ऐसा धोखा दिया था कि बेचारी को मौत की बांहों में ही पनाह दिखाई दी थी । तुमने उस औरत को महज थापर से अलहदा करने की नीयत से फंसाया था

ताकि थापर तुम्हारी गोटी कीर्ति से शादी करने के लिये खाली हो पाता । इस हकीकत से कीर्ति वाकिफ थी । वो नावाकिफ हो ही नहीं सकती थी क्योंकि वो तुम्हारी ही बिछाई बिसात का एक मोहरा थी । इसीलिये वो जानती थी कि वो एक मामूली फोरमैन को अपने पर आशिक नहीं करवा रही थी बल्कि तुम्हारे लिये एक करोड़ों की जायदाद के वारिस को फांसने का अहम काम कर रही थी ।”

“बकवास ।” - वो मुंह बिगाड़कर बोला - “सब बकवास । तुम कुछ साबित नहीं कर सकते । खास तौर से यह बात कि कीर्ति ने थापर को भविष्य में मिलने वाली दौलत पर निगाह रखके उससे शादी की थी ।”

“प्यारेलाल, अपने कलेजे की ठण्डक से कहो कि ये मेरे चन्द सवालों का जवाब दे, फिर देखो कैसे सब कुछ अपने आप साबित होता चला जाता है ।”

“क्या पूछना चाहते हो इससे ?”

सुनील नमिता की तरफ घमा और बोला - “तुम लोग असल में विशालगढ के रहने वाले हो ?”

“तो क्या हुआ ?” - वो भुनभुनाती-सी बोली ।

“वर्मा भी विशालगढ से है । तुम सबकी या सिर्फ तुम्हारी बड़ी बहन कीर्ति की इससे वहां पहले से वाकफियत थी ?”

“होगी ।”

“कीर्ति विशालगढ छोड़कर राजनगर कब आयी ?”

“यही कोई डेढ साल पहले ।”

“यानी कि थापर के अपनी पहली से तलाक के तुरन्त बन्द ?”

“हां ।”

“तब तुम और मोहिनी कहां थीं और क्या करती थीं ?”

“हम विशालगढ में ही थे । मैं वहां एक प्राइवेट फर्म में नौकरी करती थी और मोहिनी अभी पढ रही थी ।”

“कीर्ति क्या करती थी ।”

“वो भी नौकरी करती थी ।”

“कहां ?”

वो हिचकिचाई, उसने वर्मा की तरफ देखा ।

“ये न भूलो” - सुनील चेतावनीभरे स्वर में बोला - “कि ये सवाल मैं सीधे कीर्ति से भी पूछ सकता हूं ।”

“वो मेरे पास नौकरी करती थी ।” - वर्मा बोला- “मेरी प्राइवेट डिटेक्टिव एजेन्सी में रिसैप्शनिस्ट थी वो तब ।”

“ओह ! तो ये जरिया था तुम्हारा इन बहनों से वाकफियत का !”

“अपनी कहानी आगे बढ़ाओ । मैं सारी रात तुम्हारा प्रवचन नहीं सुनता रह सकता ।”

“आगे मेरी कहानी ये कहती है कि विशालगढ में इन बहनों की माली हैसियत मामूली थी । उसी मामूली माली हैसियत में कीर्ति ने अपनी, और बड़ी बहन होने की जिम्मेदारी निभाते हुए अपनी दो छोटी बहनों की, शादी करनी थी । हालात से और जिम्मेदारियों से यूं पिंसी हुई लड़की का तुम्हारी बातों में आकर तुम्हारे इशारों पर नाचना कबूल कर लेना मामूली बात थी । तुमने कीर्ति को दौलत के सब्जबाग दिखाये जो कि उसने बड़े अरमान से देखे । ऐन मुनासिब मौके पर तुमने उसे थापर को अपने पर आशिक करवाने के अभियान पर राजनगर भेजा जिसमें कि उसने कामयाब होकर दिखाया । थापर को शादी के लिये पटाने में वो कामयाब हो गयी तो तुमने ये राज खोला कि असल में थापर ही हरिमोहन थापर का खोया हुआ पोता था ।”

“थापर कीर्ति से शादी के लिये न तैयार होता तो ?”

“क्यों न होता ? क्या सारी उम्र विधुर बनके गुजारता वो ? वो अभी नौजवान था और बेऔलाद था, ऊपर से स्वर्ग की अप्सरा जैसी हसीनतरीन कीर्ति जैसे वरदान की तरह उसकी झोली में आकर गिरी थी । गुलेगुजार, तब थापर को तो ये अन्देशा सताता रहा होगा कि कहीं कीर्ति उससे शादी से इन्कार न कर दे । कीर्ति की हां ने तो उसे निहाल कर दिया होगा ।”

“कीर्ति के थापर से शादी कर लेने से थापर का माल मेरा हो गया ?”

“फौरन नहीं हो गया । फौरन उसका माल अपना करने की तुम्हें कोई जरूरत भी नहीं थी ।”

“क्या मतलब ?”

“क्या ये सच नहीं है कि क्या तुम और क्या कीर्ति की बहनें सब थापर को दौलत के सदके यहां ऐश कर रहे हो ? क्या ये सच नहीं है कि तुम पहले दिन से लसूड़े की तरह थापर को चिपके हुए हो और उसके बिजनेस एसोसियेट बने बैठे हो ?”

“बना नहीं बैठा हूं । बनाया गया हूं । मैंने थापर से नहीं, थापर ने मेरे से दरखास्त की थी कि मैं बिजनेस में उसका सहयोगी बनूं । उसको कभी मेरे से शिकायत का मौका नहीं मिला था ।”

“चलो ऐसे ही सही, लेकिन ये हकीकत तो अपनी जगह कायम है न कि उसकी खीर में तुम्हारा चम्मच है, तुम सबका चम्मच है ?”

“अगर कीर्ति मेरे साथ षड्यन्त्र में शामिल थी तो वो ये टाई और ये तस्वीरें क्यों अपने पास रखे बैठी थी जो कि तुम्हारे कथनानुसार मेरे खिलाफ सबूत थे ?”

“मैं बताता हूं वजह । वजह ये है कि उसे तुम्हारे षड्यन्त्र की मुकम्मल वाकफियत नहीं थी । वो तुम्हारी स्कीम के उसी हिस्से से वाकिफ थी जिसमें उसका रोल था । और वो रोल ये था कि उसने थापर को अपने पर आशिक करवाना था और उससे शादी करनी थी । लेकिन शादी होने के बाद उसे तुम्हारी बाकी काली करतूतों की खबर भी लग गयी । वो जान गयी कि उसके लिये रास्ता साफ करने के वास्ते थापर की पहली बीवी हर्षिता को रास्ते से तुमने हटाया था ।”

“कैसे जान गयी ?”

“हर्षिता की मौत के बाद जब उसके पिता ने ये हाल-दुहाई मचानी शुरू कर दी थी कि हर्षिता का कत्ल हुआ था तो केस में सी.आई.डी का दखल बन गया था । तफ्तीश के लिये, जाहिर है कि, वो लोग यहां भी जरूर पहुंचे होंगे । तब उन्होंने यह तस्वीर दिखाई होगी जो कि कीर्ति ने भी देखी होगी । उसने तस्वीर में से वो न्यारी टाई फौरन पहचान ली होगी क्योंकि जरूर पहले कभी विशालगढ़ में उसने वो टाई तुम्हें पहने देखा होगा । उसने चुपचाप तुम्हारे कमरे की तलाशी ली होगी तो वहां से वो बरामद हो गयी होगी । तब उसे पहली बार अहसास हुआ होगा कि तुम कितने खतरनाक आदमी थे । कि तुम ही वो शख्स थे जिसने हर्षिता के साथ ऐसी दगाबाजी की थी कि बेचारी का दिल टूट गया था और उसने खुद अपने हाथों अपनी जान ले ली थी । तब उसे इस बात का बहुत पश्चाताप हुआ होगा कि जाने-अनजाने वो इतने बड़े गुनाह में तुम्हारी पार्टनर बन गयी थी । नमिता” - सुनील नमिता की तरफ घूमा - “ये थी वो वजह जो तुम्हारी बहन को हर वक्त हलकान, पशेमान किये रहती थी, न कि थापर उससे बुरा व्यवहार करता था ।”

नमिता ने बड़ी संजीदगी से सहमति में सिर हिलाया ।

“चलो मान लिया” - वर्मा बोला - “बहस की खातिर मान लिया कि टाई तो उसने मेरे कमरे से चुरा ली, वो तस्वीरें कहां से आयीं उसके पास ?”

“एक जो मेन तस्वीर है” - सुनील बोला - “वो जरूर उसके पास या थापर के पास पुलिस छोड़ गयी होगी, बाद में उसी तस्वीर की मदद से कीर्ति ने दूसरी तस्वीर बनवा ली होगी ।”

“यानी कि उन चीजों की वो मेरे खिलाफ सबूत के तौर पर सहेजे हुए थी ?”

“हो सकता है ।”

“फिर उसने वो तुम्हें क्यों सौंप दी ?”

“क्योंकि वो जानती थी कि उन चीजों का पुलिस के हाथ पड़ जाना उसके खिलाफ भारी सबूत बन सकता था। तब पुलिस को मालूम हो जाता कि शुरू से ही वो थापर की दौलत की ताक में थी। तब उसका थापर के कत्ल के इलजाम से बच पाना असम्भव नहीं तो बहुत मुश्किल जरूर हो जाता।”

“अगर ऐसा था तो तब तो उसे उन चीजों का अस्तित्व ही समाप्त कर देना चाहिये था। उसे उनको फौरन नष्ट कर देना चाहिये था।”

“थापर के कत्ल से उसका कोई लेना देना होता तो वो जरूर ऐसा ही करती। उससे बेहतर कौन जानता था कि उसने थापर का कत्ल नहीं किया था? इस लिहाज से उसे बहुत जल्द छूट जाने की उम्मीद होगी।”

“खामखाह!”

“भई, जब असली कातिल पकड़ा जाता तो वो छूटती हो। और प्यारेलाल विशालगढ़िया, मेरा दावा है कि असल में वो तुम्हें ही कातिल समझ रही थी।”

“क्या!”

“मैंने ये नहीं कहा कि तुम कातिल हो, मैंने ये कहा है कि उसका ख्याल ये था कि तुम कातिल हो। टाई और तस्वीरें तुम्हारे खिलाफ सबूत थीं। तुम्हारा पकड़ा जाना उसकी निजात का जरिया था। अब तुम्हीं सोचो कि वो उन चीजों को नष्ट कर देने कैसे अफोर्ड कर सकती थी? पीछे घर छोड़ नहीं सकती थी, जेल साथ ले जा नहीं सकती थी, तुम्हें सौंपने का तो सवाल ही नहीं था, अपनी बहनों को या अपने चाहनों वालों को सौंपती तो यूं उसे ये अन्देशा होता कि कहीं उसकी इस करतूत की पोल न खुल जाये कि कैसे उसने तुम्हारे इशारों पर नाचकर थापर को फांसा था और कैसे तुमने हर्षिता का पत्ता काटने का षड्यन्त्र रचा था। इन हालात में उसने वो चीजें मुझे सौंपी तो क्या गलत किया!”

“और?” - वर्मा बड़े सन्न से बोला।

“अभी भी और?” - सुनील हैरानी से बोला।

“यानी कि तुमने जो कहना था, कह चुके?”

“हां!”

“अब मैं कुछ कहूं?”

“जरूर।”

“सुनो। पहली बात तो ये कि मेरे ये कबूल कर लेने से, कि उस टाई का खरीददार मैं था, ये स्थापित नहीं होता कि उसे पहनता भी मैं ही रहा था।”

“क्या मतलब?”

“वो टाई मैंने मुश्किल से एक या दो बार पहनी थी और उस पर अधनंगी लड़की की तस्वीर की वजह से हर बार हर किसी ने मुझे उसकी बाबत टोका था। वो कुछ ज्यादा ही लाउड डिजाइन था। नतीजतन मैंने वो टाई कुछ और पुराने कपड़ों के साथ एक ऐसे फेरी वाले को दे दी थी जो पुराने कपड़ों के बदले में बर्तन देता था।”

“सात सौ रुपये कीमत की नयी-नकोर टाई तुमने एक पुराने कपड़ों के कबाड़िये को दे दी?”

“हां।”

“ये कोई मानने की बात है?”

“क्यों नहीं है? जो चीज किसी काम की न हो, उससे यूं ही पीछा छुड़ाया जाता है।”

“अच्छा!”

“दूसरी बात, वो टाई लगाये जो शख्स तस्वीर में दिखाई दे रहा है, वो मैं नहीं हूँ। इकबालपुर में जिस किसी ने भी तस्वीर वाले आदमी को रूबरू देखा हो तुम मुझे उसके सामने ले जाकर खड़ा कर दो, वो तसदीक करेगा इस बात की कि मैं वो आदमी नहीं।”

ऐसा आदमी एक ही था - होटल न्यू हैवन का मालिक - जो कि उस तस्वीर से विवेक वर्मा की शिनाख्त नहीं कर सका था। यानी कि उसका वो ब्लफ चल सकता था। - सुनील ने सोचा।

“और ?” - प्रत्यक्षतः वो बोला।

“और तीसरी और अहमतरीन बात ये कि मैं भला क्यों थापर का कत्ल करके उसमें कीर्ति को फंसाने का सामान करूंगा ? थापर के कत्ल के इलजाम में कीर्ति को सजा हो जाने का मतलब समझते हो ? इसका मतलब है तमाम दौलत पर थापर की मां, लाजवन्ती थापर, चाई जी काबिज। और मेरे पल्ले ठन-ठन गोपाल। अब बोलो, मैं क्या इतना ही अहमक दिखाई दोता हूँ तुम्हें कि खुद अपने हाथों अपना बेड़ा गर्क कर लूंगा ? थापर की दौलत हथियाने के लिये इतना बड़ा षड्यन्त्र कामयाबी से रच चुकने के बाद मैं इतनी अहमकाना हरकत करूंगा कि दौलत मेरी आंखों के सामने गैर हाथों में पहुंच जाये ?”

सुनील खामोश रहा।

“अब चुप क्यों हो गये ? जवाब दो।”

“चलो माना कि तुम्हारे पास हर बात का जवाब है। अब इसका भी कोई माकूल जवाब पेश करो कि क्यों कीर्ति वो टाई और वो तस्वीरें सम्भाल के रखे हुए थीं !”

“भई, तुम्हीं तो कहते हो कि ये चीजें उसके अधिकार में थीं।”

“यानी कि मैं झूठ बोल रहा हूँ ?”

“हो सकता है।”

“और कहां से आर्यी ये चीजें मेरे पास ?”

“तुम बताओ।”

“ओहो ! तो ये पैतरे हैं ?”

“हां। ये पैतरे हैं। सच पूछो तो मुझे तो लगता है कि कातिल ही तुम हो।”

“अच्छा !”

“हां। जबसे कत्ल हुआ है तभी से तुम इस कोशिश में हो कि कत्ल का इलजाम तुम किसी दूसरे के - खास तौर से कीर्ति के - सिर थोप सको। इसी वजह से हर किसी के फटे में तुम्हारी टांग है। इसी वजह से तुम बढ-बढ के चौधरी बन रहे हो और पुलिस से दस हाथ आगे चलने की कोशिश कर रहे हो। जरा गौर करो कि अड़तालीस घण्टे से भी कम के वक्फे में तुम क्या कुछ कर चुके हो !” - वो उंगलियों पर गिनने लगा - “कीर्ति को तुमने तलाश किया और उसे पुलिस के हवाले किया ! उसके विक्रम सूरी से अफेयर की पोल तुमने खोली। इकबालपुर, विशालगढ तक मारे-मारे तुम फिरे। टाई और तस्वीरों जैसे कीर्ति के खिलाफ जा सकने वाले सबूत तुम्हारे कब्जे में हैं। मुझे तो ये सारी ड्रिल साफ-साफ बौखलाये हुए ऐसे आदमी की लगती है जो कि अपने पर से शक की सुई हटाकर किसी और पर सरकाने के लिये मरा जा रहा हो।”

वर्मा शायद अभी और भी काफी कुछ कहता लेकिन तभी एकाएक बाहर टेलीफोन की घंटी बज उठी तो वो खामोश हो गया।

“मैं देखता हूँ।” - वो उठने को तत्पर नमिता से बोला और लम्बे डग भरता हुआ वहां से बाहर निकल गया।

पीछे खामोशी छा गयी।

“तुम्हारी मर्जी क्या है ?” - एकाएक नमिता धीरे-से बोली।

सुनील ने सकपकाकर सिर उठाया।

“किस बाबत ?” - उसने पूछा ।

“इन चीजों की बाबत ? तुम इन्हें पुलिस को सौंपोगे ?”

“इरादा तो है कुछ-कुछ ।”

“ये इरादा छोड़ने की अपनी कीमत बोलो ।”

“ऐन अपने जीजा वाली जुबान बोल रही हो, स्वीटहार्ट ।”

“जवाब दो ।”

“सौ करोड़ ।”

“क्या ?”

“टाई के । तस्वीरों के भी इतने ।”

“सौ करोड़ ?”

“फ्री तस्वीर ।”

“तुम्हारा दिमाग खराब है ।”

“खराब क्या, है ही नहीं, वर्ना इस पागलखाने में बैठा होता ?”

तभी वर्मा वापिस लौटा ।

“शहर में” - वो अप्रसन्न भाव से बोला - “मुनादी करवा के आये थे कि तुम यहां हो ?”

“क्या मतलब ?” - सुनील बोला ।

“तुम्हारे लिये काल है ।”

“कौन है ?”

“विक्रम सूरी ।”

“मैंने तो उसे...”

“जा के फोन सुनो ।”

सुनील उठा और हाल में पहुंचा ।

“मैं सुनील बोल रहा हूं ।” - वो फोन उठाकर माउथपीस में बोला ।

“सुनील” - उसे सूरी की व्यग्र आवाज सुनाई दी - “मैं विकी । मैं फौरन तुमसे बात करना चाहता हूं ।”

“कर तो रहे हो ।”

“फोन पर नहीं ।”

“मेरे लिये यहां फोन करना कैसे सूझा ?”

“मैंने दर्जनों जगह फोन किया था । उन्हीं में एक जगह यह भी थी ।”

“बात क्या करना चाहते हो ?”

“यहां आओ तो बताता हूं।”

“यहां कहां ?”

“झेरी। मेरे काटेज में।”

“बात क्या है ? कोई हिन्ट तो दो।”

“आओगे ते पता लगेगा। यकीन करो, तुम्हें पछताना नहीं पड़ेगा।”

“ठीक है। आता हूं।”

उसने रिसीवर वापिस क्रेडल पर रख दिया।

विकी की डिकी में अन्धेरा था।

उसने काल बैल बजाई।

“मैं इधर हूं।” - पिछवाड़े से आवाज आयी।

काटेज का घेरा काटकर वो पिछवाड़े में पहुंचा। उधर भी अन्धेरा था। सीढियों के सिरे पर मोटरबोट मौजूद थी जिसमें कि किसी की उपस्थिति का आभास मिल रहा था।

“विकी !” - सुनील ने आवाज लगायी।

“हां। आमद का शुक्रिया।”

“वहां क्या कर रहे हो ?”

“नीचे आओ। बताता हूं।”

“यहां अन्धेरा क्यों है ?”

“कोई खास अन्धेरा नहीं है। चमक-दमक से आये हो इसलिये तुम्हें ऐसा लग रहा है। अभी तुम्हारी आंखें इसकी आदी हो जायेंगी।”

“बात क्या है ?”

“यहां आओ। बताता हूं। और सीढियां सम्भलकर उतरना। दिन में मेरे से इन पर थोड़ा मोबिल आयल बिखर गया था।”

सुनील सीढियां उतरने लगा। पानी से बाहर दिखाई दे रही आखिरी सीढी के साथ लगी एक मोटरबोट पानी में डोल रही थी। तब उसे बोट में बैठे विक्रम सूरी की परछाई-सी दिखाई दी। उसने बोट पर पांव रखा तो वो डगमगाई। तभी सूरी ने हाथ बढ़ाकर उसकी बायीं बांह थाम ली।

“सम्भल के।” - वो बोला - “सम्भल के।”

सुनील काकपिट में उसके सामने जा बैठा। तभी सीट पर से उसके पहलू में कोई चीज चुभी। उसने टटोलकर उसे सीट पर से उठाया तो पाया कि वो एक पाइप का टुकड़ा था। उसने उसे नीचे बोट के फर्श पर डाल दिया। उसने पाया कि वो एक छोटी-सी बोट थी जिसके काकपिट में बस दो ही जनों के बैठने की जगह थी।

“यहां क्यों बैठे हो ?” - सुनील ने पूछा।

“कोई खास वजह नहीं।” - सूरी बोला - “यूँ ही मौज ले रहा हूँ। पानी की हलचल से बोट हिंडोले की तरह हिलती है। मजा आता है।”

“फिर तो खुशकिस्मत हो कि न सिर्फ आजाद हो बल्कि मजे ले रहे हो।”

“क्या मतलब?”

“पुलिस ने थामा नहीं तुम्हें?”

“थामा था लेकिन हाथ के हाथ ही छोड़ दिया था।”

“अच्छा!”

“हां। मेरे खिलाफ था क्या उनके पास! कुछ भी नहीं।”

“उन्होंने तुम पर कातिल को पनाह देने का इलजाम नहीं लगाया?”

“लगाया। मैंने वही कहा जो सच था। मुझे नहीं पता था कि उसने कत्ल किया था। मुझे ये ही नहीं पता था कि कोई कत्ल हुआ था। दिन में जब पता चला तो मैंने कीर्ति को फौरन तुम्हारे साथ उन लोगों के पास पहुंचने के लिये रुखसत कर दिया।”

“तुमने रुखसत कर दिया! तुम तो उसके साथ फरार हो जाने की फिराक में थे।”

“जो काम हुआ नहीं” - वो धीरे से हंसा - “उसका क्या जिक्र करना!”

“बहरहाल पुलन्दा नहीं बंधा तुम्हारा। छूट गये।”

“बड़ी आसानी से।”

“वहां से ये भी खबर लग ही गयी होगी कि तुम्हारी पोल खोलने वाली मरियम डिसूजा थी।”

“हां।”

“तुम कोई खास खफा नहीं मालूम होते उससे!”

“ऐसा ही है।” - वो लापरवाही से बोला, वो एक क्षण खामोश रहा और फिर बोला - “असल में उसने मुझे एक ऐसी मार्के की बात बतायी कि मेरा सारा गुस्सा काफूर हो गया।”

“ऐसी क्या बात थी और उसे मुझे बताना क्यों जरूरी है?”

“क्यों कि वो बात तुम्हारे से ही ताल्लुक रखती है।”

“अच्छा! ऐसा क्या बताया उसने?”

“उसने मुझे बताया कि थापर का कत्ल किसने किया था।”

“किसने किया था। किसका नाम लिया उसने?”

“तुम्हारा।”

“क्या!”

“हां। वो कहती है कि थापर के कातिल तुम हो।”

“कैसे रहती है? क्या जानती है वो इस बाबत?”

“सुनो। कल दोपहरबाद तुम कैसीनो ब्लू डायमंड में उससे मिले थे?”

“हां।”

“वहां बार में तुमने ट्रिक्स के बिल की पेमेंट एक पांच सौ रुपये के नये-नकोर नोट से की थी?”

“तो क्या हुआ?”

“तो ये हुआ कि वो नोट पांच-पांच सौ रुपये के उन नोटों में से एक था जो चालीस हजार रुपये की जीत की रकम की सूरत में परसों रात थापर की जेब में थे।”

“कौन कहता है?”

“मरियम कहती है। परसों रात थापर को जीत के टोकनों के बदले में जिस चालीस हजार रुपये की रकम का भुगतान किया गया था, वो पांच-पांच सौ के अस्सी नोटों की सूरत में थी जो कि एक नयी नकोर गड्डी में से निकाले गये थे। बाकी के बीस नोट कल भी कैसीनो की सेफ में मौजूद थे। मरियम कहती है कि तुम्हारा पांच सौ वाला नोट उन्हीं पांच-पांच सौ के नोटों की नयी गड्डी में से था जिसके अस्सी नोट थापर अपने साथ ले गया था और बीस पीछे कैसीनों में रह गये थे।”

सुनील को याद आया कि वो नोट वेटर के हाथ में पहुंचने से पहले मरियम ने उठा लिया था और उसका बड़ा बारीक मुआयना किया था।

“इतनी अहम बात” - प्रत्यक्षतः वो बोला - “उसने कल ही पुलिस को क्यों न बताया?”

“क्योंकि वो पहले इस जानकारी को कैश करने की फिराक में थी। किन्हीं भी हालात में अपनी रोटियां सेंकने का जुगाड़ करने लगना उस लड़की की फितरत में शामिल है।”

“कैसे सेकीं उसने अपनी रोटियां?”

“बकौल मरियम, पहले तो वो तुम्हीं को ब्लैकमेल करने की फिराक में थी लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने मेरे पास आने का फैसला किया था।”

“क्या सोचकर?”

“यही सोचकर कि मेरे से उसे ज्यादा फायदा पहुंचा सकता था।”

“यानी कि ब्लैकमेलिंग के मामले में उसे तम मेरे से ज्यादा मोटे शिकार लगे थे?”

“हां।”

“फिर भी उसने पुलिस में तुम्हारी पोल खोली?”

“वो मेरे पर दबाव बनाना चाहती थी। वो कहती है कि जितना ज्यादा मैं फंसा होता, उतना ही ज्यादा मुफीस सौदेबाजी का माहौल बनता। इतना तो वो समझती ही थी कि पुलिस मुझे पकड़ सकती थी लेकिन पकड़े रख नहीं सकती थी।”

“क्यों?”

“क्योंकि मैं कातिल नहीं हूँ। और इस बात को सबसे ज्यादा अच्छी तरह से मरियम समझती थी, इसलिये समझती थी कि क्योंकि वो जानती थी कि कातिल तुम थे।”

“क्या कहने?”

“वो पांच सौ का नोट मरियम के कब्जे में है और कल सवेरा होते ही वो उस नोट के साथ और नोट से ताल्लुक रखती कहानी के साथ पुलिस के पास पहुंच जाने वाली है।”

“यानी कि अभी पहुंची नहीं।”

“नहीं। लेकिन वो नोट तुम उससे वापस नहीं हासिल कर सकोगे। न ही तुम उसकी जुबान बन्द कर पाओगे। मैंने उसके इस काम की उसकी बड़ी मोटी फीस भरी है कि वो उस नोट की कहानी के साथ पुलिस के पास जाये ताकि असली हत्यारा गिरफ्तार हो सके और मेरी जान कीर्ति रिहा हो सके।”

“असली हत्यारा ! यानी कि मैं ?”

“यानी कि तुम।”

“ये बात उसने और किसको बतायी है ?”

“अभी सिर्फ मुझे बताया है, सुबह पुलिस को बतायेगी और फिर सारी दुनिया जान जायेगी।”

“यानी कि फिलहाल मुझे सिर्फ दो मुंह बन्द करने हैं। एक उस लड़की का और एक तुम्हारा।”

“तीन। एक विवेक वर्मा का भी।”

“उसे किसने बताया ?”

“मैंने।”

“क्यों ? उसे क्यों ?”

“क्योंकि मैं इस बात की तसदीक करना चाहता था कि कैसीनो से थापर सीधा घर आया था और चालीस हजार रुपये की जीत की रकम उसके पास महफूज थी। इस बात की तसदीक अब वर्मा ही नहीं, थापर की मां भी कर चुकी है। वो कहती है कि कैसीनो से निकलकर वो सीधे नार्थ शोर पहुंचे थे। यानी कि तुम ये दावा नहीं कर सकते कि वो नोट थापर ने किसी और को दिये थे जिससे कि बाद में उनमें से कुछ तुम्हें भी हासिल हुए थे।”

“तुम्हारी जानकारी के लिये वो नोट मुझे विवेक वर्मा ने दिये थे।”

“नहीं हो सकता। उसके पास वो नोट कहां से आते ? कैसे आते ?”

“वहीं से आते, वैसे ही आते, जैसे तुम मेरे पास आये बता रहे हो।”

“तुम्हारे पास वो इसलिये थे क्योंकि तुमने थापर का कत्ल किया था। अब ये न कहना कि तुमने नहीं बल्कि वर्मा ने थापर का कत्ल किया था ?”

“क्यों ? ऐसा कहने पर कोई पाबन्दी है ?”

“बात ये हो रही थी कि तुम तीन कत्ल नहीं कर सकते। खास तौर से मेरा।”

“क्यों ? तुमने अमृत पिया हुआ है ?”

“तुम मेरे खिलाफ ऐसा कोई कदम उठाओगे तो न मरते हुए भी मरोगे।”

“अच्छा ! वो कैसे ?”

“मैंने ये तमाम वाक्या एक कागज पर लिखकर अपने दोस्त को सौंपा हुआ है। मुझे कुछ हो गया तो मेरे बयान के साथ वो सीधा पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचेगा।”

“तुम वाकेई समझते हो कि मैंने थापर का कत्ल किया है ?”

“मैं समझता नहीं, जानता हूँ। अलबत्ता ये हो सकता है कि कत्ल तुमने जान-बूझकर, सोच विचारकर न किया हो, बल्कि आत्मरक्षा के लिये किया हो। परसों रात तुम बोट हाउस में गये, वहां तुम्हारा आमना-सामना थापर से हो गया। या तुम बोट हाउस में पहले से मौजूद

थे और थापर ऊपर आ गया था। उसने तुम्हारे पर रिवॉल्वर तानी। तुम उससे गुथमगुत्था हो गये, एकाएक रिवॉल्वर चल गयी और गोली उसे जा लगी।”

“ये थ्योरी पुलिस को भी सूझी थी लेकिन उन्होंने हाथ के हाथ ही इसे रिजेक्ट कर दिया था।”

“ऐसा उन्हें इसलिये करना पड़ा था क्योंकि उन्हें ये नहीं मालूम था कि कीर्ति की रिवॉल्वर थापर के अधिकार में कैसे पहुंची थी और बारूद उस थ्योरी में कैसे फिट होता था।”

“तुम्हें पता है?”

“हां, मुझे पता है। आज जब मैं पुलिस हैडक्वार्टर ले जाया गया था तो रिहा होने के बाद वहां कीर्ति से मिला था। उसने मुझे बताया था कि कोई एक हफ्ता पहले थापर ने उससे रिवॉल्वर की बजात सवाल किया था। उसने थापर को बताया था कि रिवॉल्वर उसकी कार में थी। थापर ने कहा था रिवॉल्वर की क्लीनिंग और आयलिंग, जरूरी होती थी। कहने का मतलब ये है कि थापर ने इस काम के लिये रिवॉल्वर कार में से निकाली और फिर अपने ही पास रख ली।”

“जोकि परसों रात उसकी मौत से पहले भी उसके पास थी?”

“बिल्कुल।”

“तुम्हें मालूम है न कि उस रात नमिता मेरे साथ थी।”

“हमेशा नहीं। विवेक वर्मा कहता है कि तुमने खुद उसके सामने कबूल किया था कि बीच में दस-बारह मिनट का एक वक्फा ऐसा आया था जबकि वो तुम्हारे साथ नहीं थी।”

“और उन दस या बारह मिनटों में मैं बोट हाउस में पहुंचा वहां मौजूद थापर से गुथमगुत्था हुआ, उसका कत्ल किया, वहां से निकलकर कोठी में पहुंचा, कोठी में मौजूद नमिता की निगाह में आये बिना मैंने वहां से सैंडल की टूटी एड़ी और बालों का क्लिप बरामद किया, वापिस लौटा, वो दोनों चीजें मौकायेवारदात पर प्लांट कीं, थापर की जेब से चालीस हजार के नोट निकालकर अपने काबू में किये, बारूद ढूंढा, उसकी एक छड़ के साथ पन्द्रह मीटर लम्बा पलीता जोड़कर उस की कैप फिट की और उसे बोट में लगाया। इतने ढेर सारे काम मैंने दस या बारह मिनट में किये। ठीक?”

“तुम्हें कोठी में जाने की जरूरत नहीं थी।”

“तो फिर वो सैंडल की एड़ी, वो बालों का क्लिप...”

“दोनों चीजे ड्राइव वे में ही खड़ी लाजवन्ती थापर की कार में मौजूद थीं।”

“कैसे जाना?”

“कीर्ति ने बताया।”

“लेकिन वो दोनों चीजें अपनी मां के कहने पर थापर कार में से निकलकर कोठी में ले गया था।”

“कौन कहता है?”

“खुद थापर की मां कहती है।”

“वो ये कहती है कि उसने दिलीप को वो सामान कार में से निकालकर भीतर ले आने कहा था। उसने ऐसा किया भी था, ये उसे नहीं मालूम।”

“तुम तो बड़े ज्ञानी हो, प्यारेलाल।”

“वो दोनों चीजें असल में तब भी ड्राइव वे में खड़ी कार में मौजूद थीं जिन्हें कि वहां से निकालकर तुमने मौकायेवारदात पर प्लांट किया था।”

“क्यों ?”

“ताकि शक को सुई तुम्हारे पर से हटकर किसी और तरफ घूम पाती ।”

“जब तुम खुद कहते हो कि कत्ल मैंने आत्मरक्षा के लिये किया था तो...”

“वो हरकत तुमने अपने लिये दोहरी सुरक्षा पैदा करने के लिये की होगी ।”

“थापर की जेब में मौजूद चालीस हजार रुपये क्यों चुराये मैंने ? मैंने उसकी जेबें टटोली ही किसलिये ?”

“वो रकम तुमने इसलिये चुराई होगी ताकि कत्ल किसी चोर का काम समझा जाता ।”

“यानी कि मैंने अपने लिये दोहरी नहीं, तिहरी सुरक्षा का इन्तजाम किया !”

“हां ।”

“अब बारूद की बोलो ।”

“वो तुमने वहां कत्ल के फौरन बाद नहीं, बल्कि नमिता के वहां आकर वापिस कोठी में चले जाने के बाद प्लांट किया था । जिस सैंडल की एड़ी टूटी थी, उसे भी तुमने कोठी में ऊपर बैडरूम में पलंग के नीचे बाद में पहुंचाया था ।”

“बारूद बोट में पहले से मौजूद था ।”

“तो वो नमिता को क्यों नहीं दिखाई दिया ?”

“क्योंकि नमिता की उसकी तरफ तवज्जो नहीं थी ।”

“क्योंकि तब वो वहां था ही नहीं । तुम्हें बाद में वहां बारूद की छड़ों की पेटी पड़ी दिखाई दी थी तो हालात को और उलझाने के लिये तुमने उसमें से एक छड़ निकाली थी, उसमें पलीता लगाया था, छड़ और पलीते को कैप किया था और छड़ डीजल की टंकी के नीचे छुपाकर रख दी थी जहां से देर-सवेर तो उसने बरामद होना ही था ।”

“अबे, लकड़ी के बुरादे !” - सुनील चिढ़कर बोला - “अगर वो बारूद वहां मैंने लगाया था तो फिर मैंने उसे हटाया क्यों ?”

“क्योंकि बाद में तुम्हें ध्यान आया था कि बारूद की छड़ पर, उसकी मोमी कागज की परत पर तुम्हारी उंगलियों के निशान रह गये थे । तब तुमने उसका पलीता निकालकर उसे वापिस टंकी के नीचे रख दिया था । अब तुम छड़ पर मौजूद अपनी उंगलियों के निशानों की ये सफाई दे सकते थे कि तुमने तो पलीता निकालने के लिये छड़ को हैंडल किया था ।”

सुनील खामोश रहा ।

“अब बोलती क्यों बन्द हो गयी ?” - सूरी व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - “इसीलिये न क्योंकि तुम्हें दिखाई दे रहा है कि मेरी थ्योरी में दम है !”

“अगर तुम्हें इतना ही यकीन है मेरे कातिल होने पर तो अभी तक पुलिस के पास क्यों नहीं पहुंचाई अपनी थ्योरी ? मेरे से मिलने को क्यों छटपटाने लगे ?”

“क्योंकि मैं तुम्हें अपनी सफाई पेश करने का मौका देना चाहता था । सुनील, अगर तुम मुझे यकीन दिला सको कि कातिल तुम नहीं हो तो मैं पुलिस के पास नहीं जाऊंगा । तो जो कुछ मुझे मालूम है, उसे मैं अभी, यहीं भूल जाऊंगा ।”

“मुझे कातिल समझते हो फिर भी तुम्हारी मजाल हो रही है यूं कातिल के रूबरू होने की !”

“माई डियर फ्रेंड, इतना सीधा नहीं हूं मैं । मैं यहां हर स्थिति के लिये तैयार बैठा हूं ।”

“अच्छा !”

“हां । यहां अन्धेरा न होता तुम्हें दिखाई देता कि मेरा हाथ में एक रिवॉल्वर है जिसका रुख जब से तुम यहां आये हो एक क्षण के लिये भी तुम्हारी तरफ से नहीं हटा है ।”

“ओह !”

“अब जबकि दिखाई दे रहा है कि तुम्हारे पास अपनी सफाई में कहने के लिये कुछ नहीं है, तो तुम्हारे सामने एक ही इज्जतदार रास्ता बचा है कि तुम खुद पुलिस के पास जाओ और जाकर अपना गुनाह कबूल कर लो।”

“मैं जाऊँ ? यानी मुझे तुम लेकर नहीं जाओगे ?”

“मैं नहीं जा सकता। जा सकता होता तो असली अपराधी को गिरफ्तार कराने की वाहवाही जरूर लूटता। मैंने अभी कहीं और जाना है। मेरी किसी से पहले से अप्वायन्टमेंट फिक्स है।”

“कहां ?”

“झील के परले सिरे पर। बहरहाल तुम पुलिस को ये बताना न भूलना कि आत्मसमर्पण के लिये मैंने तुम्हें मोटीवेट किया था।”

सुनील खामोश रहा।

“नाओ गैट अलांग।” - सूरी बोला।

सुनील उठ खड़ा हुआ।

“मैं तुम्हें एक घण्टे का वक्त देता हूँ।” - सूरी बोला - “एक घंटे बाद मैं तुम्हारी बाबत पुलिस को फोन करूँगा। इतने अरसे में फरार हो जाना चाहो तो तुम्हें खुली छूट है।”

“शुक्रिया।”

सुनील ने बोट पर से सीढ़ी पर कदम रखा। सीढ़ियाँ चढ़कर वो ऊपर पहुंचा। पीछे बोट स्टार्ट न हुई।

सुनील काटेज के सामने पहुंचकर कार में सवार हुआ। मंथर गति से उसने कार को वापिसी के रास्ते पर चलाया।

एक खयाल बार-बार उसके जेहन पर दस्तक दे रहा था।

क्या विवेक वर्मा कातिल था ?

अगर नहीं था तो पांच-पांच सौ के वो नोट उसके अधिकार में कैसे आये जिनमें से दस उसने सुनील को भी दिये थे ?

या शायद उसने पहले से मरे पड़े थापर की जेब से वो नोट निकाले थे ! क्यों ?

ताकि कीर्ति पर शुबह न किया जा सके। ताकि ऐसा लगे कि किसी ने थापर को लूटने के लिये उसका कत्ल किया था।

लेकिन अगर ऐसा था तो उसने मौकायेवारदात से कीर्ति की सैंडल की एड़ी और उसके बालों का क्लिप भी क्यों न गायब कर दिया ? और मूलरूप से वो चीजें किसने वहां प्लांट की थीं ?

क्या कातिल ने ?

एकाएक उसने कार को रोक दिया, उसने एक सिगरेट सुलगाया उस के कश लगाता वो परसों रात के तमाम वाक्यात को अपने जेहन पर उतारने लगा।

दस मिनट यूँ ही गुजरे लेकिन उसके कुछ पल्ले न पड़ा।

आखिर झुंझलाकर उसने इन्जन फिर आन करने के लिये हाथ बढ़ाया।

तभी एकाएक झील के मध्य में कहीं से आसमान की ओर एक शोला-सा लपका। सुनील आंखें फाड़-फाड़कर उधर देखने लगा।

एक जोर के विस्फोट की आवाज हुई।

झील के पानी की सतह पर आग लपलपाने लगी ।

जरूर किसी की बोट में विस्फोट हुआ था ।

क्या वो विक्रम सूरी की बोट थी जो उस अंजाम को पहुंची थी ? फिर उसे बारूद की उस दूसरी छड़ का ख्याल आया जो कि गायब थी ?

क्या वो उस दूसरी छड़ का कमाल था ?

ऐसा कई सवालोंने के साथे में झील के साथ-साथ कार चलाता उसका घेरा काटकर वो होटल लेक व्यू पहुंचा । उसने वहां की पार्किंग में कार खड़ी की और झील किनारे वहां पहुंचा जहां पहले से ही कई लोग जमा थे । उसने देखा कई मोटरबोट आगे विस्फोट के स्थल की ओर दौड़ी जा रही थीं ।

“क्या हुआ ?” - उसने करीब खड़े एक व्यक्ति से पूछा ।

“किसी बोट में विस्फोट हुआ है ।”

“चपेट में तो नहीं आया कोई ?”

“भई, बोट चालक तो आया ही होगा । और उतने भीषण विस्फोट में क्या वो बचा होगा ? उसके साथ कोई रहा होगा तो शर्तिया उनका भी काम हो गया होगा ।”

“बोट किसकी थी ?”

“क्या मालूम किसकी थी !”

सुनील कुछ क्षण सोचता रहा और फिर वापिस लौटा ।

वो कैसीनो में पहुंचा ।

मरियम डिसूजा वहां कहीं नहीं थी - न आफिस में, न हाल में, न बार पर, न और कहीं ।

उसने एक स्टीवर्ट को रोककर उसकी बाबत सवाल किया ।

“आज उसकी दिन में ड्यूटी थी ।” - जवाब मिला ।

“इस वक्त कहां होगी वो ?”

“अपने क्वार्टर में होगी ।”

सुनील वहां से निकलकर होटल के पिछवाड़े में पहुंचा ।

पांच नम्बर क्वार्टर के सामने पहुंचकर उसने काल बैल का बटन दबाया । भीतर कहीं घण्टी बजने की आवाज हुई लेकिन दरवाजा खोलने कोई न आया । उसने नोट किया कि भीतर रोशनी थी और वहां से टी. वी. चलने की आवाज आ रही थी लेकिन फिर भी उठकर दरवाजा खोलने कोई नहीं आया था ।

उसने फिर काल बैल बजाई और दरवाजे पर दस्तक भी दी ।

जवाब नदारद । तब उसने दरवाजे का हैंडल घुमाकर उसे धक्का दिया तो पाया कि दरवाजा खुला था ।

“हल्लो ।” - उसने दरवाजे के भीतर मुंह डालकर आवाज लगाई - “कोई है ?”

कोई जवाब न मिला ।

दरवाजा पूरा खोलकर उसने भीतर कदम रखा। एकाएक वो वहीं थमककर खड़ा हो गया। वह मुंह बाये सामने देखने लगा।

सामने फर्श पर एक पहलू के बल मरियम मरी पड़ी थी। उसकी पीठ में दिल की तरफ एक खंजर मूठ तक घुसा हुआ था। उसकी पथराई आंखें साफ बता रही थीं कि उसमें जीवन का कोई लक्षण शेष नहीं था।

फिर भी उसने अपने पीछे दरवाजा बन्द किया और आगे बढ़कर उसकी नब्ज टटोली।

नब्ज गायब थी। लेकिन उसकी कलाई अभी गर्म थी।

यानी कि कत्ल हुए अभी कुछ ही मिनट हुए थे।

वो उठकर सीधा हुआ। उसकी निगाह पैर होती हुई सब तरफ फिरी। पर तरफ अस्तव्यस्तता का बोलबाला था। साफ जाहिर हो रहा था कि किसी ने बहुत आनन-फानन वहां की तलाशी ली थी।

पीछे बैडरूम था, पहलू में किचन थी, वहां का भी बाहरले कमरे जैसा ही बुरा हाल था।

वो चुपचाप मुख्य द्वार पर पहुंचा, रूमाल निकालकर उसने उसके हैंडल पर से अपनी उंगलियों के निशान पोंछे, बाहर निकलकर दरवाजा बन्द किया और बाहरले हैंडल पर भी रूमाल फेरा।

वो होटल की लॉबी में पहुंचा। वहां के एक पब्लिक टेलीफोन से उसने पुलिस को फोन किया। दूसरी ओर से जवाब मिलते ही वो जल्दी-जल्दी बोला - “होटल लेक व्यू के स्टाफ क्वार्टर नम्बर पांच में एक औरत की लाश पड़ी है।”

तत्काल उसने रिसीवर वापिस क्रेडल पर टांग दिया।

वो फिर सामने झील किनारे पहुंचा जहां भीड़ और भी ज्यादा हो गयी थी। अब वहां पुलिस और एम्बुलेंस भी पहुंची दिखाई दे रही थी।

तभी सुनील की तब्जजो पायर के साथ लगी खड़ी एक बोट की तरफ गयी जिसमें उसे झेरी चौकी का इंचार्ज सब-इंस्पेक्टर किरपाराम दिखाई दिया।

उसके साथ उसका सहारा लिये जिस आदमी ने पायर पर कदम रखा, उस पर निगाह पड़ते ही सुनील के नेत्र फैले।

विक्रम सूरी।

एम्बुलेंस की दिशा में स्ट्रेचर सम्भाले दो आर्डरली आगे आये तो किरपाराम ने सहारा देकर सूरी को स्ट्रेचर पर लिटा दिया।

सुनील लपककर आगे आया और उसने स्ट्रेचर पर पड़े और एम्बुलेंस की तरफ ले जाये जाते सूरी पर निगाह डाली। उसने देखा कि उसके कपड़े धज्जियों की सूरत में उसके जिस्म पर झूल रहे थे, उसका जिस्म जगह-जगह से झुलसा हुआ था और चेहरे पर, छाती पर, एक कन्धे पर और दोनों हाथों पर खून बहता दिखाई दे रहा था। उसके सिर के आधे से अधिक बाल झुलस गये थे। वो कराह रहा था और बार-बार पहलू बदल रहा था।

तभी स्ट्रेचर एम्बुलेंस में चढाकर उसका दरवाजा बन्द कर दिया गया। अगले ही क्षण एम्बुलेंस वहां से दौड़ चली।

सुनील फिर भीड़ की तरफ आकर्षित हुआ।

“किस्मत वाला निकला पट्टा।” - उसके करीब खड़ा एक आदमी बोला - “जो इतने भीषण विस्फोट से बच गया, बेहोश तक न हुआ।

“हुआ क्या था?”

“क्या पता? कोई पुलिस वाला कह रहा था कि किसी ने उसे जान से मार देने की कोशिश की थी।”

“अच्छा!”

“हां। उसने पुलिस को बयान दिया बताते हैं कि वो अपनी बोट में बैठा था कि किसी ने उस पर पीछे से वार कर दिया। वो बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसने पाया कि वो अपनी बोट में पड़ा था लेकिन बोट तब ऐम झील के बीच में पहुंची हुई थी।”

“फिर ?”

“फिर क्या ? फिर धड़ाम ! हे भगवान ! कितनी जोर की आवाज हुई थी विस्फोट की !”

“वो क्या कहता है, किसने उसे मारने की कोशिश की थी ! कोई नाम लिया था उसने ?”

“हां, लिया था ।”

“क्या नाम लिया था ?”

“सुनील । सुनील चक्रवर्ती । पता नहीं कौन है वो ?”

“मुझे भी नहीं पता ।”

वो वहां से हटा और वापिस पार्किंग में खड़ी अपनी कार में आ बैठा । उसने एक सिगरेट सुलगा लिया और सोचने लगा ।

स्थिति गम्भीर थी ।

विक्रम सूरी का ये सोचना न्यायसंगत था कि उसने सूरी का कत्ल करने की कोशिश की थी । पुलिस को वो खूब नमक-मिर्च लगाकर मरियम डिसूजा की पांच सौ के उस नोट वाली कहानी सुना सकता था जो कि उसने सुनील को सुनाई थी और जिसके दम पर उसने सुनील को थापर का कातिल साबित करने की कोशिश की थी । सूरी इतने करिश्मासाज तरीके से विस्फोट में जान खोने से बच गया था । वो तो अब पुकार-पुकार के कहता कि कारनामा सुनील का था और उसी ने उसकी तरह मरियम का मुंह बन्द करने के लिये उसका भी खून किया था ।

लेकिन सूरी के बयान वाली वो चिट्ठी जो उसने अपने किसी दोस्त की सौंपी हुई थी ।

सूरी यही दावा करता कि जरूर सुनील ने उसे ब्लफ समझा था ।

नोटों वाली बात की खबर विवेक वर्मा को भी थी ?

जरूर सुनील को उस बात पर यकीन नहीं आया था ।

कमीना बच क्यों गया ? - सुनील बड़बड़ाया - मर-खप क्यों न गया ?

अब सवाल ये था कि असल में मरियम का खून और सूरी के खून की कोशिश किसने की थी ?

जाहिर था कि उसी ने जिसने पहला खून किया था ?

किसी ऐसे शख्स ने जिसे पांच सौ के नोट की कहानी मालूम थी, जिसे मालूम था कि सुनील ने एक घण्टे में पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचना था । यानी कि सूरी से जुदा होने के बाद उसने बिल्कुल अकेला होना था जिसकी वजह से वो ऐसा कोई गवाह पेश करने की स्थिति में न होता जो ये स्थापित करता कि वो वाकेई राजनगर के लिये रवाना हो गया था और विस्फोट के वक्त वो झील से बहुत दूर राजनगर के रास्ते में कहीं था ।

ये सब एक ही तरीके से सम्भव था ।

कोई पीछे झील किनारे सूरी की सीढियों के साथ लगी बोट के करीब कहीं छुपा खड़ा उसका और सूरी का तमाम वर्तालाप सुनता रहा था । उसी ने सुनील के वहां से रुखसत होने के बाद सूरी पर पीछे से वार करके उसे बेहोश कर दिया था, बोट में बारूद लगाया था और उसे झील में छोड़ दिया था । उसके बाद वो शख्स मरियम के क्वार्टर में पहुंचा था जहां कि उसने उसका भी खून कर दिया था ।

कौन हो सकता था वो शख्स ?

विवेक वर्मा !

लाजवन्ती थापर ।

दोनों, कर्टसी विक्रम सूरी, पांच सौ के नोट की कहानी से वाकिफ थे ।

वही कहानी वर्मा ने आगे नमिता के सामने दोहराई हो सकती थी और मोहिनी ने नमिता से सुनी हो सकती थी । या वर्मा ने ही दोनों को सुनाई हो सकती थी ।

यानी कि पांच सौ के नोट की कहानी खामखाह ही खूब प्रचारित हो गयी थी ।

उसने घड़ी पर निगाह डाली । बारह बज चुके थे ।

यानी कि आज भी वो खबर ‘ब्लास्ट’ के स्टाप प्रैस के कालम में ही जा पाती ।

वो कार से निकला और चुपचाप होटल के पिछवाड़े में पहुंचा ।

पांच नम्बर क्वार्टर का दरवाजा खुला था और उसके सामने भीड़ थी । प्रत्यक्षतः पुलिस वहां पहुंच चुकी थी ।

वो होटल की लॉबी में लौटा । उसने वहां से ‘ब्लास्ट’ में फोन किया और विक्रम सूरी के कत्ल की कोशिश की और मरियम डिसूजा के कत्ल की खबर दाखिलदफ्तर करायी ।

अब उसे रात बिताने को कोई सेफ ठिकाना चाहिये था ।

उसे गगन महल का ख्याल आया ।

वो फिर कार में सवार हुआ और गगन महल की ओर रवाना हुआ जो कि पुराने झेरी गांव से कोई छः मील आगे स्थित था ।

साढे बारह के करीब वो वहां पहुंचा तो उसने गगन महल को वैसा भूतों का डेरा न पाया जैसा कि वो उसे तब लगा था जब कि वहां बड़े कुंवर जी गगन प्रतापसिंह का कत्ल हुआ था । उस घड़ी वो जगमग-जगमग कर रहा था और ड्राइव वे में खड़ी कारें बता रही थीं कि भीतर कोई पार्टी चल रही थी ।

आयरन गेट के पास तैनात दरबान के बड़े अदब से उसके लिये दरवाजा खोला और उसकी कार को भीतर दाखिल हो लेने दिया ।

महल के मेन हॉल में वाकेई पार्टी चल रही थी । राजकुमारी रूपकुंवर राजसी परिधान में मेहमानों में विचर रही थी ।

“तुम !” - उसने सुनील को देखा तो भौचक्की-सी बोली - “यहां ! इतनी रात गये !”

“मुझे खुशी है कि राजकुमारी जी ने मुझे पहचान लिया है ।” - वो बोला ।

“तुम भी कोई भूलने वाली चीज हो !”

सुनील बड़े अदब से हंसा ।

“कैसे आये ?”

“भटका हुआ बटोही हूं । रैनबसेरे की तलाश में हूं । राजकुमारी जी की इनायत हो जाये तो रात चैन से कट जाये ।”

“बस ?”

“जी हां ।”

“वो क्या मुश्किल काम है ? अभी पार्टी का आनन्द लो, बाद में...”

“अभी । मैं बहुत थका हुआ हूं ।”

“ठीक है ।”

आनन-फानन उसे पहली मंजिल के एक राजसी गैस्टरूम में पहुंचा दिया गया जहां जाते ही सुनील पलंग पर ढेर हो गया ।

लेकिन खूब थका होने के बावजूद नींद उसकी आंखों से दूर रही । हर घड़ी उसके जेहन में एक ही ख्याल हथौड़े की तरह दस्तक देता रहा - कौन था कातिल ?

यही सोचते एक घण्टा गुजर गया ।

फिर थोड़ी देर के लिये उसे झपकी आयी और फिर जैसे उसी ख्याल ने उसे झिंझोड़कर जगा दिया ।

कौन था कातिल ?

यूं ही सोते-जागते कातिल का तसव्वुर करते सवेरा हो गया ।

तब एकाएक जैसे सूरज की पहली किरणों ने उसके ज्ञानचक्षु खोले ।

हे भगवान ! ये बात उसे पहले क्यों न सूझी ?

रहस्य की उस गुत्थी का वो हल तो मुंह बाये उसे ताक रहा था, वो ही था जो उससे नजर नहीं मिला पाया था ।

अब सारी कहानी दिन की तरह साफ हो गयी । भ्रम और शंका के तमाम बादल छंट गये ।

अगले आधे घण्टे में उसने केस की एक-एक घटना को तरतीबवार सोचा तो रही-सही कसर भी पूरी हो गयी ।

अब वो जानता था कि कातिल कौन था और किस षड्यन्त्र के तहत दो खून हुए थे ।

लेकिन सबूत ! सबूत कहां था ?

एक्शन री-प्ले की तरह सारे वाक्यात उसने एक बार फिर अपने जेहन पर उतारे ।

सबूत पैदा हो सकता था । एक दांव के जरिये जो कि चल सकता था और नहीं भी चल सकता था ।

कोशिश कर देखने में क्या हर्ज था ?

मौजूदा हालात में कोई हर्ज नहीं था ।

एक बार वो फैसला कर चुकने के बाद उसे सकून महसूस होने लगा और फिर तत्काल उसे नींद ने आ दबोचा ।

इस बार वो नींद से जागा तो उसने पाया कि दोपहर हो चुकी थी । वो बिस्तर से निकला, उसने बाहर गलियारे में मौजूद एक नौकर को जताया कि वो जाग गया था और फिर नित्यकर्म से निवृत्त होने के लिये बाथरूम में घुस गया ।

वो वहां से बाहर निकला तो उसने ब्रेकफास्ट की ट्राली को अपना इन्तजार करते पाया । ट्राली में तीन-चार अखबार भी थे जिनमें एक अखबार मिड डे था ।

मिड डे अन्य अखबारों की तरह प्रातःकाल नहीं, राजनगर से दोपहर में प्रकाशित होता था और इसी वजह से केवल उसमें पिछली रात की घटनाओं का सविस्तार वर्णन था ।

चाय की चुस्कियों के साथ उसने अखबार पढ़ा । जो बातें उसमें प्रकाशित थीं, वो थीं:

विक्रम सूरी ने अपने बयान वाली चिट्ठी का जिक्र करके कोई ब्लफ नहीं मारा था । उस चिट्ठी का अस्तित्व वाकई था और उसके जिस दोस्त के पास वो चिट्ठी थी, उसने सूरी पर हुए कातिलाना हमले की खबर सुनते ही उसे पुलिस के हवाले कर दिया था । चिट्ठी से पुलिस को ये मालूम हुआ था कि सुनील के कैसीनो के बार से रुखसत हो जाने के बाद मरियम ने सुनील का बिल की अदायगी में दिया पांच सौ का नोट खुद हासिल कर लिया था और कैशियर से ये लिखवा लिया था कि वो नोट वहां सुनील ने दिया था । वो नोट और कैशियर का लिखा बयान पुलिस मरियम की आफिस टेबल के एक दराज से बरामद कर भी चुकी थी ।

विक्रम सूरी गम्भीर रूप से घायल नहीं हुआ था। उसको न कोई जखम गहरा लगा था और न कोई हड्डी टूटी थी। उसका जो जिस्मानी नुकसान हुआ था, वो ये था कि उसके एक साइड के बाल झुलस गये थे और तीन-चार जगह खरोंचे लगी थीं। नतीजतन उसे फर्स्ट एण्ड के बाद पिछली रात ही घर भेज दिया गया था।

पुलिस को क्योंकि अब यकीन आ गया था कि कातिल सुनील था इसलिये उन्होंने सुबह-सवेर कीर्ति थापर को रिहा कर दिया था।

पुलिस के एक प्रवक्ता ने कहा था कि अगर शाम तक सुनील ने खुद अपने आपको पुलिस के हवाले न किया तो उसे फरार अपराधी घोषित कर दिया जायेगा और उसके लिये वारन्ट गिरफ्तारी जारी हो जायेगा।

बढिया ! बढिया !

उसने शान्ति से ब्रेकफास्ट समाप्त किया और फिर पुलिस हैडक्वार्टर में प्रभूदयाल को फोन किया।

“सुनील बोल रहा हूँ।” - वो बोला।

“सुनील !” - प्रभूदयाल तत्काल बोला - “कहाँ से बोल रहे हो ?”

“जहन्नुम से।”

“जानते हो तुम्हारे खिलाफ...”

“मैं आधे घण्टे में नार्थ शोर थापर की कोठी पर पहुँच रहा हूँ।”

तत्काल उसने सम्बन्धविच्छेद कर दिया।

सुनील नार्थ शोर पहुँचा।

पुलिस की रिसैप्शन कमेटी उसके इन्तजार में थापर की कोठी के सामने मौजूद थी।

वो कार से निकला तो बड़े ड्रामेटिक अन्दाज से सब-इंस्पेक्टर अनिल कपूर ने अपनी रिवॉल्वर उसकी ओर तान दी और कड़ककर बोला - “हैण्ड्स अप।”

“पागल हुआ है।” - सुनील बोला।

“हाथ ऊपर उठाओ वर्ना शूटिंग कर दूंगा।”

“शूट कर दूंगा ! आया बड़ा शूट कर देने वाला। अबे, जा के सब-इंस्पेक्ट्रिस्तान में क्यों नहीं रहता जहाँ से तू आया है ?”

“कपूर।” - प्रभूदयाल बोला - “रिवॉल्वर नीचे।”

“साहब जरा देखिये” - सब-इंस्पेक्टर तीखे स्वर में बोला - “इसके कोट पर दायीं कोहनी के पास खून लगा हुआ है।”

सुनील ने अपने कोट का मुआयना किया तो पाया कि वहाँ वाकेई खून लगा हुआ था। खून सूख चुका था लेकिन हल्के रंग के कपड़े पर बना उसका चकत्ता साफ दिखाई दे रहा था।

खून कहाँ से लग गया ?

प्रभूदयाल कुछ क्षण अपलक उसकी तरफ देखता रहा और फिर बोला - “सुनील, तुम गिरफ्तार हो।”

“क्या बड़ी बात है ?” - सुनील बोला - “ऐसे क्या मैं पहली बार गिरफ्तार हुआ हूँ ! लेकिन याद कर लीजिये इंस्पेक्टर साहब, मुझे गिरफ्तार करके हमेशा आपको पछताना ही पड़ा है।”

“इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार तुम पर खून का इलजाम है।”

“पहले भी तकरीबन बार खून का ही इलजाम था ।”

“इस बार हालत जुदा हैं ?”

“क्या जुदा है हालात में ? तुम समझते हो मैं कातिल हूँ ? तुम समझते हो मैं कातिल हो सकता हूँ ?”

“नहीं हो ?”

“नहीं हूँ । मैंने कोई खून नहीं किया । मेरा मतलब है फिलहाल ।”

“सर, ये ब्लफ मार रहा है ।” - अनिल कपूर बोला - “हमें बरगलाने की कोशिश कर रहा है ।”

“अबे, लक्कड़ के बुरादे ! अगर मैं कातिल होता तो क्या पुलिस को खबर करके यहां आता ?”

“सब स्टंट है...”

“तुम जरा चुप रहो ।” - प्रभूदयाल बोला - “और तुम इधर मेरे से बात करो ।”

“यस, सर ।” - सुनील तत्पर स्वर में बोला ।

“क्या किस्सा है ?”

जवाब देने से पहले सुनील ने पीछे कोठी की तरफ निगाह उठायी । उसे फ्रंट हाल के विशाल दरवाजे के सामने जो लोग खड़े दिखाई दिये, वो थे - लाजवन्ती थापर, कीर्ति थापर और उसकी दोनों बहनें, विवेक वर्मा और - विक्रम सूरी ।

विक्रम सूरी भी वहां मौजूद था लेकिन अपने खुरचे हुए चेहरे और अधजले बालों की वजह से अब पहले जैसा हसीन नहीं लग रहा था ।

बढिया !

“मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूँ ।” - प्रभूदयाल बोला ।

“मेरा जवाब ये है, आलाहजरत” - सुनील बोला - “कि मैं यहां असली कातिल को तुम्हारी खिदमत में पेश करने आया हूँ । चान्दी की तश्तरी में रखकर । सोने का वर्क लगाकर । हीरे का लौंग जड़कर ।”

“रिपोर्टर साहब, अगर ये कोई नयी सुनीलियन पुड़िया है तो...”

“ये कोई पुड़िया नहीं है । अब पुड़िया देने की स्टेज गुजर गयी है । अब तो सर्जरी की स्टेज आ गयी है । मेजर सर्जरी की ।”

“क्या मतलब ?”

“तुम मुझे सिर्फ दस मिनट की मोहलत दो । फिर ग्वारहवें मिनट में कातिल की गर्दन तुम्हारे हाथ में होगी ।”

“कौन है कातिल ? पहले नाम लो उसका ।”

“ऐसे नहीं ।”

“क्यों ? क्यों ऐसे नहीं ?”

“क्योंकि पूरी दास्तान सुने बगैर तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं आयेगा ।”

“यानी कि कथा किये बिना नहीं मानोगे ?”

“ऐसा ही है कुछ-कुछ ।”

“मैं असलियत तुम्हारे हलक में हाथ देकर निकलवा सकता हूँ ।”

“कोशिश कर देखो ?”

“इंस्पेक्टर साहब !” - एकाएक लाजवन्ती बोली - “जो कुछ ये कहना चाहता है, आप इसे कह क्यों नहीं लेने देते ? आखिर दस मिनट की तो बात है ।”

प्रभूदयाल क्षण भर को हिचकिचाया और फिर सख्ती से बोला - “दस मिनट । एक मिनट भी ऊपर नहीं ।”

“कबूल ।” - सुनील बोला ।

“और मेरे खयाल से आप लोग भीतर आ जाइये ।” - लाजवन्ती बोली ।

सिपाहियों के अलावा सब लोग भीतर ड्राइंगरूम में पहुंचे जहां अनिल कपूर रिवॉल्वर की मूठ पर हाथ रखे बड़ी मुस्तैदी से दरवाजे पर खड़ा हो गया और बाकी सब जने बैठ गये ।

“अब बोलो ।” - प्रभूदयाल बोला ।

“पूरा डेढ़ बजा है । सुनील ने अपनी घड़ी में टाइम देखा और फिर उसे कलाई पर से उतारकर अपने सामने मेज पर रख लिया ।”

“मुझे मालूम है । तुम...”

“तो अब सुनील भाई मुलतानी पेश करता है डबल मर्डर की कहानी ।” - सुनील बड़े नाटकीय अन्दाज से बोला - “गुल गया गुलशन गया बुलबुल की सवारी आयी । अब जरा जिगर थाम के बैठो मेरी बारी आयी ।”

प्रभूदयाल के चेहरे पर गहन वितृष्णा के भाव आये लेकिन वो मुंह से कुछ न बोला ।

“विकी” - सुनील बोला - “तुम कहते हो कि बोट में किसी ने तुम्हारे सिर पर पीछे से वार किया था ?”

“हां ।”

“यानी कि तुमने वार करने वाले की सूरत नहीं देखी थी ?”

“वो तुम थे ।”

“ये महज तुम्हारा अन्दाजा है लेकिन अगर मैं भी था तो असल में तुमने मेरी सूरत नहीं देखी थी !”

“वहां अन्धेरा था...”

“तूफानेहमदम, ये लिफाफेबाजी छोड़ो और दो टूक जवाब दो कि तुमने अपने आक्रमणकारी की सूरत देखी थी या नहीं देखी थी ?”

“नहीं देखी थी लेकिन वो तुम्हीं थे जो जाके लौट आये थे ।”

“आई रिपीट अगेन एण्ड अगेन एण्ड अगेन । तुमने अपने आक्रमणकारी की सूरत नहीं देखी थी ।”

“नहीं देखी थी ।” - वो कठिन स्वर में बोला ।

“दैट्स लाइक ए गुड ब्याव । वो आक्रमणकारी कोई भी हो सकता था ! यहां तक कि कोई औरत भी हो सकती थी ?”

“औरत !”

“क्यों नहीं ? जब तुम्हें पता ही नहीं कि तुम्हारे पीछे कौन था तो औरत क्यों नहीं ?”

वो खामोश रहा ।

“जब तुम्हारे आक्रमणकारी ने बोट में कदम रखा ता तो तुम्हें उसकी इस हरकत का अहसास नहीं हुआ था ?”

“हुआ था। पानी में डोलती बोट में कोई कैसे मुझे बिना खबर लगे सवार हो सकता था ?”

“ऐगजैक्टली।”

“तब मैंने समझा था कि तुम्हीं वापिस लौट आये थे। मैंने तुम्हें नाम लेकर पुकारा भी था लेकिन तभी मेरी खोपड़ी पर एक भारी चीज आकर लगी थी जोकि बाद में पुलिस ने मुझे बताया था कि एक लोहे के पाइप का टुकड़ा था। उसके तुरन्त बाद में बेहोश हो गया था। उसके बाद क्या हुआ था, मुझे नहीं मालूम।”

“उस पाइप के टुकड़े को” - प्रभूदयाल बोला - “हमारे फिंगरप्रिंट्स एक्सर्ट द्वारा एग्जामिन किया जा रहा है। रिपोर्टर साहब, अगर उस पर तुम्हारी उंगलियों के निशान निकले तो...”

“तो उससे सिर्फ ये साबित होगा कि कभी मैंने भी उसे हैंडल किया था। न कि ये कि वो पाइप का टुकड़ा मैंने सूरी के सिर में मारा था।”

“ऐसा नहीं किया था तो हैंडल क्यों किया ?”

“क्योंकि जब मैं इसकी बोट में इससे मिला था तब वो उस सीट पर पड़ा था जिस पर कि मैं जाकर बैठा था। सीट पर इसलिये पड़ा था क्योंकि इसने जान-बूझकर उसे वहां रखा था, क्योंकि ये जानता था कि जब मैं सीट पर बैठूंगा तो वो मुझे चुभेगा और तब मैं एक स्वभाविक प्रकिया के तौर पर उसे उठाकर नीचे डाल दूंगा, जैसा कि मैंने असल में किया था। यूं उस पाइप पर मेरी उंगलियों के निशान बन जाना क्या बड़ी बात थी !”

“लेकिन अगर उस पर तुम्हारे अलावा किसी और की उंगलियों के निशान न मिले तो ?”

“आपकी तो का जवाब मेरे पास है। आप बरायमेहरबानी मुझे कहानी को आगे बढ़ाने दीजिये, फिर मैं उस मुद्दे पर भी आता हूं।”

“अच्छी बात है।”

“मैं कहां था ? हां। विकी, तो तुम कहते हो कि तुम्हारी खोपड़ी पर लोहे के पाइप से वार हुआ था जिसकी वजह से तुम बेहोश हो गये थे और होश में आने पर तुम क्रूर इस नतीजे पर पहुंच गये थे कि आक्रमणकारी मैं था।”

“तुम्हारी सिवाय कोई और हो ही नहीं सकता आक्रमणकारी।” - सूरी भुनभुनाता-सा बोला।

“फिर भी कि ये सिर्फ ख्याल है तुम्हारा कि वो आक्रमणकारी मैं था। इस ख्याल को यकीन में बदलने का तुम्हारे पास कोई जरिया नहीं !”

“है तो ऐसा ही” - वो यूं बोला जैसे वो बात कबूल करते उसका कलेजा फट रहा है - “लेकिन...”

“फिलहाल इतना ही काफी है।” - वो लाजवन्ती की तरफ घूमा - “चाई जी, मैं आपको पहले कत्ल की रात की याद दिलाना चाहता हूं। उस रात आप और दिलीप इकट्ठे, आपकी कार पर यहां लौटे थे। तब पिछली सीट पर कीर्ति की सैंडलें और बालों का एक क्लिक पड़ा था। आपने अपने बेटे को कहा था कि वो वो सामान उठाकर भीतर ले आये। ठीक ?”

“हां।” - लाजवन्ती बोली।

“आपने दिलीप को बताया था कि वो सामान असल में कीर्ति का था जो कि इत्तफाक से आपकी कार में पड़ा था ?”

“नहीं।”

“अच्छी तरह याद है आपको ?”

“हां।”

“यानी कि दिलीप को नहीं मालूम था कि वो सामान कीर्ति का था ?”

“जाहिर है।”

“अब क्योंकि वो सामान आपकी कार में पड़ा था और उसे भीतर ले आने के लिये दिलीप को आपने कहा था, इसलिये दिलीप का सहज ही ये सोच लेना, कि वो सामान आपका था क्या स्वाभाविक नहीं था ?”

“तुम कहना क्या चाहते हो ?”

“मैं ये कहना चाहता हूँ कि दिलीप ने वो सामान भीतर लाकर आपके... आई रिपीट आपके, न कि कीर्ति के... बैडरूम में रखा होगा क्योंकि उसने समझा था कि वो सामान आपका था ।”

लाजवन्ती ने सहमति में सिर हिलाया ।

“तो क्या हुआ ?” - एकाएक विवेक वर्मा तीखे स्वर में बोला - “इससे साबित क्या हुआ ?”

“इससे ये साबित हुआ, दिलबर जानी, कि वो दोनों चीजें - वो सैंडल से उखड़ी एड़ी, वो बालों का क्लिप - हत्यारे ने चाई जी को फंसाने की नीयत से मौकायेवारदात पर प्लांट की थीं, न कि कीर्ति को फंसाने के लिये ।”

“तो भी क्या हुआ ?”

“तो ये हुआ मिस्टर वर्मा, कि तुम हो वो आदमी जिसकी कि ये करतूत थी ।”

“झूठ । बिल्कुल झूठ ।” - वर्मा आवेशपूर्ण स्वर में बोला ।

सुनील जोर से हंसा ।

“तुम” - प्रभूदयाल बोला - “ये कहना चाहते हो कि मिस्टर वर्मा ने दिलीप थापर का कत्ल किया था ?”

“अभी नहीं कहना चाहता” - सुनील बोला - “मैंने वो माल अलग बांध के रखा हुआ है जो बढ़िया है । अभी मैं सिर्फ ये कहना चाहता हूँ कि उस रात अनजाने में, मुगालते में, वर्मा ने मौकायेवारदात पर कीर्ति के खिलाफ सबूत प्लांट कर दिये थे जबकि उसकी असल मंशा ये थी कि कीर्ति पर कोई शक-भरी निगाह न पड़े, उस पर हर्फ न आये ।”

“क्यों ?”

“इस क्यों का बेहतर जवाब तो कीर्ति ही दे सकती है । आप बताइये, कि क्यों वर्मा ने ऐसा किया कि कातिल होने का शक आप पर होने की जगह किसी और पर हो ?”

“मु... मुझे” - वो हकलाती सी बोली - “मुझे नहीं पता... पता तुम क्या कह रहे हो !”

“आपको सब पता है । लेकिन अगर आप मेरी जुबानी सुनना चाहती हैं तो चलिये मैं ही बताता हूँ । जनाबेहाजरीन, सुनिये ।”

तब सुनील ने बयान किया कि कैसे वर्मा ने कमल सक्सेना बनकर हर्षिता को उल्लू बनाया था और उसका दिलीप थापर से तलाक करवाया था और फिर कैसे उसके निर्देश पर कीर्ति ने विधुर थापर को अपने पर आशिक कराने का अभियान छेड़ा था और आखिर में उससे शादी की थी । सबूत के तौर पर उसने हैण्ड पेन्टिड टाई, दोनों तस्वीरें और आर्टिस्ट द्वारा बनाये गये दोनों स्कैच पेश किये ।

प्रभूदयाल ने बड़े गौर से उन तमाम चीजों का मुआयना किया । जब वो इस काम से निपटा तो उसकी निगाहों का फोकस सुनील नहीं, कीर्ति थी ।

“ये सच है ?” - प्रभूदयाल उसे घूरता हुआ बोला ।

“नहीं ।” - कीर्ति फंसे कण्ठ से बोली ।

“ये सब झूठ है ।” - वर्मा गुस्से से बोला ।

“ये आदमी किस्से गढ़ने में माहिर मालूम होता है ।” - सूरी ने भी बिना मांगे अपनी राय पेश की ।

सुनील ने नमिता और मोहिनी पर निगाह डाली। किसी ने उससे निगाह न मिलाई। उस घड़ी चाई जी भी अपनी गोद में रखे अपने हाथों पर निगाह टिकाये थी। साफ जाहिर हो रहा था कि उस बाबत सबमें कोई समझौता हो गया था, सबने मान लिया मालूम होता था कि क्योंकि उन पुरानी बातों का मौजूदा वाक्यात से कोई रिश्ता नहीं था इसलिये गड़े मुर्दे उखाड़ने का सबने विरोध करना था।

“चाई जी।” - सुनील आहत भाव से बोला - “आप भी रेवड़ में शामिल हो गयीं।”

लाजवन्ती ने सिर न उठाया।

“और तुम” - वो वर्मा की तरफ घूमा - “कैसे इस अहसास के साथ जी सकते हो कि हर्षिता की मौत की वजह तुम थे। तुम्हारी वजह से उसने दिलीप थापर से तलाक लिया और तुम्हारे विश्वासघात की वजह से उसने मौत की बांहों में पनाह पायी।”

“झूठ!” - वर्मा बोला - “बकवास!”

“और आप वो औरत हैं” - सुनील कीर्ति से बोला - “जो उस दौलत पर काबिज है जो कि हर्षिता की होनी चाहिये थी। आप दोनों के दौलत के लालच ने एक निरीह औरत की जान ली। कहने को हर्षिता ने आत्महत्या की थी लेकिन उसको वो कदम उठाने के लिये मजबूर करने वाला ये आपका जोड़ीदार था। आप वो औरत हैं जिसने हर्षिता का घर-संसार उजाड़ा, जिसने उसका पति उससे छीना, जिसने उसे मौत के मुंह में धकेला। रात को नींद आ जाती है आपको या सारी रात हर्षिता को अपनी कब्र में करवटें बदलते देखते गुजरती है?”

कीर्ति का चेहरा फक पड़ गया। उसके होंठ कांपे लेकिन मुंह से बोल न फूटा।

“क्या आपकी आत्मा बिल्कुल मर गयी है? क्या दौलत ही आपका ईमान बन गया है? आपको कभी ख्याल नहीं आता कि अभी आपने अपने बनाने वाले के रूबरू भी पेश होना है और वो आपसे कुछ पूछेगा नहीं, क्योंकि वो सब कुछ जानता है। क्योंकि वो ही सब कुछ जानता है...”

“मैं नहीं जानती थी।” - वो आर्तनाद करती हुई बोली।

“कीर्ति!” - वर्मा डपटकर बोला।

“मैं नहीं जानती थी कि विवेक ने हर्षिता के साथ क्या खेल खेला था...”

“कीर्ति! शटअप।”

“आप जानती थीं” - सुनील ने तपते लोहे पर चोट की - “आप सब कुछ जानती थीं।”

“तब नहीं जानती थी।” - कीर्ति बोली - “बाद में जाना। बहुत बाद में। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। तब तक जो होना था हो चुका था। मेरा ईश्वर गवाह है मैं नहीं जानती थी कि विवेक ने हर्षिता को अपने प्रेमजाल में फंसाकर उसे दिलीप से तलाक लेने के लिये मजबूर किया था ताकि वो मेरे से फंसने के लिये, मेरे से शादी करने के लिये आजाद होता। मेरा गुनाह सिर्फ इतना है कि मैंने विवेक के कहने पर दिलीप को अपने रूपजाल में फंसाकर उसे अपने से शादी के लिये तैयार किया लेकिन, मैं फिर कहती हूँ, इसकी वजह से हर्षिता के साथ जो बीती थी, उसकी मुझे भनक तक नहीं थी। मैंने शादी जरूर इसके कहने पर की थी लेकिन मैंने हमेशा एक निष्ठावान बीवी बन के दिखाया था।”

“गैरमर्द से प्यार” - सुनील सूरी की ओर इशारा करता हुआ बोला - “उसके साथ भाग जाने के इरादे, ये निष्ठावान बीवी के काम होते हैं?”

“वो सब मैंने तब किया जबकि पानी सिर से ऊंचा हो गया था। मैं मानती हूँ वो मेरी गलती थी। आज मुझे अपनी हरकतों पर पश्चाताप हो रहा है। मुझे यूँ पाप की भागी नहीं बनना चाहिये था। मेरे से गलती हुई। मेरा ईश्वर जानता है कि तनाव हृद से ज्यादा बढ़ जाने की वजह से मैं भटक गयी।”

एकाएक उसने अपने हाथों में अपना चेहरा छुपा लिया और हौले-हौले सुबकने लगी।

सूरी उठकर उसके करीब पहुंचा और उसका कन्धा थपथपाकर उसे दिलासा देने लगा।

“मत छुओ मुझे।” - वो तमककर बोली।

सूरी हड़बड़ाकर परे हटा।

“तुम इधर मेरी तरफ देखो ।” - प्रभूदयाल सुनील से बोला ।

“यस, सर ।” - सुनील बोला ।

“मैंने मान लिया कि दो साल पहले ऐसा षड्यन्त्र रचा गया था जिसके तहत दौलत की खातिर कीर्ति ने थापर से शादी की थी । लेकिन इस बात का उसके कत्ल से क्या रिश्ता है ?”

“ये बात विवेक वर्मा नाम के इस आदमी का असली चरित्र उजागर करती है । ये बात ये स्थापित करती है कि दौलत की खातिर ये आदमी कुछ भी कर सकता है । ये बात उस उद्देश्य की तरफ इशारा करती है जिसके तहत इसने मौकायेवारदात पर ऐसे सूत्र प्लांट किये जोकि कातिल होने के मामले में चाई जी की तरफ इशारा करते । अब ये जुदा बात है कि धोखे में ये कीर्ति के खिलाफ ही सूत्र प्लांट कर बैठा । यानी कि जो सैंडल की एड़ी और बालों का क्लिप इसने चाई जी का जानकर मौकायेवारदात पर रखा था, वो असल में कीर्ति का सामान निकला था । प्रभू, ये शख्स कीर्ति का अपने पति के कत्ल के इलजाम में फंस जाना अफोर्ड नहीं कर सकता था । कीर्ति के कातिल साबित होने का मतलब था कि ये अपने पति की दौलत से बेदखल हो जाती, इसे सजा हो जाती तो सब माल चाई जी के हाथों में पहुंच जाता और यूँ इसका तो सारा खेल ही बिगड़ जाता ।”

“लेकिन बेटे के कत्ल का शक मां पर ट्रांसफर करना कैसे चल जाता ? कौन मानता कि मां ने बेटे का खून किया था ?”

“ये अपने-आपमें सबूत है कि लाजवन्ती और दिलीप मां-बेटा नहीं थे और इस बात को वर्मा से बेहतर कौन जानता हो सकता था ! हरिमोहन थापर की दौलत हथियाने के लिये इन्हें उसकी फर्जी बहू और दिलीप को फर्जी पोता इसी ने तो बनाया था । लाजवन्ती जरूर कभी थापर की असली बहू की करीबी रह चुकी थी जिसकी वजह से ये उसके बारे में, थापर के बेटे के बारे में, उसके पोते के बारे में बहुत-सी ऐसे बड़ी अन्दरूनी बातें जानती थी जिसकी बिना पर वर्मा के इशारे पर ये हरिमोहन थापर के ट्रस्टियों को ये विश्वास दिलाने में कामयाब हुई कि ये हरिमोहन थापर की बहू थी और दिलीप इसका बेटा और थापर का पोता था । वर्मा से बेहतर इस हकीकत को कौन जानता था कि लाजवन्ती का असल में दिलीप कुछ नहीं लगता था और दौलत की बन्दरबांट में ऐसे हालात पैदा हो गए थे कि दौलत पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिये लाजवन्ती को दिलीप का खून कर देना पड़ा था ।”

“ओह !”

“ये वो शख्स है जिसने परसों मेरे फ्लैट पर मेरे सामने ये सम्भावना व्यक्त की थी कि चाई जी भी दिलीप की कातिल हो सकती थी क्योंकि असल में सिर्फ ये ही जानता था कि चाई जी दिलीप की मां नहीं थी, वो दिलीप को कुछ भी नहीं थी ।”

“आई सी ।”

“उसी रोज इसी ने मुझे ये हिन्ट भी दिया था कि थापर का कत्ल करने वाला और मौकायेवारदात पर कीर्ति का निजी सामान प्लांट करने वाला कोई एक ही शख्स नहीं था । इसी ने इस बात पर जोर दिया था कि जब हत्यारा हत्या को दुर्घटना साबित करना चाहता था तो बोट हाउस में कीर्ति को फंसवाने वाले सूत्र प्लांट करने की क्या जरूरत थी ? मुझे तभी समझ जाना चाहिये था कि दूसरे काम को इस शख्स ने अंजाम दिया था लेकिन अफसोस है कि तब ऐसा नहीं हो सका था ।”

“हूँ ।”

“प्रभू, ये आदमी बहुत पहुंचा हुआ है । इसकी आंख में सूअर का बाल है । ये जो न कर गुजरे वही थोड़ा है । अगर कत्ल के इलजाम में चाई जी को फंसाने की इसकी चाल कामयाब हो जाती तो बाद में किसी खुफिया तरीके से ये ही पुलिस को सुझा देता कि लाजवन्ती असल में दिलीप की मां नहीं थी । अब क्योंकि दिलीप मर चुका था इसलिये यह ये भी दावा कर सकता था कि बेटा तो असली था लेकिन मां नकली थी । प्रभू, इस शख्स के तरकश में बहुत तीर हैं और ये एक तीर से कई-कई शिकार कर सकता है । इसीलिये इसने थापर की जेब में पांच-पांच सौ के नोटों की सूरत में मौजूद चालीस हजार रुपये निकाल लिये ताकि अगर चाई जी किसी तरह से शक बरी हो जाये तो वो कत्ल किसी चोर का काम समझ लिया जाये ।”

“हे भगवान !” - एकाएक नमिता कलपकर बोली - “क्या कोई इस आदमी की जुबान नहीं पकड़ सकता ? क्यों इसे हर किसी के खिलाफ जहर उगलने की इजाजत दी जा रही है ?”

“गुलेगुलजार” - सुनील व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - “यार की हिमायत में बोलकर अपना फर्ज निभाने का ख्याल बड़ी देर में आया ?”

“यूं... यूं...”

“गाली मत देना । अंग्रेजी में तो हरिगज मत देना । क्यों कि मेरे पास तुम्हारे लिये गुड न्यूज है जो गाली दी तो नहीं मिलेगा ।”

उसने तत्काल होंठ भींच लिये ।

“क्या गुड न्यूज है तुम्हारे पास ?” - मोहिनी पहली बार बोली ।

“अभी मालूम होता है । जरा धीरज रखो ।”

“तुम” - प्रभूदयाल बोला - “ये कहना चाहते हो कि थापर का कत्ल वर्मा ने किया है ?”

“मैं वहीं पहुंच रहा हूं माई-बाप, लेकिन पहले मुझे उस बारूद की कहानी कह लेने दी जो कि मुझे थापर की बोट में लगा मिला था ।”

“तो जरा जल्दी-जल्दी जुबान चलाओ ।”

“ओके । सुनो । बात कुछ यूँ बनती है कि हत्यारे को इस तथ्य की वाकफियत थी कि थापर की बोट की डीजल की टंकी लीक करती थी । उसे ये भी मालूम था कि कीर्ति की रिवॉल्वर कहां उपलब्ध थी और वो थापर की इस खास आदत से भी वाकिफ था कि रात को सोने से पहले वो मोटरबोट लेकर समुद्र में निकल पड़ता था । उसे ये भी मालूम था कि बोट हाउस में बारूद की छड़ों की एक पेटी पड़ी थी । अब उसने जो किया वो ये था कि थापर की गैरहाजिरी में उसने उसकी बोट में बारूद लगा दिया और खुद थापर के इन्तजार में बोट हाउस में छुप के बैठ गया । थापर आकर बोट में सवार हुआ, ज्यों ही उसने बोट का इंजन स्टार्ट किया, हत्यारा प्रकट हुआ और उसने थापर को शूट कर दिया । उस घड़ी गोली की आवाज किसी ने सुनी भी होगी तो उसे बोट के इंजन के बैकफायर करने की आवाज समझा होगा । अब यहां से आगे हत्यारे की मूल योजना ये थी कि वो लाश के साथ बोट में सवार होता, उसे चलाकर समुद्र में काफी आगे तक ले जाता, वहां थापर की लाश को वजन बांधकर डुबो देता, बारूद के असाधारण रूप से लम्बे पलीते को सुलगाता और बोट को समुद्र की छाती पर डोलती छोड़कर तैरकर वापिस किनारे आ जाता । यूँ जब विस्फोट होता तब ऐन उस वक्त वो किसी के साथ होता जो ये कहने वाला बनता कि विस्फोट के वक्त तो हत्यारा उसके साथ था ।”

“कीर्ति की रिवॉल्वर का वो क्या करता ?”

“उसे वो साफ करके, चली हुई गोली की जगह नयी गोली डाल के वापिस कीर्ति की कार के ग्लोव कम्पार्टमेंट में रख देता जहां से कि वो उसने निकाली होती । उसकी योजना के अनुसार लाश तो बरामद होनी नहीं थी और विस्फोट की वजह से बोट के परखच्चे उड़ जाने थे ! तब कौन कहता कि असल में थापर गोली खाकर मरा था । तब यही समझा जाता कि उसने लीक करती डीजल की टंकी को नजरअन्दाज करने की गलती की थी जिसकी सजा उसे जान खोकर मिली थी । यानी कि सहज ही ये मान लिया जाता कि लीक करती टंकी किसी प्रकार आग पकड़ गयी थी और वही विस्फोट का कारण बनी थी ।”

“हूँ ।”

“हत्यारे की इस शानदार योजना की खीर में मक्खी थानसिंह नाम के उस बोट मकैनिक ने डाली जो कि बुधवार सुबह लीक करती टंकी को अटैण्ड करने के लिये यहां बुलाया गया था । शाम को थानसिंह एक स्टैण्डबाई टंकी के साथ वापिस लौटा था, उसने लीक करती टंकी बोट में से निकालकर अपनी स्टैण्डबाई टंकी उसकी जगह लगाने की कोशिश की थी तो पाया था कि वो टंकी असल टंकी के खांचों में उसकी जगह फिट नहीं हो रही थी । तब वो स्टैण्डबाई टंकी को बिना फिट किये, उसे बिना इंजन से कनेक्ट किये वहां से चला गया था । स्टैण्डबाई टंकी इंजन से कनेक्ट नहीं हो सकी थी, इस बात की वो किसी को खबर नहीं कर पाया था क्योंकि तब तक ये तमाम लोग कैसीनो के उद्घाटन के चक्कर में झेरी जा चुके थे । ये बात हत्यारे को भी नहीं मालूम थी कि थानसिंह की उस गड़बड़ी की वजह से वो मोटरबोट चल नहीं सकती थी । उसने थापर को बोट हाउस में आकर बोट में सवार होते और इंजन स्टार्ट करते देखा था इसलिये वो तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि वो बोट चलने वाली नहीं थी और जो वो एक बार स्टार्ट हो गयी थी, उसकी वजह काबरेटर में पहले से पहुंचे हुए डीजल की सीमित मात्रा थी ।”

प्रभूदयाल का सिर स्वयमेव ही सहमति में हिलने लगा ।

“कहने का मतलब यह है कि हत्यारे ने थापर को गोली मार दी लेकिन तभी काबरेटर का डीजल चुक जाने की वजह से इंजन बन्द हो गया और फिर हत्यारे की लाख कोशिशों के बाद दोबारा स्टार्ट होकर न दिया । कर्टसी थानसिंह बोट मकैनिक, उसकी आइन्दा स्कीम के सारे कदम धराशायी हो गये । यानी कि अब बोट को समुद्र में ले जाकर वहां थापर की लाश डुबो देना और बोट में भीषण विस्फोट का सामान करना सम्भव न रहा । उसके बाद उसने जो किया, वैसा ही धिचपिच किया जैसा कि बाद में वर्मा ने चाई जी को फंसाने की गरज में किया था । क्यों वर्मा ?”

“मैं कुछ नहीं जानता । मैं वहां नहीं था ।”

“तो फिर थापर की जेब से गायब पांच-पांच सौ के नोट तुम्हारे कब्जे में कैसे आ गये ?”

“कौन कहता है वो मेरे कब्जे में आ गए थे ?”

“मैं कहता हूं । और मैं इसलिये कहता हूं क्योंकि उन्हीं नोटों का एक हिस्सा तुमने कत्ल से अगले रोज मेरे फ्लैट पर मुझे दिया था । मेरे बटुवे में डालकर । मेरे बाकी सामान के साथ ।”

“तुम कभी साबित नहीं कर सकते कि ऐसे कोई नोट तुम्हें मैंने दिये थे ।”

“प्यारेलाल, ऐसे तो तुम भी साबित भी नहीं कर सकते कि वो नोट तुमने मुझे नहीं दिये थे । अब मैं समझता हूं कि कानून के रखवाले इस मामले में मेरी जुबान को अहमियत देंगे न कि ऐसे शख्स की जुबान को, जोकि धोखेबाज है, फरेबी है, ठग है, पराई दौलत पर घात लगाने वाला नटवरलाल है, जो एक औरत को अपने प्रेमजाल में फंसाकर आसहत्या के लिये मजबूर कर चुका है और दूसरी को दौलत की ललक में आज भी अपने हाथों की कठपुतली बनाये हुए है ।”

“बकते रहो ।” - वर्मा लापरवाही जताता हुआ बोला - “लेकिन हकीकत ये है कि मैं कत्ल की बाबत कुछ नहीं जानता और मैं न ही ये जानता हूं कि पांच पांच सौ रुपये के दस नोट तुम्हारे पास कहां से आये ।”

“कितने नोट ?”

“दस नोट । पांच हजार...”

तत्काल वो होंठ काटने लगा ।

“इंस्पेक्टर साहब” - सुनील विजेता के से स्वर में बोला - “अब आगे कुछ कहने की जरूरत है ?”

“तुम्हें कैसे पता है?” - प्रभूदयाल वर्मा को घूरता हुआ बोला - “कि पांच-पांच सौ के वो नोट दस थे ? सुनील ने तो अभी इस बात का जिक्र नहीं किया था ।”

“इसका सामान लौटाने से पहले मैंने इसका बटुवा चैक किया था और वो नोट गिने थे ।”

“यानी कि वो पहले से ही वहां थे ?”

“जाहिर है ।”

“नहीं जाहिर है ।” - सुनील सख्खी से बोला - “मेरे कपड़े तो उस रोज शाम को ही उतरवा लिये गये थे जबकि वो नोट तो रात को थापर को कैसीनो में रॉलेट की टेबल पर हुई जीत के एवज में मिले थे । जब मेरा बटुवा मेरे काबू में ही नहीं था तो मैं उसमें नोट कैसे रख सकता था ?”

“नहीं रख सकते थे तो नहीं रख सकते थे । मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मैंने वो नोट तुम्हारे बटुवे में नहीं रखे थे ।”

“तो किसने रखे थे ?”

“मुझे क्या पता ?”

“तो और किसे पता है ? जब मेरा सारा निजी सामान...”

“बोलते रहो । बोलते रहो । तुम सात जम मेरे से ये नहीं कहलवा सकते कि वो नोट थापर की जेब से मैंने निकाले थे । तुम सात जन्म साबित नहीं कर सकते कि थापर का कत्ल मैंने किया था ।”

“कबूल । नहीं कर सकता ।”

वर्मा ने हैरानी से सुनील की तरफ देखा ।

“अब पूछो क्यों नहीं कर सकता ?” - सुनील बोला ।

“क... क्यों नहीं कर सकते ?”

“क्योंकि मुझे मालूम है कि थापर का कत्ल तुमने नहीं किया है ।”

“तु... तुम्हें मालूम है !”

“हां । तुमने थापर का कत्ल नहीं किया । तुमने तो वहां एकाएक पहुंचकर कातिल को फौरन भाग निकलने के लिये मजबूर किया था । कातिल बोट हाउस से खिसका था कि तुम वहां पहुंचे थे । तुमने वहां थापर को मरा पड़ा पाया था । तब तुम कूदकर इस नतीजे पर पहुंच गये थे कि कैसीनो में अपने घोर अपमान से बिफरी कीर्ति ने ही थापर को शूट कर दिया था । कीर्ति का थापर के कत्ल में लपेटा जाना तुम्हारी सारी योजना चौपट कर सकता था । उस कत्ल में कीर्ति का लपेटा जाना तुम अफोर्ड नहीं कर सकते थे । तब कीर्ति की तरफ से ध्यान हटाने की पहल तुम्हें जो तरकीब सूझी, जोकि तुमने फौरन आजमाई, कि ये जाहिर किया जाये कि वो किसी चोर का काम था । लिहाजा तुमने थापर की जेब में मौजूद पांच-पांच सौ के अस्सी नोट निकालकर अपने अधिकार में ले लिये और बाद में उन्हीं नोटों में से दस नोट मुझे लौटाने की मूर्खता की । लेकिन फिर तुमने महसूस किया कि चोर वाली कहानी कमजोर थी । तब तुम्हें चाई जी का खयाल आया जोकि कोठी में नशे में धुत्त दीन दुनिया से बेखबर सोई पड़ी थी । तब तुमने उसे फंसाने का सामान किया । तुमने मौकायेवारदात पर ऐसे सबूत प्लांट किये जो कि तुम्हारी निगाह में चाई जी की तरफ इशारा होते और वहां से खिसक गये ।”

“मैंने ऐसा कुछ नहीं किया ।”

“वो हम देख लेंगे” - एकाएक प्रभूदयाल बोला - “कि तुमने क्या किया है और क्या नहीं किया है । पुलिस से तुम्हारी पैतरेबाजी नहीं चलने वाली । और रिपोर्टर साहब, तुम्हारे दस मिनट खत्म हुए ।”

“मेरी कहानी भी समझो कि खत्म हुई ।” - सुनील मेज से घड़ी उठाकर वापिस कलाई पर बान्धता हुआ बोला - “बस सिर्फ ये बताना बाकी है कि दिलीप थापर का कत्ल किसने किया ।”

“किसने किया ?”

“उसी ने जिसने मरियम डिसूजा का कत्ल किया ।”

“और सूरी के कत्ल की कीशिश की ?”

“ऐसी कोई कोशिश नहीं हुई । कातिल भला अपना कत्ल क्यों करता ?”

“अपना कत्ल ? कौन है कातिल ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है । इंस्पेक्टर साहब, ये है कातिल ।”

और सुनील ने बड़े नाटकीय अंदाज में सूरी की तरफ उंगली तानी ।

वातावरण में एकाएक मरघट का-सा सन्नाटा छा गया । सबकी हैरानी-भरी निगाहें विक्रम सूरी पर फोकस हो गयीं ।

“ये आदमी पागल हो गया है ।” - एकाएक सूरी भड़ककर बोला - “इसको चुप न कराया गया तो ये बारी-बारी सबको कातिल करार देकर मानेगा ।”

“मेरे जिगर के टुकड़े ।” - सुनील मीठे स्वर में बोला - “तू ही कातिल है ।”

“यूं तुम अपनी बला मेरे सिर नहीं मंढ सकते ।”

“मेरे पर कोई बला हावी नहीं है । मेरे खिलाफ जो इकलौता सबूत है जिसको ले-लेकर तुम उछल रहे हो, वो वो पांच सौ का नोट है जोकि मैंने कैसीनो के बार में खर्च किया था लेकिन मैं एक्सप्लेन कर चुका हूं कि वो नोट मेरे पास कहां से आया था ।”

“तुम कुछ एक्सप्लेन नहीं कर चुके हो । वर्मा ने वो नोट खुद तुम्हें दिया होना कबूल नहीं किया है ।”

“कर लेगा । कर लेगा न, कृपानिधान ?”

प्रभूदयाल ने बड़ी मजबूती से सहमति में सिर हिलाया ।

“तुम साबित कर सकते हो कि मैं कातिल हूँ ?” - सूरी गर्जा ।

“कोशिश कर सकता हूँ ।” - सुनील बड़े इत्मीनान से बोला ।

“वैसी ही कोशिश जैसी अभी तुमने वर्मा के खिलाफ की ?”

“उससे बेहतर ।”

“सब बकवास । सब...”

“तुम इस बात से इनकार कर सकते हो कि सम्पन्न औरतों को फंसाकर उसने पैसा ऐंठना तुम्हारा कारोबार है, यूँ तुम कई औरतों को फंसा चुके हो और तुम्हारी लेटेस्ट शिकार कीर्ति है । तुम एक फी-मेल हो, जिगोलो हो जिसका असली चरित्र मामूली जांच-पड़ताल से ही उजागर हो सकता है ।”

“बहस के लिये मैंने मान लिया मैं ऐसा हूँ । अब इतने से साबित हो गया कि मैं कातिल हूँ ?”

“इतने से तो नहीं हो गया ।”

“तो फिर...”

“मैडम” - उसे नजरअन्दाज कर के सुनील कीर्ति से सम्बोधित हुआ - “क्या ये सच नहीं है कि ये शख्स, जो आपकी मुहब्बत का दम भरता था, हमेशा आपको अपने पति से तलाक के लिये उकसाता रहता था ? हमेशा आपको सब कुछ छोड़-छाड़ के उसके पास चले आने की राय देता रहता था ? ऐसी एक राय इसने बुधवार शाम को झेरी के काटेज में भी आपको दे दी । किनारा कर लो उस शैतान से । फौरन छोड़ दो । मेरे से शादी कर लो । पीछा छुड़ाओ उससे । मेरे पास आ जाओ । ऐसा पता नहीं क्या कुछ इसे आपको कहते हैं खुद अपने कानों से सुना था ।”

कीर्ति ने उत्तर न दिया । वो बार-बार थूक निगलने लगी और बेचैनी से पहलू बदलने लगी ।

“तुम पागल हो” - सूरी बोला - “जो इतना नहीं समझते कि अगर ये सच में थापर से तलाक ले लेती तो दौलत तो पीछे थापर के पास ही रह जाती ।”

“नहीं रह जाती । नीमपागल, बर्बर, पाशविक थापर इनके साथ बहुत निर्दयता से पेश आता था । तलाक की अगर नौबत आती तो उसकी बिना थापर का अमानवीय व्यवहार ही होता । यानी कि अगर कूअलिटि की बिना पर इन्हें तलाक हासिल होता तो प्रापर्टी सैटलमेंट में ये थापर की करोड़ों की जायदाद में हिस्सेदार बनती । और कहने की जरूरत नहीं कि शादी जैसा कोई अहम कदम तुम तब तक न उठाते जब तक कि कीर्ति को एक रिच डाइवोर्सि वाला दर्जा न हासिल हो जाता ।”

“जोकि पता नहीं कब होता ।”

“यू सैड इट, माई डार्लिंगैस्ट । जोकि पता नहीं कब होता । ऊपर से कीर्ति का अस्थिर स्वभाव भी तुम्हारे मकसद की पूर्ति में आड़े आ रहा था । अक्सर इनकी अन्तरात्मा इन्हें कचोटने लगती थी कि ये पति को धोखा देकर गैरमर्द के प्रेमपाश में बन्धी हुई थीं । इसीलिये अभी थोड़ी देर पहले ये ये दावा कर के हटी हैं कि इन्होंने हमेशा एक निष्ठावान पत्नी बनके दिखाया था । अभी ये अपनी हरकतों पर पश्चात्ताप करके भी दिखा रही थीं । ऊपर से ये बात भी कम-से-कम तुमसे छुपी न होगी कि अपने पति के दुर्व्यवहार से आजिज आकर ये तुम्हारी तरफ झुकी थीं । यानी कि अगर थापर निकट भविष्य में अपना व्यवहार सुधार लेता तो तुम्हारी मैगनेटिक पर्सनैलिटी और तुम्हारी लच्छेदार बातों के बावजूद ये तुमसे विमुख हो सकती थीं । इन तमाम बातों का कुल जमा निचोड़ ये निकलता है कि अपने प्रेमपाश में फंसी बुलबुल को तुम लम्बी ढील देना अफोर्ड नहीं कर सकते थे । वैसे भी रिच डाइवोर्सि से शादी करने पर तुम्हें दौलत का सिर्फ एक हिस्सा मिलता जबकि रिच विडो से, रईस विधवा से शादी करने पर तुम्हारी पांचों उंगलियों घी में होतीं और सिर कढ़ाई में होता । इसी बात ने तुम्हें तुरन्त कोई कदम उठाने के लिये प्रेरित किया और जो कदम तुमने उठाया वो था कत्ल ।”

सुनील एक क्षण रुका और फिर बोला - “अब देखो कैसे तुमने कत्ल को दुर्घटना का जामा पहनाने वाली तरकीब गढ़ी। थापर की बोट की डीजल की टंकी लीक करती थी, ये बात सारे घर को मालूम थी और कीर्ति के जरिये तुम्हें मालूम हो सकती थी। कोई बड़ी बात नहीं कि अपनी कत्ल की योजना के तहत टंकी में लीक भी तुमने ही बनाया हो। मुझे नमिता ने बताया था कि थापर रात को तब तक सोता नहीं था जब तक कि अपनी मोटरबोट पर सवार होकर वो समुद्र की लम्बी सैर नहीं कर आता था। ये उसकी पक्की आदत थी जिससे वो बारिश, आन्धी-तूफान में भी किनारा नहीं करता था। इस बात की, बाजरिया कीर्ति या किसी और तरीके से, तुम्हें जानकारी होना भी कोई बड़ी बात नहीं। बोट हाउस में डायनामाइट की पेटी पड़ी थी और कीर्ति के पास एक रिवॉल्वर थी जोकि पिछले एक महीने से इनकी कार के ग्लोव कम्पार्टमेंट में पड़ी थी, इन बातों की कीर्ति से जानकारी हासिल हो जाना और भी मामूली बात थी। लिहाजा तुमने कत्ल की अपनी योजना तैयार कर ली। बुधवार रात को तुमने अपनी योजना पर अमल शुरू किया। सब कुछ तुम्हारी मर्जी मुताबिक हुआ लेकिन कत्ल के बाद जब तुमने मोटरबोट को दोबारा स्टार्ट करने की कोशिश की तो तुम्हारी भरपूर कोशिशों के बावजूद वो स्टार्ट न हो पायी। तभी बाहर अपनी कार पर वर्मा पहुंच गया। कार की आवाज सुनकर तुम आतंकित हो उठे। तुमने रिवॉल्वर को पानी में फेंका और तुरन्त वहां से भाग खड़े हुए। तुम्हारे वहां से खिसकते ही वर्मा बोट हाउस में पहुंचा, थापर की लाश देखकर उसने अपने ढंग से वारदात की लीपापोती की जोकि उसे उलटी पड़ गयी और जिसका नतीजा ये हुआ कि अगले रोज कीर्ति जेल में पहुंच गयी। यानी कि ये ऐन उसी अंजाम पर पहुंची जिससे इन्हें बचाने की वर्मा ने भरपूर कोशिश की थी। लेकिन कीर्ति का थापर के कत्ल के इलजाम में गिरफ्तार होना तुम्हें भी सूट नहीं करता था इसलिये तुमने शक की सुई कीर्ति की तरफ से हटाकर किसी और की तरफ घुमाने की योजना बनायी। वो ‘कोई और’ बदकिस्मती से मैं बन गया। अब तुमने ऐसा इन्तजाम करना था कि कत्ल का अपराधी मैं समझा जाता और कीर्ति को निर्दोष मानकर रिहा कर दिया जाता। तब तक मरियम डिसूजा से तुम्हें मेरे द्वारा बार में खर्च किये गये पांच सौ के नोट की कहानी मालूम हो ही चुकी थी।”

“कैसे मालूम हो चुकी थी?”

“उसी ने बताया होगी। वो लड़की समझती थी कि उसके हाथ में बहुत मार्के की जानकारी आ गयी थी जिसे कैश करने की कोशिश करना उसकी फितरत से बखूबी मेल खाता था। कल रात तुमने खुद कहा था कि किन्हीं भी हालात में अपनी रोटियां सेंकने का जुगाड़ करने लगना उस लड़की की फितरत में शुमार था और यह कि ब्लैकमेल के मामले में उसे तुम मेरे से ज्यादा मोटे शिकार लगे थे।”

“झूठ! बकवास!”

“वो चिट्ठी, जो तुमने अपने दोस्त को इस हिदायत के साथ दी थी कि अगर तुम्हें कुछ हो जाये तो उसे पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचा दिया जाये, भी तुमने मेरे खिलाफ दबाव बनाने के लिये ही लिखी थी। असल में तुम्हें तो कुछ होने वाला ही नहीं था। जो थोड़ा-बहुत होने वाला था, वो खुद तुम्हारे अपने हाथों होने वाला था।”

“क्या!”

“प्यारेलाल, अपने बाल तुमने खुद झूलसाये, अपने जिस्म पर छोटी-मोटी चोटें, छोटी-मोटी खरोंचें तुमने खुद लगायीं, अपने कपड़ों की धज्जियां तुमने खुद उड़ायीं, अपने को विस्फोट का शिकार जाहिर करने के लिये और भी जो कुछ करना जरूरी था, वो तुमने खुद किया। फिर फोन करके मुझे बुलाने के बाद तुम मेरे इन्तजार में अपने काटेज में पिछवाड़े में बोट में जा बैठ जहां इतना अन्धेरा था कि मुझे तुम्हारी वो खस्ता हालत दिखाई नहीं देती, नहीं दी थी।”

“दिखाई नहीं दी थी तो तुम्हें कैसे मालूम है कि तब मेरी वैसी हालत थी?”

“ऐसे मालूम है।” - सुनील ने अपनी दायीं कोहनी उसके सामने की और गर्जकर बोला - “देखो! देखो! इसे कहते हैं जो चुप रहेगी जुबाने-खंजर, लहू पुकारेगा आस्ती का।”

“क-क्या!”

“मेरे कोट पर खून लगा हुआ है। कहां से लगा ये खून? मेरी कोहनी तो घायल नहीं है। प्यारेलाल, ये खून तुम्हारा है जो मेरे कोट को तब लगा था जबकि मैं बोट में कदम रखते वक्त सीढियों पर लड़खड़ाया था। लड़खड़ाया क्यों था? क्योंकि तुमने जान-बूझकर इसीलिये सीढियों पर मोबिल आयल बिखेरा हुआ था ताकि मैं लड़खड़ाऊं और तुम्हें मुझे सहारा देने का बहाना हासिल हो और यूं मेरे कोट पर खून लगा दिखने लगे। ये खून का धब्बा ही ये साबित करने के लिये काफी है कि उस घड़ी तुम्हारे जिस्म से खून बह रहा था जोकि तुम्हारे हाथ से ट्रांसफर होकर मेरे कोट की बांह को लग गया था। रही-सही कसर तब पूरी हो जायेगी जब मेरे कोट को लगे खून की और तुम्हारे खून के नमूने की लैबोरेट्री जांच होगी। तब तुमने मेरी बांह को खून जान के लगाया था ताकि बाद में मेरे पकड़े जाने पर ये साबित हो कि वो तुम्हारा खून था - तुम्हारा जिसे कि मैंने बोट विस्फोट में मार देने की कोशिश की थी। लेकिन प्यारेलाल, अब यही खून ये साबित कर रहा है कि वो तुम्हारे जिस्म से विस्फोट से पहले ही बह रहा था।”

“कोट उतारो ।” - प्रभूदयाल आदेशपूर्ण स्वर में बोला ।

“जो हुक्म, माई-बाप ।” - सुनील बोला । उसने कोट उतारकर उसकी जेबें खाली कीं और कोट प्रभूदयाल को सौंप दिया ।

“इसका पहले से अपना एक्सीडेंटल हुलिया बनाये रखना क्यों जरूरी था ? ऐसा ये तुम्हारी इससे मिल के चले जाने के बाद क्यों नहीं कर सकता था ?”

“क्योंकि विश्वसनीय तरीके से कपड़ों की धज्जियां, उड़ाना, बिना किसी गम्भीर नुकसान के बाल झुलसाना, बिना गहरे घाव किये अपने जिस्म पर से खून बहाना आनन-फानन होने वाला काम नहीं था । ये बड़े ठहराव, बड़े इत्मीनान से किया जाने वाला वक्तखाऊ काम था । ऊपर से ये भी जरूरी था कि इसके खून का कोई ताजा धब्बा मेरी पोशाक पर कहीं होता । जनाब, ये सब इन्तजाम एडवांस में ही करके रखना जरूरी था क्योंकि मेरे जाने के बाद इसके पास टाइम का तोड़ा था । मेरे पीठ फेरते ही झील के बीच में विस्फोट स्टेज करना जरूरी था । तभी तो वो मेरी करतूत लगती । विस्फोट तब होता जब कि मैं पुलिस हैडक्वार्टर पहुंच जाता या कहीं और पहुंच जाता जहां कि विस्फोट के वक्त या उससे पहले मैं अपनी मौजूदगी साबित कर पाता तो इसकी स्कीम का तो पटड़ा हो जाता ।”

“आगे बढ़ो ।”

“मेरे जाने के बाद यह अपनी बोट को झील के मध्य में ले गया । वहां इसने बोट में बारूद की वो दूसरी छड़ लगायी जो कि बोट हाउस में पड़ी पेटी में से गायब पायी गयी थी, उसका पलीता सुलगाया और खुद पानी में छलांग लगाकर बोट से परे तैर गया । एक सुरक्षित फासले से इसने विस्फोट होता देखा, तैरकर वापिस क्षत-विक्षत बोट के पास पहुंचा और इन्तजार करने लगा लोगों के बोट की तरफ पहुंचने का । तब जिस किसी ने भी इसे देखा होगा, उसने ये ही समझा होगा कि ये विस्फोट के वक्त बोट में था और किसी करिश्मासाज तरीके से मरने से तो क्या, गम्भीर रूप से घायल होने से भी बच गया था ।”

“बकवास ! कोरी बकवास !” - सूरी नफरत-भरे स्वर में बोला - “एक पागल का प्रलाप !”

“मरियम डिसूजा का कत्ल भी इसने किया ?” - प्रभूदयाल बोला ।

“ये भी कोई पूछने की बात है ?” - सुनील बोला ।

“कब किया ?”

“मेरे फोन पर इससे मिलने झेरी आने की हामी भर देने के बाद किया । कोई बड़ी बात नहीं कि मुझे फोन इसने होटल लेक व्यू से ही किया हो, जहां फोन के बाद मरियम के काटेज में जा के उसका खून करके ये अपनी बोट पर सवार होकर झील के रास्ते ही अपने काटेज के पिछवाड़े के अन्धेरे में पहुंच गया होगा ।”

“क्यों किया ?”

“एक तो इसीलिये किया क्योंकि इसे उस पर एतबार नहीं था । वो लड़की इससे प्यार में धोखा खा चुकी थी और इससे नफरत करती थी । वो भविष्य में कभी भी इसके खिलाफ जा सकती थी और इसे ब्लैकमेल करने की कोशिश कर सकती थी । दूसरे इसलिये किया क्योंकि मेरे से अपेक्षित होता उसका भी कत्ल करना । पांच सौ के नोट के मेरे पास होने की बाबत जो कोई भी जानता था, उसका मुंह बन्द करना मेरे लिये जरूरी होता ।”

“दूसरी वजह ज्यादा दमदार है । तो इसने तुम्हारे अपराध की गम्भीरता को दोबाला करने के लिये लड़की का खून किया ?”

“इंस्पेक्टर साहब” - सूरी चिल्लाया - “आप क्यों इस वाहियात आदमी की बातों में आ रहे हैं ? मैं कहता हूं मैंने खून नहीं किया । किस्से गढ के सुनाने में और उन्हें साबित करके दिखाने में फर्क होता है । अगर आप इसे चुप नहीं करा सकते तो इसे कहिये कि ये कुछ-कुछ भी - साबित करके दिखाये ।”

“थापर का कत्ल” - सुनील बोला - “मैं साबित कर सकता हूं कि तुमने किया था ।”

“करो ।” - सूरी चैलेंजभरे स्वर में बोला ।

“सुनो । कल रात तुमने मुझे कहा था कि तुमने मेरी बाबत तमाम वाक्यात को एक कागज पर दर्ज करके इस हिदायत के साथ अपने एक दोस्त को सौंप दिया था कि अगर तुम्हें कुछ हो जाये तो वो तुम्हारे उस बयान के साथ सीधा पुलिस हैडक्वार्टर पहुंच जाये ।”

“हां।”

“वो पहुंचा था।” - प्रभूदयाल बोला - “वो चिट्ठी मेरे पास है।”

“इस सन्दर्भ में” - सुनील सूरी से बोला - “जो कुछ तुमने मेरे सामने बयान किया था, वही चिट्ठी में लिखा था?”

“हां।” - सूरी बोला।

“ये लिखा था कि मैंने थापर का कत्ल कैसे और किन हालात में किया था?”

“हां, भई, हां।”

“ये भी लिखा था कि थापर की बोट में बारूद कहाँ लगा हुआ था?”

“क्या मतलब?”

“वो बारूद की छड़ बोट में लगी मैंने बरामद की थी लेकिन मैंने कभी इस बात का जिक्र नहीं किया था कि छड़ मुझे बोट में कहाँ रखी मिली थी। लेकिन तुमने... तुमने कल रात मुझे बताया था कि बारूद की छड़ बोट में डीजल की टंकी के नीचे थी। अब जरा इस लाख रुपये के सवाल का जवाब देकर बताओ कि तुम्हें कैसे मालूम था कि बारूद की छड़ बोट में ऐन कहाँ मौजूद थी!”

“मैंने... मैंने अखबार में पढ़ा था।”

“अखबार में सिर्फ ये छपा है कि बारूद बोट में हुड के नीचे था, ये नहीं छपा कि हुड के नीचे कहाँ था।”

“उसने कहीं तो होना ही था, मैंने सोच लिया कि टंकी के नीचे होगा।”

“टंकी के नीचे ही क्यों सोच लिया? ऊपर क्यों न सोचा, पहलू में क्यों न सोचा? इंजन में कहीं क्यों न सोचा? ऐन डीजल की टंकी के नीचे ही सोचना कैसे सूझा?”

“इत्तफाक की बात है।”

“इत्तफाक की बात नहीं है। बोट में बारूद की छड़ के सही मुकाम की तुझे इसलिये खबर थी, मेरे मरघट के चिराग, क्योंकि तूने ही बोट में बारूद लगाया था। क्योंकि तूने ही थापर का कत्ल किया था।”

“ये झूठ है। तुम जबरदस्ती मुझे जुबान देने की कोशिश कर रहे हो। मैंने कभी भी - न अब न पहले - अपनी जुबानी ये नहीं कहा था कि बारूद की छड़ बोट में डीजल की टंकी के नीचे थी।”

“कल रात तुमने मुझे नहीं कहा था?”

“नहीं कहा था।”

“मैं कहता हूँ तुमने कहा था।”

“तुम्हारे कहने कि क्या होता है? तुम तो और भी बहुत कुछ कहते हो।”

“अगर मैं साबित कर दूँ कि तुमने ऐसा कहा था तो अपना गुनाह कबूल कर लोगे? तब फांसी पर चढ़ने का इन्तजार करने की जगह अभी जाके समुद्र में डूब मरोगे?”

“कैसे... कैसे साबित कर सकते हो? कल... कल साथ कोई टेपरिकार्ड लेकर तो नहीं आये थे?”

“उससे क्या होता। तुम उससे भी मुकरकर दिखा देते। कह देते कि वो तुम्हारी आवाज नहीं है। मैंने तुम्हें फंसाने के लिये किसी मिमिकरी आर्टिस्ट से तुम्हारी आवाज नकल करवाकर वो टेप तैयार कर लिया था।”

“तो? तो?” - वो बदहवास-सा बोला।

“चिमनी के धुये, तेरी खुद की तहरीर, जोकि तेरा इकबालिया बयान है, ये साबित करेगी।”

“क्या !”

“अगर जो कुछ तुमने मुझे कहा था, ऐन वही कुछ पुलिस के नाम अपनी चिट्ठी में भी लिखा था तो थापर की बोट में बारूद की छड़ कहां थी, इस बात का जिक्र तुम्हारी चिट्ठी में भी होगा। प्रभू, वो चिट्ठी कहां है ?”

“मेरे पास है।” - प्रभूदयाल गम्भीरता से बोला। उसने जेब से चिट्ठी निकाली और उसे खोलकर पढ़ना आरम्भ किया।

“है वो बात इसमें।” - एकाएक वो बोला - “साफ लिखा है कि बारूद की छड़ थापर की बोट में डीजल की टंकी के नीचे थी।”

सूरी एकाएक चिट्ठी पर झपटा।

प्रभूदयाल ने बड़ी सहूलियत से उसे परे धकेल दिया और होलस्टर से रिवॉल्वर निकालकर उसकी तरफ तान दी।

सूरी के कसबल निकल गये। वो गैस निकले गुब्बारे की तरह पिचक गया।

विक्रम सूरी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

आगे उसे फांसी की सजा होना महज वक्त की बात थी।

विवेक वर्मा को भी आखिरकार कबूल करना पड़ा कि उसने मौकायेवारदात पर सैंडल की एड़ी और बालों का क्लिप चाई जी का सामान समझकर प्लांट किया था और सोई पड़ी चाई जी के करीब टूटी एड़ी वाली सैंडलें रखकर आया था और ये कि चालीस हजार रुपये के पांच-पांच सौ के नोट उसी ने थापर की जेब से निकाले थे। मोहिनी को कैसीनो में छोड़कर तब वो अकेला इसलिये वापिस लौटा था क्योंकि काटेज में बन्धे पड़े सुनील से निपटने के लिये थापर को उसकी मदद की जरूरत होती। सुनील को काटेज में न पाकर वो दौड़ा-दौड़ा नार्थ शोर पहुंचा था जहां कि उसे थापर का कत्ल हुआ मिला था। वहां से वो वापिस झेरी मोहिनी को, जो कि कन्वेन्स के मामले में उसकी मोहताज थी, लिवाने गया था और नार्थ शोर तब वापिस लौटा था जबकि वहां पुलिस पहुंच चुकी हुई थी।

पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था लेकिन अगले ही रोज वो जमानत पर छूट गया था। हर्षिता के खिलाफ षड्यन्त्र और विधुर दिलीप थापर से कीर्ति की शादी के षड्यन्त्र से संबंधित कोई चार्ज पुलिस किसी पर नहीं लगा पायी थी।

लाजवन्ती ने अपनी जुबानी कबूल किया था कि वो हरिमोहन थापर की बहू नहीं थी। दिलीप हरिमोहन थापर का असली पोता था या नहीं, इस बाबत वो कुछ न बोली। उसने केवल इतना कहा कि दिलीप उसका बेटा नहीं था और यह कि कभी वो हरिमोहन थापर की बहू के बहुत करीब रही थी।

विवेक वर्मा ने आखिर तक ये जिद न छोड़ी कि दिलीप थापर ही हरिमोहन थापर का पोता और असली वारिस था। इस मामले में पुलिस ने उसका लिहाज किया कि उन्होंने गड़े मुर्दे न उखाड़े, उन्होंने वर्मा और लाजवन्ती के खिलाफ फ्राड का केस न चलाया।

दिलीप थापर की वारिस उसकी बेवा को करार दिया गया। तब लाजवन्ती थापर ने घर छोड़कर चली जाना चाहा लेकिन कीर्ति ने उसे ऐसा न करने दिया।

वर्मा और नमिता की आशनाई की उसी रोज टांग टूट गयी थी जिस रोज कि सुनील ने उसका असली चरित्र उजागर किया था। उसे थापर के घर से अपना बोरिया-बिस्तर लपेट ही लेना पड़ा।

गड़े मुर्दे न उखाड़ने की पुलिस ने कीर्ति के सामने ये शर्त रखी थी कि वो थापर की दौलत का आधा विभिन्न धार्मिक संस्थानों को दान कर दें। कीर्ति ने वो शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली थी। आखिर उसके हाथ कुबरे का खजाना लगा था। इतना दान करके भी पीछे बहुत बचता था।

हालात काबू में आ जाने के बाद तीनों बहने ‘ब्लास्ट’ के ऑफिस में आकर सुनील की शुक्रगुजार हुईं।

तब सुनील के सवालियों के जवाब में कीर्ति ने जो बातें बताई या जिनकी तसदीक की, वो थीं:

तस्वीर पीछे सी.आई.डी. वाले ही छोड़ के गये थे । थापर ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया था लेकिन कीर्ति क्योंकि तस्वीर देखते ही टाई पहचान गयी थी, इसलिये तस्वीर उसने अपने अधिकार में ले ली थी और बाद में उसके जरिये केवल टाई का क्लोज अप तैयार करवाया था ।

मकवाना की धमकी-भरी चिट्ठी का थापर ने जरा भी रोब नहीं खाया था । उसने चिट्ठी पढ़ते ही रद्दी की टोकरी में डाल दी थी जहां से उठाकर कीर्ति ने उसे अपने कब्जे में कर लिया था । हर्षिता के नाम की वजह से उसे सूझा था कि चिट्ठी का लेखक उसका पिता ही हो सकता था जिसका इकबालपुर का पता जान लेना मामूली बात था क्योंकि ‘मेरी बेटी का कत्ल हुआ है’ की उसकी हाल-दुहाई की वजह से उसे उस छोटे से कस्बे का बच्चा-बच्चा जान गया था ।

वो अपने वकील से मिलने की नीयत से राजनगर रवाना होने से पहले नार्थ शोर अपनी कोठी पर भी गयी थी, इस बात का जिक्र वो महज बेध्यानी में सुनील के सामने करना भूल गयी थी ।

सारे केस का प्रमाणिक विवरण केवल ‘ब्लास्ट’ में छपा जिसके लिये मलिक साहब ने खुद सुनील की पीठ ठोककर उसे शाबाशी दी ।

समाप्त

सुरेन्द्र मोहन पाठक



रुद्रा प्रेस



